

राज्य
शासन अनुयोग प्रकाशन
द्वारा रायपुर, साहेबराय (राजस्थान)

द्वितीय-वर्ग
प्रतिष्ठा-पत्र महारथ

सं. १५। १५०

प्रकाशन सं.
सं. १५० २५०३

मुद्रक .
मुद्रक-पत्रिका प्रकाशन
केन्द्र, राजस्थान
इन्दौर (म.प्र.)

समर्पण

आगमस्वाध्यायमें

अहर्निश-निरत

स्वर्गीय आचार्यप्रवर

श्री आत्मारामजी महाराज

के प्रति श्रद्धा सुमन

—मुनि कन्हैयालाल 'कमल'

उदारमना अर्थसहयोगी

- ❖ श्री फूलचन्दजी हेमराजजी साकरिया (सांडेराव)
फर्म-हिन्द बुक मेन्युफेक्चरर्स, हुबली
- ❖ लाला जसवन्तसिंहजी तरसेम कुमारजी जैन
(भटिन्डा एवं अहमदाबाद)
- ❖ श्री चांदमलजी लालचन्दजी मूथा, सेलम
(सादडी, मारवाड़)
- ❖ श्री उमरावसिंहजी पीपाड़ा, मदनगंज (अजमेर)
- ❖ श्री प्यारेलालजी डांगी, मद्रास (फतेहगढ)
- ❖ श्री अमरचन्दजी प्रकाशचन्दजी कक्कड़, सरवाड़
(अजमेर)

प्रस्तुत प्रकाशन मे आप उदार सज्जनो ने श्रुतज्ञान की प्रभावना हेतु जो सहयोग प्रदान किया है तदर्थ सस्था आपके प्रति आभारी है ।

मन्त्री

आगम अनुयोग प्रकाशन

प्रकाशकीय

आगम अनुयोग प्रकाशन-परिषद् का उद्देय्य अनुयोग प्रकाशन के साथ-साथ आगमों के स्वाध्यायोपयोगी सुलभसंस्करण प्रकाशित करने का भी रहा है। अतः वर्धमानवाणी प्रचार कार्यालय से प्रकाशित “मूल-सुत्ताणि” का यह द्वितीय संस्करण स्वाध्यायशील साधकों के हेतु प्रस्तुत है।

साथ ही यह शुभ संदेश देते हुए हमें हर्ष है कि “गणितानुयोग” के बाद चिरप्रतीक्षित “कथानुयोग” मुद्रित हो रहा है अतः यथा-सम्भव ग्रीष्म ही उपलब्ध हो सकेगा।

गणितानुयोग की प्रतियाँ प्रायः समाप्त हो गई हैं इसलिए कोई भी सज्जन आदेश पत्र न भेजे। यदि अनिवार्य आवश्यकता हो तो परिचर्चित मूल्य में केवल एक प्रति एक सज्जन प्राप्त कर सकता है।

“आचारदशा मूल पाठ गुटका तथा आचारदशा [दशाधृतस्कध] मूल हिन्दी अनुवाद और विशेष विवेचन सहित-डेमी माइज में सजिल्द उपलब्ध है। यह अनुयोग प्रकाशन का नवीनतम संस्करण है।

इस प्रकाशन में उदार हृदय से जिन महानुभावों ने योगदान किया है उनके प्रति हम हृदय से कृतज्ञ हैं।

भवो

आगम अनुयोग प्रकाशन

स्वाध्याय के लिये अनुपम ग्रन्थ रत्न

अनुयोग प्रवर्तक पं रत्न मुनि श्री कन्हैयालाल जो म० संपादित

- १ मूल सुत्ताणि-गुटका साइज मूल्य १५) रुपए [१ दशवैकालिक,
- २ उत्तराध्ययन सूत्र, ३ नन्दि सूत्र, ४. अनुयोगद्वार सूत्र]
- २ स्वाध्याय सुधा-गुटका साइज मूल्य १०) रुपए [१ दशवैकालिक,
२. उत्तराध्ययन, ३ नन्दि सूत्र, तत्त्वार्थ सूत्र और भक्तामर
- आदि अनेक स्तोत्र] ।
- ३ स्थानाग-सानुवाद मूल्य २५) रुपए ।
- ४ समवायाग-सानुवाद परिवर्धित मूल्य १०) रुपए ।
५. गणितानुयोग-सानुवाद परिवर्धित मूल्य ५०) रुपए ।
- ६ धर्मकथानुयोग-सानुवाद (प्रेस में) ।
- ७ द्रव्यानुयोग सानुवाद ।
- ८ चरणानुयोग सानुवाद ।
९. जैनागमनिर्देशिका हिन्दी परिवर्धित मूल्य ५०) रुपए ।
- (४५ आगमो की विस्तृत विषय सूची)
- १० आचारदमा-सानुवाद मूल्य १५) रुपए ।
- ११ आचारदसा-मूल गुटका साइज मूल्य ५) रुपए ।
- (प्रेस में) ।
- १२ कप्पसुत्त-सानुवाद (प्रेस में) ।
- १३ कप्पसुत्त-मूल गुटका साइज (") ।
१४. मोक्षमार्ग कहानियाँ-हिन्दी मूल्य ५) रुपए ।
- १५ तत्त्वार्थ सूत्र एव स्तोत्रादि ।
- १६ प्रतिक्रमण सूत्र (सचित्र) ।

प्राप्ति स्थल
ला० द० भारतीय संस्कृति विद्या मंदिर
नवरंग पुरा, अहमदाबाद-९

आगम अनुयोग प्रकाशन
बखतावरपुरा, सांडेराव
(पाली, राज)

अहंम् पृष्ठिका

साधक सागार हो या अणगार—माधना काल में दोनों के लिए आगम-साहित्य का स्वाध्याय अत्यावश्यक कर्तव्य माना गया है।

“सज्जाय जोगे पयतो भवेज्जा” साधक को स्वाध्याययोग में सदा प्रयत्नशील होना चाहिए। यदि हम शिवपुर के पथिक हैं तो सर्वज्ञ भगवान् का यह प्रेरक मन्देश हमारे लिए एक प्रबल आत्मबल-वर्धक पवित्र पाथेय है।

स्वाध्याय आभ्यन्तर तप है। यह ज्ञानावरण कर्म का ममूलो-न्मूलन कारक एक अमोघ अस्त्र है।

स्वाध्याय का एक अंग “परियट्टणा” “परिवर्तना” भी है। अर्थात् आगमों के पुनरावर्तन से ज्ञान की वृद्धि और पदानुसारिणी लब्धि प्राप्त होती है। यह आगमोक्त फल-श्रुति है।

यदि कोई साधक स्वाध्याय-काल में ज्ञानातिचारों का परिहार करता हुआ प्रसन्न मन से सतत स्वाध्याय करता रहे तो तीर्थकर नाम कर्मोपार्जन भी कर सकता है। ‘णायधम्मकहा’ का यह अमर सन्देश सभी मुमुक्षु आत्माओं के लिए परमादरणीय है।

अवसर्पिणी काल से प्रभावित धारणा-शक्ति को लक्ष्य में रखकर जब आगम लिपिवद्ध किये गये तो पुस्तक-लिखना और रखना

अपवाद मार्ग में स्वीकृत किया गया था, साथ ही प्रायश्चित्त विधान भी किया गया था, पर वर्तमान में पुस्तक रखना अपवाद जैसा प्रतीत नहीं हो रहा है। क्योंकि अपवाद का सतत उपयोग नहीं किया जाता है।

वर्तमान में प्रत्येक साधक का एक मात्र कर्तव्य यह है कि स्वाध्याय काल में स्वाध्याय करे और स्वाध्याय काल में स्वाध्याय न करने पर जो प्रायश्चित्त आता है उसका पात्र न बने।

स्वाध्यायान्माप्रमद

स्वाध्याय-प्रवचनाभ्यां न प्रमदितव्यम्। तत्ति०

ये उपनिषद् वाक्य भी उसी अमर-शोष की प्रेरणाप्रद अनुश्रुति हैं।

आपमो के स्वाध्यायोपयोगी सस्करण कई स्थानों से प्रकाशित होते रहते हैं, किन्तु इस सस्करण में मूलपाठ का स्वाध्याय करते हुए स्वाध्याय-शील साधक को सामान्य अर्थावबोध भी प्रतिदिन होता रहे—इसके लिए उचित वाक्य-विन्यास आदि विज्ञेयताओं का जो आयोजन किया गया है उनका अनुभव स्वाध्यायी को स्वतः हो जायेगा।

सुतेषु किमधिकम्

मूनि "कमल"

॥ मूल सुत्ताणि ॥

(१)

दसवेआलियसुत्तं

(उक्कालियं)

नामकरण--

मणगं पडुच्च सेज्जंभवेण, निज्जूहिया दसज्जयणा ।
वेयालियाइ ठविया, तम्हा दसकालियं नाम ॥

उद्धरण--

आयप्पवायपुच्चा, निज्जूढा होइ धम्म-पत्तत्ती ।
कम्मप्पवायपुच्चा, पिडस्स उ एसणा तिविहा ॥
सच्चप्पवायपुच्चा, निज्जूढा होइ वक्कसुद्धीउ ।
अवसेसा निज्जूढा, नवमस्स उ तइयवत्थूओ ॥
वीओऽवि अ आएसो, गणिपिडगाओ दुवालसंगाओ ।
एयं किर निज्जूढं, मणगस्स अणुगाहट्ठाए ॥

विसयनिद्देशो-

पढमे धम्म-पसंमा, सो य इहेव जिणसासणम्मिति ।
बिइए धिइए सक्का, काउं ज एस धम्मोत्ति ॥
तइए आयार-कहाउ, खुड्डिया आयसंजमोवाओ ।
तह् जीव-संजमोऽवि य, होइ चउत्थंमि अज्जयणे ॥
भिक्ख-विसोही तव, संजमस्स गुणकारियाउ पंचमए ।
छट्ठे आयार-कहा, महई जोग्गा महयणस्स ॥
वयण-विभत्ती पुण, सत्तमम्मि पणिहाण-मट्ठमे भणियं ।
नवमे विणओ दसमे, समाणियं एस भिक्खुत्ति ॥
दो अज्जयणा चूलिय, विसीययते थिरीकरणमेगं ।
बिइय चिवित्त चरिया, असीयणगुणाइरेग फला ॥

—भद्रबाहु निर्युक्ति गाथा १५, १६, १७, १८, २०, २१, २२, २३, २४

विषय-संबंध-निर्देशः

प्रथमाध्ययने धर्म प्रशसा—

सचात्रैव—जिनशासने धर्मो, नान्यत्र इहैव निर्वद्यवृत्तिसद्भावात् ।
धर्माभ्युपगमे च सत्यपि माभूदभिनवप्रव्रजितस्याधृतेः सम्मोह—
इत्यत स्तन्निरा करणार्थाधिकारवदेव द्वितीयाध्ययनम् ।

सा पुनर्धृतिराचारे कार्या न त्वनाचारे—इत्यतस्तदर्थधिकारवदेव—
तृतीयाध्ययनम् ।

स च आचारः षड्जीवनिकायगोचरः प्राय-इत्यतश्चतुर्थमध्ययनम् ।
स च देहे स्वस्थे मति सम्यक् पाल्यते, स चाहारमन्तरेण प्रायः स्वस्थो न
भवति, स च सावद्येतरभेद-इत्यनवद्यो ग्राह्य-इत्यतस्तदर्थधिकारवदेव
पञ्चममध्ययनम् ।

गोचरप्रविष्टेन च सता स्वाचारं पृष्टेन तद्विदापि न महाजनसमक्षं तत्रैव-
विस्तरतः कथयितव्यः अपि तु आलये-गुरवो वा कथयन्तीति वक्तव्यम्
इत्यतस्तदर्थधिकारवदेव षष्ठमध्ययनम् ।

आलयगतेनाऽपि तेन, गुरुणा वा वचनदोषगुणाभिज्ञेन निरवद्यवचसा
कथयितव्य इत्यतस्तदर्थधिकारवदेव सप्तममध्ययनम् ।

तच्च निरवद्यं वचः आचारे प्रणिहितस्य भवति इत्यतस्तदर्थधिकारव-
देवाष्टममध्ययनम् ।

आचारप्रणिहितश्च यथोचितविनयसंपन्न एव भवतीत्यतस्तदर्थ-
धिकारवदेव नवममध्ययनम् ।

एतेषु एव नवस्वध्ययनार्थेषु यो व्यवस्थितः स सम्यग् भिक्षुरित्यनेन—
सम्बन्धेन दसमं सभिक्ष्वध्ययनम् ।

स एवं गुणयुक्तोऽपि भिक्षुः कदाचित् कर्मपरतन्त्रत्वात्कर्मणश्च
बलवत्त्वात्सीदेत् ततस्तस्य स्थिरीकरणं कर्तव्यमतस्तदर्थधिकारव-
देव चूडाद्वयम् ।

—धी हरिभद्रसूरिः

❖ णमोञ्जथुणं तस्स समणस्स भगवओ महावीरस्स ❖

दसवेआलियसुत्तं

अहदुमपुप्फिया नामं पढममञ्जयणं

धम्मो मंगलमुक्किट्ठं, अहिंसा संजमो तवो ।

देवा वि तं नमंस्संति, जस्स धम्मे सया मणो ॥ १ ॥

जहा दुमस्स पुप्फेसु, भमरो आवियइ रसं ।

न य पुप्फं किलामेइ, सो य पीणेइ अप्पयं ॥ २ ॥

एमेए समणा मुत्ता, जे लोए संति साहुणो ।

विहंगमा व पुप्फेसु, दाणभत्तेसणे रया ॥ ३ ॥

वयं च वित्ति लब्भामो, न य कोइ उवहम्मइ ।

अहागडेसु रीयंते, पुप्फेसु भमरा जहा ॥ ४ ॥

महुगारसमा बुद्धा, जे भवंति अणिस्सिया ।

नाणापिडरया दंता, तेण वुच्चंति साहुणो ॥ ५ ॥ त्ति वेमि ।

अहं सामण्णपुव्वयं नामं दुइअमज्झयणं

कहं नु कुज्जा सामण्णं, जो कामे न निवारए ।

पए पए विसीयंतो, संकप्पस्स वसं गओ ॥ १ ॥

वत्थगंधमलंकारं, इत्थीओ सयणाणि य ।

अच्छंदा ऐ न भुजति, न से 'चाइ' ति वुच्चइ ॥ २ ॥

जे य कंते पिए भोए, लद्धे विपिट्ठि कुच्चई ।

साहीणे चयइ भोए, से हु 'चाइ' ति वुच्चई ॥ ३ ॥

समाए पेहाए परिव्वयंतो,

सिया मणो निस्सरई बहिद्धा ।

'न सा महं नोवि अहंपि तीसे'

इच्चेव ताओ विणएज्ज रागं ॥ ४ ॥

आयावयाही चय सोउमल्लं,

कामे कमाही कमियं खु दुक्खं ।

छिंदाहि दोसं विणएज्ज रागं,

एवं सुही होहिति संपराए ॥ ५ ॥

पक्खंदे जलियं जोइं, धूमकेउं दुरासयं ।

नेच्छंति वंतयं भोत्तुं, कुले जाया अगंधणे ॥ ६ ॥

धिरत्थु तेज्जसोकामी, जो तं जीवियकारणा ।

वंतं इच्छसि आवेउं, सेयं ते मरणं भवे ॥ ७ ॥

अहं च भोगरायस्स, तंचसि अंधगवण्हिणो ।

मा कुले गंधणा होमो, संजमं निहुओ चर ॥ ८ ॥

जइ तं काहिसि भावं, जा जा दिच्छसि नारिओ ।
 वायाविद्धो व्व हंडो, अट्टिअप्पा भविस्ससि ॥ ९ ॥
 तीसे सो वयणं सोच्चा, संजयाए सुभासियं ।
 अकुंसेण जहा नागो, धम्मे संपडिवाइओ ॥ १० ॥
 एवं करेति संवुद्धा, पंडिया पवियक्खणा ।
 विणिग्यट्ठंति भोगेसु, जहा से पुरिसुत्तमो ॥ ११ ॥ त्ति बेमि ॥

अह खुड्डियायारकहा नामं तइयमज्झयणं

संजमे सुट्ठिअप्पाणं, विप्पमुक्काण ताइणं ।
 तेसिमेयमणाइण्णं, निगंथाणं महेसिणं ॥ १ ॥
 उट्ठेसियं^१ कीयगडं^२, नियागं^३ अभिहड्डाणि^४ य ।
 राइ-भत्ते^५ सिणाणे^६ य, गंध^७ मल्ले^८ य वीर्यणे^९ ॥ २ ॥
 सन्निही^{१०} गिहि-मत्ते^{११} य, रायपिंडे^{१२} किमिच्छए^{१३} ।
 संवाहणा^{१४} दंतपहोयणा^{१५} य,
 संपुच्छणा^{१६} देह-पलोयणा^{१७} य ॥ ३ ॥
 अट्ठावए^{१८} य नालीय^{१९}, छत्तस्स^{२०} य धारणट्ठाए ।
 तेगिच्छं^{२१} पाहणा^{२२} पाए, समारंभं च जोइणो^{२३} ॥ ४ ॥
 सेज्जायर-पिण्डं^{२४} च, आसंदीपलियंकए^{२५} ।
 गिहंतर निसज्जा^{२६} य, गायस्सुव्वट्ठणाणि^{२७} य ॥ ५ ॥

गिहिणोवेआवडियं^{२८}, जा य भाजीवधसिया^{२९} ।
 तत्तानिवुडभोइत्तं^{३०}, भाउरस्सरणाणि^{३१} य ॥ ६ ॥
 मूलए^{३२} सिंगवेरे^{३३} य, उच्छुखंडे^{३४} भमिब्वुडे ।
 कदे^{३५} मूले^{३६} य सच्चित्ते, फले^{३७} बीए^{३८} य आमए ॥ ७ ॥
 सोवच्चले^{३९} सिधवे^{४०} लोणे, रोमा-लोणे^{४१} य आमए ।
 सामुहे^{४२} पंसुखारे^{४३} य, काला-लोणे^{४४} य आमए ॥ ८ ॥
 धूवणेत्ति^{४५} वमणे^{४६} य, वत्थीकम्म^{४७} विरेयणे^{४८} ।
 अंजणे^{४९} दंतवणे^{५०} य, गायढ्भंग^{५१} विभूसणे^{५२} ॥ ९ ॥
 सव्वमेयमणाइण्णं, निग्गंथाण महेसिणं ।
 संजमम्मि अ जुत्ताणं, लहुभूयविहारिणं ॥ १० ॥
 पंचासवपरिण्णया, तिगुत्ता छसु संजया ।
 पंचनिग्गहणा धीरा, निग्गंथा उज्जुदंसिणो ॥ ११ ॥
 आयावयंति गिम्हेसु, हेमंतेसु अवाउडा ।
 वासासु पडिसंलीणा, संजया सुसमाहिया ॥ १२ ॥
 परिसह-रिऊ-दंता, धूअमोहा जिइंदिया ।
 सव्वदुवखप्यहीणट्ठा, पक्कयंति महेसिणो ॥ १३ ॥
 दुक्कराइं करित्ताणं, दुस्सहाइं सहित्तु य ।
 केइज्ज्य देवलोएसु, केइ सिज्जंति नीरया ॥ १४ ॥
 खवित्ता पुव्वकम्माइं, संजमेण तवेण य ।
 सिद्धिमग्गमणुप्पत्ता, ताइणो परिणिव्वुडा ॥ त्ति बेमि ॥ १५ ॥

अह छज्जीवणिया नामं चउत्थमज्झयणं

सुयं मे आउसं ।

तेणं भगवया एवमक्खायं—

इह खलु छज्जीवणिया नामज्झयणं—

समणेणं भगवया महावीरेणं कासवेणं पवेइया—

सुअक्खाया सुपणत्ता ।

सेयं मे अहिज्जिउं अज्झयणं धम्मपणत्ती ।

कयरा खलु सा छज्जीवणिया नामज्झयणं—

समणेणं भगवया महावीरेणं कासवेणं पवेइया—

सुअक्खाया सुपणत्ता

सेयं मे अहिज्जिउं अज्झयणं धम्मपणत्ती ।

इमा खलु सा छज्जीवणिया नामज्झयणं—

समणेणं भगवया महावीरेणं कासवेणं पवेइया—

सुअक्खाया सुपणत्ता

सेयं मे अहिज्जिउं अज्झयणं धम्मपणत्ती ।

तं जहा—

पुढवि—काइया १, आउ—काइया २, तेउ—काइया ३,

वाउ—काइया ४, वणस्सइ—काइया ५, तस—काइया ६ ।

१ पुढवी चित्तमंतमक्खाया अणेग—जीवा पुढो—सत्ता अन्नत्थ
सत्थ—परिणएणं ।

- ૨ આઝ ચિત્તમંતમકલાયા અળેગ-જીવા પુઢો-સત્તા, અન્નત્થ
સત્થ-પરિણાણં ।
- ૩ તેઝ ચિત્તમંતમકલાયા અળેગ-જીવા પુઢો-સત્તા અન્નત્થ
સત્થ-પરિણાણં ।
- ૪ વાઝ ચિત્તમંતમકલાયા અળેગ-જીવા પુઢો-સત્તા અન્નત્થ
સત્થ-પરિણાણં ।
- ૫ વળસ્સઈ ચિત્તમંતમકલાયા અળેગ-જીવા પુઢો-સત્તા અન્નત્થ
સત્થ-પરિણાણં ।

તં જહા-

અગ્ગલીયા મૂલલીયા પોરલીયા હંધલીયા લીયરૂહા-

સમ્મુચ્છિમા તળલયા-

વળસ્સઙ્કાહયા સલીયા ચિત્તમંતમકલાયા અળેગ-જીવા
પુઢો-સત્તા અન્નત્થ સત્થ-પરિણાણં ।

૬ સે જે પુળ હમે અળેગે બહવે તસા પાળા-

તં જહા-

અંડયા પોયયા જરાડયા રસયા-

સંસેઙ્કમા સંમુચ્છિમા ઉભિયા ઉવવાહયા

જોસિ કેસિ ચ પાળાણં-

અભિક્કંતં પઢિક્કંતં સંકુચિયં પસારિયં-

સ્યં ભંતં તસિયં પલાહયં-

આગહ-ગહ-વિનાયા, જે ય કીડપયેગા-

जा य कुंथुपिवीलिया-

सव्वे वेइंदिया सव्वे तेइंदिया-

सव्वे चउरदिया सव्वे पंचिदिया-

सव्वे तिरिक्ख-जोणिया सव्वे नेरइया-

सव्वे मणुभा सव्वे देवा-

सव्वे पाणा परमाहम्मिया ।

एसो खलु छट्ठो जीविकाओ 'तसकाउ त्ति' पवुच्चइ ।

इच्चैस्सि छण्ह जीविकायाणं-

नेव सयं दंडं समारंभिज्जा-

नेवन्नेहि दंडं समारंभाविज्जा-

दंडं समारंभंते वि अन्ने न समणुजाणेज्जा

जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं-

मणेणं वायाए काएणं-

न करेमि, न कारवेमि-

करंतं पि अन्नं न समणुजाणामि-

तस्स भंते !

पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि-

अप्पाणं वोसिरामि ।

पढमे भंते ! महव्वए पाणाइवायाओ वेरमणं ।

सव्वं भंते ! पाणाइवायं पच्चक्खामि-

से सुहुमं वा, वायरं वा

तसं वा थावरं वा
 नेव सयं पाणे अइवाइज्जा-
 नेवऽत्तेहिं पाणे अइवायाविज्जा-
 पाणे अइवायंते वि अन्ने न समणुजाणेज्जा
 जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं-
 मणेणं वायाए काएणं-
 न करेमि न कारवेमि-
 करंतं-पि अन्नं न समणुजाणामि-
 तस्स भंते !
 पडिक्कमामि निदामि गरिहामि-
 अण्णपाणं वोत्तिरामि ।
 पढमे भंते ! महव्वए उवट्ठिओमि
 सव्वाओ पाणाइवायाओ वेरमणं ॥१॥

अहावरे दोच्चे भंते ! महव्वए मुसावायाओ वेरमणं
 सव्वं भंते ! मुसावायं पच्चक्खामि
 से कोहा वा लोहा वा
 भया वा हासा वा
 नेव सयं मुसं वएज्जा
 नेवऽत्तेहिं मुसं वायावेज्जा
 मुसं वयंते वि अन्ने न समणुजाणेज्जा
 जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं-

मणेणं वायाए काएणं—
 न करेमि न कारवेमि—
 करतपि अस्सं न समणुजाणामि—
 तस्स भत्ते ।
 पडिक्कमामि निदामि गरिहामि
 अप्पाणं वोमिरामि ।
 दोच्चे भत्ते महव्वए उक्खट्ठिओमि ।
 सव्वाओ मुत्ताबायाओ वेरमणं ॥ २ ॥

अहाबरे तच्चे भत्ते ! महव्वए अदिस्सावाणाओ वेरमणं
 सव्वं भत्ते ! अदिस्सादाणं पच्चक्खामि
 से गामे वा नगरे वा रण्णे वा—
 अप्पं वा बहं वा अणुं वा थूतं वा—
 चित्तमंतं वा अचित्तमंतं वा—
 नेव सयं अदिस्सं गिण्हेज्जा—
 नेवअस्सेहं अदिस्सं गिण्हावेज्जा—
 अदिस्सं गिण्हंतं वि अस्से नं समणुजाणैज्जा
 जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं—
 मणेणं वायाए काएणं—
 न करेमि न कारवेमि
 करंतं पि अस्सं न समणुजाणामि—

तस्स भते !

पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि-

अप्पाणं वोसिरामि ।

तच्चे भते ! महव्वए उवट्ठिओमि

सव्वाओ अदिन्नादाणाओ वेरमणं ॥ ३ ॥

अहावरे चउत्थे भते ! महव्वए मेहुणाओ वेरमणं-

सव्व भते ! मेहुणं पच्चव्वखामि

से दिव्वं वा माणुसं वा तिरिक्ख-जोणियं वा

नेव सयं मेहुणं सेवेज्जा-

नेवन्नोहि मेहुणं सेवावेज्जा-

मेहुणं सेवते वि अन्नं न समणुजाणेज्जा

जावज्जीवाए तिबिहं तिबिहेणं-

मणेणं वायाए काएणं

न करेमि न कारवेमि

करंतं पि अन्नं न समणुजाणामि-

तस्स भते !

पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि-

अप्पाणं वोसिरामि ।

चउत्थे भते ! महव्वए उवट्ठिओमि-

सव्वाओ मेहुणाओ वेरमणं ।

अहावरे पचमे भते ! महव्वए परिगहाओ वेरमणं-

सद्यं भते । परिग्गह पच्चवग्गामि—
 से अप्पं वा बहु वा अणुं वा थूलं वा
 चित्तमंतं वा अचित्तमंतं वा
 नेव सयं परिग्गहं परिगिण्हेज्जा—
 नेवन्नोहि परिग्गह परिगिण्हावेज्जा—
 परिग्गह परिगिण्हते वि अत्ते न समणुजाणेज्जा
 जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं
 मणेणं वायाए काएण—
 न करेमि न कारवेमि—
 करंतं पि अत्त न ममणुजाणामि
 तस्स भते ।

पडिक्कमामि निदामि गरिहामि—
 अप्पाणं वोत्तिरामि ।

पंचमे भते ! महव्वए उवट्ठिओमि—
 सव्वाओ परिग्गहाओ वेरमणं ॥ ५ ॥

अहावरे छट्ठे भते ! वए राइ—भोयणाओ वेरमणं
 सव्व भते ! राइ—भोयणं पच्चवग्गामि ।

से असणं वा पाणं वा खाइम वा साइम वा—
 नेव सयं राइं भुंजेज्जा
 नेवन्नोहि राइं भुंजावेज्जा
 राइं भुंजते वि अत्ते न समणुजाणेज्जा

जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं-
 मणेणं वायाए काएणं-
 न करेमि न कारवेमि
 करंतं-पि अन्नं न समणुजाणामि ।
 तस्स भते !
 पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि
 अप्पाणं वोसिरामि ।
 छट्ठे भंते ! वए उवट्ठिओमि
 सव्वाओ राइ-भोयणाओ वेरमणं ।
 इच्चेयाइं पच्च महव्वयाइं राइ-भोयण वेरमण-छट्ठाइं
 अत्त-हियट्ठयाए उवसपजित्ताणं विहरामि ॥ ६ ॥
 से भिक्खू वा भिक्खुणी वा-
 संजय-विरय-पडिहय-पच्चक्खाय-पावकम्मे
 दिआ वा राओ वा
 एगओ वा परिसागओ वा
 सुत्ते वा जागरमाणे वा
 से पुढाव वा भित्ति वा सिलं वा लेलुं वा-
 स-सरक्खं वा कायं, स-सरक्खं वा वत्थं-
 हत्थेण वा पाएण वा कट्ठेण वा किंलिच्चेण वा-
 अंगुलियाए वा सलागाए वा सलाग हत्थेण वा-
 न आलिहेज्जा न विलिहेज्जा-

न घट्टेज्जा न भिदेज्जा-

अनं न आलिहावेज्जा न विलिहावेज्जा

न घट्टावेज्जा न भिदावेज्जा

अन्नं आलिहंतं वा विलिहंतं वा

घट्टंतं वा भिदंतं वा न समणुजाणेज्जा

जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं

मणेणं वायाए काएणं-

न करेमि न कारवेमि-

करतं पि अन्नं न समणुजाणामि-

तस्स भते !

पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि

अप्पाणं वोसिरामि ॥ १ ॥

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा-

संजय-विरय-पडिहय-पच्चक्खाय-पावक्कमे-

दिआ वा राओ वा-

एगओ वा परिसा-गओ वा-

सुत्ते वा जागरमाणे वा-

से उदगं वा ओसं वा हिमं वा महियं वा-

करगं वा हरितणुगं वा सुद्धोदगं वा-

उदउल्लं वा कायं उदउल्लं वा वत्थं-

ससिणिद्धं वा कायं ससिणिद्धं वा वत्थं-

न आमुसेज्जा न संफुसेज्जा-
 न आवीलेज्जा न पवीलेज्जा-
 न अक्खोडेज्जा न पक्खोडेज्जा-
 न आयावेज्जा न पयावेज्जा ।

अन्नं न आमुसावेज्जा न संफुसावेज्जा-
 न आवीलावेज्जा न पवीलावेज्जा-
 न अक्खोडावेज्जा न पक्खोडावेज्जा-
 न आयावेज्जा न पयावेज्जा-

अन्नं आमुसंतं वा संफुसंतं वा
 आवीलंतं वा पवीलंतं वा
 अक्खोडंतं वा पक्खोडंतं वा
 आयावंतं वा पयावंतं वा न समणुजाणेज्जा

जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं
 मणेण वायाए काएणं
 न करेमि न कारवेमि
 करंतं-पि अन्नं न समणुजाणामि
 तस्स भंते !
 पडिक्कमामि निदामि गरिहामि-
 अप्पाणं वोसिरामि ॥२॥

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा-
 संजय-विरय-पडिहय-पच्चक्खाय-पावकम्मे

दिआ वा राओ वा
 एगओ वा परिसा-गओ वा
 सुत्ते वा जागरमाणे वा
 से अर्गाण वा इंगालं वा मुमुरं वा अर्च्चि वा-

जालं वा अलाय वा सुद्धागणि वा उक्कं वा-
 न उज्जेज्जा न घट्टेजा न भिदेज्जा-
 न उज्जालेज्जा न पज्जालेज्जा न निव्वावेज्जा-
 अन्नं न उंजावेज्जा न घट्टावेज्जा न भिवावेज्जा
 न उज्जालावेज्जा न पज्जालावेज्जा न निवावेज्जा
 अन्नं उज्जतं वा घट्टंतं वा भिदंतं वा-

उज्जालंतं वा पज्जालंतं वा निव्वावंतं वा न समणुजाणेज्जा
 जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं
 मणेणं वायाए काएणं-
 न करेमि न कारवेमि
 करतं-पि अन्नं न समणुजाणामि
 तस्स भंते !
 पडिक्कमामि निदामि गरिहामि
 अप्पाणं वोत्तिरामि ॥३॥

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा
 संजय-विरय-पडिहय-पच्चक्खाय-पावक्कमे-
 दिआ वा राओ वा-

एगओ वा परिसा-गओ वा-
 सुत्ते वा जागरमाणे वा-
 से सिएण वा बिहुणेण वा तालियंटेण वा-
 पत्तेण वा पत्तभंगेण वा-
 साहाए वा साहा-भंगेण वा-
 पिहुणेण वा पिहुण-हत्थेण वा-
 चेल्लेण वा चेल-कण्णेण वा-
 हत्थेण वा मुहेण वा-
 अप्पणो वा कायं बाहिरं वा वि पोत्तात्तं

न फूमेज्जा न बीएज्जा-
 अन्नं न फूमावेज्जा न बीआवेज्जा-
 अन्नं फूमत्तं वा बीयत्तं वा न समणुजाणेज्जा-
 जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं
 मणेणं वायाए काएणं
 न करेमि न कारवेमि
 करत्तं-पि अन्नं न समणुजाणामि ।
 तस्स भन्ते !

पडिक्कमामि लिंदामि गरिहामि-
 अप्पाणं दोसिरामि ॥४॥

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा
 संजय-विरय-पडिहय-पच्चक्खाय पावकम्मे-

से भिवळू वा भिवळुणी वा-

संजय-विरय-पडिहय-पच्चवखाय-पावकम्मे-

दिआ वा राओ वा-

एगओ वा परिसा-गओ वा-

सुत्ते वा जागर माणे वा-

से कीडं वा पयगं वा कुंथुं वा पिबीलियं वा-

हत्थंसि वा पायंसि वा दाहूसि वा-

उरुसि वा उदरंसि वा सीससि वा-

बत्थसि वा पडिगहंसि वा कंयलसि वा

पाय-मुच्छर्णंसि वा रय-हरणंसि वा गुच्छर्णंसि वा

उडुगंसि वा दंडगंसि वा पोढगंसि वा

फलगंसि वा सेज्जसि वा सथारगंसि वा

अन्नयरंसि वा तहप्पगारे उवगरणजाए-

तओ संजयामेव-

पडिलेहिय पडिलेहिय पमज्जिय पमज्जिय-

एगंतमवणेज्जा-

नो णं संधायमावणेज्जा ॥६॥

अजयं चरमाणो उ, पाण-सूयाहं हिंसई ।
 बंधइ पावयं कम्मं, तं से होइ कहुयं फलं ॥ १ ॥
 अजयं चिहुमाणो उ, पाण-सूयाहं हिंसई ।
 बंधइ पावयं कम्मं, तं से होइ कहुयं फलं ॥ २ ॥

अजयं आममाणो उ, पाण-भूयाइं हिंसई ।
 वंघइ पावयं कम्मं, तं से होइ कडुयं फलं ॥ ३ ॥

अजयं सयमाणो उ, पाण-भूयाइं हिंसई ।
 वंघइ पावयं कम्मं, तं से होइ कडुयं फलं ॥ ४ ॥

अजयं भुंजमाणो उ, पाण-भूयाइं हिंसई ।
 वंघइ पावयं कम्मं, तं से होइ कडुयं फलं ॥ ५ ॥

अजयं भासमाणो उ, पाण-भूयाइं हिंसई ।
 वंघइ पावयं कम्मं, तं से होइ कडुयं फलं ॥ ६ ॥

कहं चरे? कहं चिट्ठे?, कहमासे? कहं सए?
 कहं भुजंतो भासंतो, पाव-कम्मं न वंघइ? ॥ ७ ॥

जयं चरे, जयं चिट्ठे, जयमासे जयं सए ।
 जयं भुजंतो भासंतो, पाव-कम्मं न वंघइ ॥ ८ ॥

सव्वभूयप्पभूयस्स, सम्मं भूयाइं पासओ ।
 पिहियासवस्स दंतस्स, पाव-कम्मं न वंघइ ॥ ९ ॥

पढमं नाणं तओ दया, एवं चिट्ठइ सव्वसंजए ।
 अन्नाणी किं काही, किं वा नाहिइ सेय-पावगं ॥ १० ॥

सोच्चा जाणइ कल्लाणं, सोच्चा जाणइ पावगं ।
 उभयं पि जाणइ सोच्चा, जं सेयं तं समायरे ॥ ११ ॥

जो जीवे वि न याणइ, अजीवे वि न याणइ ।
 जीवाजीवे अयाणंतो, कहं सो नाहीइ संजमं ॥ १२ ॥

जो जीवे वि वियाणइ, अजीवे वि वियाणइ ।
 जीवाजीवे वियाणंतो, सो हु नाहीइ संजमं ॥१३॥
 जया जीवमजीवे य, दो वि एए वियाणइ ।
 तथा गइं बहुविहं, सव्वजीवाण जाणइ ॥१४॥
 जया गइं बहुविहं, सव्वजीवाण जाणइ ।
 तथा पुणं च पावं च, बंधं मोक्खं च जाणइ ॥१५॥
 जया पुणं च पावं च, बंधं मोक्खं च जाणइ ।
 तथा निव्विदए भोए, जे दिव्वे जे य माणुसे ॥१६॥
 जया निव्विदए भोए, जो दिव्वे जे य माणुसे ।
 तथा चयइ संजोगं, सत्तिभतर-बाहिरं ॥१७॥
 तथा चयइ संजोगं, सत्तिभतर-बाहिरं ।
 तथा मुंढे भवित्ताणं, पव्वइए अणगारियं ॥१८॥
 जया मुंढे भवित्ताणं, पव्वइए अणगारियं ।
 तथा संवरमुक्किट्ठं, धम्मं फासे अणुत्तरं ॥१९॥
 जया संवरमुक्किट्ठं, धम्मं फासे अणुत्तरं ।
 तथा धुणइ कम्मरयं, अबोहिकलुसं कडं ॥२०॥
 जया धुणइ कम्मरयं, अबोहिकलुसं कडं ।
 तथा सव्वत्तगं नाणं, दंसणं चाभिगच्छइ ॥२१॥
 जया सव्वत्तगं नाणं, दंसणं चाभिगच्छइ ।
 तथा सोगमलोगं च, जिणो जाणइ केवली ॥२२॥

जया सोगमसोगं च, जिणो जाणइ केवली ।
तया जोगे निरंभित्ता, सेलेसि पडिवज्जइ ॥२३॥

जया जोगे निरंभित्ता, सेलेसि पडिवज्जइ ।
तया कम्मं खवित्ताणं, सिद्धिं गच्छइ नीरओ ॥२४॥

जया कम्मं खवित्ताणं, सिद्धिं गच्छइ नीरओ ।
तया लोगमत्थयत्थो, सिद्धो हवइ सासओ ॥२५॥

सुहसायगस्स समणस्स, सायाउसगस्स निगामसाइस्स ।
उच्छोलणापहोअस्स, 'दुलहा सुगइ' तारिसगस्स ॥२६॥

तवोगुण-पहाणस्स, उज्जुमइ-खंति-संजमरयस्स ।
परीसहे जिणंतस्स, 'सुलहा सुगइ' तारिसगस्स ॥२७॥

पच्छा वि ते पयाया, खिप्पं गच्छंति अमर-भवणाइं ।
जेसि पिओ तवो संजमो य, खंति य वंभचेरं च ॥२८॥

इच्चेयं छज्जीवणियं, सम्महिद्दी सया जए ।
दुल्लहं लहित्तु सामण्णं, कम्मणा न विराहिज्जासि ॥२९॥

॥त्ति वेमि ॥

अह पिंडेसणा नामं पंचममज्ज्ञयणं

पहमो उद्देसो

संपत्ते भिक्खुकालम्मि, असंपत्तो अमुच्छिओ ।
द्वमेण कमजोगेण, भत्तपाणं गवेसए ॥ १ ॥
से गामे वा नगरे वा, गोयरग्गओ मुणी ।
चरे मंदमणुव्विगो, अन्वविक्खत्तेण चेयसा ॥ २ ॥
पुरओ जुगमायाए, पेहमाणो महिं चरे ।
वज्जंतो बीय-हरियाए, पाणे य दगम्मट्टियं ॥ ३ ॥
ओवायं विसमं खाणुं, विज्जलं परिवज्जए ।
संकमेण न गच्छेज्जा, विज्जमाणे परक्कमे ॥ ४ ॥
पवडंते व से तत्थ, पक्खलंते व संजए ।
हिंसेज्ज पाण-भूयांइ, तंसे अदुव थावरे ॥ ५ ॥
तम्हा तेण न गच्छेज्जा, संजए सुसमाहिए ।
सइ अन्नेण मग्गेण, जयमेव परक्कमे ॥ ६ ॥
इंगालं छारियं रांसि, तुसरारंसि च गोमयं ।
ससरक्खोहं पाएहि, संजओ तं नइक्कमे ॥ ७ ॥
न चरेज्ज वासे वासंते, सहियाए व पडंतिए ।
महावाए व वायंते, तिरिच्छ-संपाइमेसु वा ॥ ८ ॥

न चरेज्ज वेस-मामंते, वंभचेरवसाणुए ।
 वंभयारिस्म दंतस्स, होज्जा तत्थ विसोत्तिथा ॥९॥
 अणायणे चरंतस्स, संसग्गीए अभिक्खणं ।
 होज्ज वयाणं पीता, सामण्णम्मि य संसओ ॥१०॥
 तम्हा एयं चियाणित्ता, दोसं दुग्गइवड्ढणं ।
 वज्जए वेस-मामंतं, मुणौ एगंतमस्सिए ॥११॥
 साणं सृडयं गायि, दित्तं गोणं हयं गयं ।
 संडिढं कलहं जुढं, द्वरओ परिवज्जए ॥१२॥
 अणुन्नए नावणए, अप्पहिट्ठे अणाजले ।
 इंदियाइं जहाभागं, दमइत्ता मुणौ चरे ॥१३॥
 दवदवस्स न गच्छेज्जा, भासमाणो य गोयरे ।
 हसंतो नाभिगच्छेज्जा, कुलं उच्चावयं सया ॥१४॥
 आलोयं भिग्गलं दारं, सीधं दग्गभवणाणि य ।
 चरंतो न विनिज्झाए, संकट्ठाणं विवज्जए ॥१५॥
 रत्तो गिहवईणं च, रहस्सारविखयाण य ।
 संकिलेसकरं ठाणं, द्वरओ परिवज्जए ॥१६॥
 पडिक्कुट्ट-कुलं न पविसे, सामयं परिवज्जए ।
 अच्चियत्त-कुलं न पविसे, चियत्तं पविसे कुलं ॥१७॥
 साणीपावारपिहियं, अप्पणा नावयंगुरे ।
 कवाडं नो पणोल्लेज्जा, ओग्गहंसि अजाइया ॥१८॥

गोयरगपविट्ठो उ, वच्च-मुत्तं न धारए ।
 ओगासं फासुयं नच्चा, अणुन्नविय वोसिरे ॥१९॥
 नीयं दुवारं तमसं, कोट्ठगं परिवज्जए ।
 अच्चक्खुविसओ जत्थ, पाणा दुप्पडिलेहगा ॥२०॥
 जत्थ पुप्फाइं बीयाइं, विप्पइण्णाइं कोट्ठए ।
 अहुणोवलित्तं उल्लं, वट्ठूणं परिवज्जए ॥२१॥
 एत्तगं दारगं साणं, घच्छगं वावि कोट्ठए ।
 उल्लंघिया न पविसे, विऊहिताण व संजए ॥२२॥
 असंसत्तं पलोएज्जा, नाइदूरावल्लोयए ।
 उप्पुल्लं न विनिज्जाए, नियट्ठिज्ज अयंपिरो ॥२३॥
 अइभूमिं न गच्छेज्जा, गोयरगगओ मुणी ।
 कुलस्स भूमिं जाणित्ता, मिय-भूमिं परक्कमे ॥२४॥
 तत्थेव पडिलेहिज्जा, भूमिभागं वियक्खणो ।
 सिणाणस्स य वच्चस्स, संलोगं परिवज्जए ॥२५॥
 दगमट्ठियआयाणं, बीयाणि हरियाणि य ।
 परिवज्जंतो चिट्ठेज्जा, सौव्वदियसमाहिए ॥२६॥
 तत्थ से चिट्ठमाणस्स, आहरे पाणभोयणं ।
 अकप्पियं न गेण्हिज्जा, पडिगाहेज्ज कप्पियं ॥२७॥
 आहरंती सिया तत्थ, परिसाडेज्ज भोयणं ।
 वित्तिं पडियाइक्खे, न मे कप्पइ तारिसं ॥२८॥

संमदमाणी पाणाणि, बीयाणि हरियाणि य ।
 असंजमकरि नच्चा, तारिसं परिवज्जए ॥२९॥
 साहदु निक्खिवित्ताणं, सचित्तं घट्टियाणि य ।
 तहेव समणद्वाए, उदगं संपणोल्लिया ॥३०॥
 ओगाहइत्ता चलइत्ता, आहरे पाणभोयणं ।
 दितियं पडियाइक्खे, न मे कप्पइ तारिसं ॥३१॥
 पुरेकम्मेण हत्थेण, दव्वीए भायणेण वा ।
 दितियं पडियाइक्खे, न मे कप्पइ तारिसं ॥३२॥
 एवं उदउल्ले ससिणिढ्ढे, ससरक्खे मट्टियाऊत्ते ।
 हरियाले हिगुलए, मणोसिला अंजणे लोणे ॥३३॥
 गेरुय-वण्णिय-सेट्ठिय, सोरट्टिय-पिटु-कुक्कुस-कए य ।
 उक्किट्ठमसंसट्ठे, संसट्ठे चेव वोढव्वे ॥३४॥
 अमसट्ठेण हत्थेण, दव्वीए भायणेण वा ।
 दिज्जमाणं न इच्छिज्जजा, पच्छा-कम्मं जहिं भवे ॥३५॥
 संसट्ठेण य हत्थेण, दव्वीए भायणेण वा ।
 दिज्जमाणं पडिच्छिज्जजा, जं तत्थेसणियं भवे ॥३६॥
 दोण्हं तु भुंजमाणाणं, एगो तत्थ निमंतए ।
 दिज्जमाणं न इच्छेज्जजा, छंदे से पडिलेहए ॥३७॥
 दोण्हं तु भुंजमाणाणं, दो वि तत्थ निमंतए ।
 दिज्जमाणं पडिच्छेज्जजा, जं तत्थेसणियं भवे ॥३८॥

गुव्विणीए उवन्नत्थं, विविह पाणभोयणं ।
 भुंजमाणं विवज्जेज्जा, भुत्तसेस पडिच्छए ॥३९॥
 सिया य समणट्ठाए, गुव्विणी कालमासिणी ।
 उट्ठिया वा निसीएज्जा, निससा वा पुण्डुए ॥४०॥
 तं भवे भत्तपाणं तु, संजयाण अकप्पियं ।
 दितियं पडियाइक्खे, न मे कप्पइ तारिसं ॥४१॥
 थणमं पिज्जमाणो, दारमं वा कुमारियं ।
 तं निक्खविअ रोअंतं, आहरे पाणभोयणं ॥४२॥
 तं भवे भत्तपाणं तु, संजयाण अकप्पियं ।
 दितियं पडियाइक्खे, न मे कप्पइ तारिसं ॥४३॥
 जं भवे भत्तपाणं तु, कप्पाकप्पम्मि संकियं ।
 दितियं पडियाइक्खे, न मे कप्पइ तारिसं ॥४४॥
 दग्गवारएण पिहियं, नीसाए पोहएण वा ।
 लोहेणं वा वि लेवेण, सिलेसेण व केणइ ॥४५॥
 तं च उट्ठिअदिआ दिज्जा, समणट्ठाए व दावए ।
 दितियं पडियाइक्खे, न मे कप्पइ तारिसं ॥४६॥
 असणं पाणमं वा वि, छाइमं साइमं तहा ।
 जं जाणेज्ज सुणेज्जा वा, दाणट्ठा पगडं इमं ॥४७॥
 तं भवे भत्तपाणं तु, संजयाण अकप्पियं ।
 दितियं पडियाइक्खे, न मे कप्पइ तारिसं ॥४८॥

असणं पाणगं वा वि, खाइमं साइमं तहा ।

जं जाणेज्ज सुणेज्जा वा, पुण्णट्ठा पगडं इमं ॥४९॥

तं भवे भत्तपाणं तु, संजयाण अकप्पियं ।

दितियं पडियाइक्खे, न मे कप्पइ तारिसं ॥५०॥

असणं पाणगं वा वि, खाइमं साइमं तहा ।

जं जाणेज्ज सुणेज्जा वा, वणिमट्ठा पगडं इमं ॥५१॥

तं भवे भत्तपाणं तु, संजयाण अकप्पियं ।

दितियं पडियाइक्खे, न मे कप्पइ तारिसं ॥५२॥

असणं पाणगं वा वि, खाइमं साइमं तहा ।

जं जाणेज्ज सुणेज्जा वा, समणट्ठा पगडं इमं ॥५३॥

तं भवे भत्तपाणं, तु संजयाण अकप्पियं ।

दितियं पडियाइक्खे, न मे कप्पइ तारिसं ॥५४॥

उद्देसियं कीयगडं, पूईकम्मं च आहडं ।

अज्झोयर पामिच्चं, भीसजायं च वज्जए ॥५५॥

उगमंसे अ पुच्छेज्जा, कस्सट्ठा केण वा कडं ।

सोच्चा निस्सकियं सुद्धं, पडिगाहेज्ज संजए ॥५६॥

असणं पाणगं वा वि, खाइमं साइमं तहा ।

पुप्फेसु होज्ज उम्मीसं, वीएसु हरिएसु वा ॥५७॥

तं भवे भत्तपाणं तु, संजयाण अकप्पियं ।

दितियं पडियाइक्खे, न मे कप्पइ तारिसं ॥५८॥

असणं पाणगं वा वि, खाइमं साइमं तहा ।

उदगंमि होज्ज निक्खित्तं उत्तिग-पण्णेषु वा ॥५९॥

तं भवे भत्तपाणं तु, संजयाण अकप्पियं ।

दितियं पडियाइक्खे, न मे कप्पइ तारिसं ॥६०॥

असणं पाणगं वा वि, खाइमं साइमं तहा ।

तेउम्मि होज्ज निक्खित्तं, तं च संघट्टिया दए ॥६१॥

तं भवे भत्तपाणं तु, संजयाण अकप्पियं ।

दितियं पडियाइक्खे, न मे कप्पइ तारिसं ॥६२॥

एवं उस्सविकिया ओसविकिया, उज्जालिया पज्जालिया निब्बाविया ।

उस्सिचिया निस्सिचिया, ओवत्तिया ओयारिया दए ॥६३॥

तं भवे भत्तपाणं तु, संजयाण अकप्पियं ।

दितियं पडियाइक्खे, न मे कप्पइ तारिसं ॥६४॥

होज्ज कट्ठं सिलं वा वि, इट्ठालं वा वि एगया ।

ठवियं संकमट्ठाए, तं च होज्ज जलाचलं ॥६५॥

न तेण भिव्खू गच्छेज्जा, दिट्ठो तत्थ असंजमो ।

गंभीरं झुसिरं चेव, सव्विदिय समाहिं ॥६६॥

निस्सेणि फलगं पोढं, उस्सवित्ताणमारुहे ।

मंचं कौलं, च पासायं, समणट्ठाए व दावए ॥६७॥

दूरुहमाणी पवडेज्जा, हत्थं पायं व लूसए ।

पुडविजीवे वि हिंसेज्जा, जे य तं निस्सिया जगा ॥६८॥

एयारिसे महादोसे, जाणिऊण महेसिणो ।
 तम्हा मालोहडं भिक्खं, न पडिगिण्हंति संजया ॥६९॥
 कंद मूलं पलवं वा, आमं छिन्नं च सन्निरं ।
 तुंबागं सिंगवेरं च, आमगं परिवज्जए ॥७०॥
 तहेव सत्तु-चुण्णाइ, कोल-चुण्णाइ आवणे ।
 सबकुलं फाणिय पूयं, अन्नं वा वि तहाविहं ॥७१॥
 विक्कायमाणं पसढ, रएण परिफासिय ।
 दितियं पडियाइक्खे, न मे कप्पइ तारिस ॥७२॥
 बहुअट्ठियं पुग्गल, अणिमिस वा बहुकंटयं ।
 अत्थियं तिंदुयं विल्ल, उच्छुखंडं च सिवालं ॥७३॥
 अप्पे सिया भोयणजाए, बहुउज्झयधम्मिए ।
 दितियं पडियाइक्खे, न मे कप्पइ तारिस ॥७४॥
 तहेवुच्चावय पाणं, अदुवा वारधोअण ।
 संसेइमं चाउलोदग, अहुणाधोय विवज्जए ॥७५॥
 जं जाणेज्ज चिराधोयं, मईए दंसणेण वा ।
 पडिपुच्छिऊण सोच्चा वा, जं च निस्संकिं भवे ॥७६॥
 अजीवं परिणयं नच्चा, पडिगाहेज्ज संजए ।
 अह संकिं भवेज्जा, आसाइत्ताण रोयए ॥७७॥
 थोवमासायणट्ठाए, हत्थगम्मि दलाहि मे ।
 मा मे अच्चंबिल पूइं, नालं तण

त च अच्चबिलं पूइ, नालं तण्ह विणित्तए ।
 दितिय पडियाइवळे, न मे कप्पइ तारिसं ॥७९॥
 त च होज्ज अकामेण, विमणेण पडिच्छिय ।
 त अप्पणा न पिवे, नो वि अन्नस्स दावए ॥८०॥
 एगंतमवक्कमित्ता, अचित्तं पडिलेहिया ।
 जयं परिट्ठवेज्जा, परिट्ठप्प पडिवक्कमे ॥८१॥
 सिया य गोयरग्गओ, इच्छेज्जा परिभोत्तुअ ।
 कोट्ठग भित्तिमूल वा, पडिलेहित्ताण फासुय ॥८२॥
 अणुन्नवित्तु मेहावी, पडिच्छन्नम्मि संवुडे ।
 हत्थग सपमज्जित्ता, तत्थ भुजेज्ज सजए ॥८३॥
 तत्थ से भुजमाणस्स, अट्ठिय कटओ सिया ।
 तण-कट्ट-सक्कर वा वि, अन्न वा वि तहाविहं ॥८४॥
 त उक्खिवित्तु न निक्खिवे, आसएण न छट्टए ।
 हत्थेण त गहेअण, एगंतमवक्कमे ॥८५॥
 एगंतमवक्कमित्ता, अचित्त पडिलेहिया ।
 जय परिट्ठवेज्जा, परिट्ठप्प पडिवक्कमे ॥८६॥
 सिया य भिक्खू इच्छेज्जा, सेज्जमागम्म भोत्तुअ ।
 सर्पिडपायमागम्म, उ डुअ पडिलेहिया ॥८७॥
 विणएण पविसित्ता, सगासे गुरुणो मुणी ।
 इरियावहियमापाय, आगओ य पडिवक्कमे ॥८८॥

आभोएत्ताण नीसेस, अइयारं जहक्कमं ।
 गमणागमणे चेव, भत्तपाणे य संजए ॥८९॥
 उज्जुप्पन्नो अणुव्विग्गो, अक्खक्खित्तेण चयेसा ।
 आलोए गुरुसगासे, जं जहा गहिय भवे ॥९०॥
 न सम्ममालोइयं होज्जा, पुंविं पच्छा व जं कडं ।
 पुणो पडिक्कमे तस्स, वोसिट्ठो चित्तए इमं ॥९१॥
 अहो जिणेहिअसावज्जा, वित्ती साहूण देसिया ।
 मोक्खसाहणहेउस्स, साहुदेहस्स धारणा ॥९२॥
 नमोक्कारेण पारेत्ता, करेत्ता जिणसंथवं ।
 सज्झायं पट्टवित्ताण, वीसमेज्ज खणं मुणो ॥९३॥
 वीसमंतो इमं चित्ते, हियमट्ठं लाभमट्ठिओ ।
 जइ मे अणुग्गहं कुज्जा, साहू होज्जामि तारिओ ॥९४॥
 साहवो तो चियत्तेण, निमतेज्ज जहक्कमं ।
 जइ तत्थ केइ इच्छेजा, तेहिं सट्ठि तु भुंजए ॥९५॥
 अह कोइ न इच्छेज्जा, तओ भुंजेज्ज एक्कओ ।
 आलोए भायणे साहू, जयं अपरिसाडिय ॥९६॥
 तित्तणं व कडुय व कसाय, अविल व महुरं लवणं वा ।
 एयलद्धमन्नट्ठपउत्तं, महु-घय व भुंजेज्ज संजए ॥९७॥
 अरसं विरसं वा वि, सूइयं वा असूइयं ।
 उल्लं वा जइ वा सुक्कं, मयूकुम्मासभोयणं ॥९८॥

उप्पन्न नाइहीलेज्जा, अप्पं पि बहु फासुयं ।
 मुहालद्धं मुहाजीवी, भुंजिज्जा दोसवज्जियं ॥९९॥
 दुल्लहा उ मुहादाई, मुहाजीवी वि दुल्लहा ।
 मुहादाई मुहाजीवी, दो वि गच्छंति सुग्गइ ॥१००॥
 ॥त्ति बेमि ॥

पंचममज्झयणे--बीओ उट्ठेसो

पडिग्गहं संलिहित्ताणं, लेवमायाए संजए ।
 दुग्गंधं वा सुग्गंधं वा, सव्वं भुंजे न छड्डुए ॥ १ ॥
 सेज्जा निसीहियाए, समावन्नो य गोयरे ।
 अयावयट्ठा भोच्चाण, जइ तेण न संथरे ॥ २ ॥
 तओ कारणसुप्पन्ने, भत्तपाणं गवेसए ।
 विहिणा पुव्वउत्तेण, इमेणं उत्तरेण य ॥ ३ ॥
 कालेण निक्खमे भिक्खू, कालेण य पडिक्कमे ।
 अकालं च विवज्जित्ता, काले काल समायरे ॥ ४ ॥
 अकाले चरसि भिक्खू, कालं न पडिलेहसि ।
 अप्पाणं च किलामेसि, सन्निवेसं च गरिहसि ॥ ५ ॥

सइ काले चरे भिक्खू, कुज्जा पुरिसकारियं ।
 अलाभो त्ति न सोएज्जा, तवो त्ति अहियासए ॥ ६ ॥
 तहेवुच्चावया पाणा, भत्तट्ठाए समागया ।
 तं उज्जुयं न गच्छेज्जा, जयमेव परक्कमे ॥ ७ ॥
 गोयरग्गपविट्ठो उ, न निसीयज्ज कत्थइ ।
 कहं च न पवधेज्जा, चिट्ठित्ताण व संजए ॥ ८ ॥
 अग्गलं फलिहं दारं, कवाडं वा वि संजए ।
 अवलंबिया न चिट्ठेज्जा, गोयरग्गओ मुणी ॥ ९ ॥
 समणं माहणं वा वि, किविणं वा वणीमगं ।
 उवसंक्रमंतं भत्तट्ठा, पाणट्ठाए व संजए ॥ १० ॥
 तं अइक्कमित्तु न पविसे, न चिट्ठे चक्खुगोयरे ।
 एगंतमवक्कमित्ता, तत्थ चिट्ठेज्ज संजए ॥ ११ ॥
 वणीमगस्स वा तस्स, दायगस्सुभयस्स वा ।
 अप्पत्तिय सिया होज्जा, लहुत्तं पवयणस्स वा ॥ १२ ॥
 पडित्तेहिए व दिन्ने वा, तओ तम्मि नियत्तिए ।
 उवसक्कमेज्ज भत्तट्ठा, पाणट्ठाए व संजए ॥ १३ ॥
 उप्पलं पउमं वा वि, कुमुयं वा मगदंतियं ।
 अन्न वा पुप्फसच्चित्तं, तं च सलुंबिया दए ॥ १४ ॥
 त भवे भत्तपाण तु, संजयाण अकप्पिय ।
 दित्तियं पडियाइक्खे, न मे कप्पइ तारिसं ॥ १५ ॥

उप्पलं पउमं वा वि, कुमुयं वा मगदंतियं ।
 अन्नं वा पुप्फसचित्तं, तं च संमद्दिया दए ॥१६॥
 तं भवे भत्तपाणं तु, संजयाण अकप्पियं ।
 दितियं पडियाइक्खे, न मे कप्पइ तारिसं ॥१७॥
 सालुयं वा विरालियं, कुमुयं उप्पलनालियं ।
 मुणालियं सासवनालिय, उच्छुखंडं अनिव्वुडं ॥१८॥
 तरुणं वा पवाल, रुक्खस्स तणगस्स वा ।
 अन्नस्स वा वि हरियस्स, आमगं परिवज्जए ॥१९॥
 तरुणियं वा छिवाडिं, आमियं भज्जियं सइ ।
 दितियं पडियाइक्खे, न मे कप्पइ तारिसं ॥२०॥
 तहा कोलमणुत्तिस्स, वेलुय कासवनालियं ।
 तिलपप्पडगं नीमं, आमग परिवज्जए ॥२१॥
 तहेव चाउलं पिट्ठं, वियड वा तत्तनिव्वुड ।
 तिलपिट्ठ-पूइपिण्णागं, आमग परिवज्जए ॥२२॥
 कविट्ठं माउलिंगं च, मूलगं मूलगतियं ।
 आमं असत्थपरिणय, मणसा वि न पत्थए ॥२३॥
 तहेव फलमंथूणि, वीयमंथूणि जाणिया ।
 बिहेलगं पियालं च, आमगं परिवज्जए ॥२४॥
 समुयाणं चरे भिक्खू, कुलं उच्चावयं सया ।
 नीयं कुलमइवकस्म, ऊसढं नाभिधारए ॥२५॥

अदीणो वित्तिमेसेज्जा, न विसीएज्ज पंडिए ।
अमुच्छिओ भोयणम्मि, मायन्ने एसणारए ॥२६॥

बहुं परघरे अत्थि, विविहं खाइमसाइमं ।
न तत्थ पंडिओ कुप्पे, इच्छा देज्ज परो न वा ॥२७॥

सयणासणवत्थं वा, भत्त-पाणं व संजए ।
अदितस्स न कुप्पेज्जा, पच्चक्खे वि य दीसओ ॥२८॥

इत्थियं पुरिसं वा वि, डहरं वा महल्लगं ।
वंदमाणो न जाएज्जा, नो य ण फरुसं वए ॥२९॥

जे न वंदे न से कुप्पे, वंदिओ न समुक्कसे ।
एवमन्नेसमाणस्स, सामण्णमणुचिद्वइ ॥३०॥

सिया एगइओ लद्धं, लोभेण विणिगूहइ ।
मा मेयं दाइयं संतं, दट्ठणं सयमायए ॥३१॥

अत्तद्व गुरुओ लुद्धो, बहुं पावं पकुव्वइ ।
दुत्तोसओ य से होइ, निव्वाणं च न गच्छइ ॥३२॥

सिया एगइओ लद्धु, विविहं पाणभोयणं ।
भद्दग भद्दगं भोच्चा, विवण्णं विरसमाहरे ॥३३॥

जाणंतु ता इमे समणा, आययट्ठी अयं मुणी ।
संतुट्ठो सेवए पंतं, लूहवित्ती सुत्तोसओ ॥३४॥

पूयणट्ठी जसोकामी, माण-संसाणकामए ।

बहुं पसवइ पावं, मायासल्लं च कुव्वइ ॥३५॥

दसवेअलियसुत्त

सुरं वा मेरुं वा वि, अन्नं वा मज्जं रसं ।
 ससक्खं न पिवे भिक्खू, जसं सारक्खमप्यणो ॥३६॥
 पियइ एगओ तेणो, न मे कोई वियाणइ ।
 तस्स पस्सह दोसाइ, निर्याडि च सुणेह मे ॥३७॥
 वड्ढइ सोडिया तस्स, मायामोस च भिक्खुणो ।
 अयसो य अनिव्वाण, सययं च असाहुया ॥३८॥
 निच्चुविगो जहा तेणो, अत्तकम्मोहिं दुम्मई ।
 तारिसो मरणंते वि, नाराहेइ संवर ॥३९॥
 आयरिए नाराहेइ, समणे यावि तारिसे ।
 गिहत्था वि णं गरिहति, जेण जाणंति तारिसं ॥४०॥
 एवं तु अगुणप्येही, गुणाण च विवज्जओ ।
 तारिसो मरणंते वि, नाराहेइ संवर ॥४१॥
 तवं कुव्वइ मेहावी, पणीयं वज्जए रस ।
 मज्ज-प्पमायविरओ, तवस्सी अइउवकसो ॥४२॥
 तस्स पस्सह कल्लाण, अणेगसाहुपूइयं ।
 विडल अत्थसंजुत्त, कित्तइस्सं सुणेह मे ॥४३॥
 एवं तु गुणप्येही, अगुणाण च विवज्जओ ।
 तारिसो मरणंते वि, आराहेइ संवर ॥४४॥
 आयरिए आराहेइ, समणे यावि तारिसे ।
 गिहत्था वि णं पूर्यंति, जेण जाणंति तारिसं ॥४५॥

तवतेणे वयतेणे, रुवतेणे य जे नरे ।
 आयारभावतेणे य, कुव्वइ देवकिव्विसं ॥४६॥
 लद्धूण वि देवत्तं, उववन्नो देवकिव्विसे ।
 तत्था वि से न याणाइ, कि मे किच्चा इमं फलं ॥४७॥
 तत्तो वि से चइत्ताणं, लब्धिही एलमूअयं ।
 नरयं तिरिक्खजोणिं वा, वोही जत्थ सुदुल्लहा ॥४८॥
 एयं च दोसं दट्ठूणं, नायपुत्तेण भासियं ।
 अणुमायं पि मेहावी, मायामोसं विवज्जए ॥४९॥

सिक्खिऊण भिक्खेसणसोहि,
 संजयाण बुद्धाण सगासे ।
 तत्थ भिक्खु सुप्पणिहिइंदिए,
 तिच्चलज्जगुणवं-विहरेज्जासि ॥५०॥ त्ति वेमि ॥

अह महायार कहा नामं छट्ठमज्झयणं
 (धम्मत्यकाम)

नाण-दसण-सपन्नं संजमे य तवे रयं ।
 गणिमागमसंपन्न, उज्जाणम्मि समोसदं ॥ १ ॥
 रायाणो रायमच्चा य, माहणा अदुव खत्तिया ।
 पुच्छंति निहूयप्पाणो, कहं भे आयारगोयरो ॥ २ ॥

तेसँ सो निहुओ दंतो, सव्वभूयसुहावहो ।
 सिक्खाए सुसमाउत्तो, आइक्खइ वियक्खणो ॥ ३ ॥
 हँदि धम्मत्थकामाणं, निगंथाण सुणेह मे ।
 आयागोयर भीम, सयलं दुरहिट्ठियं ॥ ४ ॥
 नन्नत्थ एरिस वुत्तं, ज लोए परमदुच्चरं ।
 विउलट्ठाणभाइस्स, न भूयं न भविस्सइ ॥ ५ ॥
 सखुडुगवियत्ताणं वाहियाणं च जे गुणा ।
 अखंडफुडिया कायव्वा तं सुणेह जहा तहा ॥ ६ ॥
 दस अट्ठ य ठाणाइं, जाइं वालोऽवरज्झइ ।
 तत्थ अण्णयरे ठाणे, निगंथत्ताओ भत्तइ ॥ ७ ॥

वयछक्कं,^६ कायछक्कं,^{१३} अक्कप्पो^{१३} गिहिभायणं^{१४} ।
 पलियं^{१५} निसेज्जा^{१५} य, सिणाणं^{१७} सोहवज्जणं^{१८} ॥ ८ ॥
 (१) तत्थिसं पढमं ठाणं, महावीरेण देसियं ।
 अहिंसा निउण दिट्ठा, सव्वभूएसु संजमो ॥ ९ ॥
 जावति लोए पाणा, तसा अदुव थावरा ।
 ते जाणसजाणं वा, न हणे नो वि घायए ॥ १० ॥
 सव्वे जीवा वि इच्छंति, जीविउ न सरिज्जिउं ।
 तम्हा पाणवहं घोरं, निगंथा वज्जयंति णं ॥ ११ ॥
 (२) अप्पणट्ठा परट्ठा वा, कोहा वा जइ वा भया ।
 हिंसणं न सुसं वूया, नो वि अन्नं वयावए ॥ १२ ॥

मुसावाओ य लोगंमि, सब्बसाहूहि गरहिओ ।
अविस्सासो य भूयाणं, तम्हा मोसं विवज्जए ॥१३॥

(३) चित्तमंतमचित्त वा, अप्पं वा जइ वा वहं ।
दंतसोहणमेत्तं पि, ओगहसि अजाइया ॥१४॥

तं अप्पणा न गेण्हंति, नो वि गिण्हावए परं ।
अन्नं वा गिण्हमाणं पि, नाणुजाणंति संजया ॥१५॥

(४) अबंभचरिय घोरं, पमायं दुरहिद्वियं ।
नायरंति मुणी लोए, भेयाययणवज्जिणो ॥१६॥

मूलमेयमहम्मस्स, महादोससमुत्तयं ।
तम्हा मेहुणससगं, निगंथा वज्जयंति णं ॥१७॥

(५) विडमुब्भेइमं लोण, तेल्लं सप्पि च फाणियं ।
न ते सन्निहिमिच्छंति, नायपुत्त-वओरया ॥१८॥

लोहस्सेस अणुप्फासो, मन्ने अन्नयरामवि ।
जे सिया सन्निहीकामे, गिही पव्वइए न से ॥१९॥

जं पि वत्थं व पायं वा, कवलं पायपुंछणं ।
तं पि संजमलज्जट्ठा, धारति परिहरंति य ॥२०॥

न सो परिगहो वुत्तो, नायपुत्तेण ताइणा ।
मुच्छा परिगहो वुत्तो, इइ वुत्तं महेसिणा ॥२१॥

सच्चत्थुवहिणा बुद्धा, संरक्खणपरिगहे ।
अवि अप्पणो वि देहंमि, नायरंति ममाइयं ॥२२॥

(६) अहो निच्चं तवोक्कम्मं, सव्ववुद्धेहि वणिण्य ।

जा य लज्जासमा वित्ती, एगभत्तं च भोयणं ॥२३॥

संतिमे सुहुमा पाणा, तस्सा अदुव थावरा ।

जाइं राओ अपासंतो, कहमेसणियं चरे ॥२४॥

उदउल्लं वीयसंसत्तं, पाणा निव्वडिया मंहि ।

दिआ ताइं विवज्जेज्जा, राओ तत्थ कहं चरे ॥२५॥

एयं च दोसं दट्ठणं, नायपुत्तेण भासियं ।

सव्वाहारं न भुंजंति; निग्गंथा राइभोयणं ॥२६॥

(१) पुढक्कायं न हिंसंति, मणसा वयसा कायसा ।

तिविहेण करणजोएण, संजया सुसमाहिया ॥२७॥

पुढक्कायं विहिंसंतो, हिंसइ उ तयस्सिए ।

तसे य विविहे पाणे, चक्खुसे य अचक्खुसे ॥२८॥

तम्हा एयं वियाणित्ता, दोसं दुग्गाइवड्ढणं ।

पुढक्कायसमारंभं, जावज्जीवाए वज्जए ॥२९॥

(२) आउकायं न हिंसंति, मणसा वयसा कायसा ।

तिविहेण करणजोएण, संजया सुसमाहिया ॥३०॥

आउकायं विहिंसंतो, हिंसइ उ तयस्सिए ।

तसे य विविहे पाणे, चक्खुसे य अचक्खुसे ॥३१॥

तम्हा एयं वियाणित्ता, दोसं दुग्गाइवड्ढणं ।

आउकायसमारंभं, जावज्जीवाए वज्जए ॥३२॥

- (३) जायतेयं न इच्छन्ति, पावगं जलइत्तए ।
 तिक्खमन्नयरं सत्थं, सव्वओ वि दुरासयं ॥३३॥
 पाईणं पडिणं वा वि, उड्ढं अणुदिसामवि ।
 अहे दाहिणओ वा वि, दहे उत्तरओ वि य ॥३४॥
 भूयाणमेसमाघाओ, हव्ववाहो न ससओ ।
 तं पईवपयावट्ठा, संजया किञ्चि नारभे ॥३५॥
 तम्हा एयं वियाणित्ता, दोसं दुग्गइवड्ढण ।
 तेउकायसमारंभं, जावज्जीवाए वज्जए ॥३६॥
 अनिलस्स समारंभं, बुद्धा मन्नन्ति तारिसं ।
 सावज्जबहुल चेयं, नेय ताईहिं सेवियं ॥३७॥
 (४) तालियंटेण पत्तेण साहाविहुयणेण वा ।
 न ते वोइउमिच्छन्ति वोयावेऊण वा परं ॥३८॥
 ज पि वत्थं व पाय वा कंवल पायपुंछणं ।
 न ते वायमुईरति, जयं परिहरति य ॥३९॥
 तम्हा, एयं वियाणित्ता, दोसं दुग्गइवड्ढणं ।
 वाउकायसमारंभं जावज्जीवाए वज्जए ॥४०॥
 (५) वणस्सइं न हिंसन्ति, भणसा वयस कायसा ।
 त्तिविहेण करणजोएण, सजया सुत्तमाहिया ॥४१॥
 वणस्सइं विहिंसन्तो हिंसइ उ तयत्तिए ।
 तसे य विविहे पाणे, चक्खुसे य अचक्खुसे ॥४२॥

तम्हा एयं वियाणित्ता, दोसं दुग्गइवड्ढणं ।
वणस्सइ-समारंभं, जावज्जीवाए वज्जए ॥४३॥

(६-१२) तसकाय न हिंसति, मणसा वयस कायसा ।
तिविहेण करणजोएण, संजया सुसमाहिया ॥४४॥

तसकाय विहिंसतो, हिंसइ उ तयस्सिए ।
तसे य विविहे पाणे, चवखुसे य अचवखुसे ॥४५॥

तम्हा एय वियाणित्ता, दोसं दुग्गइवड्ढणं ।
तसकायसमारंभं, जावज्जीवाए वज्जए ॥४६॥

(१२) जाइं चत्तारिओज्जाइ,इसिणाहारमाइणि ।
ताइं तु विवज्जंतो, सजमं अणुपालए ॥४७॥

पिंडं^१ सेज्जं^२ च वत्थं^३ च, चउत्थ पायमेव^४ य ।
अकप्पियं न इच्छेज्जा, पडिगाहेज्ज कप्पिये ॥४८॥

जे नियास ममार्यति, कीयमुद्देसियाहड ।
वह ते समणुजाणति, इइ वुत्तं महेसिणा ॥४९॥

तम्हा असणपाणाइ, कीयमुद्देसियाहडं ।
वज्जयति ठियसप्पाणो, निग्गथा धम्मजीविणो ॥५०॥

(१४) कंसेसु कंसपाएसु, कुंडमोएसु वा पुणो ।
भुजंतो असणपाणाइं आपारा परिभस्सइ ॥५१॥

सीओदगसमारंभे, भत्तघोषणछट्ठणे ।
जाइं छणंति भूपाइं, दिट्ठो तत्थ असंजमो ॥५२॥

पच्छाकम्म पुरेकम्म, सिया तत्थ न कप्पइ ।

एयमट्ठं न भुञ्जति, निगंथा गिहिभायणे ॥५३॥

(१५) आसदीपलियकेसु, मंचमासालएसु वा ।

अणायरियमज्जाणं, आसइत्तु सइत्तु वा ॥५४॥

नासंदीपलियकेसु, न निस्सेज्जा पीढए ।

निगंथाऽपडिलेहाए, बुद्धवुत्तमहिट्ठगा ॥५५॥

गंभीरविजया एए, पाणा दुप्पडिलेहा ।

आसदीपलियंको य, एयमट्ठ विवज्जिया ॥५६॥

(१६) गोथरगपविट्ठस्स, निस्सेज्जा जस्स कप्पइ ।

इमेरिसमणायार, आवज्जइ अवोहियं ॥५७॥

विवत्ती वंभचेरस्स, पाणाणं च वहे व्हो ।

वणीमगपडिग्धाओ, पडिकोहो अगारिणं ॥५८॥

अगुत्ती वंभचेरस्स, इत्थीओ वावि संकणं ।

कुसीलवड्ढणं ठाणं, दूरओ परिवज्जए ॥५९॥

तिण्हमन्नयरागस्स, निस्सेज्जा जस्स कप्पइ ।

जराए अभिभूयस्स^१ वाहियस्स^२ तवस्सिणो^३ ॥६०॥

(१७) वाहिओ वा अरोगी वा, सिणाण जो उ पत्थए ।

बुक्कंतो होइ आयारो, जढो हवइ सजमो ॥६१॥

संतिमे सुहुमा पाणा, घसासु भिलगासु य ।

जे उ भिक्खू सिणायंती, सीएण उसिणेण वा ॥६२॥

तम्हा ते न सिणायति, सीएण उप्पिणेण वा ।
 जावज्जीवं वय घोरे, असिणाणमहिट्ठगा ॥६३॥
 सिणाणं अदुवा कक्कं, लोद्धं पउमगाणि य ।
 गायस्सुवट्ठणट्ठाए, नायरंति कयाइ वि ॥६४॥
 (१८) नग्गिणस्स वा वि भुंढस्स, दीहरोमनहसिणो ।
 मेहुणा उवसंतस्स, किं विभूसाए कारियं ॥६५॥
 विभूसावत्तियं भिक्खू कम्म बंधइ चिक्कण ।
 संसारसायरे घोरे, जेण पडइ दुरुत्तरे ॥६६॥
 विभूसावत्तियं चेय, बुद्धा मत्तंति तारिस्स ।
 सावज्जं-बहुल चेय, नेयं ताईहं सेवियं ॥६७॥

खर्वेति अप्पाणममोहवसिणो,
 तवे रया सजमअज्जवे गुणे ।
 धुणति पावाइं पुरेकडाइ,
 नवाइ पावाइं न ते करेति ॥६८॥

सओवसंता असमा आक्किचणा,
 सविज्जविज्जाणुगया जससिणो ।
 उउप्पसन्ने विमले व चदिमा,
 सिद्धिं विमाणाइं उर्वेति ताइणो ॥६९॥
 ॥ त्ति वेमि ॥

अह वक्कसुद्धी नामं सत्तममज्झयणं

चउण्हं खलु भासाणं, परिसंखाय पण्णवं ।
दोण्हं तु विणयं सिक्खे, दो न भासेज्ज सव्वसो ॥ १ ॥
जा य सच्चा अवत्तव्वा, सच्चामोसा य जा मुसा ।
जा य बुद्धेहिण्णाइण्णा, न तं भासेज्ज पन्नवं ॥ २ ॥
असच्चमोसं सच्चं च, अणवज्जमकवकसं ।
समुप्पेहमसंदिद्धं, गिरं भासेज्ज पन्नवं ॥ ३ ॥
एयं च अट्टमन्नं वा, जं तु नामेइ सासयं ।
स भासं सच्चमोसं पि, त पि धीरो विवज्जए ॥ ४ ॥
बित्थं पि तहामुत्ति, ज गिरं भासए नरो ।
तम्हा सो पुट्ठो पावेणं, किं पुण जो मुसं वए ॥ ५ ॥
तम्हा गच्छामो वक्खामो, अमुगं वा णे भविस्सइ ।
अहं वा ण करिस्सामि, एसो वा णं करिस्सइ ॥ ६ ॥
एवमाइ उ जा भासा, एसकालम्मि संकिया ।
संपयाईयमट्ठे वा, तं पि धीरो विवज्जए ॥ ७ ॥
अईयम्मि य कालम्मि, पच्चुप्पन्नमणागए ।
जमट्ठं तु न जाणेज्जा, एवमेयं ति नो वए ॥ ८ ॥
अईयम्मि य कालम्मि, पच्चुप्पन्नमणागए ।
जत्थ संका भवे जं तु, एवमेयं ति नो वए ॥ ९ ॥

अईयम्मि व कालम्मि, पच्चुप्पन्नमणामए ।
 निस्संकिंयं भवे जं तु, एवमेयं ति निहिसे ॥१०॥
 तहेव फरुसा भासा, गुरुभूओवघाइणी ।
 सच्चो वि सा न वत्तन्वा, जओ पावस्स आगमो ॥११॥
 तहेव काणं काणे त्ति, पंडगं पंडगे त्ति वा ।
 'वाहियं वा वि रोगि त्ति, तेणं चोरे त्ति नो वए ॥१२॥
 एएणत्तेण अट्ठेण, परो जेणुवहम्मइ ।
 आयारभावदोसन्नू, न तं भासेज्ज पन्नवं ॥१३॥
 तहेव होले गोले त्ति, साणे वा वसुले त्ति य ।
 दमए दूहए वा वि, न तं भासेज्ज पन्नवं ॥१४॥
 अज्जिए पज्जिए वा वि, अम्मो माउसिए त्ति य ।
 पिउसिए भाइणेज्ज त्ति, धुए नत्तुणिए त्ति य ॥१५॥
 हले हले त्ति अन्ने त्ति, मट्ठेसामिणि गोमिणि ।
 होले गोले वसुले त्ति, इत्थिय नेवमालवे ॥१६॥
 नामधेज्जेण ण बूया, इत्थीगोत्तेण वा पुणो ।
 जहारिहमभिगिज्ज, आलवेज्ज लवेज्ज वा ॥१७॥
 अज्जए पज्जए वा वि, वप्पो चुल्लपिउ त्ति य ।
 माउलो भाइणेज्ज त्ति, पुत्ते नत्तुणिय त्ति य ॥१८॥
 हे हो हले त्ति अन्ने त्ति, मट्ठे सामिय गोमिय ।
 होले गोले वसुले त्ति, पुरिसं नेवमालवे ॥१९॥

नामधेज्जेण णं ब्रूया, पुरिसगोत्तेण वा पुणो ।
 जहारिहममिगिज्झ, आलवेज्ज तवेज्ज वा ॥२०॥
 पच्चिदियाणं पाणाणं, एस इत्थी अयं पुमं ।
 जाव णं न विजाणेज्जा, ताव जाइ त्ति आलवे ॥२१॥
 तहेव माणुसं पसुं, पक्खि वा वि सरीसवं ।
 थूले पमेइले वज्झे, पायमिस्सि व नो वए ॥२२॥
 परिवूढत्ति णं ब्रूया, ब्रूया उवचिए त्ति य ।
 संजाए पीणिए वा वि, महाकाए त्ति आलवे ॥२३॥
 तहेव गाओ दोज्झाओ, दम्मा गोरहग त्ति य ।
 वाहिमा रहजोगत्ति, नेवं भासेज्ज पन्नवं ॥२४॥
 जुवं गवे त्ति णं ब्रूया, धेणुं रसदय त्ति य ।
 रहस्से महल्लए वा वि, वए संवहणे त्ति य ॥२५॥
 तहेव गंतुमुज्जाणं, पव्वयाणि वणाणि य ।
 खळा महल्ल पेहाए, नेवं भासेज्ज पन्नवं ॥२६॥
 अल पासायखंभाणं, तोरणाणं गिहाण य ।
 फलिहगलनावाणं, अलं उदगदोणिणं ॥२७॥
 पीढए चंगबेरे य, नंगले मइयं सिया ।
 जंतलट्ठी व नाप्पी वा, गंडिया य अलं सिया ॥२८॥
 भासणं सयणं जाणं, होज्जा वा किच्चुवस्सए ।
 भूओवघाईणि भासं, नेव भासेज्ज पन्नव ॥२९॥

तहेव गतुमुज्जाणं, पक्वयाणि वणाणि य ।
 रुक्खा महल्ल पेहाए, एव भासेज्ज पन्नवं ॥३०॥
 जाइमंता इमे रुक्खा, दीहवट्टा महालया ।
 पयायसाला बिडिमा, बए दरिसणित्ति य ॥३१॥
 तहा फलाइं पक्काइं, पायखज्जाइं नो वए ।
 वेलोइयाइं टालाइं, वेहिमाइं ति नो वए ॥३२॥
 असंथडा इमे अंबा, बहुनिव्वडिमा फला ।
 वएज्ज बहुसंभूया, भूयरुवत्ति वा पुणो ॥३३॥
 तहेवोसहीओ पक्काओ, नीलियाओ छवी इय ।
 लाइमा भज्जिमाओ त्ति, पिहुखज्जत्ति नो वए ॥३४॥
 रुद्धा बहुसंभूया, थिरा ऊसढा वि य ।
 गब्भियाओ पसूयाओ, संसारओ त्ति आलवे ॥३५॥
 तहेव संखाडि नच्चा, किच्चं कज्जं त्ति नो वए ।
 तेणगं वा वि वज्जे त्ति, सुतित्थे त्ति य आवगा ॥३६॥
 सखाडि सखाडि वूया, पणियट्ठत्ति तेणग ।
 बहुसमाणि तित्थाणि आवगाण वियागरे ॥३७॥
 तहा नईओ पुण्णाओ, कायतिज्जत्ति नो वए ।
 नावाहि तारिमाओ त्ति, पाणिपेज्जत्ति नो वए ॥३८॥
 बहुसाहडा अगाहा, बहुसलिलुप्पिलोदगा ।
 बहुवित्थडोदगा यावि, एव भासेज्ज पन्नवं ॥३९॥

तहेव सावज्ज जोगं, परस्सट्ठाए निट्ठियं ।
 कौरमाणं ति वा नच्चा, सावज्जं नालवे मणी ॥४०॥

सुकडे त्ति सुपक्के त्ति, सुच्छिन्नो सुहडे मडे ।
 सुनिट्ठिए सुलट्ठे त्ति, सावज्ज वज्जए मुणी ॥४१॥

पयत्तपक्कत्ति व पक्कमालवे,
 पयत्तछिन्नत्ति व छिन्नमालवे ।

पयत्तलट्ठित्ति व कम्महेउयं,
 पहारगाढत्ति व गाढमालवे ॥४२॥

सव्वक्कसं परगघं वा, अउल नत्थि एरिसं ।
 अविकियमवत्तव्वं, अवियत्तं चेव नो वए ॥४३॥

सव्वमेय वइस्सामि, सव्वमेयं ति नो वए ।
 अणुवीइ सव्वं सव्वत्थ, एव भासेज्ज पन्नव ॥४४॥

सुक्कीय वा सुविककीयं, अकिज्ज किज्जमेव वा ।
 इमं गेण्ह इमं भुंच, पणिय नो वियागरे ॥४५॥

अप्पग्घे वा महग्घे वा, कए वा विक्कए वि वा ।
 पणियट्ठे समुप्पन्ने, अणवज्जं वियागरे ॥४६॥

तहेवासंजयं धोरो, आस एहि करेहि वा ।
 सयं, चिट्ठ, वयाहि त्ति, नेव भासेज्ज पन्नव ॥४७॥

बह्वे इमे असाहू, लोए वुच्चंति साहुणो ।
 न लवे असाहुं साहु त्ति, साहुं साहुत्ति आलवे ॥४८॥

ताण-दंसण-संपन्नं, संजमे य तवे रयं ।
 एवं गुणसमाजत्तं, संजयं साहुमालवे ॥४९॥
 देवाणं मणुयाण च तिरियाणं च वुग्गहे ।
 अमुयाणं जओ होउ, मा वा होउ त्ति नो वए ॥५०॥
 वाओ वुट्ठं व सोउण्हं, खेमं धायं सिबं ति वा ।
 कया णु होज्जा एयाणि, मा वा होउ त्ति नो वए ॥५१॥

तहेव मेहं व ण्हं व माणव,
 न देव देव त्ति गिरं वएज्जा ।
 समुच्छिण्ण उल्लए या पओए,
 वएज्ज वा वुट्ठ बलाहय त्ति ॥५२॥

अतलिक्ख त्ति ण वूया, गुज्झाणुच्चरिय त्ति य ।
 रिद्धिमत्तं नरं दिस्स, रिद्धिमत्तं ति आलवे ॥५३॥

तहेव सावज्जणुमोयणी गिरा,
 ओहारिणी जा य परोवघाइणी ।
 से कोह-लोह-भय-हास-माणओ,
 न हासमाणो वि गिरं वएज्जा ॥५४॥

सुवक्कसुद्धि समुपेहिया मुणी,
 गिरं च वुट्ठं परिवज्जए सया ।
 मियं अवुट्ठं अणुवीए भासए,
 सयाण मज्जे लहइ पसंसणं ॥५५॥

भासाए दोसे य गुणे य जाणिया,
तीसे य दुद्धे परिवज्जए सया ।

छसु संजए सामणिए सया जए,
वएज्ज बुद्धे हियमाणुलोमियं ॥५६॥

परिक्खभासी सुसमाहिइंदिए,
चउक्कसायावगए अणिस्सिए ।

स निद्धणे धुन्नमलं पुरेकड,
आराहए लोयमिणं तहा परं ॥५७॥ त्ति बेमि ॥

अह आयारपणिहि नामं अट्टममज्झयण

आयारपणिहिं लद्धं, जहा कायव्व भिक्खुणा ।
तं भे उदाहरिस्सामि, आणुपुर्व्वि सुणेह मे ॥ १ ॥

पुढवि-वग-अगणि-मारुअ, तणरुक्ख-सवीयगा ।
तसा य पाणा जीव त्ति, इइ वुत्तं महेसिणा ॥ २ ॥

तेसि अच्छणजोएण, निच्च होयव्वय सिया ।
मणसा काय-वक्केण, एव भवइ सजए ॥ ३ ॥

पुढवि भित्ति सिलं लेलुं, नेव भिदे न सलिहे ।
तिविहेण करणजोएण, संजए सुसमाहिए ॥ ४ ॥

सुद्धपुढंवीए न निसीए, ससरक्खम्मि य आसणे ।
ममज्जित्तु निसीएज्जा, जाइत्ता जस्स उग्गहं ॥ ५ ॥

सीओदगं न सेवेज्जा सिलावुद्धं हिमाणि य ।
उत्तिणोदगं तत्तफासुयं, पडिगाहेज्ज संजए ॥ ६ ॥

उदउल्लं अप्पणो काय नेव पुछे न सलिहे ।
सम्मप्येह तहाभूयं, नो ण सघट्टए मुणी ॥ ७ ॥
इंगालं अर्गणि अच्चि, अलायं वा सजोइयं ।
न उंजेज्जा न घट्टेज्जा, नो ण निव्वावए मुणी ॥ ८ ॥

तात्तियंटेण पत्तेण, साहाए विहुणेण वा ।
न बीएज्ज अप्पणो कायं, बाहिरं वा वि पोमलं ॥ ९ ॥

तणरुक्खं न छिदेज्जा, फलं मूलं व कस्सइ ।
आमगं विविहं बीयं, मणसा वि न पत्थए ॥ १० ॥

गणहेसु न चिट्ठेज्जा, बीएसु हरिएसु वा ।
उदगंमि तहा निच्च उत्तिग-पणगेसु वा ॥ ११ ॥

तसे पाणे न हिसेज्जा, वाया अदुव कम्मणा ।
उवरओ सव्वभूएसु, पासेज्ज विविहं जगं ॥ १२ ॥

अट्ठ सुहुमाई पेहाए, जाइ जाणित्तु संजए ।
दयाहिगारी भूएसु, आस चिट्ठ सएहि वा ॥ १३ ॥

कयराई अट्ठ सुहुमाई^१, जाइ पुच्छेज्ज संजए ।
इमाई ताई मेहावी, आइक्खेज्ज वियक्खणे ॥ १४ ॥

— सिणेहं^१ पुप्फसुहुमं^२ च, पाणु^३ त्तिगं^४ तहेव य ।
— बीयं^५ हरियं^६ च, अडसुहुम-च^७ अट्ठमं ॥ १५ ॥

एवमेयाणि जाणित्ता, सव्वभावेण संजए।
 अपमत्ते जए निच्चं, सर्व्विदियसमाहिए॥१६॥
 धुवं च पडिलेहेज्जा, जोगसा पायकंबलं।
 सेज्जमुच्चारभूमि च, संथारं अदुवासणं॥१७॥
 उच्चार, पासवण, खेलं सिघाणजल्लिय।
 फासुयं पडिलेहिता, परिठ्ठावेज्ज संजए॥१८॥
 पविसित्तु परागार, पाणट्ठा भोयणस्स वा।
 जयं च्छिठे मियं भासे, न य रुव्वेसु मण करे॥१९॥
 बहु सुणेइ कणोहि, बहु अच्छीहि पेच्छइ।
 न य दिट्ठं सुयं सव्वं, भिक्खू अक्खाउमरिहइ॥२०॥
 सुयं वा जइ वा दिट्ठं, न लविज्जोवघाइयं।
 न य केण उवाएणं, गिहिजोगं समायरे॥२१॥
 निट्ठाणं रसनिज्जूढं, भद्दग पावगं ति वा।
 पुट्ठो वा वि अपुट्ठो वा, लाभालाभं न निट्ठिसे॥२२॥
 न य भोयणम्भि गिद्धो, चरे उच्छ अयंपिरो।
 अफासुयं न भुजेज्जा, कीयमुद्देसियाहडं॥२३॥
 सत्तिहि च न कुव्वेज्जा, अणुमायं पि संजए।
 मूहाजीवी असंबद्धे, हवेज्जा जगनिस्सिए॥२४॥
 लहविली सुसंतुद्धे, अप्पिच्छे, सुहरे सिया।
 आसुरत्तं न गच्छेज्जा, सोच्चा णं जिणसासणं॥२५॥

कण्णसोक्खोहं सद्दोहं, पेम नाभिनिवेसए ।
 दारुणं कक्कसं फासं, काएण अहियासए ॥२६॥
 खुहं पिवास दुस्सेज्जं, सीउण्ह अरइं भयं ।
 अहियासे अव्वहिओ, देह-दुक्खं महाफलं ॥२७॥
 अत्थंगयमि आइच्चे, पुरत्था य अणुगए ।
 आहारमाइयं सव्वं, मणसा वि न पत्थए ॥२८॥
 अत्तिणिणे अव्वले, अप्पभासी मियासणे ।
 हवेज्ज उयरे दत्ते, थोवं लद्धु, न खिसए ॥२९॥
 न बाहिरं परिभवे, अत्ताणं न समुक्कसे ।
 सुयलाभे न मजेज्जा, जच्चा तवस्सिबुद्धिए ॥३०॥
 से जाणमजाण वा, कट्ठु आहम्मियं पयं ।
 सवरे खिप्पमप्पाणं, बीयं त न समायरे ॥३१॥
 अणायार परक्कम्म, नेव गूहे न निण्हवे ।
 सुई सया वियडभावे, असंसत्ते जिह्मिदिए ॥३२॥
 अमोह वयण कुज्जा, आयरियस्स सहप्पणो ।
 त परिगिज्ज वायाए, कम्मणा उववायए ॥३३॥
 अधुव जीवियं नच्चा, सिद्धिमग्ग वियाणिया ।
 विणियट्ठेज्ज भोगेसु, आउं परिमियमप्पणो ॥३४॥
 बलं थाम च पेहाए, सद्धामारोगमप्पणो ।
 काल च विन्नाय, तहप्पाण न जुंजए ॥३५॥

जरा जाव न पीलेइ, वाही जाव न वड्ढइ ।
 जाविदिया न हायंति, ताव धम्मं समायरे ॥३६॥
 कोहं माणं च मायं च, लोभं च पाववड्ढणं ।
 वमे चत्तारि दोसे उ, इच्छंतो हियमप्पणो ॥३७॥
 कोहो पीइं पणासेइ, माणो विणयनासणो ।
 माया मित्ताणि नासेइ, लोहो सव्वविणासणो ॥३८॥
 उवसमेण हणे कोहं, माणं मद्दवया जिणे ।
 मायं च उज्जुभावेण, लोभं संतोसओ जिणे ॥३९॥

कोहो य माणो य अणिग्गहीया,
 माया य लोभो य पवड्ढमाणा ।
 चत्तारि एए कसिणा कसाया,
 सिंचंति मूलाइ पुणढभवस्स ॥४०॥
 राइणिएसु विणयं पडंजे,
 धुवसीलं सययं न हावइज्जा ।
 'कुम्मोव्व' अल्लीणपलीणगुत्तो,
 परवकमेज्जा तवसंजमम्मि ॥४१॥

निदं च न वहु मन्नेजा, सप्पहासं विवज्जए ।
 मिहो कहाहिं न रमे, सज्जायम्मि रओ सया ॥४२॥
 जोगं च समणधम्मम्मि, जुंजे अणलसो धुव ।
 जुत्तो य समणधम्मम्मि, अट्ठं लहइ अणुत्तरं ॥४३॥

इहलोम-मारत्त-हियं, जेणं गच्छइ सोगइं ।
 बहुस्सुय पज्जुवासेज्जा, पुच्छेज्जत्थविणिच्छयं ॥४४॥
 हत्थं पायं च कायं च, पणिहाय जिइंदिए ।
 अल्लीणगुत्तो निसिए, सगासे गुरुणो मुणी ॥४५॥
 न पक्खओ न पुरओ, नेव किच्चाण पिट्ठओ ।
 न य ऊरु समासेज्जा, चिट्ठेज्जा गुरुणंतिए ॥४६॥
 अपुच्छिओ न भासेज्जा, भासमाणस्स अंतरा ।
 पिट्ठिभसं न खाएज्जा मायामोस विवज्जए ॥४७॥
 अप्पत्तिज जेण सिया, आसु कुप्पेज्ज वा परो ।
 सव्वसो त न भासेज्ज, भासं अहियगामिणिं ॥४८॥
 विट्ठं मिय असंदिद्ध, पडिपुण्णं वियं जियं ।
 अयंपिरमणुव्विग्गं, भासं निसिर अत्तवं ॥४९॥
 आयार-पन्नत्तिधरं, दिट्ठिवायसहिज्जगं ।
 वायविकखलिय नच्चा, न तं उवहसे मुणी ॥५०॥
 नक्खत्तं सुमिणं जोग, निमित्तं मंतभेसजं ।
 गिहिणो तं न आइक्खे, भूयाहिगरणं पयं ॥५१॥
 अन्नदुं पगडं लयण, भएज्जा सयणासणं ।
 उच्चार-भूमिसपन्न, इत्थी-पसुविवज्जियं ॥५२॥
 विवित्ता थ भवे सेज्जा, नारिणं न लवे कहं ।
 गिहि-संथवं न कुज्जा, कुज्जा साह्हि संथवं ॥५३॥

जहा कुक्कुड-पोयस्स, निच्चं कुललओ भयं ।
 एवं खु वंभयारिस्स, इत्थी-विग्गहओ भयं ॥५४॥
 चित्तभिंत्ति न निज्झाए, नारि वा सुअलकियं ।
 भक्खरं पिव दट्ठूणं, दिट्ठि पडिसमाहरे ॥५५॥
 हत्थ-पाय-पडिच्छिन्न, कण्ण-नास-विकप्पियं ।
 अवि वाससइं नारि, वंभयारी विवज्जए ॥५६॥
 विभूसा इत्थिसंसग्गो, पणीय-रस-भोयणं ।
 नरस्स-त्तगवेसिस्स, 'विसं तालजडं जहा' ॥५७॥
 अंग-पच्चंग-संठाणं, चारुल्लवियपेहियं ।
 इत्थीणं तं न निज्झाए, कामरागविवड्ढणं ॥५८॥
 विसएसु मणुन्नेसु, पेमं नाभिनिवेसए ।
 अणिच्चं तेसि विन्नाय, परिणामं पोगगलाण य ॥५९॥
 पोगगलाण परिणामं, तेसि नच्चा जहा तहा ।
 विणीय-तण्हो विहरे, सीईभूएण अप्पणा ॥६०॥
 जाए सट्ठाए निक्खतो, परियायट्ठाणमुत्तमं ।
 तमेव अणुपालेज्जा, गुणे आयरियसम्मए ॥६१॥
 तवं चिय संजमजोगयं च,
 सज्झायजोगं च सया अहिट्ठए ।
 'सूरे व सेणाए' समत्तमाजहे
 अलमप्पणो होइ अलं परेसि ॥६२॥

सज्झाय-सज्झाणरयस्स ताइणो,
 अपावभावस्स तवे रयस्स ।
 विसुज्झई जसि मल पुरेकडं,
 'समीरियं' हप्पमल व जोइणा' ॥६३॥
 से तारिसे दुक्खसहे जिइदिए,
 सुएण जुत्ते अममे अकिंचणे ।
 विरायई कम्मघणस्मि व अवगए,
 कसिणब्भ-पुडावगमेव चंदिमे ॥६४॥
 ॥त्ति बेमि॥

अह विणयसमाही नामं णवमसज्झयणं
 (पढमो उद्देशो)

थभा व कोहा व मयप्पमाया,
 गुरुस्सगासे विणय न सिक्खे ।
 सो चेव उ तस्स अभूइभावो,
 'फलं व कीयस्स वहाय होइ' ॥१॥
 जे यावि मंदित्ति गुरु विइत्ता,
 डहरे इमे अप्पसुए त्ति नच्चा ।

हीलति मिच्छं पडियज्जमाणा,
करंति आसायणं ते गुरुण ॥ २ ॥

पगईए मंदा वि भवति एगे,
डहरा वि य जे सुयदुद्धोववेया ।

आधारमत्ता गुणसुद्धियप्पा,
जे हीलिया 'सिहिरिव भास कुज्जा' ॥ ३ ॥

जे यावि 'नागं डहरं ति' नच्चा,
आसायए से अहियाय होइ ।

एवारियं पि हु हिलयतो,
नियच्छइ जाइपहं खु मंदे ॥ ४ ॥

'आसिविसो वा वि परं सुख्खो,'
कि जीवनासाउ परं नु कुज्जा ।

आयरियपाया पुण अप्पसन्ना,
अबोहि-आसायण नत्थि मोक्खा ॥ ५ ॥

जो पावग जलियमवक्कमेज्जा,
असीविसं वा वि हु कोवएज्जा ।

जो वा विसं खायइ जीवियद्धो,
एसोवमाऽऽ सायणया गुरुणं ॥ ६ ॥

सिया हु से पावय नो डहेज्जा,
आसिविसो वा कुविओ न भक्खे ।

सिया विस हालहलं न मारे,
 न यावि मोक्खो गुरुहीलणाए ॥ ७ ॥
 जो पव्वय सिरसा भेतुमिच्छे,
 सुत्त व सीह पडिबोहएज्जा ।
 जो वा दए सत्तिअग्गे पहार,
 एसोवमाऽऽ सायणया गुरुणं ॥ ८ ॥
 सिया हु सीसेण गिर पि भिदे,
 सिया हु सीहो कुविओ न भक्खे ।
 सिया न भिदेज्ज व सत्तिअग्गं,
 न यावि मोक्खो गुरुहीलणाए ॥ ९ ॥
 आयरियपाया पुण अप्पसत्ता,
 अबोहि-आसायण नत्थि मोक्खो ।
 तम्हा अणाबाह-सुहाभिकंखी,
 गुरुप्पसायाभिसुहो रमेज्जा ॥ १० ॥
 जहाहियग्गी जलण नमसे,
 नाणा-हुई-मत-पयाभिसित्त ।
 एवायरिय उवचिट्ठएज्जा,
 अणंत-नाणोवगओवि सतो ॥ ११ ॥
 जस्संतिए धम्मपयाइ सिक्खे,
 तस्संतिए वेणइयं पउंजे ।

सबकारए तिरसा पंजलीओ,
 कायगिरा भो मणसा य निच्चं ॥१२॥
 लज्जा—दया—संजम—दमचेर,
 कल्लाणभागिस्त विसोहिठाण ।
 जे मे गुरु रायपमणुसासयति,
 ते हं गुरुं सयय पूषयामि ॥१३॥
 'जहा निसते तवणच्चिमात्तो',
 पभासइ केवल-भारह तु ।
 एवारिओ सुय-सील-वुद्धिए,
 विरायई 'गुरु-मज्जे व इदो' ॥१४॥
 जहा ससी कोमुइजोगजुत्तो,
 नखउत्त-तारागण-परिवुडप्पा ।
 छे सोहइ विमले अन्नमुण्णे,
 एवं गणी सोहइ भिक्खुमज्जे ॥१५॥
 महागरा आयरिया महेसी,
 समाहिजोगे सुय-सील-वुद्धिए ।
 संपाविउकामे अणुत्तराइ,
 आराहए तोसए धम्मकामी ॥१६॥
 सोच्चाण मेहावि सुभासियाइ,
 सुत्सुत्सए आयरियऽप्पमत्तो ।
 आराहइत्ताण गुणे अणेगे,
 सो पावई त्तिद्धिमणुत्तरं ॥१७॥

॥ति वेमि॥

णवमसज्जयणे

(बीओ उद्देशो)

‘मूलाओ खंधप्पभवो दुमस्स,
खधाउ पच्छा समुव्वेति साहा ।
साहप्पसाहा विरुहंति पत्ता,
तओ से पुप्फ च फलं रसो य’ ॥ १ ॥

एवं धम्मस्स विणओ, मूल परमो से मोक्खो ।
जेण किंति सुय सिग्घं, निस्सेसं चाभिगच्छइ ॥ २ ॥

जे य चडे, मिए थद्धे, दुव्वाई वियडी सढे ।
वुज्झइ से अविणीयप्पा, ‘कट्टु’ सोयगय जहा’ ॥ ३ ॥

विणय पि जो उवाएण, चोइओ कुप्पइ नरो ।
दिक्खं सो सिरिभेज्जंति, दडेण पडिसेहए ॥ ४ ॥

तहेव अविणीयप्पा, उववज्झा हया गया ।
दीसंति दुहमेहंता, आभियोगमुवट्ठिया ॥ ५ ॥

तहेव सुविणीयप्पा, उववज्झा हया गया ।
दीसंति सुहमेहंता, इडिढ पत्ता महायसा ॥ ६ ॥

तहेव अविणीयप्पा, लोगंसि नरनारिओ ।
दीसंति दुहमेहंता, छाया -ते विगल्लिदिया ॥ ७ ॥

दंड-सत्थ-परिजुणा, असदम-वयणेहि य ।
 कलुणा' विवन्नच्छंदा, खुप्पिवासाइपरिगया ॥ ८ ॥
 तहेव सुविणीयप्पा, लोमंसि तरनारिओ ।
 दीसंति सुहमेहता, इड्ढि पत्ता महायसा ॥ ९ ॥
 तहेव अविणीयप्पा, देवा जक्खा य गुज्झगा ।
 दीसति दुहमेहता, आभियोगमुवद्विया ॥ १० ॥
 तहेव सुविणीयप्पा, देवा जक्खा य गुज्झगा ।
 दीसति सुहमेहता, इड्ढि पत्ता महायसा ॥ ११ ॥
 जे आयरिय-उवज्झायाणं, सुस्सुसा वयणंकरा ।
 तेसि सिक्खा पवड्ढति, 'जलसित्ता इव पायवा' ॥ १२ ॥
 अप्पणट्ठा परट्ठावा सिप्पा नेउणियाणि य ।
 गिहिणो उवभोगट्ठा, इहलोगस्म कारणा ॥ १३ ॥
 जेण वंधं वहं घोरं, परियावं च दारुणं ।
 सिक्खमाणा नियच्छंति, जुत्ता ते लल्लडंदिआ ॥ १४ ॥
 ते वि त गुरु पूयति, तस्स सिप्पस्स कारणा ।
 सक्कारंति णमंसति, तुट्ठा निट्ठेस-वत्तिणो ॥ १५ ॥
 कि पुण जे सुयेगगाही, अणंतहियकामए ।
 आयरिया ज वए भिक्खू, तम्हा त नाइवत्तए ॥ १६ ॥
 नीयं सेज्जं गइ ठाण, नीय च आमणाणि य ।
 नीय च पाए वंदेज्जा, नीय कुज्जा य अजाल ॥ १७ ॥

સંઘટ્ટિતા કાણં, તહા ઉવહિનામવિ । ૧૮
 ખમેહ અવરાહં મે, વણ્ણે ન પુણો ત્તિ ય ॥૧૯॥
 'દુગ્ગાઓ વા પઓણં, ચોદ્ધાઓ વહ્દ રહં' ૨૦
 એવં દુબુદ્ધિ કિચ્ચાણં, વુત્તો વુત્તો પકુમ્બદ્ધ ॥૨૧॥
 આલવંતે લવંતે વા, ન નિસેજ્જાણ પઢિસ્સુણે । ૨૨
 મોત્તૂણં આસણં ધીરો, સુત્સૂસાણ પઢિસ્સુણે ॥૨૩॥
 કાલં ઇંદોવયારં ચ, પઢિલેહિત્તાણ હેવંહિ । ૨૪
 તેંહિ તેંહિ ઉવાણ્ણે, ત તં સંપઢિવાણ્ણે ॥૨૫॥
 વિવત્તો અવિણીયસ્સ, સંપત્તી વિણીયસ્સ યે । ૨૬
 જસ્સેયં દુહ્ધાઓ નાયં, સિવ્વં સે અભિગચ્છદ્ધ ॥૨૭॥

જે યાવિ જડે મદ્દ-દિદ્ધ-ગારવે, ૨૮
 પિસુણે નરે સાહસહીણ-મેસણે । ૨૯
 અવિદ્ધધમ્મે વિણે અકોવિણે, ૩૦
 અસંવિભાગી ન હુ તસ્સ મોક્કહો ॥૩૧॥
 ણિદ્દેસવત્તી પુણ જે ગુરુણં, ૩૨
 સુયત્થધમ્મા વિણયંમિ કોવિયા । ૩૩
 તરિત્તુ તે ઓહમિણં દુરત્તરં, ૩૪
 હવિત્તુ કમ્મ ગદ્ધમુત્તમં ગયા ॥૩૫॥
 ॥તિ બેમિ॥

णवममञ्जयणे (तइओ उहेसो)

आपरियग्गिमिवाहियग्गी,
सुस्सुसमाणो पडिजागरिज्जा ।
आलोइय इगियमेव नच्चा,
जो छंदमाराहयई स पुज्जो ॥ १ ॥
आयारमट्ठा विणयं पउंजे,
सुस्सुसमाणो परिगिज्ज वक्कं ।
जहोवइट्ठं अभिकंखमाणो,
गुहं त नासाययई स पुज्जो ॥ २ ॥
राइणिएसु विणयं पउंजे,
उह्रा वि य जे परियाय जिट्ठा ।
नीयत्तणे वट्ठइ सच्चवाई,
ओवायवं वक्ककरे स पुज्जो ॥ ३ ॥
अन्नायउंछं चरई विसुद्धं,
जवणट्ठया समुयाण च निच्चं ।
अलद्धयं नो परिदेवएज्जा,
लद्धं न वित्तयई स पुज्जो ॥ ४ ॥
संथार-सेज्जाऽऽ सण-भत्त-माणे,
अप्पिच्छया भइलाभे वि संते ।

जो एवमप्पाणभित्तोसएज्जा,
 संतोस—पाहन्न-रए स पुज्जो ॥ ५ ॥
 सक्का सहेउं आसाइ कंटया,
 अओमया उच्छहया नरेणं ।
 अणासए जो उ सहेज्ज कंटए,
 वईमए कण्णसरे स पुज्जो ॥ ६ ॥
 मुहुत्तदुक्खा उ हवेंति कंटया,
 अओमया ते वि तओ मुउद्धरा ।
 वायादुरुत्ताणि दुरुद्धराणि,
 वेराणुबंघीणि महम्मया ण ॥ ७ ॥
 समावयंता वयणाभिघाया,
 कण्णं गया दुम्मणियं जणंति ।
 धम्मो त्ति किच्चा परमग्गसूरे,
 जिइंदिए जो सहई स पुज्जो ॥ ८ ॥
 अवण्णवायं च परंमुहस्स,
 पचक्खओ पडिणीयं च भासं ।
 ओहारिणि अप्पियकारिणि च,
 भासं न भासेज्ज सया स पुज्जो ॥ ९ ॥
 अलोलुए अक्कुहए अमाई
 अपिसुणे यावि अदीणवित्ती ।

नो भावए नो वि य भावियप्पा,
 अकोउहल्ले य सया स पुज्जो ॥१०॥
 गुणेहि साहू, अगुणेहिऽसाहू,
 गिण्हाहि साहू गुण मुंच साहू ।
 वियाणिया अप्पगमप्पएणं,
 जो राग-दोसेहि समो स पुज्जो ॥११॥
 तहेव डहरं व महल्लगं वा,
 इत्थी पुमं पव्वइयं गिहि वा ।
 नो हीलए नो वि य खिसएज्जा,
 थंभं च कोहं च चए स पुज्जो ॥१२॥
 जे माणिया सययं माणयंति,
 'जत्तेण कम्मं व निवेसयंति' ।
 ते माणए माणरिहे तवस्सी,
 जिइंदिए सच्चरए स पुज्जो ॥१३॥
 तेसि गुरुणं गुणसागराणं,
 सोच्चाण मेहावि सुभासियाइं ।
 चरे मुणी पंच-रए तिगुत्तो,
 चउक्कसायावगए स पुज्जो ॥१४॥
 गुहमिह सययं पडियरिय मुणी,
 जिणवयनिउणे अभिगम-कुसले ।
 घुणिय रय-मलं पुरेकडं,
 भासुरमउलं गइं गए ॥१५॥
 ॥त्ति वेमि ॥

णवममञ्जयणे

(चउत्थो उद्देसो)

सुयं मे आजसं !

तेणं भगवया एवमक्खाय--

इह खलु थेरेहिं भगवतेहिं चत्तारि विणयसमाहिट्ठणा पन्नता-
कयरे खलु ते थेरेहिं भगवतेहिं चत्तारि विणयसमाहिट्ठणा पन्नता?
इमे खलु ते थेरेहिं भगवतेहिं चत्तारि विणयसमाहिट्ठणा पन्नता-
तंजहा--

१ विणयसमाही २ सुयसमाही ३ तवसमाही ४ आयारसमाही

विणए सुए तवे य, आयारे निच्च पंडिया ।

अभिरामयंति अप्पाणं, जे भवति जिइंदिया ॥ १ ॥

चउत्थिहा खलु विणयसमाही भवइ--

तं अहा--

१ अणुसासिज्जंतो सुस्ससइ, २ सम्मं संपडिवज्जइ,

३ वेयमाराह्यइ, ४ न य भवइ अत्तसंपगहिए ।

चउत्थं परं भवइ-भवइ य एत्थ सिलोगो--

पेहेइ हियाणुसासणं, सुस्ससइ तं च पुणो अहिट्ठए ।

न य माणमएण मज्जइ, विणयसमाही आययट्ठिए ॥ २ ॥

चउत्थिहा खलु सुयसमाही भवइ--

तंजहा-

- १ सुयं मे भविस्सइ त्ति अज्झाइयव्वं भवइ ।
 - २ एगगच्चित्तो भविस्सामि त्ति अज्झाइयव्वं भवइ ।
 - ३ अप्पाणं ठावइस्सामि त्ति अज्झाइयव्वं भवइ ।
 - ४ ठिओ परं ठावइस्सामि त्ति अज्झाइयव्वं भवइ ।
- चउत्थ पयं भवइ । भवइ य एत्थ सिलोगो-

नाणमेगगच्चित्तो य, ठिओ य ठावइ परं ।

सुयाणि य अहिज्झत्ता, रओ सुयसमाहिए ॥ ३ ॥

चउच्चिहा खलु तवसमाही भवइ ।

तं जहा-

- १ नो इहलोगट्ठयाए तवमहिट्ठेज्जा ।
- २ नो परलोगट्ठयाए तवमहिट्ठेज्जा ।
- ३ नो कित्ति-वन्न-सद्द-सिलोगट्ठयाए तवमहिट्ठेज्जा ।
- ४ नसत्थ निज्जरट्ठयाए तवमहिट्ठेज्जा ।

चउत्थं पयं भवइ-भवइ य एत्थ सिलोगो ।

विविहगुणतवोरए य निच्चं, भवइ निरासए निज्जरट्ठिए ।

तवसा धुणइ पुराणपावगं, जुत्तो सया तवसमाहिए ॥ ४ ॥

चउच्चिहा खलु आयासमाही भवइ ।

तंजहा-

- १ नो इहलोगट्ठयाए आयासमाहिट्ठेज्जा ।

- २ नो परलोगद्वयाए आयारमहिद्वेज्जा ।
 ३ नो कित्ति-वन्न-सद्-सिलोगद्वयाए आयारमहिद्वेज्जा ।
 ४ नत्तत्थ आरहंतेहि हेउहि आयारमहिद्वेज्जा ।
 चउत्थं पयं भवइ-भवइ य रत्थ सिलोगो-

जिणवयण-रए अतितणे,
 पडिपुण्णाययमायट्ठिए ।
 आयार-समाहि-संवुडे,
 भवइ व दंते भावसंघए ॥ ५ ॥

अभिगम चउरो समाहिओ,
 सुविसुद्धो सुसमाहियप्पओ ।
 विउल-हियं सुहावहं पुणो,
 कुच्चइ सो पयस्सेममंप्पेणो ॥ ६ ॥

जाइ-मरणाउ मुच्चइ,
 इत्थत्थं च चएइ सव्वसो ।
 सिद्धे वा भवइ सासए,
 देवो वा अप्परए महिद्धिए ॥ ७ ॥

॥सि बेमि ॥

अहं सभिवखू नामं दसममञ्जयणं

निक्खम्ममाणाइ अ बुद्धवयणे,
णिच्छं चित्तसमाहिओ हवेज्जा ।
इत्थीण वसं न यावि गच्छे,
वंतं नो पडियायइ, जे स भिवखू ॥ १ ॥
पुढवि न खणे न खणावए,
सीओदग न पिए न पियावए ।
अगणिसत्थं जहा सुनिसियं,
तं न जले न जलावए जे स भिवखू ॥ २ ॥
अनिलेण न वीए न वीयावए,
हरियाणि न छिदे न छिदावए ।
बीयाणि सया विवज्जयंतो,
सच्चित्तं नाहारए जे स भिवखू ॥ ३ ॥
वहणं तस-थावराण होइ,
पुढवी-तण-कट्ट-निस्सियाणं ।
तम्हा उद्देसियं न भुंजे,
नो वि पए न पयावए जे स भिवखू ॥ ४ ॥
रोइय- नायपुत्त-वयणे,
अप्पसमे मन्नेज्ज छप्पि काए ।

पंच य फासे महव्वयाइं,
 पंचासव-संवरए जे स भिक्खू ॥ ५ ॥
 चत्तारि वमे सया कसाए,
 धुवजोगी य हवेज्ज बुद्धवयणे ।
 अहणे निज्जायरुवरयए,
 गिहिजोगं परिवज्जए जे स भिक्खू ॥ ६ ॥
 सम्मविट्ठी सया अमूदे,
 अत्थि हु नाणे तव-संजमे य ।
 तवसा धुणइ पुराणपावगं,
 मण-वय-कायसुसंवुडे जे स भिक्खू ॥ ७ ॥
 तहेव असणं पाणगं वा,
 विविहं खाइम-साइमं लभित्ता ।
 होही अट्ठो सुए परे वा,
 तं न निहे न निहावए जे स भिक्खू ॥ ८ ॥
 तहेव असण पाणगं वा,
 विविह-खाइम-साइम लभित्ता ।
 छंदिय साहम्मियाण भुजे,
 भोचचा सज्जायरए य जे स भिक्खू ॥ ९ ॥
 न य शुग्गहियं कहं कहिज्जा,
 न य कुप्पे निहुइंदिए पसंते ।

संजम-धुव-जोग-जुत्ते,
उवसंते अविहेडए जे स भिक्खू ॥१०॥

जो सहइ हु गामकंटए, --
अक्कोस-पहार-तज्जणाओ य । -

भय-भेरव-सद्द-सप्पहासे,
सममुहदुक्खसहे य जे स भिक्खू ॥११॥

पडिमं -- पडिवज्जिया - मसाणे,
नो भीयए- भय-भेरवाइ दिस्स । -

विविहूण-तवोरए -य निच्चं,
न सरीरं चाभिकंखए जे स भिक्खू ॥१२॥

असइं वोसट्ठ-चत्त-वेहे,
अक्कुट्ठे- व हए लूसिए वा । -

पुढविसमे - मुणी हवेज्जा,
अनियाणे अकोउहल्ले य जे स भिक्खू ॥१३॥

अभिभूय - कारण परीसहाइ,
समुद्धरे जाइ-पहाउ अप्पयं । -

विइत्तु जाइ-मरणं सहभयं,
तवे एए सामणिए जे स भिक्खू ॥१४॥

हत्थसंजए पायसंजए,
वायसंजए, संजईदिए । -

अज्झप्परए सुसमाहियप्पा,
 सुत्तत्थं च वियाणइ जे स भिक्खू ॥१५॥
 उवहिम्मि अमुच्छिए अगिद्धे,
 अन्नायउच्छं पुलनिप्पुलाए ।
 कय-विक्कयसत्तिहिओ विरए,
 सव्वसंगावगए य जे स भिक्खू ॥१६॥
 अलोल-भिक्खू न रसेसु गिद्धे,
 उच्छं चरे जीविय नाभिकंखे ।
 इड्ढि च सक्कारण-पूयणं च,
 चयइ ठियप्पा अणिहे जे स भिक्खू ॥१७॥
 न परं वएज्जासि अयं कुसीले,
 जेणऽओ कुप्पेज्ज न तं वएज्जा ।
 जाणिय पत्तेयं पुण्ण-पावं,
 अत्ताणं न समुपकसे जे स भिक्खू ॥१८॥
 न जाइमत्ते न य रुवमत्ते,
 न लाभमत्ते न सुएण मत्ते ।
 मयाणि सव्वाणि विवज्जयंतो,
 धम्मज्झाणरए य जे स भिक्खू ॥१९॥
 पवेयए अज्ज-पयं महासुणी,
 धम्मे ठिओ ठावयइ परं पि ।

निक्खम्म वज्जेज्ज कुसीलीलिंगं,
 न यावि हासं कुहए जे स भिक्खू ॥२०॥
 त देहवास असुइं असासय,
 सया चए निच्चहिय-द्वियप्पा ।
 छिदित्तु जाइ-मरणरस बंधणं,
 उवेइ भिक्खू अपुणागम गइं ॥२१॥
 ॥त्ति वेमि ॥

रइवक्का णामा पढमा चूलिया

इह खलु भो !

पव्वइएणं उप्पन्नदुक्खेणं सजमे अरइसमावन्नचित्तेणं
 ओहाणुप्पेहिणा अणोहाइएणं चेव—
 हयरस्सि-गर्यकुसवपोयपडागा-भूसाइ—
 इमाइ अट्टारस ठाणाइ सम्भं संपडिलेहियच्चाइं भवन्ति ।
 तं जहा—

हं भो ! दुस्समाए दुप्पजीवी ॥ १ ॥

लहुस्सगा इत्तरिया गिहीणं कामभोगा ॥ २ ॥

भुज्जो असाय-बहुला मणुस्सा ॥ ३ ॥

इमं च मे दुक्खं न चिरकालोवट्ठाइ भविस्सइ ॥ ४ ॥

ओमजणपुरवकारे ॥ ५ ॥

वंतस्स य पडिआयणं ॥ ६ ॥

अहरगइ-वासोवसंपया ॥ ७ ॥

दुल्लहे खलु भो ! गिहीण धम्मे गिहिवासमज्जे वसंताणं ॥ ८ ॥

आयंके से वहाय होइ ॥ ९ ॥

संकप्पे से वहाय होइ ॥ १० ॥

सोवक्केसे गिहिवासे निरुवक्केसे परियाए ॥ ११ ॥

बंधे गिहिवासे मोक्खे परियाए ॥ १२ ॥

सावज्जे गिहिवासे अणवज्जे परियाए ॥ १३ ॥

बहुसाहारण गिहीणं कामभोगा ॥ १४ ॥

पत्तेयं पुण्णपावं ॥ १५ ॥

अणिच्चे खलु भो !

मणुयाण जीविए कुसग्गजलबिदुचंचले ॥ १६ ॥

बहुं च खलु भो ! पाव कम्म पगडं ॥ १७ ॥

पावाणं च खलु भो !

कडाणं कम्माणं पुंवि दुच्चिण्णाण दुप्पडिक्कंताण-

वेयइत्ता मोक्खो, नत्थि अवेइयत्ता, तवसा वा सोसइत्ता ।

अठारसमं पयं भवइ ॥ १८ ॥ भवइ य एत्थ सिलोगो-

जया य चयइ धम्मं, अणज्जो भोगकारणा ।

तत्थ मुच्छिए बाले, आयइं नाववुज्जइ ॥ १९ ॥

जया ओहाविओ होइ, इंदो वा पडिओ छमं ।

सत्त्व-धम्म-परिब्रज्जो, स पच्छा परितप्पइ ॥ २ ॥

जया य वदिमो होइ, पच्छा होइ अवदिमो ।

देवया व चुआ ठाणा, स पच्छा परितप्पइ ॥ ३ ॥

जया य पुइमो होइ, पच्छा होइ अपुइमो ।

राया व रज्जपब्बज्जो, स पच्छा परितप्पइ ॥ ४ ॥

जया य माणिमो होइ, पच्छा होइ अमाणिमो ।

सेट्ठिच्च कच्चडे छूढो, स पच्छा परितप्पइ ॥ ५ ॥

जया य येरओ होइ, समइक्कंत-जोच्चणो ।

मच्छोच्च गलं गिलित्ता, स पच्छा परितप्पइ ॥ ६ ॥

जया य कुकुडंस्स, कुतत्तीहि विहम्मइ ।

हत्यो व बंधणे वद्धो, स पच्छा परितप्पइ ॥ ७ ॥

पुत्त-दार-परिकिण्णो, मोहसंताण-संतओ ।

पंकोत्तन्नो जहा नागो, स पच्छा परितप्पइ ॥ ८ ॥

अज्ज याहं गणी होतो, भाविक्कप्पा बहुस्सुओ ।

जइहं रमतो परिथाए, सामण्णे जिणदेसिए ॥ ९ ॥

देवलोगसंमाणो उ, परिथाओ महेत्तिणं ।

रयाण अरयाण च, महानरय-सारिसो ॥ १० ॥

अमरोवमं जाणिय सोक्खमुत्तमं,

रयाण परिथाए हारयाणं ।

निरयोवमं जाणिय दुक्खमुत्तमं,
रमेज्ज तम्हा परियाए पंडिए ॥११॥

धम्माउ भट्ठं सिरिओववेयं,
जल्लगि विज्झायमिवप्पतेयं ।

हीलंति णं दुज्ज्वहियं कुसीला,
दाढुडिडयं घोरविसं व नाणं ॥१२॥

इहेवऽधम्मो अयसो अकित्ती,
दुल्लामधेज्जं च पिहुज्जणम्मि ।

चुयस्स धम्माओ अहम्मसेविणो,
संभिन्न-वित्तस्स य हेट्ठो गई ॥१३॥

भुंजित्तु भोगाइं पसज्ज चेतसा,
तहाविहं कट्ठु असंजमं वहुं ।

गइ च गच्छे अणहिज्झियं दुह,
बोही य से नो सुलभा पुणो पुणो ॥१४॥

इमस्स ता नेरइयस्स जंतुणो,
दुहोवणीयस्स किलेसवत्तिणो ।

पलिओवमं शिज्झइ सागरोवमं,
किमंग पुण मज्झ इम मणोदुहं ? ॥१५॥

न मे चिरं दुक्खमिणं भविस्सइ,
असासया भोगपिवात जंतुणो ।

न चे सरीरेण इमेणऽवस्सइ,
अवस्सइ जीविय-पज्जवेण मे ॥१६॥

जस्सेवमप्पा उ हवेज्ज निच्छिओ,
चएज्ज देहं न उ धम्मसासणं ।

तं तारिसं नो पयलेंति इंदिया,
उवंतवाया व सुदंसणं गिरि ॥१७॥

इच्चेव संपस्सिय बुद्धिमं नरो,
आयं उवायं विविहं वियाणिया ।

काएण वाया अद्दु माणसेणं,
तिगुत्तिगुत्तो जिणवयणमहिट्टिज्जासि ॥१८॥

॥ त्ति बेमि ॥

विवित्त-चरिआ णामा बीया चूलिया

चूलियं तु पक्खामि, सुयं केवलिभासियं ।
जं सुणित्तु सपुज्जाणं, धम्मे उप्पज्जए मई ॥ १ ॥

अणुसोयपट्टिए बहुजणम्मि, पडिसोय-लद्धलक्खेणं ।
पडिसोयमेव अप्पा, दायव्वो होउ कामेणं ॥ २ ॥

अणुसोयसुहो लोगो, पडिसोओ आत्तदो सुविहियाणं ।
अणुसोओ ससारो, पडिसोओ तस्स उत्तारो ॥ ३ ॥

तस्मा आचारपरक्कमेणं, संवरसमाहि-बहुलेणं ।
चरिया गुणा य नियमा य, होति, साहूण ददुव्वा ॥ ४ ॥

अणियए-वासो समुयाणचरिया, . . .

अन्नायउच्छ पइरिक्कया य । . .

अप्पोवही कलहविज्जणा य, . . .

विहारचरिया इतिणं पसत्था ॥ ५ ॥

आइण्ण-ओमाणविज्जणा य, . . .

ओसन्न-विट्ठाहड-भत्तपाणे . . .

संसट्ठकप्पेण चरेज्ज भिक्खू, . . .

तज्जायसंसट्ठ जई जएज्जा ॥ ६ ॥

अमज्जमंसासि अमच्छरीया,

अभिक्षणं निव्विगइं गया य ।

अभिक्षणं काउस्सगाकारी, . . .

सज्जायजोगे पयओ हवेज्जा ॥ ७ ॥

न पडिन्नवेज्जा सयणासणाइं, . . .

सेज्ज नित्सेज्जं तह भत्तपाणं । . .

गामे कुले वा नगरे वा देसे, . . .

ममत्ताभावं न कहिंवि कुज्जा ॥ ८ ॥

गिहिणो वेयावडियं न कुज्जा, . . .

अभिवायणं वंदण-पूयणं वा । . .

असंकलिट्टेहि समं वसेज्जा,
मुणी चरित्तस्स जओ न हाणी ॥९॥

न वा लभेज्जा निडणं सहायं,
गुणाहियं वा गुणओ समं वा ।
एक्को वि पाव्वाइं विवज्जयंतो,
विहरेज्ज कामेसु असज्जमाणो ॥१०॥

संवच्छर वावि परं पमाणं,
बीयं च वासं न तर्हि वसेज्जा ।
सुत्तस्स मग्गेण चरेज्ज भिक्खू,
सुत्तस्स अत्यो जह आणवेइ ॥११॥

ओ पुत्तरत्तावरत्तकाले,
संपेहइ अप्पगमप्पएणं ।
कि मे कडं किं च मे किच्चसेसं,
कि सक्कणिज्जं न समायरामि ॥१२॥

कि मे परो पासइ किं च अप्पा,
कि वाहं खलियं न विवज्जयामि ।
इच्चेव सम्मं अणुपासमाणो,
अणसगयं नो पडिवंधं कुज्जा ॥१३॥

जत्थेव पासे कइ दुप्पउत्तं,
काएण वाया अदु माणसेणं ।

तत्थेव धीरो पडिसाहरेज्जा,
आजण्णओ खिप्पमिव कखलीणं ॥१४॥

जस्सेरिसा जोग जिह्मियस्स
धिइमओ सपुुरिसस्स निच्चं ।
तमाहु लोए पडिबुद्धजीवी,
सो जीवइ संजमजीविएण ॥१५॥

अप्पा खलु सयय रक्खियव्वो,
संविदिएहि सुसमाहिएहि ।
अरक्खिओ जाइपहं उवेइ,
सुरक्खिओ सव्वदुहाण मुच्चइ ॥१६॥
॥ ति बेमि ॥

॥ मूल सुत्ताणि ॥

(२)

उत्तरज्ज्ञयणसुत्तं

(कालियं)

उत्तरज्झयण-महत्तं

जे किर भव-सिद्धीया, परित्त-ससारिआय भविआय ।
ते किर पढंति धीरा, छत्तीसं उत्तरज्झयणे ॥

जे हुंति अभव-सिद्धीया, गंथिअ-सत्ता अणत-ससारा ।
ते संकिलिहु-कम्मा, अभविय उत्तरज्झाए ॥

—'जोग-विहीए वहिया, एए जो लहइ सुत्तमत्थं वा ।
भासेइ भविय-जणो, सो पावेइ निज्जरा बहुआ ॥

जस्सारद्धा एए, कहवि समत्तंति विग्घरहियस्स ।
सो लखिज्जइ भव्वो, पुव्वरिसी एवं भासंति ॥

तस्सा जिण-पणत्ते, अणंत-भाम-पज्जवेहि सजुत्ते ।
अज्झाए जहाजोग, गुरुपसाया अहिज्झया ॥

श्री भद्रबाहु निर्युक्ति—५५७, ५५८, (दीपिका १-२), ५५९ ।

नामककर्ण-

कमउत्तरेण पगयं, आयारस्तेव उवरिमाई तु ।
तम्हा उ उत्तरा खलु, अज्झयणा हुंति णायम्वा ॥

उद्धरण-

अंगप्पभवा जिण, भासिया य पत्तेयबुद्धसंवाया ।
बंघे मुक्खे य कया, छत्तीस उत्तरज्झयणा ॥

विसयनिर्हसो-

पढ्मे विणओ बीए, परोसहा दुल्लहगया तइए ।
अहिमारो य चउत्थे, होइ पमायप्पमाएत्ति ॥
मरणविभत्तो पुण पंचमस्मि, विज्जाचरणं च छट्ठ अज्झयणे ।
रसगेही-परिच्चाओ, सत्तमे अट्ठस्मि अत्ताभे ॥
निककपया य तवमे, दसमे अणुसासणोवमा भणिया ।
इक्कारसमे पूया, तवरिद्धी चेव बारसमे ॥
तेरसमे य नियाणं, अनियाणं चेव होइ चउदसमे ।-
भिक्षुगुणा पन्नरसे, सोलसमे बंभगुत्तीओ ॥
पावाण-वज्जणा खलु, सत्तरसे भोगिड्ढविज्जहणअट्टारे ।
एगुणि अप्परिकम्मे, अणाहया चेव वीसइमे ॥
चरिया य विचित्ता इक्कवीसि, बावीसिमे थिरं चरणं ।
तेवीसइमे धम्मो, चउवीसइमे य समिइओ ॥
बंभगुण पन्नवीसे, सामायारी य होइ छब्बीसे ।
सत्तावीसे असढया, अट्ठावीसे य मुक्खगइं ॥
एगुणतीसे आवस्सगप्पमाओ, तवो अ होइ तीसइमे ।
चरणं च इक्कतीसे, वत्तीसि पमायठाणाई ॥
तेत्तीसइमे कम्मं, चउतीसइमे य हुंति तेसाओ ।
भिक्षुगुणा पणतीसे, जीवाजीवा य छत्तीसे ॥

श्री भद्रबाहु निर्युक्ति-—३, ४, १८, १९, २०, २१, २२
२३, २४, २५, २६ ।

विषय-संबंध-निर्देशः—

प्रथमेऽध्ययने विनयस्य वर्णनम् । 'विनयो हि परीषह-महासैन्य-समर-समा-कुलितमनोभिरपि कदाऽपि नोल्लङ्घनीयः' इत्यनेन सम्बन्धे-नायातं— द्वितीयं परीषहाध्ययनम् ।

द्वितीयेऽध्ययने परीषह-सहन-वर्णनम् । परीषह-सहनं च मानुषत्वादि-चतुरंग-दुर्लभत्वं विज्ञायैव भवतीति सम्बन्धेनाऽऽयातं तृतीयं चतु-रंगीयमध्ययनम् ।

तृतीयेऽध्ययने मानुषत्वादि चतुरंगदुर्लभत्वस्य वर्णनम् । 'दुर्लभानि मानुषत्वादि चतुरंगानि प्राप्य धीधनैः प्रमादो हेयोऽप्रमादश्चोपादेयः' इत्यनेन सम्बन्धेनायातं— चतुर्थं प्रमादाप्रमादनामकमध्ययनम् ।

चतुर्थेऽध्ययने प्रमादाप्रमादहेयोपादेयवर्णनम् । प्रमादः सर्वदा सर्वथा हेयः, अप्रमादश्च मरणकालेऽपि विधेयः स च मरणविभागपरिज्ञानत एव भवति, ततो हि बालमरणादि हेयं हीयते पंडितमरणादि चोपादेय-मुपादीयते, तथा च तत्त्वतोऽप्रमत्तता जायते इत्यनेन सम्बन्धेनायातं— पंचममकाममरणीयमध्ययनम् ।

पंचमेऽध्ययने बालमरणपरित्यागस्य पंडितमरणस्वीकृतेश्च वर्णनम् । पंडितमरणं च विरतानामेव । न चैते विद्याचरणविकला इति तत् स्वरूपमनेनोच्यते— इत्यनेन [सम्बन्धेनायातं— षष्ठं क्षुल्लकनिर्ग्रन्थी-यमध्ययनम् ।

षष्ठेऽध्ययने निर्ग्रन्थत्वस्य वर्णनम् ।

निर्ग्रन्थत्वं च रसगृद्धिपरिहारादेव जायते— स च विपक्षेऽप्यायदर्शनात् तच्च दृष्टान्तोपन्यासद्वारेणैव परिस्फुटं भवतीति रसगृद्धिदोषदर्शको-रञ्ज्वादिदृष्टान्तप्रतिपादकं सप्तममुरश्रीयमध्ययनम् ।

सप्तमेऽध्ययने रसगृद्धरेपयवहृतत्वमभिधाय तत्त्यागस्य वर्णनम् ।
स च निर्लोभस्यैव भवतीति इह निर्लोभत्वमुच्यते, इत्यनेन सम्बन्धे-
नायातमष्टमं कापिलीयमध्ययनम् ।

अष्टमेऽध्ययने निर्लोभत्वस्य वर्णनम् । निर्लोभिनश्च, इहैव देवैर्द्वाविं-
पूजोपजायत इत्यनेन सम्बन्धेनायातं—नमिप्रव्रज्येति नवममध्ययनम् ।
नवमेऽध्ययने धर्मचरणं प्रति निष्कम्पत्वस्य वर्णनम् । तच्चानुशासना-
देव प्रायो भवति, न च तदुपमां विना स्पष्टमिति प्रथमतः उपमाद्वारे-
णानुशासनाभिधायकं—द्रुमपत्रकाभिधानं दशममध्ययनम् ।

दशमेऽध्ययने, अप्रमादार्थमनुशासनस्य वर्णनम्, तच्च विवर्किनेव
भाषयितुं शक्यं विवेकश्च बहुश्रुत-पूजात उपजायत इति बहुश्रुत-
पूजोच्यते—इत्यनेन सम्बन्धेनायातमेकादशमध्ययनम् ।

एकादशेऽध्ययने बहुश्रुत-पूजाया वर्णनम् । बहुश्रुतेनापि तर्पास यत्नो
विधेय इति ख्यापनार्थं तपःसमृद्धिरुपवर्ण्यत इत्यनेन सम्बन्धेनायातं—
हरिकेशीयं द्वादशमध्ययनम् ।

द्वादशेऽध्ययने तपसः समृद्धे वर्णनम् ।

तपःसमृद्धिं प्राप्तावपि निदानं परिहृतव्यमिति दर्शयितुं यथा तन्महा-
पायहेतुस्तथा चित्तसंभूतोदाहरणेन निदर्शयत इत्यनेन सम्बन्धेनायातं
चित्तसंभूतीयं त्रयोदशमध्ययनम् ।

त्रयोदशेऽध्ययने निदानदोषस्य वर्णनम् । प्रसङ्गतो निर्निदानतां

, अत्र तु मुख्यतः व एवोच्यते इत्यनेन सम्बन्धेनायातं

ने निर्निदानतागुणवर्णना, सा च मुख्यतो भिक्षुरेव

भिक्षुश्च गुणत इति तद्गुणा अनेनोच्यन्ते—इत्यनेन सम्बन्धेनायातं पंचदशं सभिक्षुकमध्ययनम् ।

पंचदशेऽध्ययने भिक्षुगुणानां वर्णनम् ।

भिक्षुगुणाश्च तत्त्वतो ब्रह्मचर्यव्यवस्थितस्यैव भवन्ति ब्रह्मचर्यं च ब्रह्मगुप्तिपरिज्ञानत् इति ब्रह्मचर्यसमाधय इहाभिधीयन्ते इत्यनेन सम्बन्धेनायातं षोडशं ब्रह्मचर्यसमाधिनामकमध्ययनम् ।

षोडशेऽध्ययने ब्रह्मचर्यगुप्तीनां वर्णनम् ।

ब्रह्मचर्यगुप्तयश्च पापस्थानवर्जनादेवासेवितुं शक्यन्ते इति पापश्रमण-स्वरूपाभिधानतस्तदेवात्र कावकोच्यत इत्यनेन सम्बन्धेनायातं सप्तदशं पापश्रमणीयमध्ययनम् ।

सप्तदशेऽध्ययने पापवर्जनस्य वर्णनम् ।

तच्च संयतस्यैव, स च भोगाद्वित्यागत एवेति स एव संयतेरुदाहरणत इहोच्यत इत्यनेन सम्बन्धेनायातमष्टादशं संयतीयाख्यमध्ययनम् ।

अष्टादशेऽध्ययने भोगाद्वित्यागवर्णनम् ।

भोगाद्वित्यागाच्च श्रामण्यमुपजायते तच्चाप्रतिकर्मतया प्रशस्यतरं भवतीत्यप्रतिकर्मतोच्यते—इत्यनेन सम्बन्धेनायातमेकोनविंशं मृगा-पुत्रीयमध्ययनम् ।

एकोनविंशेऽध्ययने निष्प्रतिकर्मताया वर्णनम् ।

निष्प्रतिकर्मता च अनायत्वपरिभावेनेनैव पालयितुं शक्येति मेहा-निर्ग्रन्थहितमभिधातुमनायतैवानेकधाऽनेनोच्यत इत्यनेन सम्बन्धेनायातं विंशतितमं—महानिर्ग्रन्थीयमध्ययनम् ।

विंशतितमेऽध्ययनेऽनायत्व-वर्णनम् ।

अनाथत्वं च-आलोचनाद्विविक्तचर्ययव चरितव्यमित्यभिप्रायेण
सैवोच्यत इत्यनेनाभिसम्बन्धेनायातमेकाविंशं समुद्रपालीयमध्ययनम् ।
एकाविंशोऽध्ययने विविक्तचर्यावर्णनम् ।

विविक्तचर्या च चरणसहितेन धृतिमता चरण एव शक्यते कर्तुमती
रथनेमिवचरणं तत्र च कथंचिदुत्पन्नविश्रोतसिकेनापि धृतिश्चाधेया
इत्यनेन सम्बन्धेनायात द्वाविंशं रथनेमीयमध्ययनम् ।

द्वाविंशोऽध्ययने कथंचिदुत्पन्नविश्रोतसिकेनापि रथनेमिविद् धृतिश्चरणे
विद्येयेतिवर्णनम् इह तु परेषामपि चित्तवित्तुतिमुपलभ्य केशिगौतम-
वत्तदपनयनाय यतितव्यमित्यभिप्रायेण यथा शिष्यसशयोत्पत्तौ
केशिपृष्टेन गौतमेन धर्मस्तदुपयोगि च लिंगादि वर्णितं तथा अनेना-
भिधीयत इत्यमुना सम्बन्धेनायातं-

त्रयोविंशं केशिगौतमीयमध्ययनम् ।

त्रयोविंशोऽध्ययने परेषामपि चित्तवित्तुतिमुपलभ्य तदपनयनाय
केशिगौतमवद्यतितव्यमितिवर्णनम् । इह तु तदपनयनं सम्यग्-
वायोगत एव, स च प्रवचन-मातृस्वरूपपरिज्ञानत इति तत्स्वरूप-
मुच्यत इत्यनेन सम्बन्धेनायातं-

चतुर्विंशतितममध्ययनम् ।

चतुर्विंशोऽध्ययने प्रवचनमातृणा वर्णनम् । प्रवचनमातरश्च ब्रह्मगुण-
स्थितस्यैव तत्त्वतो भवन्तीति जयघोषचरितवर्णनाद्वारेण ब्रह्मगुणा
उत्पन्त इत्यनेनाभिसम्बन्धेनायातं पञ्चविंशतितमं यज्ञीयाह्य-
मध्ययनम् ।

पञ्चविंशतितमेऽध्ययने ब्रह्मगुणानां वर्णनम् । ब्रह्मगुणवांश्च यतिरेव

तेन चावश्य समाचारी विधेयेति, साऽस्मिन्नभिधीयते-इत्यनेन सम्बन्धेनायातं-

षड्विंशतितमं समाचारीतिनामकमध्ययनम् ।

षड्विंशतितमेऽध्ययने समाचारीवर्णनम् ।

समाचारी च अशठतयैव पालयितुं शक्या, तद्विपक्षभूतशठता-अज्ञान एव च तद्विवेकेनासौ ज्ञायत इत्याशयेन दृष्टान्ततः शठतास्वरूपनि-
रूपणद्वारेणाशठतैवानेनाभिधीयत इत्यनेन सम्बन्धेनायातं सप्तविंशं
खलुङ्कोयमध्ययनम् ।

सप्तविंशेऽध्ययने अशठतयैव समाचारी परिपालयितुं शक्यत-
इति वर्णनम् । समाचारी व्यवस्थितस्य न्यायप्राप्तैव मोक्षमार्गगति-
प्राप्तिरिति तदभिधायक-

मष्टाविंशतितम् मोक्षमार्गगत्याख्यमध्ययनम् ।

अष्टाविंशतितमेऽध्ययने ज्ञानादीनां मुक्तिमार्गत्वेन वर्णनम् ।

ज्ञानादीनि च सवेगादिमूलान्यकर्मताऽवसानानि च तथा भवन्तीति
तानीहोच्यते यद्वा मोक्षमार्गगतेर्वर्णनम् ।

इस पुनरप्रमाद एव तत् प्रधानोपायो ज्ञानादीनामपि तत् पूर्वकत्वा-
दिति, स एव वर्ण्यते ।

अथवा मुक्तिमार्गगतेर्वर्णनम् ।

सा च वीतरागपूर्विकेति यथा तद् भवति तथाऽनेनाभिधीयत इत्यनेन
सम्बन्धेनायातमेकोनविंशं सम्यक्त्वं पराक्रममध्ययनम् ।

एकोनविंशेऽध्ययने-अप्रमादवर्णनम् ।

अप्रमादवता तपोविधेयमिति तत्स्वरूपमुच्यते इत्यनेन सम्बन्धेनायात

त्रिंशं तपोमार्गगत्यध्ययनम् ।

त्रिंशोऽध्ययने तपसो वर्णनम् ।

तच्चरणवत् एव सम्यग् भवतीति चरणमुच्यत इत्यनेन सम्बन्धेनायात-
मेकत्रिंशत्तमं चरणाख्यमध्ययनम् ।

एकत्रिंशत्तमेऽध्ययने चरणस्य वर्णनम् ।

चरणं च प्रमादस्थानपरिहारत एवासेवितुं शक्यं, तत्-परिहारश्च
तत्परिज्ञानपूर्वकमित्यनेन सम्बन्धेनायातं द्वात्रिंशं प्रमादस्थाननाम
कमध्ययनम् ।

द्वात्रिंशोऽध्ययने प्रमादस्थानानां वर्णनम् ।

प्रमादस्थानश्च मिथ्यात्वाविरतिप्रमादकषाययोगाबन्धहेतवः । (तत्त्वा०
अ० ८-सू० १) इति वचनात् कर्म वध्यते, तस्य च का प्रकृतयः
क्रियती वा स्थितिः ? इत्यादि सन्देहापनोदाय त्रयस्त्रिंशत्तमं कर्म
प्रकृतिरित्यध्ययनम् ।

त्रयस्त्रिंशत्तमेऽध्ययने कर्मप्रकृतौना वर्णनम् ।

कर्मस्थितिश्च लेश्यावशत इत्यतस्तदभिधानार्थं चतुस्त्रिंशं लेश-
व्यमध्ययनम् ।

चतुस्त्रिंशत्तमेऽध्ययने लेश्यावर्णनम् ।

लेश्याभिधानेचायमाशयः—अशुभानुभावलेश्या-परित्यज्याः शुभानु-
भावा एव लेश्या अधिष्ठातव्याः । एतच्च भिक्षुगुणव्यवस्थितेन
स्वयन्निवृत्तं शक्यं, तद् व्यवस्थानं च तत् परिज्ञानत इति तदर्थ-
मिदमारभ्यते, एतत्सम्बन्धागतं—

पञ्चत्रिंशत्तममनगारमार्गगतिरित्यध्ययनम् ।

पञ्चत्रिंशत्तमेऽध्ययने हिंसापरिवर्जनादिभिक्षुगुणानां वर्णनम् ।

भिक्षुगुणाश्च जीवाजीवस्वरूपपरिज्ञानत एवासेवितुं शक्यन्त इति
तज्ज्ञापनार्थं षट्त्रिंशत्तमं जीवाजीवविभक्तिरित्यध्ययनम् ।

—श्री शान्तिसुरिकृतटीकाया आधारेण—सम्पादकः

॥ णमोऽस्थुणं तस्स समणस्स भगवओ महावीरस्स ॥

उत्तरज्झयण-सुत्तं

अहं विणयसुयं नामं पढममज्झयणं

संजोगा विप्पमुक्कस्स, अणगारस्स भिक्खूणो ।
विणय पाउकरिस्सामि, आणुपुत्वि सुणेह मे ॥ १ ॥
आणानिद्देसकरे, गुरुणमुववायकारए ।
इंगियागारसपन्ने, से 'विणीए' त्ति वुच्चइ ॥ २ ॥
आणाऽनिद्देसकरे, गुरुणमणुववायकारए ।
पडिणीए असंबुद्धे 'अवीणीए' त्ति वुच्चइ ॥ ३ ॥
जहा सुणी^१ पूइकणी, निक्कसिज्जइ सच्चसो ।
एवं दुस्सीलपडिणीए, मुहुरी निक्कसिज्जइ ॥ ४ ॥
कणकुण्डग चइत्ताणं, विट्ठ भुजइ सुयरे^२ ।
एव सील चइत्ताणं, दुस्सीले^३ रमइ मिए ॥ ५ ॥
सुणिया भाव साणस्स,^१ सुयरस्स^२ नरस्स^३ य ।
विणए ठवेज्ज अप्पाण, इच्छंतो हियमप्पणो ॥ ६ ॥
तम्हा विणयमेसिज्जा, सीलं पडिलभे जओ ।
बुद्धपुत्ते नियागट्ठी, न निक्कसिज्जइ कण्हुई ॥ ७ ॥

निस्सते सियाऽमुहरी, द्दुद्धाण अंतिए सया ।
 अट्ठजुत्ताणि सिक्खिज्जा, निरट्ठाणि उ वज्जए ॥८॥
 अणुसासिओ न कुप्पिज्जा, खँति सेविज्ज पंडिए ।
 खुड्ढेहं सह संसंगि, हास कीडं च वज्जए ॥९॥
 मा य चडालिय कासी, बहुय मा य आलवे ।
 कालेण य अहिज्जित्ता, तयो झाइज्ज एगगो ॥१०॥
 आहूच्च चडालियं कट्ठु, न निण्हविज्ज कयाइ वि ।
 कडं कडे त्ति भासेज्जा, अकड नो कडे त्ति य ॥११॥
 मा 'गलियस्सेव कस', वयणमिच्छे पुणो पुणो ।
 'कस व दट्ठु माइण्णे' पावणं परिवज्जए ॥१२॥

अणासवा थूलवया कुसोला,
 मिउं पि चंड पकरति सीसा ।
 चित्ताणुया लहु दक्खोववेया,
 पसायए ते हु दुरासयपि ॥१३॥
 नापुट्ठो वागरे किच्चि, पुट्ठो वा नालिय वए ।
 कोह असच्च कुवेज्जा, धारेज्जा पियमप्पिय ॥१४॥
 अप्पा चेव दमेयव्वो, अप्पा हु खलुदुद्धमो ।
 अप्पा दत्तो सुही होइ, अस्सि लोए परत्थ य ॥१५॥
 वरं मे अप्पा दत्तो, सज्जमेण तवेण य ।
 माह परेहं दम्मतो, बंधणेहि-वहेहि य ॥१६॥

पडिणीयं च बुद्धाणं, वाया अदुव कम्मणा ।
 आविवा जइ वा रहस्से, नेव कुज्जा कयाइ वि ॥१७॥
 न पक्खओ न पुरओ, नेव किच्चाण पिट्ठओ ।
 न जुंजे ऊरुणा ऊरुं, सयणे नो पडिस्सुणे ॥१८॥
 नेव पल्हत्थियं कुज्जा, पक्खपिंडं च संजए ।
 पाए पसारिए वावि, न चिट्ठे गुरुणतिए ॥१९॥
 आयरिएहिं वाहित्तो, तुसिणीओ न कयाइवि ।
 पसायपेही नियागट्ठी, उवचिट्ठे गुरु सया ॥२०॥
 आलवन्ते लवन्ते वा, न निसीएज्ज कयाइ वि ।
 चइऊणमासण धीरो, जओ जत्तं पडिस्सुणे ॥२१॥
 आसणगओ न पुच्छेज्जा, नेव सेज्जागओ कयाइवि ।
 आगम्मक्कड्डुओ सतो, पुच्छेज्जा पंजलीउडो ॥२२॥
 एव विणयजुत्तस्स, सुत्तं अत्थं च तदुभयं ।
 पुच्छमाणस्स सीसस्स, वागरिज्ज जहासुयं ॥२३॥
 मुसं परिहरे भिक्खू, न य ओहारिणि वए ।
 भासादोसं परिहरे, मायं च वज्जए सया ॥२४॥
 न लवेज्ज पुट्ठो सावज्जं, न निरट्ठं न मम्मयं ।
 अप्पणट्ठा परट्ठा वा, उभयस्सतरेण वा ॥२५॥
 समरेसु अगारेसु, संधीसु य महापहे ।
 एगो एगित्थीए संहि, नेव चिट्ठे न संलवे ॥२६॥

जं मे बुद्धाऽणुसासंति, सीएण फरुसेण वा ।
 मम लाहो त्ति पेहाए, पयओ तं पडिस्सुणे ॥२७॥
 अणुसासणमोवायं, दुक्कडस्स य चोयण ।
 हियं त मण्णइ पण्णो, वेसं होइ असाहुणो ॥२८॥
 हियं विगयभया बुद्धा, फरुसंपि अणुसासण ।
 वेसं तं होइ भूढाणं, खंतिसोहिकर पय ॥२९॥
 आसणे उवचिट्ठेज्जा, अणुच्चेऽकुक्कुए थिरे ।
 अप्पुठ्ठाई निरुठ्ठाई, निसीएज्जप्पकुक्कुए ॥३०॥
 कालेण निक्खमे भिक्खू, कालेण य पडिक्कमे ।
 अकाल च विवज्जित्ता, काले कालं समायरे ॥३१॥
 परिवाडीए नचिट्ठेज्जा, भिक्खू दत्तेसण चरे ।
 पडिरुव्वेण एसित्ता, मिय कालेण भक्खए ॥३२॥
 नाइदूरमणासन्ने, नऽन्नोसि चक्खुफासओ ।
 एगो चिट्ठेज्ज भत्तट्ठा, लघित्ता त नऽइक्कमे ॥३३॥
 नाइउच्चेव नीए वा, नासन्ने नाइदूरओ ।
 फासुय परकड पिंड, पडिगाहेज्ज सजए ॥३४॥
 अप्पपाणेऽप्पवीयम्मि, पडिच्छन्नम्मि सवुडे ।
 समय सजए भुजे, जय अपरिसाडियं ॥३५॥
 सुकडित्ति सुपक्कित्ति, सुच्छिन्ने सुहडे मडे ।
 सुणिट्ठिए सुलाट्ठित्ति, सावज्जं वज्जए मुणो ॥३६॥

रमए पंडिए सासं, 'हयं भइं व वाहए' ।
 बालं सम्मइ सासंतो, 'गलियस्सं व वाहए' ॥३७॥
 खड्डुया मे चवेडा मे, अक्कोसा य वहा य मे ।
 कल्लाणमणुसासंतो, पावदिट्ठित्ति मन्नई ॥३८॥
 पुत्तो मे भाय नाइ त्ति, साहू कल्लाण मन्नई ।
 पावदिट्ठिउ अप्पाणं, सासं दासि त्ति मन्नई ॥३९॥
 न कोवए आयरियं, अप्पाणपि न कोवए ।
 बुद्धोवघाई न सिया, न सिया तोत्त-गवेसए ॥४०॥
 आयरियं कुबियं नच्चा, पत्तिएण पसायए ।
 विज्झवेज्ज पजलीउडो, वएज्ज न पुणो त्ति य ॥४१॥
 धम्मज्जिय च ववहार, बूढेहायरियं सया ।
 तमायरतो ववहारं, गरह नाभिगच्छइ ॥४२॥
 मणोगयं वक्कगयं, जाणित्तायरियस्स उ ।
 तं परिगिज्झ वायाए, कम्मणा उववायए ॥४३॥
 वित्ते अचोइए निच्चं, खिप्पं हवइ सुचोइए ।
 जहोवइट्ठ सुकयं, किच्चाइ कुव्वई सया ॥४४॥
 नच्चा नमइ मेहावी, लोए कित्ती से जाइए ।
 हवई किच्चाण सरणं 'भूयाणं जगई जहा' ॥४५॥
 पुज्जा जस्स पसीयंति, संबुद्धा पुव्वसंथुआ ।
 पसन्ना लाभइस्संति, विउलं अट्ठियं सुयं ॥४६॥

स पुज्जसत्थे सु विणीयसंसए
 मणोरुई चिट्ठई कम्मसंपया ।^१
 तवो-समायारि-समाहिसंबुडे,
 महज्जुई पंच वयाइं पालिया ॥४७॥

स देव-मांधव्व-मणुस्सपूइए, ।
 चइत्तु देहं मलपंकपुव्वयं ।
 सिद्धे वा हवइ सासए,
 देवे वा अप्परए महिइदीए ॥४८॥
 ॥ त्ति बेमि ॥

अह परिसह नामं दुइअमज्झयणं

सुयं से आउसं !

तेणं भगवया एवमक्खाय-

इह खलु बावीसं परिसहा-

समणेणं भगवया महावीरेणं कासवेणं पवेइया ।

जे भिक्खू सोच्चा नच्चा जिच्चा अभिभूय-

भिक्खायरियाए परिव्वयंतो पुट्ठो नो विनिहसेज्जा ।

कयरे खलु ते बावीसं परीसहा-

समणेणं भगवया महावीरेणं कासवेणं पवेइया-

जे भिक्खू सोच्चा नच्चा जिच्चा अभिभूय—
 भिक्खायरियाए परिव्वयंतो पुट्ठो नो विनिहन्नेज्जा ?
 इमे खलु ते बावीसं परीसहा—
 समणेणं भगवया महावीरेणं कासवेण पवेइया—
 जे भिक्खू सोच्चा नच्चा जिच्चा अभिभूय—
 भिक्खायरियाए परिव्वयंतो पुट्ठो नो विनिहन्नेज्जा
 त जहा—

दिग्गिछापरीसहे १ पिवासापरीसहे २ सीयपरीसहे ३
 उत्तिणपरीसहे ४ दंसमसयपरीसहे ५ अचेलपरीसहे ६
 अरइपरीसहे ७ इत्थीपरीसहे ८ चरियापरीसहे ९
 निसीहिया परीसहे १० सेज्जापरीसहे ११ अक्कोसपरिसहे १२
 वहपरीसहे १३ जायणापरीसहे १४ अलाभपरीसहे १५
 रोगपरीसहे १६ तणफासपरीसहे १७ जल्लपरीसहे १८
 सक्कारपुरक्कारपरीसहे १९ पन्नापरीसहे २०
 अन्नाणपरीसहे २१ दंसणपरीसहे २२ ।

परीसहाणं पविभत्ती, कासवेणं पवेइया ।
 तं मे उदाहरिस्सामि, आणुपुर्व्व सुणेह मे ॥ १ ॥

(१) दिग्गिछापरीगए देहे, तवस्सी भिक्खू थामवं ।
 न छिंदे न छिंदावए, न पए न पयावए ॥ २ ॥

कालीपच्चंग—संकासे, किसे धमणिसंतए ।
 मायन्ने असण—पाणस्स, अदीण—मणसो चरे ॥ ३ ॥
 (२) तओ पुट्ठो पिवासाए, दोगुच्छी लज्जसजए ।
 सीओदगं न सेविज्जा, वियडस्सेसण चरे ॥ ४ ॥
 छिन्नावाएसु पंथेसु, आउरे सुपिवासिए ।
 परिसुक्कमुहाऽदीणे, तं तितिवखे परिसहं ॥ ५ ॥
 (३) चरंतं विरयं लूहं, सीयं फुसइ एगया ।
 नाइवेलं मुणी गच्छे, सोच्छाण जिणसासणं ॥ ६ ॥
 न मे निवारणं अत्थि, छवित्ताणं न विज्जइ ।
 अहं तु अग्निं सेवामि, इह भिक्खू न चितए ॥ ७ ॥
 (४) उसिणं परियावेणं, परिदाहेण तज्जिए ।
 घिसु वा परियावेणं, सायं नो परिदेवए ॥ ८ ॥
 उण्हाहितत्तो मेहावी, सिणाणं नो वि पत्थए ।
 गायं नो परिस्सिच्चेज्जा, न वीएज्जा य अप्पयं ॥ ९ ॥
 (५) पुट्ठो य दंसमसएहि, समरे व महामुणी ।
 नागो सगामसीसे वा, सूरुओ अभिहणे पर ॥ १० ॥
 न सतसे न वारेज्जा, मण पि न पओसए ।
 उवेहे न हणे पाणे, भुंजते मससीणियं ॥ ११ ॥
 (६) परिजुण्णेहि वत्थेहि, होक्खामि त्ति अचेलए ।
 अबुवा सचेले होक्खामि, इइ भिक्खू न चितए ॥ १२ ॥

एगयाऽचेलए होइ, सचेले आवि एगया ।
 एयं घम्मं हियं नच्चा, नाणी नो परिदेवए ॥१३॥
 (७) गामाणुगाम रीयंत, अणगार अकिचणं ।
 अरई अणुप्पवेसेज्जा, त तित्तिक्खे परीसहं ॥१४॥
 अरइं पिट्ठओ किच्चा, विरए आयरक्खिए ।
 घम्मारामे निरारम्भे, उवसते मुणी चरे ॥१५॥
 (८) संगो एस मणूसाणं, जाओ लोगम्मि इत्थिओ ।
 जस्स एया परिन्नाया, सुकडं तस्स सामणं ॥१६॥
 एवमादाय मेहावी, पंरु भूया उ इत्थिओ ।
 नो ताहिं विणिहन्नेज्जा, चरेज्जत्तगवेसए ॥१७॥
 (९) एग एव चरे लाढे, अभिभूय परीसहे ।
 गामे वा नगरे वावि, निगमे वा रायहाणिए ॥१८॥
 असमाणे चरे भिक्खू, नेव कुज्जा परिग्गहं ।
 असंसत्तो गिहत्येहि, अणिएओ परिव्वए ॥१९॥
 (१०) सुमाणे सुन्नगारे वा, रुक्खमूले व एगओ ।
 अकुक्कुओ निसीएज्जा, न य वित्तासए परं ॥२०॥
 तत्थ से चिट्ठमाणस्स, उवसग्गाभिघारए ।
 संकाभीओ न गच्छेज्जा, उट्ठित्ता अन्नमासणं ॥२१॥
 (११) उच्चावयाहिं सेज्जाहिं, तवस्सी भिक्खू थामवं ।
 नाइवेलं विहन्निज्जा, पावदिट्ठि विहन्नई ॥२२॥

पइरिक्कुवस्सयं लद्धं, कत्ताणमवुवा पावयं ।
किमेगराईं करिस्सइ, एवं तत्थऽहियासए ॥२३॥

(१२) अक्कोसेज्जा परे भिक्खुं न तेसिं पडिसंजले ।
सरिस्सो होइ बालाणं, तम्हा भिक्खू न संजले ॥२४॥

सोच्चाणं करुसा भासा, दासणा गामकटंगा ।
तुसिणीओ उवेहिज्जा, न ताओ मणसीकरे ॥२५॥

(१३) ह्यो न संजले भिक्खू मणंपि न पओसए ।
तितिक्खं परमं नच्चा, भिक्खू धम्मं विचित्तए ॥२६॥

समणं संजयं दंतं, हणिज्जा कोइ कत्थई ।
नत्थि जीवस्सं नासुत्ति, एवं पेहेज्ज, संजए ॥२७॥

(१४) दुक्करं खलु भो तिच्च, अणगारस्स भिक्खूणो ।
सव्वं से जाइयं होइ, नत्थि किंचि अजाइयं ॥२८॥

गोथरग्गपविट्ठस्स पाणी नो सुप्पसारए ।
सेओ अगारवासुत्ति, इइ भिक्खू न चित्तए ॥२९॥

(१५) परेसु घासमेसेज्जा, भोयणे परिणिट्ठिए ।
लद्धे पिडे अलद्धे वा, नाणुत्तप्पेज्ज पंडिए ॥३०॥

अज्जेवाहं न लब्भामि, अवि लाभो सुए सिया ।
जो एवं पडिसंचिक्खे, अलाभो तं न तज्जए ॥३१॥

(१६) नच्चा उप्पइयं दुक्खं, वेयणाए दुहट्ठिए ।
अदोणो थावए ऋमन्नं, पुट्ठो तत्थऽहियासए ॥३२॥

तेइच्छं नाभिनंदेज्जा, संचिक्खत्तगवेसेए ।
 एवं खु तस्स सामण्णं, जं न कुज्जा न कारवे ॥३३॥
 (१७) अचेत्तगस्स लूहस्स, संजयस्स तवस्सिणो ।
 तणेसु सयमाणस्स, हुज्जा गायविराहणा ॥३४॥
 आयवस्स निवाएण, अउला हवइ वेयणा ।
 एवं नच्चा न सेसंति, तंतुजं तणतज्जिया ॥३५॥
 (१८) कलिनगए मेहावी, पकेण व रएण वा ।
 घिसु वा परियावेण, सायं नो परिदेवए ॥३६॥
 वेएज्ज निज्जरापेही, आरियं धम्मणुत्तरं ।
 जाव सरीरभेउत्ति, जल्लं काएण धारए ॥३७॥
 (१९) अभिवायणमब्भुट्ठाणं, सामो कुज्जा निमंतणं ।
 जे ताइं पडिसेवंति, न तेसिं पीहए मुणी ॥३८॥
 अणुक्कसाई अप्पिच्छे अत्ताएसी अलोलुए ।
 रसेसु नाणुगिज्जेज्जा, नाणुतप्पेज्ज पल्लवं ॥३९॥
 (२०) से नूणं मए पुव्वं, कम्माऽणाणफला कडा ।
 जेणाहं नाभिजाणामि, पुट्ठो केणइ कण्हुई ॥४०॥
 अह पच्छा उइज्जंति, कम्माणाणफला कडा ।
 एवमस्सासि अप्पाणं, नच्चा कम्मविवायणं ॥४१॥
 (२१) निरट्ठगम्मि विरओ, मेहुणाओ सुसंबुडो ।
 जो सक्खं नाभिजाणामि, धम्मं कल्लाणपावणं ॥४२॥

तवोवहाणमादाय, पडिम पडिवज्जओ ।
 एवं पि विहरओ मे, छउम न नियट्ठइ ॥४३॥
 (२२) नत्थि नूण परे लोए, इड्ढी वा वितवस्सिणो ।
 अट्ठुवा वंछिओमिस्सि, इइ भिक्खू न चित्तए ॥४४॥
 अभू जिणा अत्थि जिणा, अट्ठुवा वि भविस्सइ ।
 मुस ते एवमाहसु, इइ भिक्खू न चित्तए ॥४५॥
 एए परीसहा सब्बे, कासवेण पवेइया ।
 जे भिक्खू न विहन्नेज्जा, पुट्ठो केणइ कण्हुई ॥४६॥
 ॥ त्ति वेमि ॥

अह चाउरंगिज्जं नामं तइयमज्झयणं

चत्तारि परमंगाणि दुल्लहाणीह जंतुणो । -
 माणुसत्त^१ सुई^२ सद्धा,^३ सजमम्मि य वीरिय^४ ॥ १ ॥
 समावन्नाण संसारे, नाणागोत्तासु जाइसु ।
 कम्मा नाणाविहा कट्ठे, पुढो विस्सभिया पया ॥ २ ॥
 एगया देवलोएसु, नरएसु वि एगया ।
 एगया आसुरं कायं, अहाकम्मेहिं गच्छइ ॥ ३ ॥
 एगया खत्तिओ होइ, तओ चंडाल-भुक्कसो ।
 तओ कोट्ठ-पयंगो य, तओ कुंथु-पिवीलिया ॥ ४ ॥

एवमावट्टजोणीसु, पाणिणो कम्मकिव्विसा ।
 न निव्विज्जंति संसारे, सच्चट्टेसु व खत्तिया ॥ ५ ॥
 कम्मसंगोहि संमूढा, दुक्खिया बहुवेयणा ।
 अमार्णुसासुं जोणीसु, विणिहम्मति पाणिणो ॥ ६ ॥
 कम्माणं तु पहाणाए, आणुपूव्वी कयाइ उ ।
 जीवा सोहिमणुप्पत्ता, आययति मणुस्तयं ॥ ७ ॥
 माणुसं विग्गहं लद्धं, सुई धम्मस्स दुल्लहा ।
 जं सोच्चा पडिवज्जंति, तवं खंतिमहिंसयं ॥ ८ ॥
 आहच्च सवणं लद्धं, सद्धा परमदुल्लहा ।
 सोच्चा नेआउयं मग्गं, बहवे परिभस्सइ ॥ ९ ॥
 सुइ च लद्धं सद्धं च, वीरियं पुण दुल्लह ।
 बहवे रोयमाणावि, नो य णं पडिवज्जए ॥ १० ॥
 माणुसत्तमि आयाओ, जो धम्मं सोच्चा सद्धे ।
 तवस्सी वीरियं लद्धं, सबुद्धे निद्धुणे रयं ॥ ११ ॥
 सोही उज्जुयभूयस्स, धम्मो सुद्धस्स चिट्ठई ।
 निच्चाण परमं जाइ, 'धयसित्तिव्व पावए' ॥ १२ ॥
 विगिच्च कम्मणो हेउं, जसं संचिणु खंतिए ।
 सरीर पाढवं हिच्चा, उड्ढं पक्कमए दिस ॥ १३ ॥
 विसालसेहिं सीलोहिं, जक्खा उत्तरउत्तरा ।
 'महासुक्का व दिप्पंता', मन्नंता अपुणच्चयं ॥ १४ ॥

अप्पिया देवकामाणं, कामरूवविजम्बिणो ।
 उड्ढं कप्पेसु चिट्ठंति, पुब्बावाससया बहु ॥१५॥
 तत्थ ठिच्चा जहाठाणं, जक्खा आउक्खये चुया ।
 उव्वेति माणुसं जोणिं, से दसंगेअभिजायए ॥१६॥
 (१) खेत्तं-वत्थुं^१ हिरण्ण^२ च, पसवो,^३ दास-पोत्तं^४ ।
 'चत्तारि कामखंघाणि' तत्थ से उव्वज्जइ ॥१७॥
 मित्तव^२ नाइवं^३ होइ, उच्चागोए^४ य वण्णवं^६ ।
 अप्पायंके^६ महापत्ते,^७ अभिजाए^८ जसो^९ बेले^{१०} ॥१८॥
 भुच्चा माणुस्सए सोए, अप्पडिरूवे अहाउय ।
 पुब्बं विसुद्धसद्धम्मे, केवलं बोहिं बुज्झिया ॥१९॥
 चउरगं दुल्लहं नच्चा, संजमं पडिवज्जिया ।
 तवसा धुयकम्मसे, सिद्धे हवइ सासए ॥२०॥ ति बेमि

अह असंखयं नामं चउत्थमज्झयणं

अत्सखयं जीविय मा पमायए,
 जरोवणीयस्स हु नत्थि ताणं ।
 एव वियाणाही जणे पमत्ते,
 किं नु विहिंसा अजया गहिंति ॥ १ ॥

जें पावकम्मेहि घण मणुसा,
समाययती अमड गहाय ।
पहाय ते पामपट्टिए नरे,
वेराणुबद्धा नरयं उर्विति ॥ २ ॥

'तेणे जहा' सधिमुहे गहीए,
सकम्मुणा किच्चइ पावकारी ।
एवं पया पेच्च इह च लोए,
कडाण कम्माण न मोक्ख अत्थि ॥ ३ ॥

संसारमावन्न परस्स अट्ठा,
साहारण ज च करेइ कम्मं ।
कम्मस्स ते तस्म उ वेयकाले,
न बंधवा बंधवय उर्विति ॥ ४ ॥

वित्तेण ताण न लभे पमत्ते,
इममि लोए अदुवा परत्था ।
'दीवप्पणट्ठेव, अणंतमोहे,
नेयाउय ददुमददुमेव ॥ ५ ॥

सुत्तेसु यावि पडिबुद्धजीवी,
न वीससे पडिय आसुपण्णे ।
घोरा मुहुत्ता अबलं सरीर,
'भारंडपक्खीव' चरेप्पमत्ते ॥ ६ ॥

चरे पयाइ परिसंकमाणो,
 ज किंचि पास इह मन्नमाणो ।
 लाभतरे जीविद्य बूहइत्ता,
 पच्छा परिन्नाय मलावधसी ॥ ७ ॥
 छदंनिरोहेण उवेइ मोक्ख,
 'आसे जहा सिक्खिय-वम्मधारी ।'
 पुव्वाइ वासाइं चरेऽप्पमतो,
 तम्हा मुणी खिप्प सुवेई सुक्खं ॥ ८ ॥
 स पुव्वमेव न लभेज्ज पच्छा,
 एसोवमा सासयवाइयाण ।
 विसीयई सिद्धिले आउयम्मि,
 कालोवणीए सरीरस्स भेए ॥ ९ ॥
 खिप्प न सक्केइ विवेगेमेउ,
 तम्हा समुट्ठाय पहाय कामे ।
 समिच्च लोय समया महेसी,
 अप्पाणरक्खी चरमप्पमतो ॥ १० ॥
 मुहु मुहु मोहगुणे जयंत,
 अणेगरूवा समणं चरंतं ।
 फासा फुसति असमंजस च,
 न तीसि भिक्खू मणसा पउस्से ॥ ११ ॥

मदा य फासा बहुलोहणिज्जा,
 तहप्पगारेसु मणं न कुज्जा ।
 रविखज्ज कोहं विणएज्ज माणं,
 मायं न सेवेज्ज पहेज्ज लोहं ॥१२॥

जे ऽसंखया तुच्छपरप्पवाई,
 ते पिज्जदोसाणुगया परज्झा ।
 एए अहम्मे त्ति दुगुछमाणो,
 कखे गुणे जाव सरीर भेउ ॥१३॥

॥त्ति वेमि ॥

अह अकाममरणिज्जं नामं पंचममज्झयणं

अण्णवमि महोर्हास, एगे तिण्णे दुरुत्तरे ।
 तत्थ एगे महापन्ने, इम पण्हमुदाहरे ॥ १ ॥

सत्तिमे य दुवे ठाणा, अक्खाया मरणतिया ।
 अकाममरण^१ चेव, सकाममरण^२ तहा ॥ २ ॥

वालाण अकाम तु, मरण असइ भवे ।
 पडियाण सकाम तु, उक्कोसेण सइं भवे ॥ ३ ॥

तत्थिम पढमं ठाण, महावीरेण देसिय ।
 कामगिद्धे जहा बाले, भिसं कूराइं कुव्वई ॥ ४ ॥

जे गिद्धे कामभोगेसु, एगे कूडाय गच्छई ।
 न मे दिद्धे परे लोए, चक्खुदिट्ठा इमा रई ॥ ५ ॥
 हत्थागया इमे कामा, कालिया जे अणगया ।
 को जाणइ परे लोए, अत्थि वा नत्थि वा पुणो ॥ ६ ॥
 जणेण सद्धि होक्खामि, इइ बाले पगब्भई ।
 कामभोगाणुराएणं, केसं संपडिवज्जई ॥ ७ ॥
 तओ से दंडं समारभई, तसेसु थावरेसु य ।
 अट्ठाए य अणट्ठाए, भूयगामं विहिंसई ॥ ८ ॥
 हिंसे बाले मुसावाई माइल्ले पिसुणे सढे ।
 भुजमाणे सुरं मंस, सेयमेयं ति मन्नई ॥ ९ ॥
 कायसा वयसा मत्ते, वित्ते गिद्धे य इत्थिसु ।
 दुहओ मलं सच्चिणइ, 'तिसुणागुब्ब' महियं ॥ १० ॥
 तओ पुट्ठो आयकेणं, गिलाणो परितप्पई ।
 पभोओ परलोगस्स, कम्माणुप्पेहि अप्पणो ॥ ११ ॥
 सुया मे नरए ठाणा, असीलाणं च जा गई ।
 बालाणं कूरकम्माणं, पगाढा जत्थ वेयणा ॥ १२ ॥
 तत्थोववाइयं ठाणं, जहा मेयमणुस्सुयं ।
 अहा कम्मेहि गच्छंतो, सो पच्छा परितप्पइ ॥ १३ ॥
 'जहासागडिओ' जाण, समं हिच्चा महापहं ।
 विसमं मग्गमोइणो, अक्खे भग्गम्मि सोयई ॥ १४ ॥

एवं धम्मं विजक्कम्मं, अहम्मं पडिवज्जिया ।
 बाले मच्चुमुहं पत्ते, अक्खे भग्गे व सोयई ॥१५॥
 तओ से मरणतम्मि, बाले संतसई भया ।
 अकाममरणं मरइ, धुत्ते व कलिणा जिए ॥१६॥
 एयं अकाममरणं, बालाणं तु पवेइयं ।
 इत्तो सकाममरणं, पडियाणं सुणेह मे ॥१७॥
 मरण पि सपुण्णाणं, जहा मेयमणुस्सुयं ।
 विप्पसणमणाघायं, सजयाण वुत्तीमओ ॥१८॥
 न इमं सव्वेसु भिक्खूसु, न इमं सव्वेसुगारिसु ।
 नाणासीला अगारत्था, विसमसीला य भिक्खुणो ॥१९॥
 संति एगेहिं भिक्खूहिं, गारत्था संजमुत्तरा ।
 गारत्थेहि य सव्वेहिं, साहवो संजमुत्तरा ॥२०॥
 चीराजिण नगिणिणं, जडी संघाढि मुंडिणं ।
 एयाणि वि न तायंति, दुस्सीलं परियागयं ॥२१॥
 पिडोलएव्व दुस्सीले, नरगाओ न मुच्चइ ।
 भिक्खाए वा गिहत्थे वा, सुव्वए कम्मइ दिवं ॥२२॥
 अगारिसामाइयंगाणि, सइढी काएण फासए ।
 पोसहं दुहओ पक्खं, एगरायं न हावए ॥२३॥
 एवं सिक्खासमावसे, गिहीवासे वि सुव्वए ।
 मुच्चइ छविपव्वाओ, गच्छे जक्खसत्तोगयं ॥२४॥

अह जे संवुडे भिक्खू, दोण्हं अन्नयरे सिया ।
 सव्ववुक्खपहीणे वा, देवे वावि सहिइदीए ॥२५॥
 उत्तराइं विमोहाइं जुईमताणुपुव्वसो ।
 समाइण्णाइ जक्खेहि, आवासाइं जसंसिणो ॥२६॥
 दीहाउया इडिढमता, समिद्धा कामरुविणो ।
 अहुणोववन्नसंकासा, भुज्जो अच्चिमालिप्पमा ॥२७॥
 ताणि ठाणाणि गच्छति, सिक्खित्ता सज्जमं तव ।
 भिक्खाए वा गिहत्थे वा, जे संति परिनिव्वुडा ॥२८॥
 तेसि सोच्चा सपुज्जाणं, संजयाण वुसीमओ ।
 न संतसंति मरणंते, सीलवता बहुस्सुया ॥२९॥
 तुलिया विसेसमादाय, दयाधम्मस्त खंतिए ।
 विप्पसीएज्ज मेहावी, तहाभूएण अप्पणा ॥३०॥
 तओ काले अभिप्पेए, सइदी तालिसमतिए ।
 विणएज्ज लोमहरिसं, भेयं देहस्स कंखए ॥३१॥
 अह कालम्मि संपत्ते, आघायाय समुत्सयं ।
 सकाममरणं मरइ, तिण्हमन्नयर मुणी ॥३२॥
 ॥त्ति बेमि ॥

अहं खुड्डागनियंठिज्जं नामं छट्ठममज्झयणं

जावंतऽविज्जापुरिसा, सव्वे ते दुक्खसंभवा ।
लुप्पंति बहुसो मूढा, ससारमि अणंतए ॥ १ ॥
समिक्ख पडिए तम्हा, पास जाइ-पहे बहू ।
अप्पणा सच्चमेसेज्जा, मित्ति भूएसु कप्पए ॥ २ ॥
माया पिया ण्हूसा भाया, भज्जा पुत्ताय ओरसा ।
नालं ते मम ताणाए, लुप्पतस्स सकम्मुणा ॥ ३ ॥
एयमट्ठं सपेहाए, पासे समियदंसणे ।
छिदं गिद्धिं सिणेहं च, न कखे पुव्वसत्थवं ॥ ४ ॥
गवासं मणि-कुंडल, पसवो दास-पोरुस ।
सव्वमेयं चइत्ताणं, कामरूबी भविस्ससि ॥ ५ ॥
(थावर जंगमं चेव, धणं धन्नं उवक्खर ।
पच्चमाणस्स कम्मेहिं, नालं दुक्खाउ भोयणे ॥)
अज्झत्थं सव्वओ सव्व, दिस्स पाणे पियाउए ।
न हणे पाणिणो पाणे, भयवेराओ उवरए ॥ ६ ॥
आयाणं नरयं दिस्स, नायएज्ज तणामवि ।
दोगुंछी अप्पणो पाए, दिन्नं भुजेज्ज भोयणं ॥ ७ ॥
इहमेगे उ मन्नति, अपच्चक्खाय पावग ।
आयरिय विदित्ता ण, सव्वदुक्खा विमुच्चए ॥ ८ ॥

भणंता अकरेंता य, बंध-मोक्खपइण्णिणो ।
 वायावीरियभैत्तेण, समासासेत्ति अप्पयं ॥९॥
 न चित्ता तायए भासा, कुओ विज्जाणुसासणं ।
 विसन्ना पावकम्मेहि, बाला पंडियमाणिणो ॥१०॥
 जे केइ सरीरे सत्ता, वण्णे रुवे य सव्वसो ।
 मणसा काय-वक्केणं, सव्वे ते वुक्खसंभवा ॥११॥
 आवन्ना दीहमद्धाण, संसारंमि अणंतए ।
 तम्हा सव्वदिसं पत्त, अप्पमत्तो परिव्वए ॥१२॥
 बहिया उद्धमादाय, नावकखे कयाइ वि ।
 पुव्व-कम्म-क्खयट्ठाए, इमं देहं समुद्धरे ॥१३॥
 विंगिच कम्मुणो हेउं, कालकंखी परिव्वए ।
 मायं पिडस्स पाणस्स, कडं लद्धूण भक्खए ॥१४॥
 सन्निहि च न कुव्वेज्जा, लेवमायाए संजए ।
 'पक्खी-पत्तं समायाय' निरवेक्खो परिव्वए ॥१५॥
 एसणासमिओ लज्ज, गामे अणियओ चरे ।
 अप्पमत्तो पमत्तेहि, पिडवायं गवेसए ॥१६॥

एवं ते उदाहु अणुत्तरनाणी,
 अणुत्तरदसी अणुत्तरनाणदंसणधरे-
 अरहा नायपुत्ते भगवं,
 वेसालिए वियाहिए ॥१७॥
 ॥ त्ति वेमि ॥.

अह एलइज्ज नामं सत्तममज्झयणं

* (१) जहाएसं समुद्दिस्स, कोइ पोसेज्ज एलयं ।
 ओयणं जवसं देज्जा, पोसेज्जावि सयंगणे ॥ १ ॥
 तओ से पुट्ठे परिवूढे, जायमेए महोदरे ।
 पोणिए विउले देहे, आएसं परिकंखए ॥ २ ॥
 जाव न एइ आएसे, ताव जीवइ से ऽदुही ।
 अह पत्तम्मि आएसे, सीस छेत्तूण भुज्जई ॥ ३ ॥
 जहा से खलु उरब्भे, आएसाए समीहिए ।
 एवं वाले अहम्मिद्धे, ईहई नरयाउयं ॥ ४ ॥
 हिंसे वाले मुसावाई, अट्ठाणंमि विलोवए ।
 अन्नदत्तहरे तेणे, माई क नु हरे सढे ॥ ५ ॥
 इत्थी-विसयगिद्धे य, महारंभपरिगहे ।
 भुजमाणे सुर मंसं, परिवूढे परंदमे ॥ ६ ॥
 अयकक्करभोई य, तुंदिल्ले चियलोहिए ।
 आउयं नरए कंखे, 'जहाएस व एलए' ॥ ७ ॥
 आसणं सयणं जाणं, वित्त कामे य भुजिया ।
 दुस्साहंडं धणं हिच्चा, बहु संधिणिया रयं ॥ ८ ॥

*ओरब्भे अ कागिणी, अवए अ ववहारे सागरे चेव ।

१ पचेए दिट्ठत्ता, उरविभज्जमि, अज्झयणे ॥

તઓ કમ્મગુરુ જંતૂ, પન્નુપ્પન્નપરાયણે ।
'અએવ્વ' આગયાએસે, મરણંતમ્મિ સોયઇ ॥૧॥

તઓ આઝપરિક્કહીણે, ચુથદેહા વિહસગા ।
આસુરિય દિસં બાલા, ગચ્છંતિ અવસા તમ ॥૧૦॥

(૨) જહા કાગિણિયે હેહ, સહસ્સં હારણે નરો ।
(૩) અપત્થ અંગમ મોચ્છા, રાયા રજ્જ તુ હારણે ॥૧૧॥

એવ મણુસસગા કામા, દેવકામાણ અતિયે ।
સહસ્સગુણિયા મુજ્જો, આઝ કામા ય દિવ્વિયા ॥૧૨॥

અણેગવાસાનહયા, જા સા પન્નવઓ ઠિઈ ।
જાણિ જીયતિ ડુમ્મેહા, ઝણે વાસસયાહ ॥૧૩॥

(૪) જહા ય તિન્નિ વાણિયા, મૂલં ઘેત્તૂણ નિગયા ।
એગોજ્જથ લહણે લાભ, એગો મૂલેણ આગઓ ॥૧૪॥

એગો મૂલ પિ હારિતા, આગઓ તત્થ વાણિઓ ।
વવહારે ઝવમા એસા, એવં ધમ્મે વિયાણહ ॥૧૫॥

માણુસત્તં મ્મવે મૂલ, લાભો દેવગઈ મ્મવે ।
મૂલચ્છેણ જીવાણં નરગ-તિરિક્કત્તણ ધુવં ॥૧૬॥

કુહઓ ગઈ બાલસ, આવઈવહમૂલિયા ।
દેવત્ત માણુસત્ત ચ, જ જિણે લોલયાસદે ॥૧૭॥

તઓ જિણે સદ્દ હોઈ, કુવિહં કુગઈ ગણે ।
કુલ્લહા તસ્સ ઝમ્મગા, અદ્ધાણે સુચિરાવિ ॥૧૮॥

एवं जियं सपेहाए, तुलिया बालं च पंडियं ।
 मूलिय ते पवेसति, माणुसं जोणिमेति जे ॥१९॥
 वेमायाहिं सिक्खाहिं, जे नरा निहिसुच्चया ।
 उवेति माणुसं जोणि, कम्मसच्चा हु पाणिणो ॥२०॥
 जे सिं तु विउला सिक्खा, मूलिय ते अइच्छिया ।
 सीलवन्ता सविसेसा, अदीणा जंति देवयं ॥२१॥
 एवमदीणवं भिक्खू, अगारि च वियाणिया ।
 कहण्णु जिच्चमेलिक्खं, जिच्चमाणे न सविदे ॥२२॥
 (५) जहा कुसग्गे उदग, समुद्देण सम मिणे ।
 एवं माणुस्सगा कामा, देवकामाण अतिए ॥२३॥
 कुसग्गमेत्ता इमे कामा, सन्निरुद्धम्मि आउए ।
 कस्स हेउ पुराकाउ, जोगक्खेमं न सविदे ॥२४॥
 इह कामाणियट्टस्स, अत्तट्ठे अवरज्जइ ।
 सोच्चा नेयाउयं मग्गं, ज भुज्जो परिभस्सइ ॥२५॥
 इह कामाणियट्टस्स, अत्तट्ठे नावरज्जई ।
 पूईदेहनिरोहण, भवे देवित्ति मे सुयं ॥२६॥
 इड्ढो जुई जसो वण्णो, आउ सुहमणुत्तरं ।
 भुज्जो जत्थ मणुस्सेसु, तत्थ से उववज्जइ ॥२७॥
 बालस्स पस्स बालत्तं, अहम्मं पडिवज्जिया ।
 चिच्चा धम्म अहम्मिट्ठे, नरएसूववज्जइ ॥२८॥

धीरस्स पस्स धीरत्तं, सव्वधम्माणुवत्तिणो ।
 चिच्चा अधम्मं धम्मिद्वे, देवेषु उववज्जइ ॥ २९ ॥
 तुलियाण बालभावं, अबालं चेव पंडिइ ।
 चइऊण बालभावं, अबालं सेवए मुणी ॥ ३० ॥
 ॥ त्ति बेमि ॥

अह काविलियं नामं अट्ठममज्झयणं

अधुवे असासयम्मि, संसारंमि दुक्खपउराए ।
 किं नाम होज्ज तं कम्मयं ? जेणाह दुग्गइं न गच्छेज्जा ॥ १ ॥
 विजहित्तु पुव्वसजोयं, न सिणेहं कहिंचि कुव्वेज्जा ।
 असिणेह-सिणेहकरेहि, दोस-पओसेहि मुच्चए भिक्खू ॥ २ ॥
 तो नाण-दंसण-समग्गो, हियनिस्सेसाए सव्वजीवाणं ।
 तेत्ति विमोक्खणट्ठाए, भासइ मुणिवरो विगयभोहो ॥ ३ ॥
 सव्वं गथं कलहं च, विप्पजहे तहविहं भिक्खू ।
 सव्वेसु 'कामजाएसु, पासमाणो न लिप्पई ताई ॥ ४ ॥
 भोगामिस-बोस-विसप्पे, हिय-निस्सेयस-बुद्धि-बोच्चत्थे ।
 बाले व मंदिए मूढे, बज्झइ 'मच्छिया व खेलम्मि' ॥ ५ ॥
 दुप्परिच्चया इमे कामा, नो सुजहा अधीरपुरिसेहिं ।
 अह संति सुव्वया साहू, जे तरंति अतरं 'वणिग्गया वा' ॥ ६ ॥

समणा मु एगे वयमाणा, पाणवहं मिया अयाणंता ।
 मंदा निरयं गच्छंति, बाला पावियाहिं दिट्ठीहिं ॥ ७ ॥
 न हु पाणवहं अणुजाणे, मुच्चेज्ज कयाइ सव्वदुक्खाणं ।
 एवमारिएहिं अक्खायं, जेहिं इमो साहुधम्मो पन्नतो ॥ ८ ॥
 पाणे य नाइवाएज्जा, से समीइ त्ति वुच्चइ ताई ।
 तओ से पावय कम्मं, निज्जाइ 'उदगं व थलाओ' ॥ ९ ॥
 जगनिस्सिएहिं भूएहिं, तसनामेहिं थावरोहिं च ।
 नो तेसिमारभे दंडं, मणसा वयसा कायसा चेव ॥ १० ॥

सुद्धेसणाओ नच्चाणं, तत्थ ठवेज्ज भिक्खू अप्पाणं ।
 जायाए घासमेसेज्जा, रसगिद्धे न सिया भिक्खाए ॥ ११ ॥
 पंताणि चेव सेवेज्जा, सीय पिंडं पुराण-कुम्मासं ।
 अदु वुक्कसं पुलागं वा, जवणट्ठाए न सेवए मंथुं ॥ १२ ॥
 जे लक्खण च सुविणं च, अंगविज्जं च जे पउंजंति ।
 न हु ते समणा वुच्चंति, एवं आयरिएहिं अक्खायं ॥ १३ ॥
 इह जीवियं अणियमेत्ता, पभट्ठा समाहिजोएहिं ।
 ते काम-भोग-रस-गिद्धा, उववज्जंति आसुरे काए ॥ १४ ॥
 तत्तो वि य उव्वट्ठित्ता, संसार बहु अणुपरियडंति ।
 बहु-कम्म-लेव-लित्ताणं, बोही होइ सुदुल्लहा तेसिं ॥ १५ ॥
 कसिणंपि जो इमं लोयं, पडिपुण्णं दलेज्ज एगस्स ।
 तेणावि से न संतुस्से, इइ दुप्परए इमे आया ॥ १६ ॥

जहा लाहो तथा लोहो, लाहा लोहो पवड्ढइ ।
 दोमासकयं कज्जं, कोडीए वि न निट्ठियं ॥१७॥
 नो रक्खसीसु गिज्जेज्जा, गंडवच्छासुऽणगवित्तासु ।
 जाओ पुरिस पलोभित्ता, खेल्लंति जहा व दासेह ॥१८॥
 नारीसु नो पगिज्जेज्जा, इत्थी विप्पजहे अणगारे ।
 धम्मं च पेसलं नच्चा, तत्थ ठवेज्ज भिक्खू अप्पाण ॥१९॥
 इअ एस धम्मे अक्खाए, कविलेणं च विसुद्धपप्पेणं ।
 तरिहंति जे उ काहंति, तेह आराहिया दुवे लोगा ॥२०॥
 ॥ त्ति बेमि ॥

अहं नमि-पव्वज्जा नामं नवममज्ज्ञयणं

चइअण देवलोगाओ, उववन्नो माणुसमि लोगमि ।
 उवसत-मोहणिज्जो, सरइ पोरणिणं जाइ ॥ १ ॥
 जाइं सरित्तु भयव, सय-संबुद्धो अणुत्तरे धम्मे ।
 पुत्तं ठवित्तु रज्जे, अभिणिक्खमइ नमी राया ॥ २ ॥
 सो देवलोगसरिसे अतेउर-वरगओ वरे भोए ।
 भुजित्तु नमी राया, बुद्धो भोगे परिच्चयइ ॥ ३ ॥
 मिहिलं सपुर-अणवय, बलमोरोह च परियण सव्व ।
 विच्चा अभिनिक्खंतो, एगंतमहिट्ठिओ भयवं ॥ ४ ॥

કોલાહલગ-ભૂયં, આસી મિહિલાએ પવ્વયંતંમિ ।
 તદ્વયા, રાયરિસિમિ, નામિમિ અભિણિવ્વમતંમિ ॥ ૫ ॥
 અબ્ભુદ્ધિયં રાયરિસિ, પવ્વજ્ઞાદ્વાણમુત્તમં ।
 સવ્વકો માહુણરૂવેણ, ઇમં વયણમન્વવી ॥ ૬ ॥
 (૧) કિંતુ મો અજ્ઞ મિહિલાએ, કોલાહલગસંકુલા ।
 સુવ્વતિ દારુણા સદ્દા, પાસાણસુ ગિહેસુ ય ॥ ૭ ॥
 એયમદ્દું નિસામિત્તા, હેઝ-કારણ-ચોદ્ધઓ ।
 તઓ નમી રાયરિસી, દેવિદં ઇણમન્વવી ॥ ૮ ॥
 મિહિલાએ ચેદ્ધે વચ્છે, સીયચ્છાએ મણોરમે ।
 પત્ત-પુપ્ફ-ફલોવેએ, બહૂણં બહુગુણે સયા ॥ ૯ ॥
 વાણ હીરમાણમ્મિ, ચેદ્ધયમ્મિ મણોરમે ।
 દુહિયા અસરણા અત્તા, એ કંદંતિ મો ! યગા ॥ ૧૦ ॥
 એયમદ્દું નિસામિત્તા, હેઝ-કારણ-ચોદ્ધઓ ।
 તઓ નામિ રાયરિસિ, દેવિદો ઇણમન્વવી ॥ ૧૧ ॥
 (૨) એસ અગ્ગીય વાઙ્ગય, એય ડજ્ઞદ્ધ મંદિરં ।
 મયવ અતેરર તેણં, કીસ ણ નાવપેક્કહ ॥ ૧૨ ॥
 એયમદ્દું, નિસામિત્તા, હેઝ-કારણ-ચોદ્ધઓ ।
 તઓ નમી રાયરિસી, દેવિદં ઇણમન્વવી ॥ ૧૩ ॥
 સુહ વસામો જીવામો, જોસિ મો નત્થિ કિચ્છણં ।
 મિહિલાએ ડજ્ઞમાણીએ, ન મે ડજ્ઞદ્ધ કિચ્છણં ॥ ૧૪ ॥

चत्त पुत्त-कलत्तस्स, निव्वावारस्स भिक्खुणो ।
पियं न विज्जइ किञ्चि, अप्पियं पि न विज्जइ ॥१५॥

बहुं खु मुणिणो भदं, अणगारस्स भिक्खुणो ।
सव्वओ विप्पमुक्कस्स, एगंतमणुपत्तओ ॥१६॥

एयमट्ठं निसामित्ता, हेऊ-कारण-चोइओ ।
तओ नमी रायरिस्सि, देवदो इणमब्बवी ॥१७॥

(३) पागारं कारइत्ताणं, गोपुरद्वालाणि य ।
उत्सूलग-सयग्घीओ, तओ गच्छसि खत्तिया ! ॥१८॥

एयमट्ठं निसामित्ता, हेऊ-कारण-चोइओ ।
तओ नमी रायरिस्सी, देवदं इणमब्बवी ॥१९॥

सदं नगरं किच्चा, तव-संवरमगलं ।
खीत्तं निउणपागारं, तिगुत्त दुप्पघंसयं ॥२०॥

धणुं परक्कमं किच्चा, जीवं च ईरियं सया ।
घिइं च केयणं किच्चा, सच्चेणं पलिसंयए ॥२१॥

तव-नाराय-जुत्तेणं, भित्तूणं कम्म-कंचुयं ।
मुणी विगय-संगामो, भवाओ परिमुच्चई ॥२२॥

एयमट्ठं निसामित्ता, हेऊ-कारण-चोइओ ।
तओ नमि रायरिस्सि, देवदो इणमब्बवी ॥२३॥

(४) पासाए कारइत्ताणं, बड्ढमाणगिहाणि य ।
बालगपोइयाओ य, तओ गच्छसि खत्तिया ! ॥२४॥

एयमट्ठं निसामित्ता, हेऊ-कारण-चोइओ ।
तओ नमी रायरिसी, देविद इणमब्बवी ॥२५॥

संसय खलु सो कुणइ, जो मग्गे कुणइ घरं ।
जत्थेव गंतुमिच्छेज्जा, तत्थ कुब्बिज्ज सासयं ॥२६॥

एयमट्ठं निसामित्ता, हेऊ-कारण-चोइओ ।
तओ नमी रायरिसि, देविदो इणमब्बवी ॥२७॥

(५) आमोसे लोमहारे य, गंठिभेए य तक्करे ।
नगरस्स खेमं काऊणं, तओ गच्छसि खत्तिया ! ॥२८॥

एयमट्ठं निसामित्ता, हेऊ-कारण-चोइओ ।
तओ नमी रायरिसी, देविदं इणमब्बवी ॥२९॥

असइं तु मणुस्सेहिं, मिच्छा दडो पउंजए ।
अकारिणोऽत्थ बज्झति, मुच्चए कारओ जणो ॥३०॥

एयमट्ठं निसामित्ता, हेऊ-कारण-चोइओ ।
तओ नमि रायरिसि, देविदो इणमब्बवी ॥३१॥

(६) जे केइ पत्थिवा तुज्झं, नानमंति नराहिवा !
वसे ते ठावइत्ताणं, तओ गच्छसि खत्तिया ! ॥३२॥

एयमट्ठं निसामित्ता, हेऊ-कारण-चोइओ ।
तओ नमी रायरिसी, देविदं इणमब्बवी ॥३३॥

जो सहस्सं सहस्साणं, संगामे वुज्जए जिणे ।
एणं जिणेज्ज अप्पाणं, एस से परमो जओ ॥३४॥

अप्याणमेव जुज्झाहि, किं ते जुज्झेण बज्झओ ।
 अप्याण चेव अप्याणं, जइत्ता सुहमेहए ॥३५॥

पंचिदियाणि कोहं, माणं साय तहेव लोह च ।
 दुज्जयं चेव अप्याण, सव्वमप्ये जिए जिय ॥३६॥

एयमट्ठ निसामित्ता, हेऊ-कारण-चोइओ ।
 तओ नमिं रायरिसि, देवदो इणमब्बवी ॥३७॥

(७) जइत्ता विउले जन्ने, भोइत्ता समण-माहणे ।
 दन्त्वा भोच्चाय जिट्ठा य, तओ गच्छसि खत्तिया । ॥३८॥

एयमट्ठ निसामित्ता, हेऊ-कारण-चोइओ ।
 तओ नमी रायरिसी, देवदो इणमब्बवी ॥३९॥

जो सहस्स सहस्साणं, मासे मासे गवं दए ।
 तस्स वि सज्जसो सेओ, अदितस्स वि किच्चणं ॥४०॥

एयमट्ठ निसामित्ता, हेऊ-कारण-चोइओ ।
 तओ नमिं रायरिसि, देवदो इणमब्बवी ॥४१॥

(८) घोरासमं चइत्ताणं, अन्न पत्थेसि आसमं ।
 इहेव पोसह-रओ, भवाहि मणुयाहिवा । ॥४२॥

एयमट्ठ निसामित्ता, हेऊ-कारण-चोइओ ।
 तओ नमी रायरिसी, देवदो इणमब्बवी ॥४३॥

मासे मासे तु जो बालो, कुसणेणं तु भुजए ।
 न सो सुअवखाय-धम्मस्स, कलं अघइ सोलसि ॥४४॥

एयमट्ठं निसामित्ता, हेऊ-कारण-चोइओ ।

तओ नमि रायरिसि, देविदो इणमव्ववी ॥४५॥

(९) हिरण्ण सुवण्ण मणि-मुत्त, कस वूसं च वाहणं ।

कोस वड्ढावइत्ताण, तओ गच्छसि खत्तिया । ॥४६॥

एयमट्ठं निसामित्ता, हेऊ-कारण-चोइओ ।

तओ नमी रायरिसी, देविदं इणमव्ववी ॥४७॥

सुवण्ण-रूपस्स उ पव्वया भवे,

सिया हु केलास-समा असंखया ।

नरस्स लुद्धस्स न तेहि किंचि,

इच्छा हु आगास-समा अणत्तिया ॥४८॥

पुढवी साली जवा चेव, हिरण्ण पमुभिस्सह ।

पडिपुण्ण नालमेगस्स, इइ विज्जा तवं चरे ॥४९॥

एयमट्ठं निसामित्ता, हेऊ-कारण-चोइओ ।

तओ नमि रायरिसि, देविदो इणमव्ववी ॥५०॥

(१०) अच्छेरेयमव्वुदए, भोए चयसि पत्थिवा ।

असते कामे पत्थेसि, संकप्पेण विह्वलसि ॥५१॥

एयमट्ठं निसामित्ता, हेऊ-कारण-चोइओ ।

तओ नमी रायरिसी, देविदं इणमव्ववी ॥५२॥

सल्लं कामा विसं कामा, कामा आसी-विसोवमा ।

कामे पत्थेमाणा, अकामा जंति दुग्गइं ॥५३॥

अहे वयइ कोहेण, माणेण अहमा गई ।
 माया गइ पडिग्घाओ, लोहाओ दुहओ भय ॥५४॥
 अवउज्झिऊण माहणरूव, विउव्विऊण इदत्तं ।
 वंदइ अभित्थुणंतो, इमाहिं महराहिं वग्गूहिं ॥५५॥
 अहो ते निज्जिओ कोहो, अहो माणो पराजिओ ।
 अहो ते निरक्किया माया, अहो लोहो वसीकओ ॥५६॥
 अहो ते अज्जवं साहु । अहो ते साहु । मट्ठव ।
 अहो ते उत्तमा खतो, अहो ते सुत्ति उत्तमा ॥५७॥
 इह सि उत्तमो भते, पेच्चा होहिंसि उत्तमो ।
 लोपुत्तमुत्तम ठाणं, सिद्धि गच्छसि नीरओ ॥५८॥
 एवं अभित्थुणंतो, रायरिसि उत्तमाए सद्धाए ।
 जयाहिणं करंतो, पुणो पुणो वदए सक्को ॥५९॥
 तो वदिऊण पाए, चक्कं-कुस-लक्खणे मुणिवरस्स ।
 आगासेणुप्पइओ, ललिय-चवल-कुडल-तिरोडी ॥६०॥
 नमी नमेइ अप्पाणं, सक्ख सक्केण चोइओ ।
 चइऊण गेह वइदेही, सामण्णे पज्जुवट्ठिओ ॥६१॥
 एवं करंति सबुद्धा, पडिया पवियक्खणा ।
 विणियट्ठति भोगेसु, जहा से नमी रायरिसि ॥६२॥
 ॥ त्ति वेमि ॥

अहं दुमपत्तयं नामं दसममञ्जयणं

‘दुमपत्तए पंडुरए जहा,’
निवडइ राइगणाण अच्चए ।
एव मणुयाण जीवियं,
समयं गोयम ! मा पमायए ॥ १ ॥

कुस्सगो जह ओसाविट्ठए’
‘थोव चिट्ठइ लवमाणाए ।
एवं मणुयाण जीवियं,
समयं गोयम ! मा पमायए ॥ २ ॥

इइ इत्तरियम्मि आउए,
जीवियए बहुपच्चवायए ।
विट्ठणाहि रय पुरे कडं,
समयं गोयम ! मा पमायए ॥ ३ ॥

दुल्लहे खलु माणुसे भवे,
चिरकालेण वि सच्चपाणिणं ।
गाढा य विवाग कम्मणो,
समयं गोयम ! मा पमायए ॥ ४ ॥

पुढविककायमइगओ, उक्कोसं जीवो उ संबसे ।
कालं संखाईयं, समयं गोयम ! मा पमायए ॥ ५ ॥

आउक्कायमइगओ, उक्कोस जीवो उ संवसे ।
 कालं संखाईयं, समयं गोयम ! मा पमायए ॥ ६ ॥
 तेउक्कायमइगओ, उक्कोस जीवो उ संवसे ।
 कालं संखाईयं, समयं गोयम ! मा पमायए ॥ ७ ॥
 वाउक्कायमइगओ, उक्कोस जीवो उ संवसे ।
 कालं संखाईयं, समयं गोयम ! मा पमायए ॥ ८ ॥
 वणस्सइक्कायमइगओ, उक्कोस जीवो उ संवसे ।
 कालमणतदुरतयं, समयं गोयम ! मा पमायए ॥ ९ ॥
 वेइंदियकायमइगओ, उक्कोस जीवो उ संवसे ।
 कालं संखिज्जसन्नियं, समयं गोयम ! मा पमायए ॥ १० ॥
 तेइंदियकायमइगओ, उक्कोस जीवो उ संवसे ।
 कालं संखिज्जसन्नियं, समयं गोयम ! मा पमायए ॥ ११ ॥
 चउरिंदियकायमइगओ, उक्कोस जीवो उ संवसे ।
 कालं संखिज्जसन्नियं, समयं गोयम ! मा पमायए ॥ १२ ॥
 पाँचदियकायमइगओ, उक्कोस जीवो उ संवसे ।
 सत्त-ट्ठ-भव-गहणे, समयं गोयम ! मा पमायए ॥ १३ ॥
 देवे नेरइए य अइगओ, उक्कोस जीवो उ संवसे ।
 इक्के-क्क-भवगहणे, समयं गोयम ! मा पमायए ॥ १४ ॥
 एवं भवसंसारे, संसरई सुहासुहेहि कम्मोहि ।
 जीवो पमायबहुलो, समय गोयम ! मा पमायए ॥ १५ ॥

लद्धूण वि माणुसत्तणं,
 आरिअत्तं पुणरवि दुल्लहं ।
 बहवे दसुया मिलक्खुया,
 समयं गोयम ! मा पमायए ॥१६॥

लद्धूण वि आरियत्तणं,
 अहीण-पंचेदियया हु दुल्लहा ।
 विगल्लियया हु दीसई,
 समयं गोयम ! मा पमायए ॥१७॥

अहीण-पंचेदियत्तं पि से लहे,
 उत्तम-धम्म-सुई हु दुल्लहा ।
 कुतित्थि-निसेवए जणे,
 समयं गोयम ! मा पमायए ॥१८॥

लद्धूण वि उत्तमं सुई,
 सद्दहणा पुणरावि दुल्लहा ।
 मिच्छत्त-निसेवए जणे,
 समयं गोयम ! मा पमायए ॥१९॥

धम्मं पि हु सद्दहंतया,
 दुल्लहया काएण फासया ।
 इह-काम-गुणेहि मुच्छिया,
 समयं गोयम ! मा पमायए ॥२०॥

परिजूरइ ते सरीरयं, केसा पंडुरया हवंति ते ।
 से सोयबले य हायई, समयं गोयम ! मा पमायए ॥२१॥
 परिजूरइ ते सरीरयं, केसा पंडुरया हवंति ते ।
 से चक्खुबले य हायई, समयं गोयम ! मा पमायए ॥२२॥
 परिजूरइ ते सरीरयं, केसा पंडुरया हवंति ते
 से घाणबले य हायई, समयं गोयम ! मा पमायए ॥२३॥
 परिजूरइ ते सरीरयं, केसा पंडुरया हवंति ते ।
 से जिम्भबले य हायई, समयं गोयम ! मा पमायए ॥२४॥
 परिजूरइ ते सरीरयं, केसा पंडुरया हवंति ते ।
 से फासबले य हायई, समयं गोयम ! मा पमायए ॥२५॥
 परिजूरइ ते सरीरयं, केसा पंडुरया हवंति ते ।
 से सब्बबले य हायई, समयं गोयम ! मा पमायए ॥२६॥

अरई गंड विसूइया,
 आयंका विविहा फुसंति ते ।
 विहडइ विद्धंसइ ते सरीरयं,
 समयं गोयम ! मा पमायए ॥२७॥
 बोच्छिंद सित्तेहमप्पणो,
 'कुमयं सारइयं व पाणिंयं'
 से सब्बसित्तेहवज्जिए,
 समयं गोयम ! मा पमायए ॥२८॥

चिच्चाण घणं च भारियं,
 पव्वइओहिसि अणगारियं ।
 मा वंतं पुणो वि आविए,
 समयं गोयम ! मा पमायए ॥२९॥

अवउज्झिय मित्त-बंधवं,
 विउलं चेव घणोहसंचयं ।
 मा तं विइयं गवेसए,
 समयं गोयम ! मा पमायए ॥३०॥

न हु जिणे अज्ज दिस्सई,
 बहुमए दिस्सइ मग्ग-देसिए ।
 संपइ नेयाउए पहे,
 समयं गोयम ! मा पमायए ॥३१॥

‘अवसोहिय कंटगापहं’,
 ओइण्णो ति पहं महालयं ।
 गच्छसि मग्गं विसोहिया,
 समयं गोयम ! मा पमायए ॥३२॥

‘अवले जह भार-वाहए,’
 मा मग्गे विसमेऽवगाहिया ।
 पच्छा पच्छाणुतावए,
 समयं गोयम ! मा पमायए ॥३३॥

‘तिण्णो हु सि अण्णवं महं,
 किं पुण चिट्ठसि तीरमागओ ।
 अभितुर पार गमित्तए,
 समयं गोयम ! मा पमायए ॥३४॥
 अकलेवरसेणं उस्सिया,
 सिद्धि गोयम ! लोय गच्छसि ।
 खेमं च सिव अणुत्तर,
 समयं गोयम ! मा पमायए ॥३५॥

बुद्धे परिनिव्वुडे चरे,
 गाम्माए नगरे व सजए ।
 संतिमग्ग च बूहए,
 समयं गोयम ! मा पमायए ॥३६॥

बुद्धस्स निसम्म भासियं,
 सुकहिय मट्ठप ओवसोहियं ।
 रागं दोसं च छिदिया,
 सिद्धिगइ गए गोयमे ॥३७॥

॥ ति बेमि ॥

अह बहुस्सुयपुज्जा-णामं एगारसमज्झयणं

संजोगा विप्पमुक्कस्स, अणगारस्स भिक्खुणो ।
आयारं पाउकरिस्सामि, आणुपुर्व्व सुणेह मे ॥ १ ॥
जे यावि होइ निव्विज्जे, थद्धे लुद्धे अणिग्गहे ।
अभिक्खणं उल्लवइ 'अविणीय' अबहुस्सुए ॥ २ ॥
अह पंचहिं ठाणेहिं, जेहिं सिक्खा न लब्भइ ।
थम्भा^१ कोहा^२ पमाएणं,^३ रोगेणा^४ लस्सएण^५ य ॥ ३ ॥
अह अट्ठहिं ठाणेहिं, 'सिक्खासीलि' त्ति वुच्चइ ।
अहस्सिरे^१ सया बंते,^२ न य मम्ममुदाहरे^३ ॥ ४ ॥
नासीले^४ न विसीले,^५ न सिया अइलोलुए^६ ।
अकोहणे^७ सच्चरए,^८ 'सिक्खासीलि' त्ति वुच्चइ ॥ ५ ॥
अह चोइसहिं ठाणेहिं, वट्ठमाणे उ संजए ।
अविणीए वुच्चई सो उ, निव्वाणं च न गच्छई ॥ ६ ॥
अभिक्खणं कोही हवइ,^१ पवंधं च पकुव्वई^२ ।
मेत्तिज्जमाणो वमई,^३ सुयं लद्धूण मज्जई^४ ॥ ७ ॥
अवि पावपरिक्खेदी,^५ अविमित्तेसु कुप्पइ^६ ।
सुप्पियस्सावि मित्तस्स, रहे भासइ पावयं^७ ॥ ८ ॥

पइण्णवाई^६ वुहिले,^९ थढे,^{१०} लुढे^{११} अणिगहे^{१२} ।
असंविभागी^{१३} अवियत्ते,^{१४} 'अविणीए' त्ति वुच्चई ॥ ९ ॥

अह पन्नरसाह ठाणेहि 'सुविणीए' त्ति वुच्चई ।
नीयावित्ती^१ अच्चले,^२ अमाई^३ अकुळहले^४ ॥ १० ॥

अप्पं च अहिक्खिबई,^५ पबंघं च न कुवई^६ ।
मेत्तिज्जमाणे भयइ,^७ सुयं लढं, न मज्जई^८ ॥ ११ ॥

न य पावपरिक्खेवो,^९ न य मित्तेसु कुप्पई^{१०} ।
अप्पियस्सा वि मित्तस्स, रहे कल्लाण भासई^{११} ॥ १२ ॥

कलह-उमरुवज्जिए,^{१२} वुढे अभिजाइए^{१३} ।
हिरिमं पडिसंलीणे,^{१४} 'सुविणीए' त्ति वुच्चई ॥ १३ ॥

वसे गुरुकुले निच्च, जोगव उवहाणव ।
पियंकरे पियंवाई, से सिक्खं लद्धुमरिहई ॥ १४ ॥

(१) जहा संखमि पयं, निहियं वुहओ वि बिरायई ।
एवं बहुस्सुए भिक्खू, धम्मो कित्ती तहा सुयं ॥ १५ ॥

(२) जहा से कंबोयाणं, आइण्णे कंथए सिया ।
आसे जवेण पवरे, एवं हवई बहुस्सुए ॥ १६ ॥

(३) जहाइण्णसमारूढे, सुरे वढपरवक्के ।
उमओ तदिघोसेण, एवं हवई बहुस्सुए ॥ १७ ॥

(४) जहा करेणुपरिकिण्णे, कुजरे सट्ठिहायणे ।
बलवते अप्पडिहए, एवं हवई बहुस्सुए ॥ १८ ॥

- (५) जहा से तिक्खसिगे, जायखंधे विरायई ।
वसहे जूहाहिबई, एवं हवइ बहुस्सुए ॥१९॥
- (६) जहा से तिक्खदाढे, उदग्गे बुप्पहंसए ।
सीहे मिघाण पवरे, एवं हवइ बहुस्सुए ॥२०॥
- (७) जहा से वासुदेवे, संख-चक्क-गयाधरे ।
अप्पडिहय-बले जोहे, एवं हवइ बहुस्सुए ॥२१॥
- (८) जहा से चाउरते, चक्कवट्ठी-महिडिइए ।
चोदस-रयणाहिबई, एवं हवइ बहुस्सुए ॥२२॥
- (९) जहा से सहस्सक्खे, वज्जपाणी पुरंदरे ।
सक्के देवाहिबई, एवं हवइ बहुस्सुए ॥२३॥
- (१०) जहा से तिमिरविद्धंसे, उच्चिद्धंते दिवायरे ।
जलंते इव तेएण एवं हवइ बहुस्सुए ॥२४॥
- (११) जहा से उडुवई चंदे, नक्खत्त-परिवारिए ।
पडिपुण्णे पुण्णमासिए, एवं हवइ बहुस्सुए ॥२५॥
- (१२) जहा से सामाइयाणं, कोट्टागारे सुरक्खिए ।
नाणा-धम्म-पडिपुण्णे, एवं हवइ बहुस्सुए ॥२६॥
- (१३) जहा सा बुमाण पवरा, जंतू नाम सुदंसणा ।
अणादियस्स देवस्स, एवं हवइ बहुस्सुए ॥२७॥
- (१४) जहा सा नईण पवरा, सलिला सागरंगमा ।
सीया नीलवंतपवहा, एवं हवइ बहुस्सुए ॥२८॥

(१५) जहा से नगाण पवरे, सुमहं मंदरे गिरी ।
 नाणोसहि-पज्जलिए, एवं हवइ बहुसुए ॥२९॥
 (१६) जहा से सयंभुरमणे, उदही अक्खओदए ।
 नाणा-रयण-पडिपुण्णे, एवं हवइ बहुसुए ॥३०॥

समुद्-गंभीरसमा दुरासया,
 अचक्किया केणइ दुप्पहंसया ।
 सुयस्स पुण्णा विडलस्स ताइणो,
 खवित्तु कम्म गइमुत्तमं गया ॥३१॥

तम्हा सुयमहिट्ठिज्जा, उत्तमट्ठगवेसए ।
 जेणप्पाणं परं चेव, सिद्धि संपाडणेज्जासि ॥३२॥
 ॥ त्ति बेमि ॥

अह हरिएसिज्जं नामं दुवालसममज्झयणं

सोवागकुलसंभूओ, गुणुत्तरधरो मुणी ।
 “हरिएसवलो” नाम, आसी भिक्खू जिइदिओ ॥१॥
 इरि-एसण-भासाए, उच्चारसमिईसु य ।
 जओ आयाण-निक्खेवे, संज्जओ सु-समाहिओ ॥२॥
 मणगुत्तो-वयगुत्तो, कायगुत्तो जिइदिओ ।
 भिक्खट्ठा वंभइज्जम्मि, जत्तवाडमुवट्ठिओ ॥३॥

तं पासिऊणमेज्जंतं, तवेण परिसोसियं ।
 पंतोवहि-उवगरणं, उवहसंति अणारिया ॥ ४ ॥
 जाइमय-पडियद्धा; हिंसगा अजिइंदिया ।
 अबंभचारिणो बाला, इमं वयणमच्चवी ॥ ५ ॥

ब्राह्मणा :-

कयरे आगच्छइ दित्तरूवे ?
 काले विकराले फोक्कनासे ।
 ओमचेलए पंसुपिसायभूए,
 संकरदूस परिहरिय कंठे ॥ ६ ॥
 कयरे तुम इय अदसणिज्जे ?
 काए व आसा इहमागओसि ?
 ओम-चेलया पंसु-पीसायभूया,
 गच्छ कखलाहि किमिहं ठिओ सि ॥ ७ ॥
 जक्खे तहिं तिंदुय खखवासी,
 अणुकंपओ तस्स महामुणिस्स ।
 पच्छायइत्ता नियगं सरीरं,
 इमाइ वयणाइमुदाहरित्या ॥ ८ ॥

यक्ष :-

समणो अहं संजओ वंभयारी,
 विरओ धण-पयण-परिग्गहाओ ।

परप्पवित्तस्स उ भिक्खकाले,
अन्नस्स अट्ठा इहमागओमि ॥ ९ ॥

वियरिज्जइ खज्जइ भुज्जइ य,
अन्नं पभूय भवघाणमेय ।
जाणाहि मे जायण-जीविणु त्ति,
सेसावसेसं लहउ तवस्सी ॥ १० ॥

आह्वयणा :-

उवक्खड भोयण माह्वणाण,
अत्तट्ठिय सिद्धमिहेयपक्खं ।
न उ वय एरिसमन्नपाण,
दाहामु तुज्जं किमिहं ठिओ सि ? ॥ ११ ॥

यक्ष :-

“यत्तेसु बीयाइ ववति कासगा,”
तहेव त्तिन्नेसु य आससाए ।
एयाए सट्ठाए बलाह मज्झ,
आराहए पुण्णमिणं खु खित्तं ॥ १२ ॥

-

खेत्ताणि अम्ह विट्ठयाणि लोए,
जहि पक्किणा विरुहंति पुण्णा ।

जे माहणा जाद-विजोवचेमा,
ताइं तु छेत्ताइं मुपेमलाइ ॥१३॥

यक्ष :-

कोहो य माणो य चहो य जेंगि,
भोस अदत्तं न परिगाह च ।
ते माहणा जाद-विज्जा-विहीणा,
ताइं तु छेत्ताइं मुपावयाहं ॥१४॥
तुम्हेत्य भो भारधरा गिराण,
अहं न जाणार अहिज्ज येए ।
उच्चावयाइ मुणिणो चरंति,
ताइं तु छेत्ताइं मुपेमलाइ ॥१५॥

ब्राह्मण :-

अज्जावयाण पडिक्कलभासी,
पभामसे किं नृ मगामि अम्हं ?
अवि एय विणस्सउ अन्नपाण,
न य ण दाहामु तुम नियंठा ॥१६॥

यक्ष :-

समिईहि मज्झ तुसमाहियस्स,
गुत्तीही गुत्तस्म जिइदियस्स ।
जइ मे न दाहित्थ अहेसणिज्जं,
किमज्ज जन्नाण लहित्थ लाहं ॥१७॥

सोमदेव :-

के इत्थ खत्ता उवजोइया वा,
अज्झावया वा सह खंडिएहि ।
एयं खु दंडेण फलएण हंता,
कंठंमि घेतूण खलेज्ज जो णं ॥१८॥

अज्झावयाणं वयणं सुणेत्ता,
उद्धाइया तत्थ बहू कुमारा ।
दंडेहि वित्तेहि कसेहि चेव,
समागया तं इंसि तालयंति ॥१९॥

भद्रा :-

रत्तो तहि 'कोसलियस्स' धूया,
'भदत्ति' नामेण अणिदियंगी ।
तं पासिया संजय-हम्मसाणं,
कुद्धे कुमारे परिनिव्ववेइ ॥२०॥

देवाभिओगेण निओदएणं,
दिन्नामु रत्ता मणसा न ज्ञाया ।
नरिंद-देविंद-भिवंदिएणं,
जेणम्हि वंता इसिणा स एसो ॥२१॥

एसो हु सो उग्गतवो महप्पा,
जिइदिओ संजओ वंभयारी ।

जो मे तथा नेच्छइ दिज्जमार्णि,
पिउणा सयं कोसलिएण रत्ना ॥२२॥

महाजसो एस महाणुभागो,
घोरव्वओ घोरपरक्कमो य ।
मा एयं हीलेह अहीलणिज्जं,
मा सव्वे तेएण भे निद्वहेज्जा ॥२३॥

एयाइं तीसे वयणाइं सोच्चा,
पत्तीइ भद्दाइ सुभासियाइं ।
इ सिस्स बेया व डिय द्ढया ए,
जक्खा कुमारे विणिवारयंति ॥२४॥

ते घोरस्वा ठिय अतलक्खे,
असुरा तहिं तं जणं तालयंति ।
ते भिन्नदेहे रुहिरं वमंते,
पासित्तु भद्दा इणमाहु भुज्जो ॥२५॥

गिरिं नहेहिं खणह, अयं दंतेहिं खायह ।
जायतेयं पाएहि हणह, जे भिक्खुं अवमन्नह ॥२६॥

आसीविसो उगतवो महेसी,
घोरव्वओ घोरपरक्कमो य ।
'अर्गाणि व पक्खंद पयंगसेणा,'
जे भिक्खुयं भत्तकाले वहेह ॥२७॥

सोसेण एयं सरणं उवेह,
समागया, सच्चजणेण तुम्हे ।
जइ इच्छह जीवियं वा धणं वा,
लोगंपि एसो कुवियो डहेज्जा ॥२८॥

अवहेडिय-पिट्ठि-सउत्तमगे,
पसारिया बाहु अकम्मचेट्ठे ।
निम्भेरियच्छे रहिरं वमंते,
उद्धमंहे निगय-जीह-नेत्ते ॥२९॥

ते पासिया खंडियकट्ठमूए,
विमणो विसण्णो अह माहणो सो ।
इंसि पसाएइ सभारियाओ,
होलं च निद च खमाह भंते ! ॥३०॥

सोमदेव :-

बालेहि मूढोह अयाणएहि,
जं होलिया तस्स खमाह भंते !
महप्पसाया इसिणो हवंति,
न ह्व भुणो कोवपरा हवंति ॥३१॥

मुनि :-

पुण्वि च इण्हि च अणागयं च,
मणप्पओसो न मे अत्थि कोइ ।

जक्खा हु वेयावडियं करेत्ति,
तम्हा हु एए निहया कुमारा ॥३२॥

सोमदेव :-

अत्यं च धम्मं च वियाणमाणा,
तुब्भे न वि कुप्पह भूइपप्पा।
तुब्भं तु पाए सरणं उवेमो,
समागया सव्वजणेण अम्हे ॥३३॥

अच्चेमु ते महाभाग !, न ते किञ्चन अच्चिमो।
भुंजाहि सालिमं कूरं, नाणा-वंजण-संजुयं ॥३४॥

इमं च मे अत्थि पभूयमन्न,
तं भुजसु अम्ह अणुग्गहट्ठा।
वाढं-ति-पडिच्छइ भत्तपाणं,
मासस्स ऊ पारणए महप्पा ॥३५॥

त हि यं ग धो द य-मु प्फ वा सं,
दिग्वा तहि वसुहारा य वुट्ठा।
पहयाओ दुंदुहीओ सुरेहि,
आगासे अहो दाण च घुट्ठं ॥३६॥

ब्राह्मणा :-

सयखं खु दीसइ तवोविसेसो,
न दीसइ जाइविसेस कोई।

सो वा ग पु त्तं हरि एस साहुं,
जस्सेरिस्सा इडिढ महानुभागा ॥३७॥

नि :-

किं माहणा ! जोइसमारभंता,
उदएण सोहि बहिया विमग्गहा ?
जं भग्गहा बाहिरियं विसोहिं,
न तं सुदिट्ठं कुसला वयंति ॥३८॥
कुसं च जूवं तणकट्ठर्मागं,
सायं च पायं उदगं फुसंता ।
पाणाइ भूयाइ विहेडयंता,
भुज्जो वि मदा ! पगरेह पावं ॥३९॥

सोमवेवादय :-

कहं चरे भिक्खू ? वय जयामो,
पावाइ कम्माइ पणुल्लयामो ।
अक्खाहि जे संजय ! जक्खपूइया,
कहं सुजट्ठं कुसला वयंति ? ॥४०॥

मुनि :-

छज्जी व का ए अस मा र भं ता,
मोसं अदत्तं च असेवमाणा ।
परिग्गहं इत्थिओ माणमायं,
एवं परित्राय चरंति] दंता ॥४१॥

सुसवुडा पचाहि संवरोहि,
 इह जीवियं अणवकंखमाणा ।
 वो सट्ठ काया ? सुइ च त्त वेहा,
 महाजयं जयइ जन्नसिट्ठं ॥४२॥

सोमदेवादयः—

के ते जोई ? के व ते जोइठाणो ?
 का ते सुया ? किं च ते कारिसंगं ?
 एहा य ते कयरा सति भिक्खु ?
 कयरेण होसेण हुणासि जोई ? ॥४३॥

मुनि :—

तवो जोई जीवो जोइठाणं,
 जोगा सुया सरोरं कारिसंगं ।
 कम्मेहा संजमजोग सती,
 होमं हुणामि इसिणं पसत्थं ॥४४॥

सोमदेवादयः—

के ते हरए के य ते संतितित्थे ?
 कहिं सिणाओ व रयं जहासि ?
 आइक्ख णे संजय ! जक्खपूइया,
 इच्छामो नाउं भवओ सगासे ॥४५॥

भुनि :-

धम्मे हरए बंभे संतितित्थे,
अणाविले अत्तपसन्नले से ।
जहिंसि ण्हाओ विमलो विसुद्धो,
सुसीइभूओ पजहामि दोसं ॥४६॥
एयं सिणाणं कुसलेहि दिट्ठं,
महासिणाणं इसिणं पसत्थं ।
जहिंसि ण्हाया विमला विसुद्धा,
महारिसी उत्तमं ठाणं पत्ता ॥४७॥
॥ त्ति वेमि ॥

अह चित्तसंभूइज्ज नामं तेरसममज्झयणं

जाईपराजिओ खलु, कासि नियाणं तु 'हत्थिणपुरम्मि' ।
'चुलणीए बंभदत्तो' उववन्नो 'पउमगुम्माओ' ॥१॥
'कंपिल्ले' संभूओ, 'चित्तो' पुण जाओ 'पुरिमतालम्मि' ।
सेट्ठिकुलम्मि विसाले, धम्मं सोऊण पव्वइओ ॥२॥
कंपिलम्मि य नयरे, समागया दो वि चित्तसंभूया ।
सुहं-दुक्ख-फलविवागं, कहेंति ते एककमेपकस्स ॥३॥

चक्कवट्ठी महिड्ढीओ, वंभदत्तो महायसो ।
 भायरं बहुमाणेणं, इमं वयणमबब्बी ॥ ४ ॥
 आसीमु भायरा दोवि, अन्नमन्नवसाणुगा ।
 अन्नमन्नमणुरत्ता, अन्नमन्न-हिएसिणो ॥ ५ ॥
 दासा "दसण्णे" आसी, मिया "कालिजरे नगे" ।
 हसा 'मयगतीराए', सोवागा 'कासिभूमि' ॥ ६ ॥
 देवा य देवलोगम्मि, आसि अभ्हे महिड्ढिया ।
 इमा णो छट्ठिया जाई, अन्नमन्नेण जा विणा ॥ ७ ॥

चित्तमुनि :-

कम्मा नियाणपयडा, तुमे राय ! विंचितिया ।
 तेसि फलविवागेण, विप्पओगमुवागया ॥ ८ ॥

ब्रह्मदत्त :-

सच्च-सोय-प्पगडा, कम्मा मए पुरा कडा ।
 ते अज्ज परिभुंजामो, किं नु चित्तेवि से तहा ? ॥ ९ ॥

चित्तमुनि -

सत्त्वं सुचिण्णं सफलं नराणं,
 कडाण कम्माण न मोक्ख अत्थि ।
 अत्थेहि कामेहि य उत्तमेहि,
 आया ममं पुण्णफलोववेए ॥ १० ॥

जाणाहि संभूय ! महाणुभागं,
 महिड्ढियं पुण्णफलोववेयं ।
 चित्तं पि जाणाहि तहेव राय !
 इड्ढी जुई तस्स वि य प्पभूया ॥११॥
 म ह त्थ रु वा व य ण प प भू या,
 गाहाणुगीया नरसंघमज्जे ।
 जं भिक्खुणो सीलगुणोववेया,
 इहज्जयंते समणो मि जाओ ॥१२॥

ब्रह्मवत्त :-

उच्चोयए महु कक्के य बभे,
 पवेइया आवसहा य रम्मा ।
 इमं गिह चित्तधणप्पभूयं,
 पसाहि पंचालगुणोववेयं ॥१३॥
 नट्टेहि गोएहि य वाइएहि,
 ना री ज णा हि परि वार यं तो ।
 भुंजाहि भोगाइ इमाइ भिक्खू !
 मम रोयई पव्वज्जा हु दुक्खं ॥१४॥

चित्तमुनि :-

तं पुव्वनेहेण कयाणुरागं,
 नराहिव कामगुणेषु गिद्धं ।

धम्मस्सिओ तस्स हियाणुपेही,
 चित्तो इमं वयणमुदाहरित्था ॥१५॥
 सच्चं विलवियं गीय, सच्चं नट्टं विडंबियं ।
 सच्चे आभरणा भारा, सच्चे कामा दुहावहा ॥१६॥

बा ला भि रा मे सु दु हा व हे सु,
 न तं सुहं कामगुणेसु रायं !
 वि र त्त का मा ण तवोधणाणं,
 जं भिक्खुणं सीलगुणे रयाणं ॥१७॥
 नरिंद ! जाई अहमा नराणं,
 सोवागजाई दुहओ गयाण ।
 जाहिं वयं सच्चजणस्स वेसा,
 व सी य सो वा ग नि वे स णे सु ॥१८॥

तोसे अ जाईइ उ पावियाए,
 वुच्छामु सोवागनिवेसणेसु ।
 सच्चस्स लोगस्स दुगछणिज्जा,
 इहं तु कम्माइं पुरे कडाईं ॥१९॥
 सो दाणिस्स राय ! महाणुभागो,
 महिडिदओ पुण्णफलोववेओ ।
 चइत्तु भोगाइं असासयाइं,
 आदाणहेउं अभिणिक्खमाहि ॥२०॥

इह जीविए राय ! असासयम्मि,
 धणियं तु पुण्णाइ अकुव्वमाणो ।
 से सोयइ मच्चुसुहोवणीए,
 धम्मं अकाऊण परंसि लोए ॥२१॥
 'जहेह सीहो व मियं गहाय',
 मच्चू नरं नेइ ह् अंतकाले ।
 न तस्स माया व पिया व भाया,
 कालम्मि तम्मंसहरा भवति ॥२२॥
 न तस्स दुक्खं विमयंति नाइओ,
 न मित्तवग्गा न सुया न बंधवा ।
 एक्को सयं पच्चणुहोइ दुक्खं,
 कत्तारमेवं अणुजाइ कम्मं ॥२३॥
 चिच्चा दुप्पय च चउपयं च,
 खेत्तं गिहं धणधन्नं च सव्व ।
 सकम्मबीओ अवसो पयाइ,
 परं भवं सुंदरपावग वा ॥२४॥
 त एक्कम तुच्छसरीरमं से,
 चिईगयं बहिय उ पावगेणं ।
 भज्जा य पुत्तामि य नायओ य,
 दाधारमन्न अणुसंकमति ॥२५॥

उवणिज्जई जीवियमप्पमायं,
 वण्णं जरा हरइ नरस्स रायं !
 पंचालराया ! वयणं सुणाहि,
 मा कासि कम्माइ महालयाइ ॥२६॥

ब्रह्मदत्त :-

अहं पि जाणामि जहेह साहू,
 ज मे तुम साहसि वक्कमेयं ।
 भोगा इमे संगकरा हवंति,
 जे दुज्जया अज्ज ? अम्हारिसेहि ॥२७॥

हत्थिणपुरम्मि चित्ता ! द्दट्ठणं नरवइं महिड्ढियं ।
 कामभोगेसु गिद्वेणं, नियाणमसुहं कडं ॥२८॥

तस्स मे अप्पडिकंतस्स, इमं एयारिसं फलं ।
 जाणमाणो वि जं घम्मं, कामभोगेसु सुच्छिओ ॥२९॥

"नागो जहा" पंकजलावसन्नो,
 द्दट्ठु थलं नाभिसमेइ तीरं ।
 एवं वयं काममुणेसु गिद्धा,
 न भिक्खुणो मग्गमणुव्वयामो ॥३०॥

चित्तमुनि :-

अच्चेइ कालो तूरंति राइओ,
 न यावि भोगा पुरिसाण निच्चा ।

उविच्च भोगा पुरिस जयंति,
दुम जहा खीणफल व पक्खी ॥३१॥

जई सि भोगे चइउं असत्तो,
अज्जाइ कम्माइ करेहि राय !
धम्मे ठिओ सव्व-पयाणुकंपी,
तो होहिसि देवो इओ विउव्वी ॥३२॥

न तुज्झ भोगे चइऊण बुद्धी,
गिद्धोसि आरंभ-परिगहेसु ।
मोहं कओ एत्तिउ विप्पलावो,
गच्छामि रायं । आसंतिओसि ॥३३॥

पंचालराया वि य वंभदत्तो,
साहुस्स तस्स वयणं अकाउं ।
अणुत्तरे भुंजिय कामभोगे,
अणुत्तरे सो नरए पविट्ठो ॥३४॥

चित्तो वि कामेहि विरत्तकामो,
उ द ग्ग च रि त्त त वो म हे सी ।
अणुत्तरं संजम पालइत्ता,
अणुत्तरं सिद्धिगइ गओ ॥३५॥
॥ त्ति वेमि ॥

अह उसुयारिज्ज नामं चउदसममज्झयणं

देवा भवित्ताण पुरे भवम्मि,
केइ चुया एगविमाणवासी ।
पुरे पुराणे 'उसुयारनामे',
खाए समिद्धे सुरलोगरम्मे ॥ १ ॥

स कम्म से से ण पुरा क ए णं,
कुलेसुदग्गेसु य ते पसूया ।
निव्विण्ण-ससारभया जहाय,
जिण्णदमगं सरणं पवन्ता ॥ २ ॥

पुमत्तमागम्म कुमार दो वि,
पुरोहिओ तस्स जसा य पत्ती ।
विसालकित्ती य तहे "सुयारो",
रायत्थ देवी "कमलावाई" य ॥ ३ ॥

जाई-जरा-मच्चु-भयाभिभूया,
बाहिं विहाराभिनिविट्ठ-चित्ता ।
ससार-चक्कस्स विमोक्खणहुट्ठ,
दट्ठूण ते कामगुणे विरता ॥ ४ ॥

पियपुत्तगा दुप्पि वि माहणस्स,
सकम्मसीलस्स पुरोहियस्स ।

सरित्तु पोराणिय तत्थ जाइं,
तहा सुचिण्णं तवसंजमं च ॥ ५ ॥

कुमारो :-

ते कामभोगेसु असज्जमाणा,
माणुस्सएसुं जे यावि दिव्वा ।
मोक्खाभिकखी अभिजायसइढा,
तायं उवागम्म इमं उदाहु ॥ ६ ॥

असासयं ददुठु इमं बिहारं,
बहुअंतरायं न य दीहमाउं ।
तम्हा गिहंसि न रइं लहामो,
आमंतयामो चरिस्सासु मोणं ॥ ७ ॥

भृगु :-

अह तायगो तत्थ मुणीण तेसिं,
तवस्स वाघायकरं वयासी ।
इमं वयं वेयविओ वयंति,
जहा न होई असुयाण लोगो ॥ ८ ॥
अहिज्ज वेए परिविस्स विप्पे,
पुत्ते परिट्ठप्प गिहंसि जाया ! ।
भोक्का ण भोए सह इत्थियाहिं,
आरण्णागा होइ मुणी पसत्था ॥ ९ ॥

कुमारी :-

मोहाणिला आयगुणिधणेण,
 मोहाणिला पज्जलणाहिएणं ।
 लालप्पमाणं प रि त प्प मा णं,
 लालप्पमाणं बहुहा बहुं च ॥१०॥
 पुरोहियं तं कमसोऽणुणंतं,
 निमंतयंतं च सुए धणेणं ।
 जहक्कमं कामगुणेहि चेव,
 कुमारगा ते पसमिक्ख वक्कं ॥११॥
 वेया अहिया न भवति ताण,
 भुत्ता दिया निति तम तमेणं ।
 जाया य पुत्ता न हवंति ताणं,
 को णाम ते अणुमन्नेज्ज एयं ॥१२॥
 खणमित्तसुक्खा बहुकालदुक्खा,
 पगामदुक्खा अणिगामसुक्खा ।
 ससार-मोक्खस्स विपक्खभूया,
 खाणी अणत्थाण उ कामभोगा ॥१३॥
 प रि व्व यं ते अणि य त्त का मे,
 अहो य राओ परित्तप्पमाणे ।
 अ न्न प्प म त्ते ध ण मे स मा णे,
 पप्पोति मच्चुं पुरित्ते जरं च ॥१४॥

इमं च मे अत्थि इमं च तत्थि,
 इमं च मे किच्च इमं अकिच्चं ।
 त एव मे वं लालप्पमाणं,
 हरा हरति त्ति कहं पमाओ ॥१५॥

भृगु :-

धणं पभूय सह इत्थियाहिं,
 सयणा तहा कामगुणा पगामा ।
 तवं कए तप्पइ जस्स लोगो,
 तं सव्वसाहीणमिहेव तुब्भं ॥१६॥

कुमारी :-

धणेण किं धम्मधुराहिगारे,
 सयणेण वा कामगुणेहि चेव ।
 समणा भविस्सामु गुणोहधारी,
 बाहिं विहारा अभिगम्म भिक्खं ॥१७॥

भृगु :-

‘जहा य अग्गी अरणी असंतो’,
 ‘खोरे घयं तेल्लमहातिलेसु ।’
 एमेव जाया सरीरसि सत्ता,
 समुच्छइ नासइ नावचिट्ठे ॥१८॥

कुमारी .—

न इंदियगोज्ञ अमुत्तभावा,
 अमुत्तभावा वि य होइ निच्चो ।
 अज्झत्यहेउ निययस्स वधो,
 संसारहेउं च वयंति वंधं ॥१९॥
 जहा वयं धम्ममजाणमाणा,
 पाव पुरा कम्ममकासि मोहा ।
 ओरुज्झमाणा परिरिक्खयंता,
 तं नेव भुज्जो वि समायरामो ॥२०॥

अन्नाहयम्मि लोगम्मि, सच्चओ परिवारिए ।
 अमोहाहि पडंतीहि, गिहसि न रइं लभे ॥२१॥

भूगुः—

केण अन्नाहओ लोगो ? केण वा परिवारिओ ?
 का वा अमोहा वुत्ता ? जाया चिंतावरो हुमि ॥२२॥

कुमारी —

मच्चुणाऽन्नाहओ लोगो, जराए परिवारिओ ।
 अमोहा रयणी वुत्ता, एवं ताय विजाणह ॥२३॥
 जा जा वच्चइ रयणी, न सा पडिनि यत्तइ ।
 अहम्मं कुणमाणस्स, अफला जति राइओ

जा जा वच्चइ रयणी, ना सा पडिनियत्तइ ।
धम्मं च कुणमाणस्स, सफला जंति राइओ ॥२५॥

भूगुः—

एगओ संवसित्ताणं, दुहओ सम्मत्तसंजुया ।
पच्छा जाय ! गमिस्सामो, भिक्खमाणा कुले कुले ॥२६॥

कुमारौः—

जस्सत्थि भच्चुणा सक्खं, जस्स वऽत्थि पलायणं ।
जो जाणे न मरिस्सामि, सो हु कंखे सुए सिया ॥२७॥
अज्जेव धम्मं पडिवज्जयामो,
जहि पवन्ना न पुणब्भवामो ।
अणागयं नेव य अत्थि किंची,
सद्धाखमं णे विणइत्तु रागं ॥२८॥

भार्या प्रति भूगुः—

पहीणपुत्तस्स हु नत्थि वासो,
वासिट्ठि । भिक्खायरियाइ कालो ।
“साहाहि रुक्खो लहए समार्ह,
छिन्नाहि साहाहि तमेव खाणु” ॥२९॥
“पंखाविहूणो व्व जहेव पक्खी”,
“भिच्चव्विहूणो व्व रणे नारिवो ।”
“विवन्नसारो वणिओ व्व पोए,”
पहीणपुत्तो मि तहा अहंपि ॥३०॥

भृगुं प्रति जसाः—

सुसंभिया कामगुणे इमे ते,
 संपिडिया अग्नरसप्पभूया ।
 भुंजामु ता कामगुणे पगामं,
 पच्छा गमिस्सामु पहाणमगं ॥३१॥

भार्या प्रति भृगुः—

भुत्ता रसा भोइ ! जहाइ णे वओ,
 न जीवियट्ठा पजहामि भोए, ।
 लाभं अलाभं च सुहं च दुक्खं,
 संचिक्खमाणो चरिस्सामि मोणं ॥३२॥

भृगुं प्रति जसाः—

मा ह तुमं सोयरियाण संभरे,
 "जुण्णो च हंसो पडिसोत्तगामी ।"
 भुंजाहि भोगाहि मए समाणं,
 दुक्खं खु भिक्खायरियाविहारो ॥३३॥

तर्था प्रतिभृगुः—

'जहा य भोई तणुयं भुयंगो,
 निम्मोयणिं हिच्च पलेइ मुत्तो ।'
 एमेए जाया पयहंति भोए,
 ते हं क्हं नाणुगमिस्समेक्को ? ॥३४॥

‘छिदित्तु जालं अबलं व रोहिया,
मच्छा जहा कामगुणे पहाए ।’
धोरे य सौला तवसा उदारा,
धीरा हु भिक्षायारियं चरंति ॥३५॥

जसाया स्वगतम्:-

‘नहेव कुंचा समइक्कामंता,
तयाणि जालाणि दलित्तु हंसा ।’
पलित्ति पुत्ता य पई य मज्झं,
ते हं कहं नाणुगमिस्समेक्का ? ॥३६॥

कमलावती:-

पुरोहिंयं तं ससुयं सवारं,
सोच्चाऽभिनिकखम्म पहाय भोए ।
कुडुंब सारं विउलुत्तमं च,
रायं अभिक्खं समुवाय देवी ॥३७॥

चंतासी पुरिसो रायं । न सो होई पससिओ ।
माहणेण परिच्चत्तं, धणं आयाउमिच्छसि ॥३८॥
सव्वं जगं जइ तुहं, सव्वं वावि धणं भवे ।
सव्वं पि ते अपज्जत्तं, नेव ताणाय तं तवं ॥३९॥

मरिहिसि रायं ! जया तया वा,
मणोरमे कामगुणे पहाय ।

एवको हु धम्मो नरदेव ! ताण,
 न विज्जई अन्नमिहेह किञ्चि ॥४०॥
 “नाहं रमे पक्खणि पंजरे वा,”
 संताणछिन्ना चरिस्सामि मोणं ।
 अकिञ्चना उज्जुकडा निरामिसा,
 प रि ग हा रं भ नि य त्त दो सा ॥४१॥
 दवगिणा जहा रण्णे, ढज्झमाणेसु जंतुसु ।
 अन्ने सत्ता पमोयंति, रागद्वोसवसं गया” ॥४२॥
 एवमेव वयं मूढा, काम—भोगेसु मुच्छिया ।
 ढज्झमाणं न बुज्झामो, रागद्वोसगिणा जगं ॥४३॥
 भोगे भोच्चा वमिता य, लहुभूयविहारिणो ।
 आमोयमाणा गच्छंति, ‘दिया कामकमा इव’ ॥४४॥
 इमे य बद्धा फंदंति, मम हृत्यज्जमागया ।
 वयं च सत्ता कामेसु, भविस्सामो जहा इमे ॥४५॥
 ‘सामिसं कुललं दिस्स, बज्झमाणं निरामिसं ।’
 आमिसं सब्बभुज्झित्ता, विहरिस्सामि निरामिसा ॥४६॥
 ‘गिद्वोवमा’ उ नच्चाणं, कामे संसारवड्ढणे ।
 ‘उरगो सुवण्णपासेव्व,’ संकमाणो तणुं चरे ॥४७॥
 ‘नागोव्व’ बंधणं छित्ता, अप्पणो वत्तंहि वए ।
 एयं पत्वं महारायं, उस्सुयारि त्ति मे सुयं ॥४८॥

चइत्ता विउलं रज्जं, कामभोगे यं दुच्चए ।
 निव्विसया निरामिसा, निप्पेहा निप्परिग्गहा ॥४९॥
 सम्मं धम्मं वियाणित्ता, चिच्चा कामगुणे वरे ।
 तवं पगिज्झहक्खायं, घोरं घोरपरक्कमा ॥५०॥
 एवं ते कमसो बुद्धा, सव्वे धम्मपरायणा ।
 जम्म-मच्चु-भउव्विग्गहा, दुक्खस्संतगवेसिणो ॥५१॥
 त्रासणे विगयमोहाणं, पुण्वि भावणभाविया ।
 अचिरेणेव कालेणं, दुक्खस्संतमुवागया ॥५२॥
 राया सह देवीए, माहणो यं पुरोहिओ ।
 भाहणी दारगा चेव, सव्वे ते परिनिव्वुडा ॥५३॥
 ॥ त्ति वेमि ॥

अहं सभिव्खू नामं पंचदसममज्झयणं

मोणं चरिस्सामि समिच्च धम्मं,
 सहिए उज्जुकडे नियाणछिन्ने ।
 संयवं जहिज्ज अकामकामे,
 अन्नायएसी परिव्वए स भिव्खू ॥१॥
 राओ वरयं चरेज्ज लाढे,
 विरए वेयवियाऽऽयरक्खिए ।
 पल्लं अभिभूय सव्वदंसी,
 जे कम्हि-वि न मुच्छिए स भिव्खू ॥२॥

अक्कोस-वहं विइत्तु धीरे,
मणी चरे लाढे निच्चमायगुत्ते ।

अव्वगमणे असंपहिट्ठे,
जे कसिणं अहियासए स भिक्खू ॥३॥

पंतं सयणासण भइत्ता,
सीउण्हं विविहं च दस-मसगं ।

अव्वगमणे असंपहिट्ठे,
जे कसिणं अहियासए स भिक्खू ॥४॥

नो सक्कियमिच्छई न पूयं,
नो वि य वंदणगं कुओ पसंसं ?

से संजए सुव्वए तवस्सी,
सहिए आयगवेसए स भिक्खू ॥५॥

जेण पुण जहाइ जीवियं,
मोहं वा कसिणं नियच्छइ ।

नरनारि पजहे सया तवस्सी,
न य कोऊहलं उवेइ स भिक्खू ॥६॥

छिन्नं संरं भोमं अंतलिक्खं,
सुमिणं लक्खण-दंड-वत्थुविज्जं ।

भंगवियारं सरस्स विजयं,
जे विज्जाहिं न जीवइ स भिक्खू ॥७॥

मंतं मूलं विविहं वेज्जचित्तं,
 वमणविरेयण-धूस-णेत्त-सिणाणं ।
 आउरे सरणं तिगिच्छियं च,
 तं परिन्नाय परिव्वए स भिक्खू ॥८॥
 खत्तिगण—उग्ग—रायपुत्ता,
 मःहण-भोई य विविहा य सिप्पिणो ।
 नो तेसिं वयइ सिलोगपूयं,
 तं परिन्नाय परिव्वए स भिक्खू ॥९॥
 गिहिणो जो पव्वइएण दिट्ठा,
 अप्पव्वइएण व संथुया हविज्जा ।
 तेसिं इहलोइय-फलट्ठा,
 जो संथवं न करेइ स भिक्खू ॥१०॥
 सयणासण पाण-भोयणं,
 चिविहं खाइम साइमं परोसिं
 अदए पडिसेहिए नियंठे,
 जे तत्थ न पउस्सइ स भिक्खू ॥११॥
 जं किंचि आहार-पाणां,
 चिविहं खाइम-साइमं परोसिं लद्धं ।

जो तं तिविहेण नाणुकपे,
मण-वय-काय-सुसंवुडे स भिक्खू ॥१२॥

आयामगं चेव जवोदणं च,
सीयं सोवीर-जवोदणं च ।
नो हीलए पिंडं नीरसं तु,
पंतकुलाइं परिच्चए स भिक्खू ॥१३॥

सहा विविहा भवंति लोए,
दिक्खा माणुस्सगा तथा तिरिच्छा,
भीमा भयभेरेवा उराला,
जो सोच्चा न विहिज्जइ स भिक्खू ॥१४॥

बादं विविहं समिच्च लोए,
सहिए खेयाणुगए य कोवियप्पा ।
पल्ले अभिभूय सव्वदंसी,
उवसंते अविहेडए स भिक्खू ॥१५॥

असिप्पजीवी अगिहे अमित्ते,
जिडंदिए सव्वओ विप्पमुक्के ।
अणुक्कसाई लहु-अप्प-भक्खी,
चिच्चा गिहं एगचरे स भिक्खू ॥१६॥
॥ त्ति वेमि ॥

अहं बंभचेरसमाहिठाणा णामं सोलसममज्झयणं

सुयं मे आउसं !

तेणं भगवया एवमक्खायं—

इह खलु थेरेहिं भगवतेहिं दस बंभचेरसमाहिठाणा पन्नत्ता ।

जे भिक्खू सोच्चा निसम्म संजमबहुले, संवरबहुले, समाहिबहुले,

गुत्ते गुत्तिदिए गुत्त-बंभयारी सया अप्पमत्ते विहरेज्जा ।

कयरे खलु ते थेरेहिं भगवतेहिं दस बंभचेरसमाहिठाणा पन्नत्ता ?

जे भिक्खू सोच्चा निसम्म संजमबहुले, संवरबहुले, समाहिबहुले,

गुत्ते गुत्तिदिए गुत्त बंभयारी सया अप्पमत्ते विहरेज्जा ?

इमे खलु ते थेरेहिं भगवतेहिं दस बंभचेरसमाहिठाणा पन्नत्ता ?

जे भिक्खू सोच्चा निसम्म संजमबहुले, संवरबहुले, समाहिबहुले,

गुत्ते गुत्तिदिए गुत्त बंभयारी सया अप्पमत्ते विहरेज्जा ।

तं जहा—

विवित्ताइं सयणासणाइं सेविज्जा से निगंथे ।

नो इत्थी-पसु-पंडग-संसत्ताइं सयणासणाइं सेविता हवइ से निगंथे ।

तं कहमिति चे—

आयरियाह—

निगंथस्स खलु इत्थि-पसु-पंडग-संसत्ताइं सयणासणाइं—

सेवमाणस्स बंभयारिस्स बंभचेरे—

संका वा, कंखा वा, विइगिच्छा वा समुप्पज्जिज्जा—

भेदं वा लभेज्जा, उम्मायं वा पाउणिज्जा,
 बीहकालियं वा रोगायकं हवेज्जा,
 केवलपन्नताओ वा धम्माओ भंसेज्जा ।
 तम्हा नो इत्थि-पसु-पंडग-संसत्ताइं सयणासणाइं सेवित्ता हवइ से
 निगंथे ॥१॥

नो इत्थीणं कहं कहित्ता हवइ से निगंथे ।
 तं कहमिति चे ?
 आयरियाह—

निगंथस्स खलु इत्थीणं कहं कहेमाणस्स वंभयारिस्स वंभचेरे—
 संका वा, कंखा वा, विइगिच्छा वा समुप्पज्जिज्जा—
 भेदं वा लभेज्जा, उम्मायं वा पाउणिज्जा—
 बीहकालियं वा रोगायकं हवेज्जा—
 केवलपन्नत्ताओ वा धम्माओ भंसेज्जा—
 तम्हा खलु नो इत्थीणं कहं कहेज्जा ॥२॥

नो इत्थीणं सद्धिं सन्निसेज्जागए विहरित्ता हवइ से निगंथे ।
 तं कहमिति चे ?
 आयरियाह—

निगंथस्स खलु इत्थीहिं सद्धिं सन्निसेज्जागयस्स वंभयारिस्स वंभचेरे—
 संका वा, कंखा वा, विइगिच्छा वा समुप्पज्जिज्जा—
 भेदं वा लभेज्जा, उम्मायं वा पाउणिज्जा—
 बीहकालियं वा रोगायकं हवेज्जा—

केवलपन्नत्ताओ वा धम्माओ भंसेज्जा-

तम्हा खलु नो निग्गंथे इत्थीहि सद्धिं सन्निसेज्जाणए

विहरेज्जा ॥३॥

नो इत्थीणं इंदियाइं मणोहराइं, मणोरमाइं,

आलोइत्ता निज्झइत्ता हवइ से निग्गंथे ।

तं कहमिति चे ?

आयरियाह-

निग्गंथस्स खलु इत्थीणं इंदियाइं मणोहराइं, मणोरमाइं

आलोएमाणस्स निज्झायमाणस्स बंभयाररिस्स बंभवेरे-

संका वा, कंखा वा, विद्वांगच्छा वा समुप्पज्जिज्जा-

भेदं वा लभेज्जा, उम्मायं वा पाउणिज्जा,

दीहकालियं वा रोगायकं हवेज्जा,

केवलपन्नत्ताओ वा धम्माओ भंसेज्जा,

तम्हा खलु निग्गंथे नो इत्थीणं इंदियाइं मणोहराइ, मणोरमाइ,

आलोएज्जा निज्झाएज्जा ॥४॥

नो इत्थीणं कुहुंतरसि वा, दूसंतरसि वा, भित्तंतरसि वा,

कूइयसहं वा, कूइयसहं वा, गीयसहं वा, हसियसहं वा,

थणियसहं वा, कंदियसहं वा विलावियसहं वा-

सुणित्ता हवइ से निग्गंथे ।

तं कहमिति चे ?

आयरियाह-

निगंथस्स खलु इत्थीणं—

कुड्डंतरंसि वा, दूसंतरंसि वा, भित्तंतरंसि वा,
कूड्यसहं वा, रुड्यसहं वा, गीयसहं वा, हसियसहं वा,
थणियसहं वा, कंदियसहं वा, विलवियसहं वा,
सुणेमाणस्स बंभयारिस्स बंभचेरे—

संका वा, कंखा वा, विइगिच्छा वा समुप्पज्जिज्जा
भेदं वा लभेज्जा, उम्मायं वा पाउणिज्जा,
दीहकालियं वा रागायं हवेज्जा,
केवलपन्नत्ताओ वा धम्माओ भंसेज्जा

तम्हा खलु निगंथे नो इत्थीणं—

कुड्डंतरंसि वा, दूसंतरंसि वा, भित्तंतरंसि वा,
कूड्यसहं वा, रुड्यसहं वा, गीयसहं वा, हसियसहं वा,
थणियसहं वा, कंदियसहं वा, विलवियसहं वा,
सुणेमाणे विहरेज्जा ॥५॥

नो इत्थीणं पुव्वरयं पुव्वकीलियं अणुसरित्ता हवइ से निगंथे ।

कहमिति चे ?

यरियाह—

गंथस्स खलु पुव्वरयं पुव्वकीलियं अणुसरमाणस्स
भयारिस्स बंभचेरे—

का वा, कंखा वा, विइगिच्छा वा समुप्पज्जिज्जा—
वा लभेज्जा, उम्मायं वा पाउणिज्जा—

दीहकालियं वा रोगयकं ह्वेज्जा-

केवलपन्नत्ताओ वा धम्माओ भंसेज्जा-

तम्हा खलु नो निगंथे पुच्चरयं पुच्चकीलियं अणुत्तरेज्जा ॥६॥

नो पणीयं आहारं आहरित्ता हवइ से निगंथे ।

तं कहमिति चे ?

आयरियाह-

निगंथस्स खलु पणीयं आहारं आहारेमाणस्स बंभयारिस्स बंभचेरे-

संका वा, कंछा वा, विइगिच्छा वा समुप्पज्जिज्जा-

भेदं वा लभेज्जा, उम्मायं वा पाउणिज्जा-

दीहकालियं वा रोगायकं ह्वेज्जा,

केवलपन्नत्ताओ वा धम्माओ भंसेज्जा

तम्हा खलु नो निगंथे पणीयं आहारं आहरेज्जा ॥७॥

नो अइसायाए पाणभोयणं आहारेत्ता हवइ से निगंथे ।

तं कहमिति चे ?

आयरियाह-

निगंथस्स खलु अइसायाए पाणभोयणं-

आहारेमाणस्स बंभयारिस्स बंभचेरे-

संका वा, कंछा वा, विइगिच्छा वा समुप्पज्जिज्जा-

भेदं वा लभेज्जा, उम्मायं वा पाउणिज्जा-

दीहकालियं वा रोगायकं ह्वेज्जा,

केवलपन्नत्ताओ वा धम्माओ भंसेज्जा

तम्हा खलु नो निगंथे अइसायाए पाणभोयणं आहारेज्जा ॥८॥

नो विभूसाणुवाई हवइ से निगंथे ।

तं कहमिति चे ?

आयरियाह-

निगंथस्स खलु विभूसावत्तिए विभूसियसरारे-

इत्थिजणस्स अभिलसणिज्जे हवइ-

तओ णं इत्थिजणेणं अभिलसिज्जमाणस्स बंभयारिस्स बंभचेरे-

संका वा, कंखा वा, विइगिच्छा वा समुप्पज्जिज्जा-

भेदं वा लभेज्जा, उम्मायं वा पाउणिज्जा-

दीहकालियं वा रोगायकं हवेज्जा,

केवलपन्नत्ताओ वा धम्माओ भंसेज्जा

तम्हा खलु नो निगंथे विभूसाणुवाई हवेज्जा ॥९॥

नो सह-रुव-रस-गंध-फासाणुवाई हवई से निगंथे ।

तं कहमिति चे ?

आयरियाह-

निगंथस्स खलु सह-रस-रुव-गंध-फासाणुवाईस्स

बंभयारिस्स बंभचेरे-

संका वा, कंखा वा, विइगिच्छा वा समुप्पज्जिज्जा-

भेदं वा लभेज्जा, उम्मायं वा पाउणिज्जा-

दीहकालियं वा रोगायकं हवेज्जा,

केवलपन्नत्ताओ वा धम्माओ भंसेज्जा

तम्हा खलु नो निगंथे सह-रुव-रस-गंध-फासाणुवाई हवेज्जा ।

वसमे बंभचेरसमाहिठाने हवइ ॥१०॥

भवन्ति इत्य तिलोगा ।

तं जहा—

जं विविस्तमणाइण्णं, रहियं इत्थिजणेण य ।

बंभचेरस्स रक्खट्ठा, आलयं तु निसेवए ॥ १ ॥

मणपल्हायजण्णिं, कामरागविवड्ढणं ।

बंभचेररओ भिक्खू, थीकहं तु विवज्जए ॥ २ ॥

समं च संयवं थीहिं, संकहं च अभिक्खणं ।

बंभचेररओ भिक्खू, निच्चसो परिवज्जए ॥ ३ ॥

अं ग प ज्जं ग सं ठा णं, चारुल्ल वि य पे हि य ।

बंभचेररओ थीणं, चक्खुगिज्झं विवज्जए ॥ ४ ॥

कूइयं रुइयं गीयं, हसियं थणिय—कंदियं ।

बंभचेररओ थीण, सोयगिज्झ विवज्जए ॥ ५ ॥

हासं किहुं रइं दप्पं, सहसावित्तासियाणि य ।

बंभचेररओ थीणं, नाणुचित्ते कयाइ वि ॥ ६ ॥

पणीयं भत्तपाणं तु, खिप्प मयविवड्ढणं ।

बंभचेररओ भिक्खू, निच्चसो पविज्जए ॥ ७ ॥

धम्मलद्धं मियं काले, जत्तत्थ परिणहाणवं ।

नाइमत्त तु भुंजेज्जा, बंभचेररओ सया ॥ ८ ॥

विभूसं परिवज्जेज्जा, सरीर—परिमंडणं ।

बंभचेररओ भिक्खू, सिंगारत्थं न धारए ॥ ९ ॥

सदे रूवे य गंधे य, रसे फासे तहेव य ।
 पंचविहे कामगुणे, निच्चसो परिवज्जए ॥१०॥
 आलढो^१ थीजणाइण्णो,^२ थीकहा य मणोरमा^३ ।
 संथवो चेव नारीणं,^४ तांसि इंदियदरिसणं^५ ॥११॥
 कूइयं रुइयं गीयं, हसियं भुत्ताऽऽसियाणि^६ य ।
 पणीयं भत्तपाणं च, अइमायं पाणभोयणं^७ ॥१२॥
 गतभूसणमिट्ठं^८ च, कामभोगा य दुज्जया^{१०} ।
 नरस्सऽत्तगवेसिस्स, "विसं तालउडं जहा" ॥१३॥
 दुज्जए कामभोगे य, निच्चसो परिवज्जए ।
 संकट्टाणाणि सव्वाणि, वज्जेज्जा पणिहाणवं ॥१४॥
 धम्मारामे चरे भिक्खू, धिइमं धम्मसारही ।
 धम्मारामरए दंते, बंमचेर-समाहिए ॥१५॥
 देव-दाणव-गंधच्चा, जक्ख-रक्खस-किसरा ।
 बंमयारिं नमंसंति, दुक्करं जे करंति तं ॥१६॥
 एस धम्मे धुवे निच्चे, सासए जिणवेसिए ।
 सिद्धा सिज्झंति चाणेण, सिज्झिस्संति तहावरे ॥१७॥
 ॥ ति नेमि ॥

अह पावसमणिज्जं नाम सत्तदसममज्झयण

जे केइ उ पव्वइए नियंठे,
धम्मं सुणित्ता विणओववन्ने ।
सुदुल्लहं लहिउं बोहिलाभं,
विहरेज्ज पच्छा य जहासुहं तु ॥ १ ॥

सेज्जा दढा पाउरणं मि अत्थि,
उप्पज्जई भोत्तुं तहेव पाउं ।
जाणामि जं वट्ठइ आजसु त्ति,
किं नाम काहामि सुएण भंते ! ॥ २ ॥

जे केई उ पव्वइए, निट्ठासीले पगामसो ।
भोच्चा पिच्चा सुहं सुवइ, पावसमणि त्ति वुच्चइ ॥ ३ ॥

आयरिय-उवज्जाएहि, सुयं विणयं च गाहिए ।
ते चेव खिसई बाले, पावसमणि त्ति वुच्चइ ॥ ४ ॥

आयरिय-उवज्जायाणं, सम्मं न पडितप्पइ ।
अप्पडिपूयां थद्धे, पावसमणि त्ति वुच्चइ ॥ ५ ॥

सम्महमाणे पाणाणि, बीयाणि हरियाणि य ।
असंजए संजयमन्नमाणे, पावसमणि त्ति वुच्चइ ॥ ६ ॥

संथारं फलणं पीढं, निसेज्जं पायकंबलं ।
ज्जयमारुहइ, पावसमणि त्ति वुच्चइ ॥ ७ ॥

दव-दवस्स चरई, पमत्ते य अभिक्खणं ।
 उल्लंघणे य चंडे य, पावसमणि त्ति वुच्चइ ॥८॥
 पडिलेहेइ पमत्ते, अव उज्झइ पायकंबलं ।
 पडिलेहा-अणाउत्ते, पावसमणि त्ति वुच्चइ ॥९॥
 पडिलेहेइ पमत्ते, से किंचि हु निसामिया ।
 गुहं परिभावए निच्चं, पावसमणि त्ति वुच्चइ ॥१०॥
 बहुमाई पमुहरी, थद्धे लुद्धे अणिगहे ।
 असंविभागी अचियत्ते, पावसमणि त्ति वुच्चइ ॥११॥
 विवादं च उदीरेइ, अहम्मे अत्तपन्नहा ।
 वुगहे कलहे रत्ते, पावसमणि त्ति वुच्चइ ॥१२॥
 अयिरासणे कुक्कुइए, जत्थ तत्थ निसीयइ ।
 आसणम्मि अणाउत्ते, पावसमणि त्ति वुच्चइ ॥१३॥
 ससरक्खपाए सुवइ, सेज्जं न पडिलेहइ ।
 संथारए अणाउत्ते, पावसमणि त्ति वुच्चइ ॥१४॥
 बुद्धदही-विगईओ, आहारेइ अभिक्खणं ।
 अरए य तवोकम्मे, पावसमणि त्ति वुच्चइ ॥१५॥
 अत्थंतम्मि य सूरम्मि, आहारेइ अभिक्खणं ।
 वोइओ पडिचोएइ, पावसमणि त्ति वुच्चइ ॥१६॥
 आयरियपरिच्चाई, परपासंडसेवए ।
 गाणंगिए दुब्भूए पावसमणि त्ति वुच्चइ ॥१७॥

सयं गेहं परिच्चज्ज, परगेहंसि वावरे ।
 निमित्तेण य ववहरइ, पावसमणि त्ति वुच्चइ ॥१८॥
 सन्नाइपिंडे जेमेइ, नेच्छई सामुदाणियं ।
 गिहिनिसेज्जं च वाहेइ, पावसमणि त्ति वुच्चइ ॥१९॥
 एयारित्ते पंचकुसीलसंबुडे,
 रुवंघरे मुणिपवराण हेट्ठिमे ।
 अयंसि लोए विसमेवगरहिए,
 न से इहं नेव परत्य लोए ॥२०॥
 जे वज्जए एए सया उ दोसे,
 से सुच्चए होइ मुणीण मज्जे ।
 अयंसि लोए 'अमयं व पूइए'
 आराहए लोगमिणं तहा परं ॥२१॥
 ॥ त्ति वेमि ॥

अह संजइज्ज नामं अठारसममज्झयणं

'कंपिल्ले नयरे' राया, उदिण्णबलवाहणे ।
 नामेणं 'संजए' नाम, मिगव्वं उवणिग्गए ॥१॥
 हयाणीए^१ गयाणीए^२, रहाणीए^३ तहेव य ।
 पायत्ताणीए^४ महया, सज्जओ परिवारिए ॥२॥

मिए छुहिता ह्यगओ कंयिल्लुज्जाणकेसरे ।
 भोए संते मिए तत्थ, बहेई रसमुच्छिण्ण ॥ ३ ॥
 अह 'केसरम्मि' उज्जाणे, अणगारे तवोधणे ।
 सज्झायज्झाणसंजुत्ते, धम्मज्झाणं क्षियायइ ॥ ४ ॥
 अप्फोवमंडवमि, झायइ खवियासवे ।
 तस्सागए मिए पासं, बहेई से नराहिवे ॥ ५ ॥
 अह आसगओ राया, खिप्पमागम्म सो तहिं ।
 हए मिए उ पासित्ता, अणगारं तत्थ पासई ॥ ६ ॥
 अह राया तत्थ संभंतो, अणगारो मणाहओ ।
 मए उ मंदपुण्णेणं, रसगिद्धेण घंतुणा ॥ ७ ॥
 आसं विसज्जइत्ताणं, अणगारस्स सो निवो ।
 विणएण बंदए पाए, भगवं ! एत्थ मे खमे ॥ ८ ॥
 अह मोणेण सो भगवं, अणगारे ज्ञाणमस्सिए ।
 रायाणं न पडिमंतेइ, तओ राया भयदुओ ॥ ९ ॥

संजयः—

संजओ अहमम्मीति, भगवं ! बाहराहि मे ।
 कुद्धे तेएण अणगारे, डहेज्ज नरकोडिओ ॥ १० ॥

गर्दभालिमुनिः—

अभओ पत्थिवा ! तुब्भं, अभयदाया भवाहिय ।
 अणिच्चे जीवलोगंमि, किं हिंसाए पसज्जसि ? ॥ ११ ॥

जया रज्जं परिच्चज्ज, गंतव्वमवसस्स ते ।
 अणिच्चे जीवलोगंमि, किं रज्जंमि पसज्जसि ? ॥१२॥
 जीवियं चेव रुवं च, विज्जुसंपायचंचलं ।
 जत्थ तं मुज्झसि रायं ! पेच्चत्थं नाववुज्झसे ॥१३॥
 दाराणि य सुया चेव, मित्ता य तह बंधवा ।
 जी वं त म णु जी वं ति, मयं नाणुवर्यंति य ॥१४॥
 नीहरंति मयं पुत्ता, पियरं परमदुक्खिया ।
 पियरो वि तहा पुत्ते, बंधू रायं ! तवं चरे ॥१५॥
 तमो तेणज्जिए दच्चे, दारे य परिरक्खिए ।
 कीलंतिज्जे नरा रायं ! हट्ठुट्ठमलंकिया ॥१६॥
 तेणावि जं कयं कम्मं, सुहं वा जइ वा दुहं ।
 कम्मुणा तेण संजुत्तो, गच्छई उ परं भवं ॥१७॥

संजयः—

सोऊण तस्स सो धम्मं, अणगारस्स अंतिए ।
 महया संवेगनिज्जेयं, समावन्नो नराहिवो ॥१८॥
 संजओ चइउं रज्जं, निक्खंतो जिणसासणे ।
 गद्दमालिस्स भगवओ, अणगारस्स अंतिए ॥१९॥
 चिच्चा रट्ठं पक्वइए,

सत्रियमुनिः—

अस्मि परिभासइ ।

जहा ते बीसइं रुवं, पसन्नं ते तहा मणो ॥२०॥

किं नामे किं गोत्ते कस्सद्वाए व माहणे ।

कहं पडियरसि वुद्धे, कहं विणीए त्ति वुच्चसि ? ॥२१॥

सजयमुनिः—

संजओ नाम नामेणं, तहा गोत्तेण गोयमी ?

गद्दहाली ममायरिया, विज्जाचरणपारगा ॥२२॥

क्षत्रियमुनिः क्रियावादादि मिथ्याभिमतानामनात्मनीनता प्रदर्शयति

किरियं^१ अकिरियं^२ विणयं,^३ अन्नाणं^४ च महामुणी ।

एएहिं चउहिं ठाणोहिं, मेयस्से किं पभासइ ॥२३॥

इहं पाउकरे वुद्धे, नायए परिणिव्वुए ।

विज्जा-चरण-संपन्नं, सच्चे सच्चपरवकमे ॥२४॥

पडंति नरए घोरे, जे नरा पावकारिणो ।

दिव्वं च गइं गच्छंति, चरित्ता धम्ममारियं ॥२५॥

मायावुद्ध्यमेयं तु, मुसा भासा निरत्थिया ।

संजममाणो वि अहं, वसामि इरियामि य ॥२६॥

सच्चे ते विइया मज्झं, मिच्छादिट्ठी अणारिया ।

विज्जमाणे परे लोए, सम्मं जाणामि अप्पयं ॥२७॥

क्षत्रियमुनिः स्वपूर्वभव वर्णयति

अहमासि महापाणे, जुइसं वरिससओवमे ।

जा सा पालि-महापाली, दिव्वा वरिससओवमा ॥२८॥

से चुए, 'बंभलोगाओ', माणुत्सं भवमागए ।

अप्पणो य परेसिं च, आउं जाणे जहा तहा ॥२९॥

नाणारुद्धं च छंदं च, परिवज्जेज्ज संजए ।
अणट्ठा जे य सव्वत्था, इइ विज्जामणुसंचरे ॥३०॥

पडिक्कमामि पसिणाणं, परमंतेहिं वा पुणो ।
अहो उट्ठिए अहोरायं, इइ विज्जा तवं चरे ॥३१॥

जं च मे पुच्छसी काले, समं सुद्धेण चेयसा ।
ताइं पाउकरे बुद्धे, तं नाणं जिणसाणणे ॥३२॥

किरियं च रोयइ धीरे, अकिरियं परिवज्जए ।
दिट्ठीए दिट्ठिसंपन्ने, धम्मं चरसु दुच्चरं ॥३३॥

क्षत्रियमुनिः प्रव्रजितान् चक्रवर्त्यादीन् वर्णयति
एयं पुण्णपयं सोच्चा, अत्थ-धम्मोवसोहियं ।
“भरहो” वि भारहं वासं, चिच्चा कामाइं पव्वए ॥३४॥

“सगरो” वि सागरंतं, भरह्वासं नराहिवो ।
इस्सरियं केवलं हिच्चा, दयाए परिनिव्वुडे ॥३५॥

चइत्ता भारहं वासं, चक्कवट्ठी महिडिद्धओ ।
पव्वज्जमब्भुवगओ, “मधव” नाम महाजसो ॥३६॥

“सणकुमारो” मणुस्सिदो, चक्कवट्ठी महिडिद्धओ ।
पुत्तं रज्जे ठवेऊणं, सो वि राया तवं चरे ॥३७॥

चइत्ता भारहं वासं चक्कवट्ठी महिडिद्धओ ।
“संति” संतिकरे लोए, पत्तो गइमणुत्तरं ॥३८॥

इक्खागरायवसभो, 'कुंथू' नाम नरीसरो ।
 विक्खायकित्ती भगवं, पत्तो गइमणुत्तरं ॥३९॥
 सागरंतं चइत्ताणं, भरह्वासं नरिसरो ।
 'अरो' य अरयं पत्तो, पत्तो गइमणुत्तरं ॥४०॥
 चइत्ता भारहं वासं, चइत्ता बलवाहणं ।
 चइत्ता उत्तमे भोए, 'महापउमे' तवं चरे ॥४१॥
 एगच्छत्तं पसाहिता, मंहि माण-निसूरणो ।
 'हरिसेणो' मणुस्सिदो, पत्तो गइमणुत्तरं ॥४२॥
 अन्निओ रायसहस्सेहि, सुपरिच्चाई दमं चरे ।
 'जयनामो' जिणक्खाय, पत्तो गइमणुत्तर ॥४३॥
 'दसण्णरज्ज' मुदियं चइत्ताणं मुणी चरे ।
 'दसण्णमट्ठो' निक्खंतो, सक्खं सक्केण चोइओ ॥४४॥
 'नमी' नमेइ अप्पाणं, सक्खं सक्केण चोइओ ।
 चइऊण गेहं 'वइदेही', सामण्णे पज्जुवट्ठिओ ॥४५॥
 'करकंडू' कलिंगेसु, पचालेसु य 'डुम्महो' ।
 नमी राया विदेहेसु गंधारेसु य 'नगई' ॥४६॥
 एए नरिदवसभा, निक्खंता जिणसासणे ।
 पुत्ते रज्जे ठवेऊणं, सामण्णे पज्जुवट्ठिया ॥४७॥
 'सोवीररायवसभो', चइत्ताण मुणी चरे ।
 'उदायणो' पव्वइओ, पत्तो गइमणुत्तर ॥४८॥

तहेव 'कासिराया' वि, सेओ सच्चपरक्कमे ।
 कामभोगे परिच्चज्ज, पहणे कम्ममहावणं ॥४९॥
 तहेव 'विजओ राया', अणट्ठाकित्ति पज्जए ।
 रज्जं तु गुणसमिद्धं, पयहित्तु महाजसो ॥५०॥
 तहेवुगं तवं किच्चा, अव्वक्खित्तेण चेयसा ।
 'महब्बलो' रायरिसी, आदाय सिरसा सिंरि ॥५१॥
 कहं धीरो अहेऊहिं, उम्मत्तो व माहिं चरे ?
 एए विसेसमादाय, सूरा दढपरक्कमा ॥५२॥
 अच्चंतनियाणखमा, सच्चा मे भासिया वई ।
 अतरिंसु तरंतेगे, तरिस्संति अणागया ॥५३॥
 काहिं धीरे अहेऊहिं, अत्ताणं परियावसे ।
 सज्जसंग-विनिमुक्के, सिद्धे भवइ नोरए ॥५४॥
 ॥ त्ति वेमि ॥

अह मियापुत्तोयं नामं एगूणवीसइमं अज्झयणं

'सुगीवे' नयरे रंमे, काणणुज्जाणसोहिए ।
 राया 'बलभदित्ति', 'मिया' तस्सग्गमहिंसी ॥ १ ॥
 तेसिं पुत्ते 'बलसिरी', 'मियापुत्ते' ति विस्सुए ।
 अम्मापिऊण दइए, जुवराया दमीसरे ॥ २ ॥

नंदणे सो उ पासाए, कीलए सह इत्थिहिं ।
 देवो दोगुंदगो चेव, निच्चं मुद्दय-माणसो ॥ ३ ॥
 मणि-रयण-कोट्टिमतले, पात्तायालोयणट्ठिओ ।
 आलोएइ नगरस्स, चउक्क-तिय-चच्चरे ॥ ४ ॥
 अह तत्थ अडच्छंतं, पासई समण-संजयं ।
 तव-नियम-संजमघरं, सीलड्ढं गुणआगरं ॥ ५ ॥
 तं पेहई मियापुत्ते, दिट्ठीए अणिमिसाए उ ।
 काई मत्तेरिसं रुवं, दिट्ठपुच्चं मए पुरा ॥ ६ ॥
 साहुस्स दरिसणे तस्स, अज्जवसाणम्मि सोहणे ।
 भोहं गयस्स संतस्स, जाईसरणं समुप्पन्नं ॥ ७ ॥
 देवलोगचुओ संतो, माणुसं भवमागओ ।
 सन्नि-नाण-समुप्पन्ने, जाई सरइ पुराणियं ॥
 जाईसरणे समुप्पन्ने, मियापुत्ते महिड्ढिए ।
 सरई पोरणियं जाई, सामण्णं च पुरा कयं ॥ ८ ॥

मृगापुत्रः—

विसएहि अरज्जंतो, रज्जंतो संजमंमि य ।
 अस्मा-पियरमुवागम्म, इसं वयणमव्ववी ॥ ९ ॥
 सुयाणि मे पंच महव्वयाणि,
 नरएसु दुक्खं च तिरिक्ख-जोणिसु ।
 निव्विण्णकामो मि महण्णवाओ,
 अणुजाणह पव्वइस्सामि अस्मो ! ॥ १० ॥

अम्मताय ! मए भोगा, भुत्ता विसफलोवमा ।
 पच्छा कडुयविवागा, अणुबंधं दुहावहा ॥११॥
 इमं सरीरं अणिच्चं, असुइं असुइसंभवं ।
 असासयावासमिणं, दुक्खकेसाण भायणं ॥१२॥
 असासए सरीरंमि, रइं नोवलभामह ।
 पच्छा पुरा व चइयज्जे, "फेणबुब्बुयसन्निभे" ॥१३॥
 माणुसत्ते असारंमि, वाहीरोगाण आलए ।
 जरा-मरणघत्थंमि, खणं पि न रमामहं ॥१४॥

दु खवर्णनम् -

जम्मं 'दुक्खं जरा दुक्खं, रोगा य मरणाणि य ।
 अहो दुक्खो हु संसारो, जत्थ कीसंति जंतुणो ॥१५॥
 खेत्तं वत्थु हिरणं च, पुत्तदारं च बंधवा ।
 चइत्ताणं इम देहं, गंतव्वमवसस्स मे ॥१६॥
 "जहा किपागफलाण", परिणामो न सुदरो ।
 एवं भुत्ताण भोगाण, परिणामो न सुदरो ॥१७॥

धर्मवर्णनम् -

"अद्धाणं जो महंतं तु, अप्पाहेओ पवज्जइ ।
 गच्छंतो सो 'दुही होइ', 'छुहा-तण्हाए पीड़िओ ॥१८॥
 एवं धम्मं अकाऊणं, जो गच्छइ परं भवं ।
 गच्छंतो सो 'दुही होई' वाहीरोगोहं पीड़िओ ॥१९॥

“अद्धानं जो महंतं तु, सपाहेओ पवज्जइ ॥”

गच्छंतो सो ‘सुही होइ’, छुहातण्हाविवज्जिओ ॥२०॥

एवं धम्मं पि काऊणं, जो गच्छइ परं भवं ।

गच्छंतो सो ‘सुही होइ’, अप्पकम्मे अवैयणे ॥२१॥

प्रदीप्त गृहोदाहरणम्—

‘जहा गेहे पलित्तम्मि’, तस्स गेहस्स जो पट्ठ ।

सारभंडाणि नीणेइ, असारं अवज्जइ ॥२२॥

एवं लोए पलित्तम्मि, जराए मरणेण य ।

अप्पाणं तारइस्सामि, तुब्भेहिं अणुमन्निओ ॥२३॥

पितरौ—

त वितम्मापियरो, सामण्णं पुत्तं ! दुच्चरं ।

गुणाणं तु सहस्साइं, धारेयच्चाइं भिक्खुणा ॥२४॥

महान्नत वर्णनम्—

(१) समयया सव्वभूएसु, सत्तुमित्तेसु वा जगे ।

पाणाइवाय-विरई, जावज्जीवाए दुक्करं ॥२५॥

(२) निच्चकालऽप्पमत्तेणं, मुसावायविवज्जणं ।

भासियववं हियं सच्चं, निच्चाउत्तेणं दुक्करं ॥२६॥

(३) दंतसोहणमाइस्स, अदत्तस्स विवज्जणं ।

अणवज्जेसणिज्जस्स, गेण्हाणा अवि दुक्करं ॥२७॥

(४) विरई अबंभचेस्स, कामभोगरससुणा ।

उगं महव्वयं बंभं, धारेयव्वं सुदुक्करं ॥२८॥

(५) धण-धन्न-पेसवग्गेसु, परिग्गह-विवज्जणं ।

सव्वारंभ-परिच्चाओ, निम्ममत्तं सुदुक्करं ॥२९॥

(६) चउव्विहे वि आहारे, राईभोयणवज्जणा ।

सन्निही-संचओ चेव, वज्जेयव्वो सुदुक्करं ॥३०॥

दुक्करं श्रामण्यम्—

छुहा तण्हा ए सीउण्हं, दंस-भसअवेयणा ।

अक्कोसा दुक्खसेज्जा य, तणफासा जल्लमेव य ॥३१॥

तालणा तज्जणा चेव, वह-बंधपरीसहा ।

दुक्खं भिक्खायरिया, जायणा य अलाभया ॥३२॥

‘कावोया’ जा इमा वित्ती, केसलोओ य दारुणो ।

दुक्खं बंभव्वयं घोरं, धारेउं य महप्पणो ॥३३॥

‘कावोया’ जा इमा वित्ती, केसलोओ य दारुणो ।

दुक्खं बंभव्वयं घोरं, धारेउं य महप्पणो ॥३३॥

सुहोइओ तुमं पुत्ता, ! सुउमालो सुमज्जिओ ।

न हूसि पभू तुमं पुत्ता, सामण्णमणुपालियं ॥३४॥

जावज्जीवमविस्सामो, गुणाणं तु महम्मरो ।

‘गुरुओ लोहमारुव्व’, जो पुत्ता ! होइ दुव्वहो ॥३५॥

‘आगासे गंगसोउव्व’, पडिसोउव्व दुत्तरो ।

बाहार्हि सागरो चेव, तरियव्वो गुणेदही ॥३६॥

“बालुया कवले” चेव, निरस्ताए उ संजमे ।
 ‘असिघारागमणं’ चेव, दुक्करं चरिउं तवो ॥३७॥
 ‘अहीवेगंतदिट्ठीए’, चरित्ते पुत्त ! दुक्करे ।
 ‘जवा लोहमया चेव’, चावेयव्वा सुदुक्करं ॥३८॥
 ‘जहा अगिसिहा दित्ता’, पाउं होइ सुदुक्करा ।
 तहा दुक्करं करेउं जे, तारुणे समणत्तणं ॥३९॥
 ‘जहा दुक्खं भरेउं जे, होइ वायस्स कोत्थलो ।’
 तहा दुक्खं करेउं जे, कीवेणं समणत्तणं ॥४०॥
 ‘जहा तुलाए तोलेउं, दुक्करो मंदरो गिरी ।’
 तहा निह्यनीसकं, दुक्करं समणत्तणं ॥४१॥
 ‘जहा भुयाहिं तरिउं, दुक्करं रयणायरो ।
 तहा अणुवसंतेणं, दुक्करं दमसागरो ॥४२॥
 भुंज माणुस्तए भोए, पंचलक्खणए तुमं ।
 भुत्तभोगी तओ जाया ! पच्छा घम्मं चरिस्ससि ॥४३॥

मृगापुत्रः—

सो बेइ अम्मापियरो, एवमेयं जहा फुडं ।
 इह लोए निप्पिदासस्स, नत्थि किंचिवि दुक्करं ॥४४॥
 सारोर-माणसा चेव, वेयणाओ अनंतसो ।
 मए सोढाओ भीमाओ, असइं दुक्खभयाणि य ॥४५॥
 जरामरणकंतारे, चाउरंते भयागरे ।
 मया सोढाणि भीमाणि, जम्माणि मरणाणि य ॥४६॥

नरक वर्णनम्—

जहा इहं अगणी उण्हो, एत्तोऽणंतगुणो तंहि ।

नरएसु बेयणा उण्हो, असाया वेइया मए ॥४७॥

जहा इहं इमं सीयं, एत्तोऽणंतगुणो तंहि ।

नरएसु बेयणा सीया, असाया वेइया मए ॥४८॥

कंदंतो कंदुकुंभीसु, उड्ढपाओ अहोसिरो ।

हुयासणे जलंतम्मि, पक्कपुच्चो अणंतसो ॥४९॥

महादवगिसंकासे, मरुंमि वइरबालुए ।

कलंबवालुयाए य, दड्ढपुच्चो अणंतसो ॥५०॥

रसंतो कंदुकुंभीसु, उड्ढं बद्धो अबंधवो ।

करवत्त--करकयाईहि, छिन्नपुच्चो अणंतसो ॥५१॥

अइतिक्खकंटगाइण्णे, तुंगे सिबलिपायवे ।

खेवियं पासबद्धेणं, कड्ढोकड्ढाहिं दुक्करं ॥५२॥

महाजंतेसु उच्छू वा, आरसंतो सुभेरवं ।

पोलिओ मि सकम्मैहि, पावकम्मो अणंतसो ॥५३॥

कूवंतो कोलसुणएहि, सामेहि सबलेहि य ।

पाडिओ फालिओ छिन्नो, विप्फुरंतो अणेगसो ॥५४॥

असीहिं अयसिवण्णाहिं, भल्लेहिं पट्टिसेहि य ।

छिन्नो भिन्नो विभिन्नोय, ओइण्णो पावकम्मणा ॥५५॥

अवसो लोहरहे जुत्तो, जलंते समिलाजुए ।

चोइओ तोत्तजुत्तेहि, 'रोज्जो' वा जह पाडिओ ॥५६॥

हुयासणे जलंतम्मि, चियासु 'महिसो' विव ।
 दड्ढो पक्को य अवसो, पावकम्मोहि पाविओ ॥५७॥
 बला संडासतुडोहि, लोहतुंडोहि पक्खिह ।
 विलुत्तो विलवंतोऽहं, ढंकगिद्धोहिऽणतसो ॥५८॥
 तण्हाकिलंतो धावंतो, पत्तो वेयरणि नइ ।
 जलं पाहिं ति चित्ततो, खुरधारोहि विवाइओ ॥५९॥
 उण्हाभित्तो संपत्तो, असिपत्तं महावणं ।
 असिपत्तोहि पडंतोहि, छिन्नपुच्चो अणेगसो ॥६०॥
 मुग्गरोहि मुसंडोहि, सुलोहि मुसलेहि य ।
 गया-संभग्ग-गतोहि, पत्तं दुक्खं अणंतसो ॥६१॥
 खुरोहि तिक्खधारोहि, छुरियाहि कप्पणीहि य ।
 कप्पिओ फालिओ छिन्नो, उक्कित्तो य अणेगसो ॥६२॥
 पासेहि कूडजालोहि, मिओ वा अवसो अहं ।
 वाहिओ बद्धरुद्धो य, बहुसो चेव विवाइओ ॥६३॥
 गलोहि मगरजालोहि, मच्छो वा अवसो अहं ।
 उल्लिओ फालिओ गहिओ, मारिओ य अणंतसो ॥६४॥
 विदंसएहि जालोहि, लेप्पाहि सउणो विव ।
 गहिओ लग्गो य बद्धो य, मारिओ य अणंतसो ॥६५॥
 कुहाड-फरसु-माईहि, बड्ढईहि दुमो विव ।
 कुट्टिओ फालिओ छिन्नो, तच्छिओ य अणंतसो ॥६६॥

चवेड-मुट्टिमाईहिं कुमारेहिं, अयं पिव ।
 ताडिओ कुट्टिओ भित्तो, चुण्णिओ य अणंतसो ॥६७॥
 तत्ताइं तंबलोहाइं, तउयाइं सीसयाणि य ।
 पाइओ कलकलंताइं, आरसंतो सुभेरवं ॥६८॥
 तुहं पियाइं मंसाइं, खंडाइं सोल्लगाणि य ।
 खाविओ मि स-मंसाइं, अग्निवण्णाइंऽण्णेगसो ॥६९॥
 तुहं पिया सुरा सीहू, मेरओ य महुणि य ।
 पाइओ मि जलंतीओ, वसाओ रुहिराणि य ॥७०॥
 निच्चं भीएण तत्थेण, दुहिएण वहिएण य ।
 परमा दुहसंबद्धा, वेयणा वेइया मए ॥७१॥
 तिच्चचंडप्पगाढाओ, घोराओ अइदुस्सहा ।
 महब्भयाओ भीमाओ, नरएसु वेइया मए ॥७२॥
 जारिसा माणुसे लोए, ताया ! दीसंति वेयणा ।
 एत्तो अणंतगुणिया, नरएसु दुक्खवेयणा ॥७३॥
 सच्चभवेसु असाया, वेयणा वेइया मए ॥
 निमेसंतरमित्तं पि, ज साता नत्थि वेयणा ॥७४॥

पितरौ -

तं बित्तं मापियरो, छंदेणं पुत्त ! पच्चया ।
 नवरं पुण सामण्णे, दुक्खं निप्पडिकम्मया ॥७५॥

गापुत्रः—

सो बितम्भापियरो ! एवमेयं जहा फुडं ।
पडिक्कम्मं को कुणइ, अरण्णे मियपक्खिणं ? ॥७६॥

एगम्मूओ अरण्णे वा, जहा उ चरइ मिगो ।
एवं धम्मं चरिस्सामि, संजमेण तवेण य ॥७७॥

जहा मिगस्स आयंको, महारण्णंमि जायई ।
अच्छंतं रुक्खमूलंमि, को णं ताहे चिगिच्छई ॥७८॥

को वा से ओसहं देई, को वा से पुच्छइ सुहं ?
को से भत्तं च पाणं च, आहरित्तु पणामए ? ॥७९॥

जया य से सुही होइ, तया गच्छइ गोयरं ।
भत्तपाणस्स अट्ठाए, वल्लराणि सराणि य ॥८०॥

खाइत्ता पाणियं पाउं, वल्लरेहिं सरेहि य ।
मिगचारियं चरित्ताणं, गच्छइ मिगचारियं ॥८१॥

एवं समुट्ठिओ भिक्खू, एवमेव अणेगए ।
मिगचारियं चरित्ताणं, उड्ढं पक्कमई दिसं ॥८२॥

जहा मिए एग अणेगचारी,
अणेगवासे धुवगोयरे य ।

एवं मुणी गोयरियं पविट्ठे,
नो हीलए नो वि य खिसएज्जा ॥८३॥

मृगापुत्रस्यदीक्षाग्रहणम्—

मिगचारियं चरिस्सामि, एवं पुत्ता ! जहासुहं ।
 अम्मापिअहिऽणुत्ताओ, जहाइ उवहिं तओ ॥८४॥
 मिगचारियं चरिस्सामि, सज्जदुक्खविमोक्खाणि ।
 तुभेहिं अंब ! ऽणुत्ताओ, गच्छ पुत्त ! जहासुहं ॥८५॥
 एवं सो अम्मापियरो, अणुमाणित्ताण बहुविहं ।
 ममत्तं छिदइ ताहे, 'महानागो ज्व कंचुय ॥८६॥
 इड्ढी वित्तं च मित्ते य, पुत्तदारं च नायओ ।
 'रेणुयं व पडे लगं', निद्धुणित्ताण निग्गओ ॥८७॥
 पंचमहव्वयजुत्तो, पंचसमिओ तिगुत्तिगुत्तो य ।
 सव्विभंतरबाहिरए, तवोकम्ममि उज्जुओ ॥८८॥
 निम्ममो निरहंकारो, निस्संगो चत्तगारवो ।
 समो य सज्जभूएसु, तसेसु थावरेसु य ॥८९॥
 लाभालाभे सुहे दुक्खे, जीविए मरणे तहा ।
 समो निंदा-पसंसासु, तहा माणावमाणओ ॥९०॥
 गारवेसु कसाएसु, दंड-सल्ल-भएसु य ।
 नियत्तो हाससोगाओ, अनियाणो अबंधणो ॥९१॥
 अणिस्सिओ इहं लोए, परलोए अणिस्सिओ ।
 बासीचंदणकप्पो य, असणे अणसणे तहा ॥९२॥
 अप्पसत्थेहिं दारेहिं सज्जओ पिहियासवे ।
 अज्झप्प-ज्झाणजोगेहिं, पसत्थ-दमसासणे ॥९३॥

एवं नाणेण चरणेण, दंसणेण तवेण य ।
भावणाहिं य सुद्धाहिं, सम्मं भावित्तु अप्पयं ॥१४॥

बहुयाणि उ वासाणि, सामण्णमणुपालिया ।
मासिएण उ भत्तेण, सिद्धिं पत्तो अणुत्तरं ॥१५॥

एवं करंति संबुद्धा, पडिया पवियक्खणा ।
विणिअट्ठंति भोगेसु, मियापुत्ते जहारिस्सो ॥१६॥

महप्पभावस्स महाजसस्स,
मियाइपुत्तस्स निसम्म भासियं ।
तवप्पहाणं चरित्तं च उत्तमं,
गइप्पहाणं च तिलोगविस्सुयं ॥१७॥

वियाणिघा दुक्ख-विबड्ढणं घणं,
ममत्तबंधं च महाभयावहं ।
सुहावहं धम्मधुरं अणुत्तरं,
घारेह निव्वाण-गुणावहं महं ॥१८॥ त्ति बेमि ॥

अह महानियंठिज्ज-नामं वीसइमं अज्झयणं

सिद्धाणं नमो किच्चा, संजयाणं च भावओ ।

अत्थ-धम्म-नाइं तच्चं अणुसिट्ठिं सुणेह मे ॥ १ ॥

पभूयरयणो राया, 'सेणिओ' मगहाहिओ ।

विहारजत्तं निज्जाओ, 'मंडिकुच्छिसि वेइए' ॥ २ ॥

नाणा-डुम-लयाइण्णं, नाणा-पविख-निसेवियं ।

नाणाकुसुम-संछन्नं, उज्जाणं नंदणोवमं ॥ ३ ॥

तत्थ सो पासइ साहुं संजयं सुसमाहियं ।

निसन्नं रुक्खमूलम्मि, सुकुमालं सुहोइयं ॥ ४ ॥

तत्स रुवं तु पासित्ता, राइणो तम्मि संजए ।

अच्चंतपरमो आसी, अउलो रुक्खिम्हओ ॥ ५ ॥

अहो वण्णो अहो रुवं, अहो अज्जस्स सोमया ।

अहो खंती अहो मुत्ती, अहो भोगे असंगया ॥ ६ ॥

तत्स पाए उ वंदित्ता, काइण य पयाहियं ।

नाइइवरमणासत्ते, पंजली पडिपुच्छइ ॥ ७ ॥

• •

तरुणो सि अज्जो ! पव्वइओ, भोगकालम्मि संजया ।

उवट्ठिओ सि सामण्णे, एयमट्ठं सुणेमि ता ॥ ८ ॥

अनाथी मुनिः—

अणाहोमि महाराय !, नाहो मज्झ न विज्जई ।

अणुकंपयं सुहिं वाचि, कचि, नाभिसमेमहं ॥ ९ ॥

श्रेणिकः—

तओ सो पहसिओ राया, सेणिओ मगहाहिवा ।

एवं ते इड्ढिमंतस्स, कहं नाहो न विज्जई ? ॥ १० ॥

होमि नाहो भयंताणं । भोगे भुंजाहि संजया !

मित्त-नाइ-परिवुडो, माणुस्सं खु सुदुल्लहं ॥ ११ ॥

अनाथी मुनिः—

अप्पणा वि अणाहो सि, सेणिया ! मगहाहिवा !

अप्पणा अणाहो संतो, कहं नाहो भविस्ससि ! ॥ १२ ॥

श्रेणिकः—

एवं वुत्तो नरिंदो सो, सुसंभंतो सुविम्हिओ ।

वयणं अस्सुयपुच्चं, साहुणा विम्हयन्निओ ॥ १३ ॥

अस्सा हत्थी मणुस्सा मे, पुरं अंतेउरं च मे ।

भुंजामि माणुसे भोए, आणा इस्सरियं च मे ॥ १४ ॥

एरिसे संपयग्गम्मि, सच्चकामसमप्पिए ।

कहं अणाहो भवइ, ? मा हु भंते ! मुसं वए ॥ १५ ॥

अनाथी मुनिः—

न तुमं जाणे अणाहस्स, अत्थं पोत्थं च पत्थिवा !

जहा अणाहो भवइ, सणाहो वा नराहिवा ! ॥ १६ ॥

सुणेह मे महाराय ! अव्वक्खित्तेण चेयसा ।
 जहा अणाहो भवई, जहा मेयं पवत्तियं ॥१७॥
 “कोसंबी” नाम नयरी, पुराणपुरमेयणी ।
 तत्थ आसी पिया मज्झ, पभूय-धण-संचओ ॥१८॥
 पढमे वए महाराय !, अउला मे अच्छिवेयणा ।
 अहोत्था विउलो दाहो, सव्वगत्तेसु पत्थिवा ! ॥१९॥
 सत्थं जहा परमत्तिक्खं, सरीर-विवरंतरे ।
 ‘पविसिज्ज अरी कुद्धो’, एवं मे अच्छिवेयणा ॥२०॥
 तियं मे अंतरिच्छं च, उत्तमंगं च पीडई ।
 ‘इंदासणिसमा’ घोरा, वेयणा परमदारुणा ॥२१॥
 उवट्ठिया मे आयरिया, विज्जा-मंत-तिगिच्छया ।
 अबीया सत्थकुसला, मंतमूलविसारया ॥२२॥
 ते मे तिगिच्छं कुव्वंति, चाउप्पायं जहाहियं ।
 न य दुक्खा विमोयंति, एसा मज्झ अणाहया ॥२३॥
 पिया मे सव्वसारं पि, दिज्जाहि मम कारणा ।
 न य दुक्खा विमोएइ, एसा मज्झ अणाहया ॥२४॥
 माया वि मे महाराय ! पुत्तसोगदुहट्ठिया ।
 न य दुक्खा विमोएइ, एसा मज्झ अणाहया ॥२५॥
 भायरा मे महाराय ! सगा जेट्ठ-कणिट्ठया ।
 न य दुक्खा विमोयंति, एसा मज्झ अणाहया ॥२६॥

भइणीओ मे महाराय ! सगा जेदु—कणिदुगा ।
 न या दुक्खा विमोयंति, एसा मज्झ अणाहया ॥२७॥
 भारिया मे महाराय ! अणुरत्ता अणुव्वया ।
 अंसुपुण्णोहि नयणोहि, उरं मे परिंसिचइ ॥२८॥
 अन्नं पाणं च ण्हाणं च, गध—मल्लविलेवणं ।
 मए नायमणायं वा, सा बाला नोवभुंजइ ॥२९॥
 खणं पि मे महाराय ! पासाओ वि न फिट्ठइ ।
 न य दुक्खा विमोएइ, एसा मज्झ अणाहया ॥३०॥
 तओ हं एवमाहंसु, दुक्खमाहु पुणो पुणो ।
 वेयणा अणुभविउं जे, संसारम्मि अणंतए ॥३१॥
 सहं च जइ मुंच्चिज्जा, वेयणा विउला इओ ।
 खंतो दंतो निरारंभो, पव्वइए अणगारियं ॥३२॥
 एवं च चित्तइत्ताणं, पसुत्तो मि नराहिवा ।
 परियत्तंतीए राईए, वेयणा मे खयं गया ॥३३॥
 तओ कल्ले पभार्यमि, आपुच्छित्ताण बंधवे ।
 खंतो दंतो निरारंभो, पव्वइओऽणगारियं ॥३४॥
 तो ह नाहो जाओ, अप्पणो य परस्स य ।
 सव्वेसि चैव भूयाणं, तत्ताण थावराण य ॥३५॥
 अप्पा नई वेयरणी, अप्पा मे कूडसामली ।
 अप्पा कामदुहा धेणू, अप्पा मे नंदणं वणं ॥३६॥

अप्पा कत्ता विकत्ता य, दुहाण य सुहाण य ।

अप्पा मित्तममित्तं च, दुप्पट्ठिय सुपट्ठिओ ॥३७॥

इमा हु अन्ना वि अणाहया निवा ।

तमेगचित्तो निहुओ सुणेहि ।

नियंठधम्मं लहियाण वि जहा,

सोयंति एगे बहुकायरा नरा ॥३८॥

जो पव्वइत्ताण महव्वयाइ,

सम्मं च नो फासयइ पमाया ।

अनिग्गहप्पा य रसेसु गिद्धे,

न मूलओ छिन्नइ बंधणं से ॥३९॥

आउत्तया जस्स न अत्थि काइ,

इरियाए भासाए तहेसणाए ।

आयाण-निक्खेव-दु गं छ णा ए,

न वीरजायं अणुजाइ मगं ॥४०॥

चिरं पि से मुंडरुई भवित्ता,

अथिरव्वए तवनियमेहि भट्ठे ।

चिरं पि अप्पाण किलेसइत्ता,

न पारए होइ हु संपराए ॥४१॥

‘पोल्ले व मुट्ठी जह से असारे,’

‘अयंतिए कूड-कहावणे वा ।’

‘राढामणी वे रु लि यप्प गा से,’
अमहग्घए होइ हु जाणएसु ॥४२॥

कु सी ल लि गं इह धा र इ त्ता,
इसिज्झयं जीविय ब्रूहइत्ता ।
अ सं ज ए सं ज य ल प्प मा णो,
विणिघायमागच्छइ से चिरं पि ॥४३॥

‘विसं तु पीयं जह कालकूडं,’
‘हणाइ सत्थं जह कुग्गहीयं ।’
एसो वि धम्मो विसभोववन्नो,
हणाइ ‘वेयाल इवाविवन्नो’ ॥४४॥

जे लक्खण सुविण पउंजमाणे,
नि मि त्त को ऊ ह ल सं प गा ठे ।
कु हे ढ वि ज्जा स व दा र जी वी,
न गच्छइ सरणं तम्मि काले ॥४५॥

तमंतमेणेव उ से असीले,
सया दुही विप्परियासुवेइ ।
संघावई नरगतिरिक्खजोणिं,
मोणं विराहित्तु असाहुखुवे ॥४६॥

उद्देसियं कीयगडं नियगं,
न मुंचई किंचि अणेसणिज्जं ।

'अग्गी विव सव्वभवखी' भवित्ता,
 इत्तो चुए गच्छइ कट्ठ पावं ॥४७॥
 न तं अरी कंठेत्ता करेइ,
 जं से करे अप्पणिया दुरप्पा ।
 से नाहिइ मच्चुमुहं तु पत्ते,
 पच्छाणुतावेण दयाविहूणो ॥४८॥
 निरट्टिया नगरूई उ तत्स,
 जे उत्तमहुं विवज्जा स मे इ ।
 इमे वि से नत्थि परे वि लोए,
 दुहिओ वि से झिज्जइ तत्थ लोए ॥४९॥
 ए मे वऽहा छंद कू सीलरू वे,
 मग्ग विराहेत्तु जिणुत्तमाणं ।
 कूकरी विवा भोगरसाणुगिद्धा,
 नि रट्ठसो या परि ता व मे इ ॥५०॥
 सोच्चाण मेहावी । सुभासिय इमं,
 अणुसासण नाणगुणोववेयं ।
 मग्गं कुसीलाण जहाय सव्वं,
 महानियंठाण वए पहेण ॥५१॥
 चरित्तमायारगुणस्सिए तओ,
 अणुत्तरं संजम पालियाणं ।

निरासवे संखवियाण कम्मं,
उवेइ ठाणं विउलुत्तमं धुवं ॥५२॥
एवुग्गदंते वि महातवोघणे,
महामुणी महापइन्ने महायसे ।
म हा नि यं ठि ज्ज मि णं महासुयं,
से काहए महया वित्थरेण ॥५३॥

श्रेणिक — तुट्ठो य सेणिओ राया, इणमुदाहु कयंजली ।
अणाहतं जहाभूयं, सुट्ठु मे उवदंसियं ॥५४॥
तुज्झं सुलद्धं खु मणुस्सजम्मं,
लाभा सुलद्धा य तुमे महेसी !
तुब्भे सणाहा य सबंधवा य,
जं भे ठिया मग्गे जिणुत्तमाणं ॥५५॥

तं सि नाहो अणाहाणं, सव्वभूयाण संजया ।
खामेमि ते महाभाग, इच्छामि अणुसासिद्धं ॥५६॥
पुच्छिऊण मए तुब्भं, ज्ञाणविग्घो उ जो कओ ।
निमंतिओ य भोगेहिं, तं सव्वं मरिसेहि मे ॥५७॥

एवं थुणित्ताण स रायसीहो,
अणगारसीहं परमाइ भत्तिए ।
सओरोहो सपरियणो सबंधवो,
धम्माणुरत्तो विमलेण चेयसा ॥५८॥

ऊससियरोमकूवो, काऊण य पयाहिणं ।
 अभिवंदिऊण सिरसा, अइयाओ नराहिवो ॥५९॥
 इयरो वि गुणसमिद्धो, तिगुत्तिगुत्तो तिवंडविरओ य ।
 “विहग इव” विप्पमुक्को, विहरइ वसुहं विगयमोहो ॥६०॥
 ॥ त्ति बेमि ।

अह समुद्दपालीय-नामं एगविंसइमं अज्ज्ञयणं

चंपाए ‘पालिए’ नाम, सावए आसि वाणिए ।
 ‘महावीरस्स’ भगवओ, सीसे सो उ महप्पणो ॥१॥
 निगंथे पावयणे, सावए से वि कोविए ।
 पोएण ववहरंते, “पिहुंडं” नगरमागए ॥२॥
 पिहुंडे ववहरंतस्स, वाणिओ देइ धूयरं ।
 तं ससत्तं पइगिज्झ, सदेसमह पत्थिओ ॥३॥
 अह पालियस्स घरिणि, समुद्दम्मि पसवई ।
 अह वालए तंहि जाए, ‘समुद्दपालि त्ति नामए’ ॥४॥
 खेमेण आगए चंपं, सावए वाणिए घरं ।
 संवड्ढई तस्स घरे, दारए से सुहोइए ॥५॥

बावत्तरी कलाओ य, सिक्खए नीइकोविए ।
 जुव्वणेण य संपन्ने, सुरूवे पियदंसणे ॥६॥
 तस्स रुव्वइं भज्ज, पिया आणेइ रुविणि ।
 पासाए कीलए रम्मे, 'देवो दोगुंदओ जहा' ॥७॥
 अह अन्नया कयाई, पासायालयणे ठिओ ।
 वज्झमंडणसोभागं, वज्झं पासइ वज्झगं ॥८॥
 त पासिउण संविगो, समुद्दपालो इणमब्बवी ।
 अहोऽसुहाण कम्माणं, निज्जाणं पावगं इमं ॥९॥
 संबुद्धो सो तहिं भयवं, परमसंवेगमागओ ।
 आपुच्छऽम्मापियरो, पव्वए अणगारियं ॥१०॥

जहित्तु संगं च महाकिलेसं,
 महंतमोहं कसिणं भयावहं ।
 परियायधम्मं चऽभि रो य ए ज्जा,
 वयाणि सीलाणि परीसहे य ॥११॥

अहिंस-सच्चं च अतेणगं च,
 तत्तो य वंभं अपरिगहं च ।

प डि व ज्जि या पं च मह व्व या णि,
 चरिज्ज धम्मं जिणदेसियं विज्जं ॥१२॥

सव्वेहिं भूएहिं दयाणुकंपी,
 खंतिकखमे संजय बं भयारी ।
 सावज्ज जो गं परिवज्जयं तो,
 चरिज्ज भिक्खू सुसमाहिईदिए ॥१३॥

कालेण कालं विहरेज्ज रट्ठे,
 बलाबलं जाणिय अप्पणो य ।
 सीहो व सद्देण न संतसेज्जा,
 वयजोग सुच्चा न असब्बमाहु ॥१४॥

उवेहमाणो उ परिव्वएज्जा,
 पिथमप्पियं सव्व तितिकखएज्जा ।
 न सव्व सव्वत्थं भिरोयएज्जा,
 न यावि पूयं गरहं च संजए ॥१५॥

अणेगछंदा इह माणवेहिं,
 जे भावओ से पगरेइ भिक्खू ।
 भयभरेवा तत्थ उईति भीमा,
 दिव्वा मणुस्सा अदुवा तिरिच्छा ॥१६॥

परीसहा दुव्विसहा अणेगे,
 सीयंति जत्था बहुकायरा नरा ।
 से तत्थ पत्ते न वहिज्ज भिक्खू,
 'संगामसीसे इव नागराया' ॥१७॥

सीओसिणा दंस-मसा य फासा,
 आयंका विविहा फुसंति देहं ।
 अकुक्कुओ तत्थहिंयासहेज्जा,
 रयाइं खवेज्ज पुराकयाइं ॥१८॥

पहाय रागं च तहेव दोसं,
 मोहं चं भिक्खू सययं वियक्खणो ।
 'भेरुत्त्व' वाएण अकंपमाणो,
 परीसहे आयगुत्ते सहेज्जा ॥१९॥

अणुन्नए नावणए महेसी,
 न यावि पूयं गरहं च संजए ।
 से उज्जुभावं पडिवज्ज संजए,
 निव्वाणमगं विरए उवेइ ॥२०॥

अ र इ-र इ स हे प ही ण सं थ वे,
 विरए आयहिए पहाणवं ।
 प र म ढु प ए हिं चि ढु ई,
 छिन्नसोए अमसे अकिंचणे ॥२१॥

विवित्तलयणाइ भएज्ज ताई,
 नि रो व ले वा इ अ सं थ डा इं ।
 इसीहिं चिण्णाइं महायसेहिं,
 काएण फासेज्ज परीसहाइं ॥२२॥

सन्ना ण ना णो व ग ए महेसी,
 अणुत्तरं चरिडं धम्मसंचयं ।
 अणुत्तरे नाणधरे जसंसी,
 ओभासई सूरिए वंत्तलिक्खे ॥२३॥

दुविहं खवेऊण य पुण्णपावं,
 निरंगणे सच्चओ विप्पमुक्के ।
 तरित्ता "समुद्वं व" महाभवोहं,
 समुद्वपाले अपुणागमं गए ॥२४॥
 ॥ त्ति वेमि ॥

अह रहनेमिज्ज-नामं बाइसमं अज्झयणं

‘सोरियपुरम्मि नयरे’, आसि राया महिड्डिए ।
 ‘वसुदेव त्ति’ नामेणं, रायलक्खणसंजुए ॥२॥
 तस्स भज्जा दुवे आसी, ‘रोहिणी-देवई’ तथा ।
 दोहं दुवे पुत्ता, इट्ठा ‘राम-केसवा ॥२॥

सोरियपुरम्मि नयरे, आसी राया महिड्डिए ।
 ‘समुद्विजय नामं’, रायलक्खणसंजुए ॥३॥

तस्स भज्जा 'सिवा' नाम, तीसे पुत्तो महायसो ।
 भगवं 'अरिद्धनेमि त्ति' लोगनाहे दमोसरे ॥४॥
 सोऽरिद्धनेमिनामो उ, लक्खण-स्सर-संजुओ ।
 अट्ठसहस्स-लक्खणघरो, गोयमो कालगच्छवी ॥५॥
 वज्जरिसह-संघयणो, समचउरंसो शसोदरो ।
 तस्स 'रायमईकन्नं,' भज्जं जायइ केसवो ॥६॥
 अह सा रायवरकम्मा,' सुसीला चारुपेहणी ।
 सव्व-लक्खण-संपन्ना, विज्जुसोयामणिप्पमा ॥७॥
 अहाह जणओ तीसे, वासुदेवं महिड्ढियं ।
 इहागच्छकुमारो, जा से कन्नं ददामिऽहं ॥८॥
 सव्वोसहीहिं ण्हविओ, कह-कोउय-मंगलो ।
 दिव्वजुयल-परिहिओ, आभरणोहिं विभूसिओ ॥९॥
 मत्तं च गंधर्हत्य च, वासुदेवस्स जेट्ठगं ।
 आरुढो सोहए अहियं, सिरे चूडामणि जहा ॥१०॥
 अह असिएण छत्तेण, चामराहि य सोहिओ ।
 दसारचक्केण य सो, सव्वओ परिवारिओ ॥११॥
 चउरणिणीए सेणाए, रइयाए जहक्कमं ।
 तुरियाण सन्निनाएणं, दिव्वेणं गगणं फुत्ते ॥१२॥
 एयारिसीए इड्ढीए, जुइए उत्तमाइ य ।
 नियगाओ भवणाओ, निज्जाओ वणिहुगं वो ॥१३॥

अह सो तत्थ निज्जंतो, दिस्स पाणे भयदंदुए ।
 वाडोहं पंजरोहं च, संनिरुद्धे सुदुक्खिए ॥१४॥
 जीवियंतं तु संपत्ते, मंसट्ठा भविष्यव्वए ।
 पासित्ता से महापत्ते, सारहिं इणमव्ववी ॥१५॥

भ० अरिष्ठनेमि—

कस्स अट्ठा इमे पाणा, एए सव्वे सुहेसिणो ।
 वाडोहं पंजरोहं च, सन्निरुद्धा य अच्छाहिं ? ॥१६॥

सारथिः—

अह सारही तओ भणइ, एए भट्ठा उ पाणिणो ।
 तुज्झं विवाहकज्जम्मि, भोयावेउं बहं जणं ॥१७॥

भ० अरिष्ठनेमि—

सोऊण तस्स वयणं, बहुपाणि—विणासणं ।
 चित्तेइ से महापन्नो, साणुक्कोसे जिए हिओ ॥१८॥
 जइ मज्झ कारणा एए, हम्मंति सुबहू जिया ।
 न मे एयं तु निस्सेसं, परलोगे भविस्सई ॥१९॥
 सो कुंडलाण जुयलं, सुत्तगं च महायसो ।
 ण य सव्वाणि, सारहिस्स पणामए ॥२०॥

।सो य कओ, देवा य जहोइयं समोइण्णा ।
 सव्विड्ढीए सपरिसा, निक्खमणं तस्स काउं जे ॥२१॥

देव-मणुस्सपरिवुडो, सीविया-रयणं तओ समारुडो ।
 निक्खमिय 'वारगाओ, रेवययम्मि' ठिओ भगवं ॥२२॥
 उज्जाणं संपत्तो, ओइण्णो उत्तमाउ सीयाओ ।
 साहुस्सीए परिवुडो, अह निक्खमई उ चित्ताहिं ॥२३॥
 अह से सुगंधगंधीए, तुरियं मउअकुंचिए ।
 सयमेव लुंचई केसे, पंचमुट्ठीहिं समाहिओ ॥२४॥
 वासुदेवो य णं भणइ, लुत्तकेसं जिइंदियं ।
 इच्छियमणोरहं तुरियं, पावसु तं दमीसरा ! ॥२५॥
 नाणेण दंसणेणं च, चरित्तेण तहेव य ।
 खंतीए मुत्तीए, वड्ढमाणो भवाहि य ॥२६॥
 एवं ते राम-केसवा, दसारा य ब्रह्म जणा ।
 अरिदुणोमि वंदित्ता, अइगया वारगापुरिं ॥२७॥
 सोऊण रायकत्ता, पव्वज्जं सा जिणेंस्स उ ।
 नीहासा य निराणंदा, सोगेण उ समुच्छिया ॥२८॥
 राईमई विंचितेइ, धिरत्थु मम जीवियं ।
 जाअहं तेण परिच्चत्ता, सेयं पव्वइउं मम ॥२९॥
 अह सा भमरसन्निभे, कुच्च-फणग-साहिए ।
 सयमेव लुंचई केसे, धिइमंता ववस्सिया ॥३०॥
 वासुदेवो य णं भणइ, लुत्तकेसं जिइंदियं ।
 संसारसागरं घोरं, तर-कल्ले ! लहं लहं ॥३१॥

सा पव्वइया संती, पव्वावेसी तहिं बहुं ।
 सयणं परियणं चेव, सीलवंता बहुस्सुया ॥३२॥
 गिरिरेवययं जंती, वासेणुल्ला उ अंतरा ।
 वासंते अंधयारंमि, अंतो लयणस्स सा ठिया ॥३३॥
 चीवराइं विसारंती, जहा जायत्ति पासिया ।
 रहनेमि भग्गचित्तो, पच्छा दिट्ठो य तोइ वि ॥३४॥
 भीया य सा तहिं दट्ठुं, एगंते संजयं तयं ।
 बाहाहिं काउं संगोप्फं, वेवमाणी निसीयई ॥३५॥

रथनेमि.-

अह सो वि रायपुत्तो, समुइविजयंगओ ।
 भीयं पवेवियं दट्ठुं, इमं वक्कमुदाहरे ॥३६॥
 रहनेमी' अहं भद्दे !, सुरूवे ! चारुभासिणी ।
 ममं भयाहि सुयणु, न ते पीला भविस्सइ ॥३७॥
 एहि ता भुंजिमो भोए, माणुस्सं खु सुदुल्लहं ।
 भुत्तभोगा तओ पच्छा, जिणमग्गं चरिस्सिमो ॥३८॥

राजीमती:-

दट्ठुण रहनेमि तं, भग्गजोयं-पराजियं ।
 राईमई असंभंता, अप्पाणं संवरे तहिं ॥३९॥
 अह सा रायवरकन्ना, सुट्ठिया नियमज्जए ।
 जाई कुलं च सीलं च ! रक्खमाणी तयं वए ॥४०॥

जइऽसि रुवेण वेसमणो, ललिएण नल-कूबरो ।
तहा वि ते न इच्छामि, जइऽसि सक्खं पुरंदरो ॥४१॥

पक्खंदे जलिअं जोइं, धूमकेउं दुरासयं ।
नेच्छंति वंतयं भोत्तुं, कुले जाया अगंधणे ॥

धिरत्थु तेऽजसोकामी । जो तं जीवियकारणा ।
वंतं इच्छसि आवेउं, सेयं ते मरणं भवे ॥४२॥

अहं च भोगरायस्स, तं च सि अंधगवण्हिणो ।
मा कुले गंधणा होमो, संजमं निहुओ चर ॥४३॥

जइ तं काहिसि भावं, जा जा दिच्छसि नारिओ ।
वायाइद्धो व्व हढो, अट्ठिअप्पा भविस्ससि ॥४४॥

गोवालो भंडवालो वा, जहा तद्द्वग्गणिस्सरो ।
एवं अणिस्सरो तं पि, सामण्णस्स भविस्ससि ॥४५॥

कोहं माणं निगिण्हित्ता, मायं लोभं च सव्वसो ।
इंदियाइं वसे काउं, अप्पाणं उवसंहरे ॥

यत्थेमि -

तीत्ते सो वयणं सोच्चा, संजयाए सुभासियं ।
अंकुसेण जहा नागो, धम्मे संपडिवाइओ ॥४६॥

मणगुत्तो वयगुत्तो, कायगुत्तो जिइंदिए ।
सामण्णं निच्चलं फासे, जावज्जीवं दढव्वओ ॥४७॥

उगं तवं चरित्ताणं, जाया दुण्णि वि केवली ।
 सव्वं कम्मं खवित्ताणं, सिद्धिं पत्ता अणुत्तरं ॥४८॥
 एवं करेति संबुद्धा, पंडिया पवियक्खणा ।
 विणियट्ठंति भोगेसु, जहा सो पुरिसोत्तमो ॥४९॥
 ॥ त्ति वेमि ॥

अहंकेसिगोयमिज्ज-नामं तेवीसइमं अज्झयणं

जिणे पासित्ति नामेणं, अरहा लोगपूइओ ।
 संबुद्धप्पा य सव्वन्नू, धम्मतित्थयरे जिणे ॥१॥
 तस्स लोगपईवस्स, आसि सीसे महायसे ।
 केसी कुमारसमणे, विज्जाचरणपारए ॥२॥
 ओहिनाणसुए बुद्धे, सीससंघ-समाउले ।
 गामाणुगामं रीयंते, सार्वत्थि पुरमागए ॥३॥
 तिट्ठुयं नाम उज्जाणं, तंमि नगरमंडले ।
 फासुए सिज्जसंथारे, तत्थ वासमुवागए ॥४॥
 अहं तेणेव कालेणं धम्मतित्थयरे जिणे ।
 भगवं वद्धमाणि त्ति, सव्वलोगंमि विस्सुए ॥५॥

तत्स लोगपईवत्स, आसि सीसे महायसे ।

भगवं गोयमे नामं, विज्जाचरणपारए ॥६॥

बारसंगविऊ बुद्धे, सीससंघ-समाउले ।

गामाणुगाम रीयते, सो वि सावत्थिमागए ॥७॥

“कोट्ठगं” नाम उज्जाण, तम्मि नगरमडले ।

फासुए सिज्जसथारे, तत्थ वासमुवागए ॥८॥

केसी कुमारसमणे, गोयमे य महायसे ।

उभओ वि तत्थ विहरिसु, अल्लीणा सुसम्पहिंया ॥९॥

उभओ सीससंघाणं, संजयाणं तवत्तिणं ।

तत्थ चिंता समुप्पन्ना, गुणवंताण ताइण ॥१०॥

केरिसो वा इमो धम्मो ? इमो धम्मो व केरिसो ?

आयारधम्मपणिही, इमा वा सा व केरिसी ? ॥११॥

चाउज्जामो य जो धम्मो, जो इमो पंचसिखिओ ।

देसिओ वद्धमाणेण, पासेण य महामुणी ॥१२॥

अचेलओ य जो धम्मो, जो इमो सतरुत्तरो ।

एग कज्ज-पवन्नाणं, विसेसे किं नु कारणं ? ॥१३॥

अह ते तत्थ सीसाण, विन्नाय पवित्तिकथं ।

समागमे कयमई, उभओ केत्ति-गोयमा ॥१४॥

गोयमे पडिरुवन्नू, सीससंघ-समाउले ।

जेट्ठं कुलमवेवखंतो, “तियुयं” वणमागओ ॥१५॥

केसी कुमारसमणे, गोयमं दिस्समागयं ।
 पडिख्वं पडिर्वत्ति, सम्मं संपडिवज्जइ ॥१६॥
 पलालं फासुयं तत्थ, पंचमं कुसतणाणि य ।
 गोयमस्स निसेज्जाए, खिप्पं संपणामए ॥१७॥
 केसी कुमारसमणे, गोयमे य महायसे ।
 उभयो निसण्णा सोहीति, चंद-सूरसमप्पभा ॥१८॥
 समागया बहु तत्थ, पासंडा कोउगा मिया ।
 गिहत्थाणं अणेगाओ, साहस्सीओ समागया ॥१९॥
 देव-दाणव-गंधच्चा, जक्ख-रक्खस-किन्नरा ।
 अदिस्साणं च भूयाणं, आसी तत्थ समागमो ॥२०॥
 पुच्छामि ते महाभाग । केसी गोयममन्ववी ।
 तओ केसिं बुवंतं तु गोयमो इणमन्ववी ॥२१॥
 पुच्छ भंते । जहिच्छं ते, केसिं गोयममन्ववी ।
 तओ केसिं अणुष्साए, गोयमं इणमन्ववी ॥२२॥
 (१) चाउज्जामो य जो धम्मो, जो इमो पंचसिक्खिओ ।
 देसिओ वद्धमाणेण, पासेण य महामुणी ! ॥२३॥
 एगकज्जपवन्नाणं विसेसे किं नु कारणं ?
 धम्मे दुविहे मेहावी, कहं विप्पच्चओ न ते ? ॥२४॥
 तओ केसिं बुवंतं तु, गोयमो इणमन्ववी ।
 पन्ना समिक्खए धम्मं, तत्तं, तत्तविणिच्छियं ॥२५॥

पुरिमा उज्जुजडा उ, वंकजडा य पच्छिमा ।
 मज्झिमा उज्जुपन्ना उ, तेण धम्मे दुहा कए ॥२६॥
 पुरिमाणं दुव्विसुज्झो उ, चरिमाणं दुरणुपालओ ।
 कप्पो मज्झिमगाणं तु, सुविसुज्झो सुपालओ ॥२७॥
 साहु गोयम । पन्ना ते, छिन्नो मे संसओ इमो ।
 अन्नो वि संसओ मज्झं, तं मे कहसु गोयमा ! ॥२८॥
 (२) अचेलगो य जो धम्मो, जो इमो संतरुत्तरो ।
 देसिओ वद्धमाणेण, पासेण य महामुणी । ॥२९॥
 एगकज्जपवन्नाणं, विसेसे किं नु कारणं ।
 लिगे दुविहे मेहावी, कहं विप्पच्चओ न ते ? ॥३०॥
 केसिमेवं ब्रुवंतं तु, गोयमो इणमब्बवी ।
 विन्नाणेण समागम्म, धम्मसाहणमिच्छियं ॥३१॥
 पच्चयत्यं च लोगस्स, नाणाविहविगप्पणं ।
 जत्तत्यं गहणत्यं च, लोगे लिगपओयणं ॥३२॥
 अह भवे पइन्ना उ, मोक्खसब्भयसाहणा ।
 नाणं च दंसणं चैव, चरित्तं चैव निच्छए ॥३३॥
 साहु गोयम । पन्ना ते, छिन्नो मे संसओ इमो ।
 अन्नो वि संसओ मज्झं, तं मे कहसु गोयमा ! ॥३४॥
 (३) अणेगाणं सहस्साणं, मज्झे चिट्ठसि गोयमा !
 ते य ते अभिगच्छन्ति, कहं ते निज्जिया तुमे ? ॥३५॥

एगे जिए जिया पंच, पंच जिए जिया दस ।
 दसहा उ जिणित्ताणं, सच्चसत्तू जिणामहं ॥३६॥
 सत्तू य इइ के वुत्ते ? केसी गोयममच्चवी ।
 तओ केसिं वुवत्तं तु, गोयमो इणमच्चवी ॥३७॥
 एगप्पाअजिए सत्तू, कसाया इंदियाणि य ।
 ते जिणित्तु जहानायं, विहरामि अहं मुणी ॥३८॥
 साहु गोयम ! पत्ता ते, छिन्नो मे संसओ इमे ।
 अन्नो वि संसओ मज्झं, तं मे कहसु गोयमा ! ॥३९॥
 (४) दीसंति वहवे लोए, पासबद्धा सरीरिणो ।
 मुक्कपासो लहुच्चूओ, कहं तं विहरसि ? मुणी ! ॥४०॥
 ते पासे सच्चसो छित्ता, निहंतूण उवायओ ।
 मुक्कपासो लहुच्चूओ, विहरामि अहं मुणी ! ॥४१॥
 पासाय इइ के वुत्ता ? केसी गोयममच्चवी ।
 केसिमेवं वुवत्तं तु, गोयमो इणमच्चवी ॥४२॥
 रागद्वोसादओ तिब्बा, नेहपासा भयंकरा ।
 ते छिदित्तु जहानायं, विहरामि जहक्कमं ॥४३॥
 साहु गोयम ! ते, पत्ता छिन्नो मे संसओ इमो ।
 अन्नो वि संसओ मज्झं, तं मे कहसु गोयमा ! ॥४४॥
 (५) अंतोहिययसंभूया, लया चिट्ठइ गोयमा ।
 फलेइ विसभक्खीणी, सा उ उद्धरिया कहं ? ॥४५॥

तं लयं सब्वसो छित्ता, उद्धरित्ता समूलियं ।

विहरामि जहानायं, भुक्कोमि विसभक्खणं ॥४६॥

लया य इइ का वुत्ता ? केसी गोयममब्बवी ।

केसिमेवं बुवंतं तु, गोयमो इणमब्बवी ॥४७॥

भवतण्हा लया वुत्ता, भीमा भीमफलोदया ।

तमुच्छित्ता जहानायं, विहरामि जहासुहं ॥४८॥

साहु गोयम ! पन्ना ते, छिन्नो मे संसओ इमो ।

अन्नो वि संसओ मज्झं, तं मे कहसु गोयमा ॥४९॥

(६) संपज्जलिया घोरा, अग्गी चिट्ठइ गोयमा ।

जे ड्हंति सरीरत्था, कहं विज्झाविया तुमे ? ॥५०॥

महामेहप्पसूयाओ, गिज्झ वारि जलुत्तमं ।

सिचामि सययं तेऊं, सित्ता नो व ड्हंति मे ॥५१॥

अग्गी य इइ के वुत्ता ? केसी गोयममब्बवी ।

केसिमेव बुवंतं तु, गोयमो इणमब्बवी ॥५२॥

कसाया अग्गिणो वुत्ता, सुय-सील-तवो-जलं ।

सुयधारामिहया संता, भिन्ना हु न ड्हंति मे ॥५३॥

साहु गोयम ! पन्ना ते, छिन्नो मे संसओ इमो ।

अन्नो वि संसओ मज्झं, तं मे कहसु गोयमा । ॥५४॥

(७) अयं साहसिओ भीमो, दुट्ठस्सो परिधावई ।

जंसि गोयम ! आरूढो, कहं तेण न हीरसि ? ॥५५॥

पधावंतं निगिण्हामि, सुयरस्सीसमाहियं ।

न मे गच्छइ उम्मगं, मगं च पडिवज्जइ ॥५६॥

आसे य इइ के वुत्ते ? केसी गोयममब्बवी ।

केसिमेवं बुवंतं तु, गोयमो इणमब्बवी ॥५७॥

मणो साहसिओ भीमो, द्रुट्ठस्सो परिधावइ ।

तं सम्मं तु निगिण्हामि, धम्मसिक्खाइ कंथयं ॥५८॥

साहु गोयम ! पत्ता ते, छिन्नो मे संसओ इमो ।

अन्नो वि संसओ मज्झं, तं मे कहसु गोयमा ! ॥५९॥

(८) कुप्पहा बहवो लोए, जेहि नासंति जंतुणो ।

अट्ठाणे कह वट्ठतो, तं न नाससि ? गोयमा ! ॥६०॥

जे य मग्गेण गच्छंति, जे य उम्मगपट्ठिया ।

ते सब्बे वेइया मज्जं, तं न नस्सामहं मुणी ! ॥६१॥

मग्गे य इइ के वुत्ते ? केसी गोयममब्बवी ।

केसिमेवं बुवंतं तु, गोयमो इणमब्बवी ॥६२॥

कुप्पवयणपासंडी, सब्बे उम्मगपट्ठिया ।

तु जिणक्खायं, एस मग्गे हि उत्तमे ॥६३॥

गोयम ! पत्ता ते, छिन्नो मे संसओ इमो ।

वि संसओ मज्झं, तं मे कहसु गोयमा ! ॥६४॥

(९) महाउदगवेगेण, बुज्झमाणाण पाणिणं ।

सरणं गई पइट्ठा य, दीवं कं मत्तसि ? मुणी ! ॥६५॥

अत्थि एगो महादीवो, वारिमज्झे महात्तओ ।
 महाउदवेगस्स, गई तत्थ न विज्जइ ॥६६॥
 दीवे य इइ के वुत्ते ? केसी गोयमब्बवी ।
 केसिमेवं बुवंतं तु, गोयमो इणमब्बवी ॥६७॥
 जरा-मरणवेगेणं, बुज्झमाणाण पाणिणं ।
 धम्मो दीवो पइट्ठा य, गई सरणमुत्तमं ॥६८॥
 साहु गोयम ! पन्ना ते, छिन्नो मे संसओ इमो ।
 अन्नो वि संसओ मज्झं, तं मे कहसु गोयमा ! ॥६९॥
 (१०) अण्णवसि महोहंसी, नावा विपरिधावइ ।
 जंसि गोयम ! आरूढो, कहं पारं गमिस्सति ? ॥७०॥
 जा उ अस्साविणी नावा, न सा पारस्स गामिणी ।
 जा निरस्साविणी नावा, सा उ पारस्स गामिणी ॥७१॥
 नावा य इइ का वुत्तो ? केसी गोयममब्बवी ।
 केसिमेवं बुवंतं तु, गोयमो इणमब्बवी ॥७२॥
 सरीरमाहु नाव त्ति, जीवो वुच्चइ नाविओ ।
 संसारो अण्णवो वुत्तो, जं तरति महेसिणो ॥७३॥
 साहु गोयम ! पन्ना ते, छिन्नो मे संसओ इमो ।
 अन्नो वि संसओ मज्झं, तं मे कहसु गोयमा ! ॥७४॥
 (११) अंधयारे तमे घोरे, चिट्ठंति पाणिणो बहू ।
 को करिस्सइ उज्जोयं ? सव्वलोयम्मि पणिणं ॥७५॥

उग्गओ विमलो भाणू, सव्वलोयपभंकरो ।
 सो करिस्सइ उज्जोयं, सव्वलोयमि पाणिणं ॥७६॥
 भाणू य इइ के वुत्ते ? केसी गोयममव्ववी ।
 केसिमेविं वुवंतं तु, गोयमो इणमव्ववी ॥७७॥
 उग्गओ खीणसंसारो, सव्वन्नू जिणभक्खरो ।
 सो करिस्सइ उज्जोयं, सव्वलोयमि पाणिणं ॥७८॥
 साहु गोयम ! पन्ना ते, छिन्नो मे संसओ इमो ।
 अन्नो वि संसओ मज्झं, तं मे कहसु गोयमा ! ॥७९॥
 (१२) सारीरमाणसे दुक्खे, वज्झमाणाण पाणिणं ।
 खेमं सिवमणावाहं, ठाणं किं मन्नसे मुणो ? ॥८०॥
 अत्थि एगं धुवं ठाणं, लोयगगंमि दुरारुहं ।
 जत्थ नत्थि जरा मच्चू, वाहिणो वेयणा तहा ॥८१॥
 ठाणे य इइ के वुत्ते ? केसी गोयममव्ववी ।
 केसिमेविं वुवंतं तु, गोयमो इणमव्ववी ॥८२॥
 निव्वाणं ति अवाहं ति, सिद्धी लोयगगमेव य ।
 खेमं सिवं अणावाहं, जं चरंति महेसिणो ॥८३॥
 तं ठाणं सासयं वासं, लोयगगंमि दुरारुहं ।
 जं संपत्ता न सोर्यति, भवोहंतकरा मुणी ! ॥८४॥
 साहु गोयम ! पन्ना ते, छिन्नो मे संसओ इमो ।
 न मो ते संसयातीत ! सव्वसुत्तमहोदही ॥८५॥

एवं तु संसए छिन्ने ! केसी घोरपरक्कमे ।
 अभिवंदित्ता सिरसा, गोयमं तु महायस ॥८६॥
 पंचमहब्बयधम्मं, पडिवज्जइ भावओ ।
 पुरिमस्स पच्छिममि, मग्गे तत्थ सुहावहे ॥८७॥
 केसीगोयमओ निच्चं, तंमि आसिं समागमे ।
 सुयसीलसमुक्करिसो, महत्थत्थविणिच्छओ ॥८८॥
 तोसिया परिसा सव्वा, संमग्ग समुवट्ठिया ।
 संयुया ते पसीयंतु, भयवं केसिगोयमे ॥८९॥
 ॥ त्ति वेमि ॥

अह पवयणमाया नामं चउविसइमं अज्झयणं

अट्ठ पवयणमायाओ, समिई गुत्ती तहेव य ।
 पंचेव य समिईओ, तओ गुत्ती उ आहिया ॥१॥
 इरिया^१ भासे^२ सणा^३ दाणे^४, उच्चारे^५ समिई इय ।
 मणगुत्ती^६ वयगुत्ती^७, कायगुत्ती^८ य अट्ठमा ॥२॥
 एयाओ अट्ठ समिईओ, समासेण वियाहिया ।
 दुवालसंगं जिणक्खायं, मायं जत्थ उ पवयणं ॥३॥

(८) ठाणे निसीयणे चैव, तहेव य तुयट्टणे ।
 उल्लंघण-पल्लंघणे, इंदियाण य जुजणे ॥२४॥
 संरंभ-समारंभे, आरंभे य तहेव य ।
 कायं पवत्तमाणं तु, नियत्तिज्ज जयं जई ॥२५॥
 एयाओ षच समिईओ, चरणस्स य पवत्तणे ।
 गुत्ती नियत्तणे वुत्ता, असुभत्थेसु सव्वसो ॥२६॥
 एसा पवयणमाया, जे सम्मं आयरे मुणी ।
 सो खिप्पं सव्वसंसारा, विप्पमुच्चइ पंडिए ॥२७॥
 ॥ ति बेमि ॥

अह जन्नइज्ज-नामं पंचविंसइमं अज्झयणं

माहणकुलसंभूओ, आसि विण्यो महायसो ।
 जायाई जमजन्नंमि, "जयघोसि ति" नामओ ॥१॥
 इंदियग्गामनिग्गाही, मग्गगामी महामुणी ।
 गामाणुगामं रीयंते, पत्तो वाणारसिं पुंरि ॥२॥
 'वाणारसीए' बहिया, उज्जाणंमि मणोरमे ।
 फासुए सेज्जसंथारे, तत्थ वासमुवाणए ॥३॥

अह तेणेव कालेणं, पुरीए तत्थ माहणे ।
 “विजयघोसि त्ति” नामेण, जन्नं जयइ वेयवी ॥४॥
 अह से तत्थ अणगारे, मासक्खमणपारणे ।
 विजयघोसस्स जन्नंमि, भिक्खस्सट्ठा उवट्ठिए ॥५॥

यष्टा विजयघोषः—

समुट्ठियं तहिं संतं, जायगो पडिसेहए ।
 न हु दाहामि ते भिक्खं, भिक्खू । जायाहि अन्नओ ॥६॥
 जे य बेयविऊ विप्पा, जन्नट्ठा य जे दिया ।
 जोइसंगविऊ जे य, जे य धम्माण पारगा ॥७॥
 जे समत्था समुद्धत्तं, परमप्पाणमेव य ।
 तेसि अन्नमिणं देयं, भो भिक्खू । सच्चकामियं ॥८॥
 सो तत्थ एवं पडिसिद्धो, जायगेण महामुणी ।
 न वि रुद्धो न वि तुद्धो, उत्तमट्ठगवेसओ ॥९॥
 नत्तज्झं पाजहेस वा, नवि निव्वाहणाय वा ।
 तेसि विमोक्खणट्ठाए, इमं वयणमव्ववी ॥१०॥

जयघोषमुनिः—

नवि जाणसि वेयमुहं^१, नवि जन्नाण जं मुहं^२ ।
 नक्खत्ताण मुहं^३ जं च, जं च धम्माण वा मुहं^४ ॥११॥
 जे समत्था समुद्धत्तं, परमप्पाणमेव^५ य ।
 न ते तुमं वियाणासि, अह जाणासि तो भण ॥१२॥

યઘ્ઠા વિજયઘોષ:-

તસ્સવખેવપમુક્ખ તુ, અચયંતો તહિં દિઓ ।
 સપરિસો પંજલી હોઝં, પુચ્છઈ તં મહામુર્ણિ ॥૧૩॥
 વેયાણં ચ મુહં વૂહિ^૧, વૂહિ જન્નાણ જં મુહં^૨ ।
 નવ્ખત્તાણ મુહં વૂહિ^૩, વૂહિ ધમ્માણ વા મુહં^૪ ॥૧૪॥
 જે સમત્થા સમુદ્ધત્તું, પરમપ્પાણમેવ^૫ ય ।
 એયં મે સંસયં સવ્વં, સાહૂ ! કહય પુચ્છિઓ ॥૧૫॥

જયઘોષમુનિ:-

અગિહુત્તમુહા વેયા^૧, જન્નઢ્ઠી વેયસા મુહં^૨ ।
 નવ્ખત્તાણ મુહં ચંદો^૩, ધમ્માણં કાસવો મુહં^૪ ॥૧૬॥
 જહા ચંદં ગહાઈયા, ચિદ્ધંતિ પંજલીઝડા ।
 વંદમાણા નમંસંતા, ઉત્તમં મણહારિણો ॥૧૭॥
 અજાણગા જન્નવાઈ, વિજ્જામાહણસંપયા ।
 ગૂઢા સજ્જાયતવસા, “ભાસચ્છન્ના ઇવગ્ગિણો” ॥૧૮॥
 જો લોએ વંમ્મણો વુત્તો, અગ્ગી વા મહિઓ જહા ।
 સયા કુસલસંદિદ્ધં, તં વયં વૂમ માહણં ॥૧૯॥
 જો ન સજ્જઈ આગંતુ, પવ્વયંતો ન સોયઈ ।
 રમઈ અઙ્ગવપ્પણંમિ, તં વયં વૂમ માહણં ॥૨૦॥
 જાયરૂવં જહામદ્ધં, નિદ્ધંતમલપાવગં ।
 રાગ-દોસ-મયાઈયં, તં વયં વૂમ માહણં ॥૨૧॥

तवस्सियं किसं दंतं, अवचिय-मंससौणिं ।
 सुव्वयं पत्तनिव्वाणं, तं वयं बूम माहणं ॥२२॥
 तसपाणे वियाणेत्ता, संगहेण यथावरे ।
 जो न हिंसइ तिविहेण, तं वयं बूम माहणं ॥२३॥
 कोहा वा जइ वा हासा, लोहा वा जइ वा भया ।
 मुसं न वयई जो उ, तं वयं बूम माहणं ॥२४॥
 चित्तमंतमचित्तं वा, अप्पं या जइ वा बहुं ।
 न गिण्हइ अदत्तं जो, तं वयं बूम माहणं ॥२५॥
 दिव्व-माणुस्स-तेरिच्छं, जो न सेवइ मेहुणं ।
 मणसा कायवक्केणं, तं वयं बूम माहणं ॥२६॥
 जहा पोमं जले जायं, नोवलिप्पइ वारिणा ।
 एवं अलित्तो कामेहि, तं वयं बूम माहणं ॥२७॥
 अलोलुयं मुहाजीवि, अणगारं अकिचणं ।
 असंसत्तं गिहत्थेसु, तं वयं बूम माहणं ॥२८॥
 जहित्ता पुव्वसंजोगं, नाइसंगे य बंधवे ।
 जो न सज्जइ भोगेसु, तं वयं बूम माहणं ॥२९॥
 पसुबंधा सच्चवेया, जट्टं च पावकम्मुणा ।
 न तं तायंति दुस्सीलं, कम्माणि बलवंति ह ॥३०॥
 न वि मुंडिएण समणो, न ओकारेण वंशणो ।
 न मुणी रण्णवासेणं, कुसचीरेण न तावसो ॥३१॥

समयए समणो होइ, वंभचेरेण वंभणो ।
 नाणेण उ मुणी होइ, तवेण होइ तौवसो ॥३२॥
 कम्मुणा वंभणो होइ, कम्मुणा होइ खत्तिओ ।
 वइस्सो कम्मुणा होइ, सुद्धो हवइ कम्मुणा ॥३३॥
 एए पाउकरे बुद्धे, जेहिं होइ सिणायओ ।
 सव्वकम्मविणिम्मक्कं, तं वयं वूम माहणं ॥३४॥
 एवं गुणसमाउत्ता, जे भवन्ति दिउत्तमा ।
 ते समत्था उ उद्धत्तं, परमप्पाणमेव य ॥३५॥

यष्टा विजयघोषः—

एवं तु संसए छिन्ने, विजयघोसे य माहणे ।
 समुदाय तओ तं तु, जयघोस महामुणिं ॥३६॥
 तुद्धे य विजयघोसे, इणमुदाहु कयंजली ।
 माहणत्तं जहाभूयं, सुद्धं मे उवदसियं ॥३७॥
 तुब्भे जइया जन्नाणं, तुब्भे वेयविऊ विऊ ।
 जोइसगविऊ तुब्भे, तुब्भे धम्माण पारगा ॥३८॥
 तुब्भे समत्था उद्धत्तं, परमप्पाणमेव य ।
 तमणुग्गह करेहम्मह, भिवखेण भिवखुउत्तमा ! ॥३९॥

यो ५ -

न कज्ज मज्झ भिवखेणं, खिप्पं निद्वखमसू दिया !
 मा भमिहिति भयावद्धे, घोरे संसारसागरे ॥४०॥

उवलेवो होइ भोगेसु, अभोगी नोवलिप्पई ।
 भोगी भमइ संसारे, अभोगी विप्पमुच्चई ॥४१॥
 "उल्लो सुक्कोय दो छूढा, गोलया महियामया ।
 दो वि आवडिया कुड्डे, जो उल्लो सोऽत्थ लगइ ॥४२॥
 एवं लगंति दुम्मेहा, जे नरा कामलालसा ।
 विरत्ता उ न लगंति, जहा से सुक्कगोलए ॥४३॥
 एवं से विजयघोसे, जयघोसस्स अत्तिए ।
 अणगारस्स निवत्ततो, धम्मं सोच्चा अणुत्तर ॥४४॥
 खवित्ता पुव्वकम्माइं, संजमेण तवेण य ।
 जयघोस-विजयघोसा, सिद्धिं पत्ता अणुत्तरं ॥४५॥ -
 ॥त्ति वेमि ॥

अह सामायारी नामं छव्वीसइमं अज्झयणं

सामायारिं पक्खामि, सच्चकुव्वविमोक्खणि ।
 जं चरित्ताण निगंथा, तिग्णा संसारसागरं ॥१॥
 पढमा आवस्सिया नाम, विद्वया य निसोहिया ।
 आपुच्छणा य तइया, चउत्थी पडिपुच्छणा ॥२॥
 पंचमी छंदणा नामं, इच्छाकारो य छट्ठिआ ।
 सत्तमा मिच्छाकारो य, तहक्कारो य अट्ठमा ॥३॥

अवमुद्वाणं च नवमा, दसमा उवसंपया ।

एसा दसंगा साहूणं, सामायारी पवेइया ॥४॥

समाचारीस्वहपम्:-

गमणे आवस्सियं^१ कुज्जा, ठाणे कुज्जा निसीहियं^२ ।

आपुच्छणं^३ सयंकरणे, परकरणे पडिपुच्छणं^४ ॥५॥

छंदणा^५ दव्वजाएणं, इच्छाकारो^६ य सारणे ।

मिच्छाकारो^७ य निंदाए, तहक्कारो^८ पडिस्सुए ॥६॥

अवमुद्वाणं^९ गुरुपूया, अच्छणे^{१०} उवसंपदा ।

एवं दुपंचसंजुत्ता, सामायारी पवेइया ॥७॥

श्रामण्ये स्थितानां सक्षिप्ता दिनचर्या:-

पुव्विल्लमि चउवभाए, आइच्चमि समुद्विए ।

भंडयं पडिलेहिता, वंदित्ता य तओ गुरुं ॥८॥

पुच्छिज्जा पंजलीउडो, किं कायव्वं मए इह ।

इच्छं निओइउं भंते ! वेयावच्चे व सज्झाए ॥९॥

वेयावच्चे निउत्तेणं, कायव्वं अगिलायओ ।

सज्झाए वा निउत्तेण, सज्जदुक्खविमुक्खणे ॥१०॥

दिवसस्स चउरो भागे, कुज्जा भिक्खू वियक्खणो ।

तओ उत्तरगुणे कुज्जा, दिणभागेसु चउसु वि ॥११॥

पढमे पोरिसि सज्झायं, वोये ज्ञाणं ज्ञियायई ।

तइयाए भिक्खायरियं, पुणो चउत्थोइ सज्झायं ॥१२॥

पौरुषी-प्रमाणम् -

आसाढे मासे दुपया, पोसे मासे चउप्पया ।
चित्तासोएसु मासेसु, तिप्पया हवइ पोरिसी ॥१३॥
अंगुलं सत्तरत्तेणं, पक्खेणं च दु अंगुलं ।
वड्ढए हायए वावी, मासेणं चउरंगुलं ॥१४॥

क्षयतिथीनां मासा -

आसाढ^१ बहुलपक्खे, भद्दवए^२ कत्तिय^३ य पोसे^४ य ।
फगुण^५ वइसाहेसु^६ य, वोद्धव्वा ओमरत्ताओ ॥१५॥

पादोनपौरुषी-प्रमाणम् -

जेट्टामूले आसाढ-सावणे, छहि अंगुलेहि पडिलेहा ।
अट्ठहि विइय-तियंमि, तइए दस अट्ठहि चउत्थे ॥१६॥

श्रामण्ये स्थितानां संक्षिप्ता रात्रिचर्या -

रत्तिं पि चउरो भागे, भिक्खू कुज्जा वियक्खणो ।
तओ उत्तरगुणे कुज्जा, राइभाएसु चउसु वि ॥१७॥
पढमे पेरिसि सज्झायं, वीये ज्ञाणं झियायइं ।
तइयाए निट्टामोक्खं तु, चउत्थी भुज्जो वि सज्झायं ॥१८॥

रात्रौ स्वाध्यायसमयनिरीक्षणम् -

जं नेई जया रत्तिं, नक्खत्तं तंमि नहचउव्वाए ।
संपत्ते विरमेज्जा, सज्झायं पओसकालंमि ॥१९॥

तस्मेव य नक्खते, गयणचउव्भागसावसेसंमि ।

वेरत्तिर्यंणि कालं, पडिलेहिता मुणी कुज्जा ॥२०॥

श्रामण्ये स्थिताना विशदा दिनचर्याः—

पुण्विल्लंमि चउव्भाए, पडिलेहिताण भंडयं ।

गुरुं वंदित्तु सज्झायं, कुज्जा दुक्खविमोक्खणिं ॥२१॥

पोरिसीए चउव्भाए, वदित्ताणं तओ गुरु ।

अपडिक्कमित्ता कालस्स, भायणं पडिलेहए ॥२२॥

प्रतिलेखनाविधि —

मुहुपोत्तिं पडिलेहिता, पडिलेहिज्ज गोच्छगं ।

गोच्छगलइयंगुलिओ, वत्थाइं पडिलेहए ॥२३॥

उड्ढ थिरं अतुरिय, पुप्वं ता वत्थमेव पडिलेहे^१ ।

तो विइयं पप्फोडे^२, तइयं च पुणो पमज्जिज्जा^३ ॥२४॥

अणच्चावियं अवलिय, अणाणुबधिभमोसलिं चेव ।

छप्पुरिमा नव खोडा, पाणी-पाणिविसोहणं ॥२५॥

प्रतिलेखना-दूषणानि —

आरभडा^१ सम्मद्दा^२, वज्जेयएवा य मोसली^३ तइया ।

पप्फोडणा^४ चउत्थी, विविक्खत्ता^५ वेइया छट्ठी^६ ॥२६॥

पसिदिल-पलंब-लोला, एगा मोसा अणेगरूवधुणा ।

कुणइ पमाणपमायं, संकिय गणणोवगं कुज्जा ॥२७॥

अणूणा^१ इरित्त^२ पडिलेहा, अविवच्चासा^३ तहेव य ।

पढमं पयं पसत्थ, सेसाणि य अप्पसत्थाइं ॥२८॥

प्रतिलेखना समये नैतत्करणीयम् -

पडिलेहणं कुणंतो, मिहो कहं कुणइ जणवयकहं वा ।

देइ व पच्चक्खाणं, वाएइ सयं पडिच्छइ वा ॥२९॥

पुढवी आजक्काए, तेउ-वाऊ-वणस्सइ-तसाणं ।

पडिलेहणापमत्तो, छण्हं पि विराहओ होइ ॥३०॥

पुढवी आजक्काए, तेऊ-वाऊ-वणस्सइ-तसाणं ।

पडिलेहणाआउत्तो, छ ण्हं संरक्खओ होइ ॥३१॥

तइयाए पोरिसीए, भत्तं पाणं गवेसए ।

छण्हं अन्नयरगंमि, कारणंमि समुट्ठिए ॥३२॥

वेयण^१ वेयावच्चे^२, इरियट्ठाए^३ य संजमट्ठाए^४ ।

तह पाणवत्तियाए^५, छट्ठं पुण धम्मचित्ताए^६ ॥३३॥

निग्गथो धिइमंतो, निग्गंथी वि न करेज्ज छहिं चेव ।

ठाणेहिं उ इमेहिं, अणइक्कमणाइ से होइ ॥३४॥

आयके^१ उवसग्गे^२, तित्तिक्खया बंभवेरगुत्तोसु^३ ।

पाणिदया^४ तवहेउ^५, सरीरवुच्छेयणट्ठाए^६ ॥३५॥

अवसेसं भड्गं गिज्झा, चक्खुसा पडिलेहए ।

परमद्वजोयणाओ, विहारं विहरए मुणी ॥३६॥

चउत्थीए पोरिसीए, निक्खित्ताण भायणं ।
 सज्झायं तओ कुज्जा, सव्वभावविभावणं ॥३७॥
 पोरिसीए चउज्भाए, वंदित्ताण तओ गुरुं ।
 पडिक्कमित्ता कालस्स, सेज्जं तु पडिलेहए ॥३८॥
 पासवणुच्चारभूमिं च, पडिलेहिज्ज जयं जई ।

श्रामण्ये स्थितानां विशदा रात्रिचर्या-

काउसगं तओ कुज्जा, सव्वदुक्खविमोक्खणं ॥३९॥
 देवसियं च अईयारं, चित्तिज्ज अणुपुव्वसो ।
 नाणे य दंसणे चेव, चरित्तंमि तहेव य ॥४०॥
 पारियकाउसगो, वदित्ता ण तओ गुरुं ।
 देवसियं तु अईयारं, आलोएज्ज जहक्कम्मं ॥४१॥
 पडिक्कमित्तु निस्सल्लो, वंदित्ता ण तओ गुरुं ।
 काउसगं तओ कुज्जा, सव्वदुक्खविमोक्खणं ॥४२॥
 पारियकाउस्सगो, वंदित्ता ण तओ गुरुं ।
 थुइमंगलं च काऊण, कालं संपडिलेहए ॥४३॥
 पढमे पोरिसिं सज्झायं, विये ज्ञाणं श्रियायई ।
 तइयाए निहमोक्खं तु, सज्झायं तु चउत्थिए ॥४४॥
 पोरिसीए चउत्थीए, कालं तु पडिलेहिए ।
 सज्झायं तु तओ कुज्जा, अबोहंतो असंजए ॥४५॥

पोरिसीए चउव्भाए, वंदिऊण तओ गुरुं ।
 पडिक्कमित्तु कालस्स, कालं तु पडिलेहए ॥४६॥
 आगए कायवोसग्गे, सव्वदुक्खविमुक्खणे ।
 काउसग्गं तओ कुज्जा, सव्वदुक्खविमुक्खणं ॥४७॥
 राइयं च अईयारं, चित्तिज्ज अणुपुण्वसो ।
 नाणंमि दंसणंमि य, चरित्तंमि तवमि य ॥४८॥
 पारियकाउस्सग्गो, वंदित्ताण तओ गुरुं ।
 राइयं तू अईयारं, आ लोएज्ज जहक्कमं ॥४९॥
 पडिक्कमित्तु निस्सल्लो, वंदित्ताण तओ गुरुं ।
 काउस्सग्ग तओ कुज्जा, सव्वदुक्खविमुक्खणं ॥५०॥
 किं तव पडिवज्जामि, एवं तत्थ विचित्तए ।
 काउस्सग्ग तु पारित्ता, करिज्जा जिणसंयवं ॥५१॥
 पारियकाउस्सग्गो, वदित्ताण तओ गुरुं ।
 तव संपडिवज्जित्ता, कुज्जा सिद्धाण-संयवं ॥५२॥
 एसा सामायारी, समासेण वियाहिया ।
 ज चरित्ता बहू जीवा, तिण्णा संसारसागरं ॥५३॥
 ॥ त्ति बेमि ॥

अहं खलु किञ्ज-नामं सत्तात्रीसइमं अज्झयणं

थेरे गणहरे गग्गे, मूणी आसि विसारए ।
 आइण्णे गणिभावंमि, समाहिं पडिसंघए ॥१॥
 वहणे वहमाणस्स, कंतारं अइवत्तई ।
 जोगे वहमाणस्स, संसारो अइवत्तई ॥२॥
 खलुंके जो उ जोएइ, विहंमाणो किलिस्सई ।
 अत्तमाहिं य वेएइ, तोत्तई से य भज्जई ॥३॥
 एगं डसइ पुच्छंमि, एगं विधइऽभिव्वणं ।
 एगो भंजइ समिलं, एगो उप्पह-पट्टिओ ॥४॥
 एगो पडइ पासेणं, निवेसइ निविज्जइ ।
 उक्कुट्ठइ उप्पिडई,, सद्धे बालगवी वए ॥५॥
 माई मुट्ठेण पडई, कुट्ठे गच्छइ पडिप्पहं ।
 मयलक्खेण चिट्ठई, वेगेण य पहावई ॥६॥
 छिन्नाले छिदइ सेल्लि दुट्ठंतो भंजए जुगं ।
 से वि य सुस्सुयाइत्ता, उज्जुहित्ता पलायइ ॥७॥
 खलुंका जारिस्सा जोज्जा, दुस्सीसा वि हु तारिस्सा ।
 जोइया धम्मजाणंमि, भज्जंति धिइदुब्बला ॥८॥
 इड्ढीगारविए एगे, एगेऽत्थ रसगारवे ।
 सायागारविए एगे, एगे सुचिरकोहणे ॥९॥

भिक्खालसिए एगे, एगे ओमाणभीरुए थद्वे ।
 एगं च अणुसासंमि, हेऊहिं कारणेहिं य ॥१०॥
 सो वि अंतरभासिल्लो दोसमेव पकुव्वई ।
 आयरियाणं तु वयणं, पडिकूलेइऽभिक्खणं ॥११॥
 न सा ममं वियाणाइ, न य सा मज्झ दाहिइ ।
 निग्गया होहिई मग्गे, साहू अन्नोऽत्य वच्चउ ॥१२॥
 पेसिया पलिउंचंति, ते परियंति समंतओ ।
 रायवेहिं च मन्नंता, करेतिं भिउडिं मुहे ॥१३॥
 वाइया संगहिथा चेव, भत्तपाणेहिं पोसिया ।
 'जायपक्खा जहा हंसा, पक्कमति दिसो दिंसि' ॥१४॥
 अह सारही विंचितेइ, खलु केहिं समागओ ।
 किं मज्झ दुट्ठसीसीह, अप्पा मे अवसीयइ ॥१५॥
 जारिसा मम सीसाओ, तारिसा गलिगद्धा ।
 गलिगद्धहे जहित्ताणं, वढं पणिण्हइ तवं ॥१६॥
 मिउमद्दवसपन्ने, गभीरे सुसमाहिए ।
 विहरइ महिं महप्पा, सीलभूएण अप्पणा ॥१७॥
 ॥ ति बेमि ॥

अह मोक्खमग्गइ नामं अट्ठावीसइमं अज्झयणं

मोक्खमग्गइं तच्चं, सुणेह जिणभासिय ।
चउकारणसंजुत्तं, ना ण दं स ण ल क्ख णं ॥१॥
नाणं^१ च दंसणं^२ चेव, चरित्तं^३ च तवो^४ तहा ।
एस मग्गुत्ति पन्नत्तो,, जिणेहिं वरदंसिहिं ॥२॥
नाणं च दंसणं चेव, चरित्तं च तवो तहा ।
एयं मग्गमणुप्पत्ता, जीवा गच्छंति सोग्गइं ॥३॥

ज्ञानस्वरूपम्—

तत्थ पंचविहं नाणं, सुयं^१ आभिनिबोहियं^२ ।
ओहिनाणं^३ तु तइयं, मणनाणं^४ च केवलं^५ ॥४॥
एयं पंचविहं नाणं, दव्वाण य गुणाण य ।
पज्जवाण य सव्वेसि, नाणं नाणीहिं देसियं ॥५॥

द्रव्य-गुण पर्याय लक्षणानि—

गुणाणमासओ दव्व, एगदव्वस्सिया गुणा ।
लक्खणं पज्जवाणं तु, उभओ अस्सिया भवे ॥६॥

षड्द्रव्याणि—

धम्मो अहम्मो^१ आगासं^२, कालो^३ पुग्गलं^४ जंतवो^५ ।
एस लोगो ति पन्नत्तो, जिणेहिं वरदंसिहिं ॥७॥

धम्मो अहम्मो आगासं, दव्वं इक्किक्कमाहियं ।

अणंताणि य दव्वाणि, कालो पुगलजंतवो ॥८॥

षड्द्रव्यलक्षणानि—

गइलक्खणो उ धम्मो^१, अहम्मो ठाणलक्खणो^२ ।

भायणं सब्बदव्वाणं, नहं ओगाहलक्खणं^३ ॥९॥

वत्तणालक्खणो कालो^४, जीवो उवओगलक्खणो^५ ।

नाणेणं दंसणेणं चेव, सुहेण य दुहेण य ॥१०॥

नाणं च दंसणं चेव, चरित्तं च तवो तथा ।

वीरियं उवओगो य, एयं जीवस्स लक्खणं ॥११॥

सइंधयार—उज्जोओ, पहा छायाऽऽतव त्ति वा ।

वण्ण-रस-गंध-फासा, पुगलाणं तु लक्खणं ॥१२॥

एगत्तं च पुहत्तं च, संखा संठाणमेव य ।

संजोगा य विभागा य, पज्जवाणं तु लक्खणं ॥१३॥

दर्शन-स्वरूपम्—

जीवा^१ जीवा^२ य बंधो^३ य, पुण्णं^४ पावा^५ सवो^६ तथा ।

संवरो^७ निज्जरा^८ मोक्खो^९, सतेए तहिया नव ॥१४॥

सम्यक्त्व-लक्षणम्—

तहियाणं तु भावाणं, सब्भावे उवएसणं ।

भावेण सइहंतस्स, समत्तं तं वियाहियं ॥१५॥

दशविधा-रुचय-

निस्सग्गु^१ वएसरुई^२, आणारुई^३ सुत्त^४ बीयरुइमेव^५ ।

अभिगम^६ वित्थाररुई^७, किरिया^८ सखेव^९ धम्मरुई^{१०} ॥१६॥

(१) भूयत्थेणाहिगया, जीवाजीवा य पुण्णपावं च ।

सहसम्मूड्यासव, संवरो य रोएइ उ निस्सग्गो ॥१७॥

जो जिणदिट्ठे भावे, चउव्विहे सदहाइ सयमेव ।

एमेव नन्नह त्ति य, स निसग्गरुइ त्ति नायव्वो ॥१८॥

(२) एए चेव उ भावे, उवइट्ठे जो परेण सदहई ।

छउमत्थेण जिणेण व, उवएसरुइ त्ति नायव्वो ॥१९॥

(३) रागो दोसो मोहो, अन्नाणं जस्स अवगयं होइ ।

आणाए रीयंतो, सो खलु आणारुई नामं ॥२०॥

(४) जो सुत्तमहिज्जंतो, सुएण ओगाहई उ सम्मत्तं ।

अंगेण बाहिरेण वा, सो सुत्तरुइ त्ति नायव्वो ॥२१॥

(५) एगेण अणेगाइ, पयाइ जो पसरइ उ सम्मत्तं ।

उदएव्व तेत्तविंदू, सो बीयरुइ त्ति मायव्वो ॥२२॥

(६) सो होइ अभिगमरुई, सुयनाणं जेण अत्थओ दिट्ठं ।

एक्कारस अंगाइ, पइण्णगं दिट्ठिवाओ य ॥२३॥

(७) दध्वाण सव्वभावा, सव्वपमाणेहि जस्स उवलद्धा ।

सव्वाहि नयविहीहि य, वित्थाररुइ त्ति नायव्वो ॥२४॥

(८) दंसणनाणचरित्ते, तवविणए सज्जसमिद्गुत्तीसु ।
जो किरियाभावरुई, सो खलु किरियारुई नाम ॥२५॥
(९) अणभिगाहियकुदिट्ठी, संखेवरुइ त्ति होइ नायव्वो ।
अविसारओ पवयणे, अणभिगाहिओ य सेसेसु ॥२६॥
(१०) जो अत्थिफायधम्म, सुयधम्मं खलु चरित्तधम्मं च ।
सद्दहइ जिणाभिहियं, सो धम्मरुइ त्ति नायव्वो ॥२७॥
परमत्थ-संयवो^१ वा, सुदिट्ठ-परमत्थसेवणा^२ वा वि ।
वावस-कुंदसणवज्जणा^३, य सम्मत्तसद्दहणा ॥२८॥
नत्थि चरित्तं सम्मत्तविहूणं, दंसणे उ भइयव्वं ।
सम्मत्तचरित्ताइ जुगवं, पुव्वं व सम्मत्तं ॥२९॥

ना दं स णि स्स ना ण,
नाणेण विणा न हुंति चरणगुणा ।
अगुणिस्स नत्थि मोक्खो,
नत्थि अमोक्खस्स निव्वानं ॥३०॥

अष्टप्रभावना—

निस्सकिय^१-निक्कखिय^२, निव्वित्तिगिच्छं^३ अमूढदिट्ठी^४ य ।
उववूह^५-थिरीकरणे^६, वच्छल्ल^७-पभावणे^८ अट्ट ॥३१॥

चारित्रस्वरूपम्—

समाइयत्थ^१ पढमं, छेओवट्ठावणं^२ भवे बिइयं ।
परिहारविसुद्धीयं^३ सुहुमं तह संपरायं^४ च ॥३२॥

अकसायमहक्खायं^५, छउमत्थस्स जिणस्स वा ।

एयं चयरित्तकरं, चारित्तं होइ आहियं ॥३३॥

तपःस्वरूपम्—तवो य द्दुविहो वुत्तो, बाहिरब्भंतरो तथा ।

बाहिरो छव्विहो वुत्तो, एवमब्भंतरो तवो ॥३४॥

नाणेण जाणइ भावे, दंसणेण य सद्दहे ।

चरित्तेण निगिण्हाइ, तवेण परिसुज्झइ ॥३५॥

खवित्ता पुव्वकम्माइं, संजमेण तवेण य ।

सव्वदुक्खपहीणट्ठा, पक्कमंति महेसिणो ॥३६॥

॥ त्ति वेमि ॥

अह सम्मत्तपरक्कम नाम एगूणतीसइमं अज्झयणं

सुयं मे आउसं !

तेणं भगवया एवमक्खायं—

इह खलु सम्मत्त-परक्कमे नाम अज्झयणे—

ेणं भगवया महावीरेणं कासवेणं पवेइए—

जं सम्मं सद्दहिक्का पत्तइक्का रोयइक्का फासिक्का पालइक्का—

तीरिक्का कित्तइक्का सोहइक्का आराहिक्का आणाए अणुपालिइक्का—

बहवे जीवा सिज्झंति बुज्झति मुच्चंति-

परिनिव्वायंति सब्बदुक्खाणमंतं करेति ।

तस्स णं अयमट्ठे एवमाहिज्जइ ।

तं जहा-

संवेगे १ निव्वेए २ धम्मसद्धा ३ गुरु-साहम्मियसुस्सुसणया ४

आलोयणयां ५ निंदणया ६ गरिहणया ७

सामाइए ८ चउव्वीसत्यए ९ वंदणया १०

पडिक्कमणे ११ काउस्सगो १२ पच्चक्खाणे १३

थवथुईमंगले १४

कालपडिलेहणया १५ पायच्छित्तकरणे १६ खमावणया १७

सज्झाए १८ वायणया १९ पुच्छणया २० परियट्ठणया २१

अणुप्पेहा २२ धम्मकहा २३ ।

सुयस्स आराहणया २४ एगग-मणसंनिवेसणयां २५

संजमे २६ तवे २७ वोदाणे २८ सुहसाए २९

अपडिबद्धया ३० विवित्त-सयणासणसेवणया ३१ विणियट्ठणया ३२

संभोगपच्चक्खाणे ३३ उवहि-पच्चक्खाणे ३४

आहार-पच्चक्खाणे ३५

कसाय-पच्चक्खाणे ३६ जोग-पच्चक्खाणे ३७

सरीर-पच्चक्खाणे ३८

सहाय-पच्चक्खाणे ३९ भत्त-पच्चक्खाणे ४० सद्धभाव

पच्चक्खाणे ४१

पङ्क्तिरूचयया ४२ वेयावच्चे ४३ सव्वगुणसंपन्नया ४४
वीयरगया ४५

खंती ४६ मुत्ती ४७ मह्वे ४८ अज्जवे ४९

भावसच्चे ५० करणसच्चे ५१ जोगसच्चे ५२

मणगुत्तया ५३ वयगुत्तया ५४ कायगुत्तया ५५

मन-समाधारणया ५६ वय-समाधारणया ५७

काय-समाधारणया ५८

नाणसंपन्नया ५९ दंसणसंपन्नया ६० चरित्तसंपन्नया ६१

सोईन्दियनिग्गहे ६२ चक्खिदियानिग्गहे ६३ घाणिदियानिग्गहे ६४

जिब्भिदियानिग्गहे ६५ फांसिदियनिग्गहे ६६

कोहविजए ६७ माणविजए ६८ मायाविजए ६९ लोभविजए ७०

पेज्ज-दोस-मिच्छादंसणविजए ७१ सेलेसि ७२ अकम्मया ७३॥

संवेगेणं भंते ! जीवे किं जणयइ ?

संवेगेणं अणुत्तरं धम्मसद्धं जणयइ ।

अणुत्तराए धम्मसद्धाए संवेगं हव्वमागच्छइ ।

अणंताणुबंधि कोह-माण-माया-लोभे खवेइ ।

नवं च कम्मं न बधइ ।

तप्पच्चइयं च णं मिच्छत्त विसोहिं काऊण दंसणाराहए भवइ ।

दंसण-विसोहीए य णं विसुद्धाए अत्येगइए तेणेव भवग्गहणेणं
सिज्झइ ।

विसोहीए य णं विसुद्धाए तच्चं पुणो भवग्गहणं नाइक्कमइ ॥१॥

निव्वेएणं भंते ! जीवे किं जणयइ ?

निव्वेएणं दिव्व-माणस-तैरिच्छिएसु कामभोगसु

निव्वेयं हव्व मागच्छइ ।

सव्व विसएसु विरज्जइ ।

सव्व विसएसु विरज्जमाणे आरंभ-परिच्चाय करेइ ।

आरंभ-परिच्चायं करमाणे संसारमगं वोच्छिंदइ ।

सिद्धिमगं पडिच्चै य भवइ । ॥२॥

धम्मसद्धाए ण भंते ! जीवे किं जणयइ ?

धम्मसद्धाए णं साया-सोवखेसु रज्जमाणे विरज्जइ ।

आगार-धम्मं च णं चयइ ।

अणगारिए णं जीवे सारोर-माणसाण दुक्खाणं-

छेयण-भेयण संजोगाइणं वोच्छेयं करेइ ।

अच्चाबाहं च णं सुहं निव्वत्तेइ । ॥३॥

गुरु-साहम्मिय-मुस्सुणयाए णं भंते ! जीवे किं जणयइ ?

गुरु-साहम्मिय-मुस्सुणयाए विणय-पडिच्चिं जणयइ ।

विणय-पडिच्चै य णं जीवे अणच्चासायणसीले-

नेरइय-तिरिक्खजोणिय-मणुस्स-देवदुग्गइओ निरंभइ ।

वण्ण-संजलण-भत्ति-बहुमाणयाए मणुस्स-देवसुग्गइओ निबंघइ ।

सिद्धिं सोग्गइं च विसोहेइ ।

पसत्थाइं च णं विणयमूलाइं सव्वकज्जाइं साहेइ ।

अस्से य बह्वे जीवा विणइत्ता भवइ ॥४॥

आलोयणाए णं भत्ते ! जीवे किं जणयइ ?

आलोयणाए णं माया-नियाण-मिच्छादंसणसत्त्ताणं मोक्खमगा-
विग्घाणं अणंत-संसारबंधणाणं उद्धरणं करेइ ।

उज्जुभावं च जणयइ ।

उज्जुभाव-पडिवत्ते य णं जीवे अमाई-

इत्थीवेय-त्तपुंसग वेयं च न बंधइ ।

पुव्वबद्धं च ण निज्जरेइ ॥५॥

निदणयाए णं भत्ते ! जीवे किं जणयइ ।

निदणयाए णं पच्छाणुतांव जणयइ ।

पच्छाणुतावेणं विरज्जमाणे करण-गुणसेढी पडिवज्जइ ।

करणगुणसेढी पडिवत्ते य णं अणगारे-

मोहणिज्जं कम्मं उग्घायइ ॥६॥

गरहणयाए णं भत्ते ! जीवे किं जणयइ ?

गरहणयाए णं अपुरक्कारं जणयइ ।

अपुरक्काराए णं जीवे अप्पसत्थोहिं तो नियत्तेइ-

पसत्थे य पडिवज्जइ ।

पसत्थ-जोगपडिवत्ते य णं अणगारे अणंत-घाइ-पज्जवे खवेइ ॥७॥

सामाइए णं भत्ते ! जीवे किं जणयइ ?

सामाइए णं सावज्ज-जोग-विरई जणयइ ॥८॥

चउव्वीसत्थए णं भत्ते ! जीवे किं जणयइ ?

चउव्वीसत्थए णं दंसण-विसोहिं जणयइ ॥९॥

चंदणएणं भंते ! जीवे किं जणयइ ?

चंदणएणं नीयागोयं कम्मं खवेइ ।

उच्चागोयं कम्मं निवंधइ ।

सोहगं च णं अप्पडिहयं आणाफलं निव्वत्तेइ ।

दाहिणभावं च णं जणयइ ॥१०॥

पडिक्कमणेण भंते ? जीवे किं जणयइ ?

पडिक्कमणेणं वय-छिद्दाणि पिहेइ ।

पिहिय-वय-छिद्दे पुण जीवे निरुद्धासवे असवल-चरित्ते-

अद्दुसु पवयण-मायासु उवउत्ते अपुहत्ते सुप्पणिहिदिए-

विहरइ ॥११॥

काउस्सग्गेणं भंते ! जीवे किं जणयइ ?

काउस्सग्गेणं तीय-पडुप्पन्नं पायच्छित्तं विसोहेइ ।

विसुद्ध-पायच्छित्ते य जीवे निव्वय-हियए 'ओहरिय-भरुव-

भारवहे' पसत्थ-झाणोवगए सुहं सुहेणं विहरइ ॥१२॥

पच्चक्खाणेणं भंते ! जीवे किं जणयइ ?

पच्चक्खाणेणं आसवदाराइं निरुंभइ ।

पच्चक्खाणेणं इच्छानिरोइं जणयइ ।

इच्छानिरोहं गए य णं जीवे सव्वदव्वेसु विणीय-तण्हे

सीइभूए विहरइ ॥१३॥

थव-थुइ मंगलेणं भंते ! जीवे किं जणयइ ?

थव-थुइ मंगलेणं नाणं-दंसण-चरित्त-बोहिलाभं जणयइ ।

नाण-दंसण-चरित्त-बोहिलाभसंपन्ने य णं जीवे अंतकिरियं
कप्पविमाणोववत्तियं आराहणं आराहेइ ॥१४॥

काल-पडिलेहणयाए णं भत्ते ! जीवे किं जणयइ ?

काल-पडिलेहणयाए णं नाणावरणिज्जं कम्मं खवेइ ॥१५॥

पायच्छित्त करणेणं भत्ते ! जी वे किं जणयइ ?

पायच्छित्तकरणेणं पावकम्मविसोहि जणयइ,

निरइयारे यावि भवइ ।

सम्मं च णं पायच्छित्तं पडिवज्जमाणे मगं च मगफलं च

विसोहेइ, आयारं च आयारफलं च आराहेइ ॥१६॥

खमावणयाए ण भत्ते ! जीवे किं जणयइ ?

खमावणयाए णं या वि पल्हायणभावं जणयइ ।

पल्हायणभावमुवगए य सव्वपाणं-भूय-जीव-सत्तेसु

मेत्तिभावमुप्पाएइ ?

मेत्तीभावमुवगए या वि जीवे भावविसोहि काऊण

निब्भए भवइ ॥१७॥

सज्झाएणं भत्ते ! जीवे किं जणयइ ?

सज्झाएणं नाणावरणीज्जं कम्मं खवेइ ॥१८॥

वायणाए ण भत्ते ! जीवे किं जणयइ ?

वायणाए ण निज्जरं जणयइ ।

सुयस्स य (अणुसज्जणाए) अणासायणाए बट्टए ।

सुयस्स (अणुसज्जणाए) अणासायणाए वट्टमाणे तित्थधम्मं अवलंबइ
 तित्थधम्मं अवलंबमाणे महाविज्जरे
 महापज्जवसाणे भवइ ॥१९॥

पडि-पुच्छणयाए णं भंते ! जीवे किं जणयइ ?
 पडि-पुच्छणयाए ण सुत्त-त्थ-तट्ठभयाइं विसोहेइ ।
 कंखामोहणिज्जं कम्म वोच्छिदइ ॥२०॥

परियट्ठणयाए णं भंते ! जीवे किं जणयइ ?
 परियट्ठणयाए णं वंजणाइ जणयइ, वंजणलद्धिं च उप्पाएइ ॥२१॥

अणुप्पेहाए णं भंते ! जीवे किं जणयइ ?
 अणुप्पेहाए णं आउय-वज्जाओ सत्त-कम्मपगडीओ-
 धणिय-बंधणबद्धाओ सिढिल-बंधणबद्धाओ पकरेइ ।
 दीहकालठिइयाओ हस्सकालठिइयाओ पकरेइ ।
 तित्वाणुभावाओ मदाणुभावाओ पकरेइ ।
 बहुप्पएसग्गाओ अप्प-पएसग्गाओ पकरेइ ।
 आउय च णं कम्म सिय बंधइ, सिय नो बंधइ ।
 असाया-वेयणिज्जं च ण कम्मं नो भुज्जो भुज्जो उवचिणाइ ।
 अणाइयं च णं अणवदग्गं दीहमद्धं चाउरंत-संसारकंतरं-
 खिप्पामेव वीइवयइ ॥२२॥

धम्मकहाए णं भंते ! जीवे किं जणयइ ?
 धम्मकहाए णं कम्म-निज्जरं जणयइ ।

धम्मकहाए णं पवयणं पभावेइ ।

पवयण-पभावेणं जीवे आगमेसस्स भद्दत्ताए कम्मं निबंघइ ॥२३॥

सुयस्स आराहणयाए णं भंतु ! जीवे किं जणयइ ?

सुयस्स आराहणयाए णं अन्नाणं खवेइ

न य संकिलिस्सइ ॥२४॥

एगग-मण-संनिवेसणयाए णं भंते ! जीवे किं जणयइ ?

एगग-मण-संनिवेसणयाए णं चित्तनिरोहं करेइ ॥२५॥

संजमए णं भंते ! जीवे किं जणयइ ?

संजमए णं अण्हयत्तं जणयइ ॥२६॥

तवेणं भंते ! जीवे किं जणयइ ?

तवेणं वोदाणं जणयइ ॥२७॥

वोदाणेणं भंते ! जीवे किं जणयइ ?

वोदाणेणं अकिरियं जणयइ ।

अकिरियाइ भवित्ता तओ पच्छा सिज्झइ बुज्झइ मुच्चइ-

परिनिव्वायइ सत्त्वदुक्खाणमंतं करेइ ॥२८॥

सुह-साएणं भंते ! जीवे किं जणयइ ?

सुह-साएणं अणुस्सुयत्तं जणयइ ।

अणुस्सुयाए णं जीवे अणुकंपए अणुबभडे विगयसोगे-

चरित्त-मोहणिज्जं कम्मं खवेइ ॥२९॥

अप्पडिबद्धयाए णं भंते ! जीवे किं जणयइ ?

अप्पडिबद्धयाए णं जीवे निस्संगत्तं जणयइ ।

निस्संगत्तेणं जीवे एगगचित्ते दिया य रामो य--

असज्जमाणे अप्पडिबद्धे यावि विहरइ ३०॥

विवित्त-सयणासणयाए भंते ! जीवे किं जणयइ ?

विवित्त-सयणासणयाए जीवे चरित्तगुत्ति जणयइ ।

चरित्तगुत्ते य ण जीवे विवित्ताहारे दढचरित्ते एगंतरए
मोक्खभावपडिवत्ते अट्ठविह-कम्मगांठि निज्जरेइ ॥३१॥

विनियट्ठणयाए णं भते ! जीवे किं जणयइ ?

विनियट्ठणयाए णं जीवे पावकस्माणं अकरणयाए अब्भुट्ठेइ ।

पुच्चबद्धाण य निज्जरणयाए पावं नियत्तेइ ।

तओ पच्छा चाउरत-संसारकतारं वीइवयइ ॥३२॥

संभोग-पच्चक्खाणेणं भते ! जीवे किं जणयइ ?

संभोग-पच्चक्खाणेणं जीवे आलवणाइं खवेइ ।

निरालंबणस्स य आययट्ठिया योगा भवन्ति ।

सएणं लाभेणं संतुस्सइ,

परलाभं नो आसावेइ नो तक्केइ नो पीहेइ नो पत्थेइ

नो अभिलसइ ।

परलाभ अणस्साएमाणे अतक्केमाणे अपीहेमाणे अपत्थेमाणे

अणभिलसमाणे दुच्चं सुहसेज्जं उवसंपजित्ताणं विहरइ ॥३३॥

उवहि-पच्चक्खाणेणं भंते ! जीवे किं जणयइ ?

उवहि-पच्चक्खणेणं अप्पलिमंथं जणयइ ।

नेरुवहिए णं जीवे निक्कंखी उवहिमंतरेण य न
संकलिस्सइ ॥३४॥

आहार-पच्चक्खाणेणं भंते ! जीवे किं जणयइ ?
आहार-पच्चक्खाणेणं जीवे जीवियासंसप्पओगं वोच्छिदइ ।
जीवियासंसप्पओगं वोच्छिदित्ता जीवे आहारमंतरेण न
संकलिस्सइ ॥३५॥

कसाए-पच्चक्खाणे णं भंते ! जीवे किं जणयइ ?
कसाए-पच्चक्खाणे णं जीवे वीयरगभावं जणयइ ।
वीयरगभावपडिवन्ने य णं जीवे सम सुह-दुक्खे भवइ ॥३६॥
जोग-पच्चक्खाणेणं भंते ! जीवे किं जणयइ ?
जोग-पच्चक्खाणेणं जीवे अजोगत्तं जणयइ ।
अजोगी णं जीवे नवं कम्मं न बंधइ, पुव्वबद्धं निज्जरेइ ॥३७॥
सरीर-पच्चक्खाणेणं भंते ! जीवे किं जणयइ ?
सरीर-पच्चक्खाणेणं जीवे सिद्धाइसय-गुण-कित्तणं निव्वत्तेइ ।
सिद्धाइसय-गुण संपन्ने य णं जीवे लोगगमुवगए परमसुही
भवइ ॥३८॥

पच्चक्खाणेणं भंते ! जीवे किं जणयइ ?
सहाय-पच्चक्खाणेणं जीवे एगीभावं जणयइ ।
एगीभावभूए य णं जीवे एगगं भावेमाणे-
अप्पसद्दे अप्पझंझे अप्प-कलहे अप्प-कसाए अप्प-तुमंतुमे-
संजम-बहुले-संवर-बहुले समाहिए यावि भवइ ॥३९॥

भत्त-पच्चक्खाणेण भत्ते ! जीवे किं जणयइ ?

भत्त-पच्चक्खाणेणं जीवे अणेगाइ भवसयाइं निरुभइ ॥४०॥

सब्भाव-पच्चक्खाणेण भत्ते ! जीवे किं जणयइ ?

सब्भाव-पच्चक्खाणेणं जीवे अनियट्ठिं जणयइ ।

अनियट्ठिपडिवत्ते य अणगारे चत्तारि केवलिकम्मसे खवेइ ।

तंजहा-वेयणिज्जं आउयं नामं गोयं-

तओ पच्छा सिज्झइ वुज्झइ मुच्चइ परिनिव्वायइ

सव्व दुक्खाणमंतं करेइ ॥४१॥

पडिरुवयाए णं भत्ते ! जीवे किं जणयइ ?

पडिरुवयाए ण जीवे लाघवं जणयइ ।

लघुभूए ण जीवे अप्पमत्ते पागडालिगे पसत्थल्लिगे-

विमुद्धसमत्ते सत्तसमिइसमत्ते सव्वपाण-भूय-जीव-सत्तेसु

विससणिज्जरूवे अप्पडिलेहे जिइंदिए

विउल-तव-समइ-समन्नागए यावि भवइ ॥४२॥

वेयावच्चेण भत्ते ! जीवे किं जणयइ ?

वेयावच्चेणं जीवे तित्थयरनामगोत्तं कम्मं निवधइ ॥४३॥

सव्वगुणसपन्नयाए णं भत्ते ! जीवे किं जणयइ ?

सव्वगुणसपन्नयाए ण जीवे अपुणरावत्तिं जणयइ ।

अपुणरावत्तिं पत्तए य ण जीवे

सारीर-माणसाणं दुक्खाण नो भागी भवइ ॥४४॥

वीयरगयाए णं भते ! जीवे किं जणयइ ?

वीयरगयाए ण जीवे नेहाणुबंधणाणि तण्हाणुबंधणाणि य
वोच्छिदइ,

मणुन्नामणुन्नेसु सद्द-फरिस-रुव-रस-गघेसु चेव विरज्जइ ॥४५॥

खंतीए णं भते ! जीवे किं जणयइ ?

खंतीए ण जीवे परीसहे जिणइ ॥४६॥

मुत्तीए ण भते ! जीवे किं जणयइ ?

मुत्तीए णं जीवे अकिचणं जणयइ ।

अकिचणे य जीवे अत्यलोलानं पुरिसाण अपत्थणिज्जो-
भवइ ॥४७॥

अज्जवयाए णं भते ! जीवे किं जणयइ ?

अज्जवयाए ण जीवे काउज्जुययं भावुज्जुययं भासुज्जुयय-
अविसंवायण जणयइ ।

अविसवायणसपन्नायाएण जीवे धम्मस्स आराहए भवइ ॥४८॥

मद्दवयाए ण भते ! जीवे किं जेणयइ ?

मद्दवयाए ण जीवे अणुस्सियत्तं जणयइ ।

अणुस्सियत्तेण जीवे मिउमद्दवसंपन्ने अट्ठ मयट्ठाणाइ निट्ठावेइ ॥४९॥

भावसच्चेण भते ! जीवे किं जणयइ ?

भावसच्चेण जीवे भावे विसोहि जणयइ ।

भावविसोहिए वट्ठमाणे जीवे अरहत्त-पन्नत्तस्स-धम्मस्स-

आराहणयाए अब्भुट्ठेइ ।

अरहंत-पन्नत्तस्स-धम्मस्स आराहणयाए अब्भुट्ठिता-
परलोग धम्मस्स आराहए भवइ ॥५०॥

करणसच्चे णं भत्ते ! जीवे किं जणयइ ?

करणसच्चे णं जीवे करणसत्तिं जणयइ ।

करणसच्चे णं चट्टमाणे जीवे जहावाई तहाकारी यावि
भवइ ॥५१॥

जोगसच्चेणं भत्ते ! जीवे किं जणयइ ?

जोगसच्चेण जीवे जोग विसोहेइ ॥५२॥

मणगुत्तयाए ण भत्ते ! जीवे किं जणयइ ?

मणगुत्तयाण ण जीवे एगग्ग जणयइ ।

एगग्गचित्ते णं जीवे मणगुत्ते सजमाराहए भवई ॥५३॥

वयगुत्तयाए ण भत्ते ! जीवे किं जणयइ ?

वयगुत्तयाए ण जीवे निव्वियारत्तं जणयइ ।

निव्वियारेण जीवे चइगुत्ते अज्झप्पजोगसाहणजुत्ते यावि
भवई ॥५४॥

कायगुत्तयाए ण भत्ते ! जीवे किं जणयइ ?

कायगुत्तयाए ण जीवे संवर जणयइ ।

सवरेण कायगुत्ते पुणो पावासवनिरोह करेइ ॥५५॥

मण-समाहारणयाए णं भंते ! जीवे किं जणयइ ?
 मण-समाहारणयाए णं जीवे एगगं जणयइ ।
 एगगं जणइत्ता नाणपज्जवे जणयइ ।
 नाणपज्जवे जणइत्ता सम्मत्तं विसोहेइ मिच्छत्तं च
 निज्जरेइ ॥५६॥

वय-समाहारणयाए णं भंते ! जीवे किं जणयइ ?
 वय-समाहारणयाए णं जीवे वय-साहारण-दंसणपज्जवे विसोहेइ ।
 वय-साहारण-दंसणपज्जवे विसोहिता सुलहबोहियत्तं निव्वत्तेइ
 दुल्लहबोहियत्तं निज्जरेइ ॥५७॥

काय-समाहारणयाए णं भंते ! जीवे किं जणयइ ?
 काय-समाहारणयाए णं जीवे चरित्तपज्जवे विसोहेइ ।
 चरित्तपज्जवे विसोहिता अहक्खायचरित्तं विसोहेइ ।
 अहक्खायचरित्तं विसोहिता चत्तारि केवलिकम्मंसे खवेइ ।
 तओ पच्छा सिज्झइ बुज्झइ मुच्चइ परिनिव्वायइ-
 सव्वदुक्खाणमंतं करेइ ॥५८॥

नाण-सपन्नयाए णं भंते ! जीवे किं जणयइ ?
 नाण-सपन्नयाए णं जीवे सव्वभावाहिगमं जणयइ ।
 नाण-संपन्ने जीवे चाउरते संसारकंतारे न विणस्सइ ।
 गाहा-जहा सुई ससुत्ता, पडिया न विणस्सइ ।
 तहा जीवे ससुत्ते, संसारे न विणस्सइ ॥५९॥

नाण-विणय-तव-चरित्तजोगे संपाउणइ ।

ससमय-परसमयविसारए य असघायणिज्जे भवइ ॥५९॥

दंसण-संपन्नयाए णं भंते ! जीवे किं जणयइ ?

दंसण-संपन्नयाए णं जीवे भवमिच्छत्तछेयणं करेइ,

परं न विज्झायइ—

परं अविज्झाएमाणे अणुत्तरेणं नाण-दसणेण—

अप्पाणं संजोएमाणे सम्मं भावेमाणे विहरइ ॥६०॥

चरित्त-संपन्नयाए णं भंते ! जीवे किं जणयइ ?

चरित्त-सपन्नयाए णं जीवे सेलेसिभाव जणयइ ।

सेलेसिपडिवन्ने य अणगारे चत्तारि केवलिकम्मंसे खवइ ।

तओ पच्छा सिज्झइ बुज्झइ मुच्चइ परिनिव्वायइ—

सव्वदुक्खाणमंतं करेइ ॥६१॥

सोइदिय-निग्गहेण भंते ! जीवे किं जणयइ ?

सोइंदिय-निग्गहेणं जीवे मणुत्तामणुत्तेसु सहेसु—

राग-दोसनिग्गहं जणयइ ।

तप्पच्चइयं च ण कम्मं न वंधइ पुव्ववद्धं च निज्जरेइ ॥६२॥

चक्खिदिय-निग्गहेणं भंते ! जीवे किं जणयइ ?

चक्खिदिय-निग्गहेणं जीवे मणुन्तामणुत्तेसु रुवेसु—

राग-दोसनिग्गहं जणयइ ।

तप्पच्चइयं च णं कम्मं न वंधइ पुव्ववद्धं च निज्जरेइ ॥६३॥

घाणिंदिय-निग्गहेणं भंते ! जीवे किं जणयइ ?

घाणिंदिय-निग्गहेणं जीवे मणुन्नामणुन्नेसु गंधेसु-

राग-दोस-निग्गहं जणयइ ।

तप्पच्चइयं च णं कम्मं न बंधइ पुच्चबद्धं च निज्जरेइ ॥६४॥

जिब्बिंदिय-निग्गहेणं भंते ! जीवे किं जणयइ ?

जिब्बिंदिय-निग्गहेणं जीवे मणुन्नामणुन्नेसु रसेसु-

राग-दोस-निग्गहं जणयइ ।

तप्पच्चइयं च णं कम्मं न बंधइ पुच्चबद्धं च निज्जरेइ ॥६५॥

फांसिंदिय-निग्गहेणं भंते ! जीवे किं जणयइ ?

फांसिंदिय-निग्गहेणं जीवे मणुन्नामणुन्नेसु फासेसु-

राग-दोस-निग्गहं जणयइ ।

तप्पच्चइयं च णं कम्मं न बंधइ पुच्चबद्धं च निज्जरेइ ॥६६॥

कोह-विजएणं भंते ! जीवे किं जणयइ ?

कोह-विजएणं जीवे खंति जणयइ ।

कोह-वेयणिज्जं कम्मं न बंधइ, पुच्चबद्धं च निज्जरेइ ॥६७॥

माण-विजएणं भंते ! जीवे किं जणयइ ?

माण-विजएणं जीवे मद्दवं जणयइ ।

माण-वेयणिज्जं कम्मं न बंधइ, पुच्चबद्धं च निज्जरेइ ॥६८॥

माया-विजएणं भंते जीवे किं जणयइ ?

माया-विजएणं जीवे अज्जवं जणयइ ।

माया-वेयणिज्जं कम्मं न बंधइ, पुच्चबद्धं च निज्जरेइ ॥६९॥

लोभ-विजएणं भते । जीवे किं जणयइ ?
 लोभ-विजएणं जीवे संतोसं जणयइ ।
 लोभ-वेयणिज्जं कम्म न बंधइ, पुब्बवद्धं च निज्जरेइ ॥७०॥
 पिज्ज-दोस-मिच्छादंसण-विजएण भते ! जीवे किं जणयइ ?
 पिज्ज-दोस-मिच्छादंसण-विजएणं जीवे-
 नाण-दंसण-चरित्ताराहणयाए अब्भुट्ठेइ ।
 अट्ठविहस्स कम्मस्स कम्मगंठि-विमोयणयाए-
 तप्पढमयाए जहाणुपुब्बीए-
 अट्ठावीसइविहं मोहणिज्जं कम्मं उग्घाएइ ।
 पंचविहं णाणावरणिज्जं कम्मं उग्घाएइ ।
 नवविहं दसणावरणिज्जं कम्म उग्घाएइ ।
 पचविहं अंतराइय कम्म उग्घाएइ ।
 एए तिन्निवि कम्मंसे जुगव खवेइ-
 तओ पच्छा अणुत्तरं कसिणं पडिपुण्णं-
 निरावरणं वित्तिमिरं विसुद्धं-
 लोगालोगप्पभासणं केवलवरनाण-दंसण समुप्पाडेइ-
 जाव सजोगी भवइ, ताव इरियावहियं कम्मं निबंधइ-
 सुहफरिसं दुसमयठिइयं-
 तं पढम-समएवद्ध विइयं-ममएवेइयं तइयं-समए निजिण्णं-
 तं बद्धं पुट्ठं उदीरियं वेइयं निजिण्णं-
 सेयाले य अकम्म यावि भवइ ॥७१॥

अहाउयं पालयित्ता--

अंतोमूहुत्तद्धावसेसाए जोग-निरोहं करेमाणे

सुहुमकिरियं अप्पडिवाइं सुक्कज्झाणं ज्ञायमाणे

तप्पढमयाए--

मणजोगं निरुंभइ, वयजोगं निरुंभइ, कायजोगं निरुंभइ,

आण-पाणनिरोहं करेइ--

इसि पंच-हस्सक्खरुच्चारणद्धाए य ण अणगारे--

समुच्छिन्न किरियं अनियट्ठि सुक्कज्झाणं ज्ञायमाणे--

वेयणिज्जं आउयं नामं गोत्तं च

एए चत्तारि कम्मसे जुगवं खवेइ ॥७२॥

तओ ओरालिय-तेयकम्माइं

सच्चार्हि विप्पजहणार्हि विप्पजहिता

उज्जुसेट्ठिपत्ते अफुसमाणगइ

उद्धं एगसमएणं अविगहेणं तत्थ गता ।

सागारोवउत्ते सिज्झइ बुज्झइ मुच्चइ परिनिज्वायइ

सच्चदुक्खाणमंत करेइ ॥७३॥

एस खलु सम्मतपरक्कमस्स अज्झयणस्स अट्ठे--

समणेणं भगवया महावीरेणं--

आघविए परुविए दंसिए निदंसिए उवदंसिए ।

॥ त्ति वेमि ॥

अह तवमग्ग नामं तीसइमं अज्झयणं

जहा उ पावगं कम्मं, रागदोससमज्जियं ।
खवेइ तवसा भिक्खू, तमेगग्गमणो सुण ॥ १ ॥
पाणिवह^१ मुसावाया,^२ अदत्त^३ मेहुण^४ परिग्गहा^५ विरओ ।
राइभोयणविरओ,^६ जीवो भवइ अणासवो ॥ २ ॥
पंचसमिओ तिगुत्तो, अकसाओ जिइंदिओ ।
अगारवो य निस्सल्लो, जीवो होइ अणासवो ॥ ३ ॥
एएंसि तु विवच्चासे, रागदोससमज्जियं ।
खवेइ उ जहा भिक्खू, तमेगग्गमणे सुण ॥ ४ ॥
'जहा महातलायस्स, सनिरुद्धे जलागमे ।
उस्सिच्चणाए तवणाए, कमेणं सोसणा भवे' ॥ ५ ॥
एवं तु संजयस्सावि, पावकम्मनिरासवे ।
भव-कोडी-संचियं कम्मं, तवसा निज्जरिज्जइ ॥ ६ ॥
सो तवो दुविहो वुत्तो, वहिरब्भंतरो तहा ।
वाहिरो छच्चिहो वुत्तो, एवम्भंतरो तवो ॥ ७ ॥
अणसण^१ मूणोयरिया,^२ भिक्खायरिया^३ य रसपरिच्चाओ^४ ।
कायकिलेसो^५ संलीणया,^६ य वज्झो तवो होइ ॥ ८ ॥
(१) इत्तरिया^१ मरणकाला^२ य, अणसणा दुविहा भवे ।
इत्तरिया सावकंखा, निरवकखा उ विइज्जिया ॥ ९ ॥

जो सो इत्तरियतवो, सो समासेण छव्विहो ।
 सेद्धितवो ^१पयरतवो, ^२घणो ^३य तह होइ वग्गो ^४य ॥१०॥
 तत्तो य वग्गवग्गो, ^५पंचमो छट्ठो पइणतवो ^६ ।
 मणइच्छियच्चित्तत्थो, नायव्वो होइ इत्तरियो ॥११॥
 जा सा अणसणा मरणे, दुविहा सा विद्याहिया ।
 सविद्यार ^१मविद्यारा, ^२कायच्चिट्ठं पई भवे ॥१२॥
 अहवा सपरिकम्मा, ^१अपरिकम्मा ^२य आहिया ।
 नीहारि ^१मनीहारी, ^२आहारच्छेओ दोसु वि ॥१३॥
 (२) ओमोयरण पचहा, समासेण विद्याहियं ।
 दब्बओ ^१खेत ^२कालेण, ^३भावेण ^४पज्जवेहि ^५य ॥१४॥
 जो जस्स उ आहारो, तत्तो ओम तु करे ।
 जहन्नेणैगसित्थाई, एवं दब्बेण ऊ भवे ॥१५॥
 गामे नगरे तह, रायहाणि निगमे य आगरे पल्ली ।
 खेडे-कव्वड-दोणमुह, पट्टण-मडंब-संवाहे ॥१६॥
 आसमपए विहारे, सन्निवेसे समाय-घोसे य ।
 थलि-सेणा-खंधारे. सत्थे संवट्ट-कोट्टे य ॥१७॥
 वाडेसु य रत्थासु य, घरेसु वा एयमित्थियं खेतं ।
 कप्पइ उ एवमाई, एवं खेत्तेण ऊ भवे ॥१८॥
 पेडा ^१य अट्टपेडा, ^२गोमुत्ति ^३पयगवीहिया ^४चेव ।
 संवुक्कावट्टा ^५ययगंतु, पच्चागया ^६छट्टा ॥१९॥

दिवसस्स पोरुसीणं, चउण्हंपि उ जत्तिओ भवे कालो ।

एवं चरमाणो खलु, कालोमाणं मुण्येय्व ॥२०॥

अहवा तइयाए पोरिसीए, ऊणाइ घासमेसंतो ।

चउभागूणाए वा, एव कालेण ऊ भवे ॥२१॥

इत्थी वा पुरिसो वा, अलंकिओ वा नलकिओ वावि ।

अन्नयरवयत्थो वा, अन्नयरेण व वत्थेणं ॥२२॥

अन्नेण विसेसेणं, वण्णेणं भावमणुमुयते उ ।

एवं चरमाणो खलु, भावोमोण मुण्येय्व ॥२३॥

दन्वे खेत्ते काले, भावंमि य आहिया उ जे भावा ।

एएहि ओमचरओ, पज्जवचरओ भवे भिक्खू ॥२४॥

(३) अट्ठविहगोयरगं तु, तहा सत्तेव एसणा ।

अभिग्गहा य जे अन्ने, भिक्खायरियमाहिया ॥२५॥

(४) खीर-दहि-सप्पिमाई, पणीयं पाणभोयणं ।

परिवज्जण रसाण तु, भणियं रसविवज्जणं ॥२६॥

(५) ठाणा दीरासणाईया, जीवस्स उ सुहावहा ।

उग्गा जहा धरिज्जति, कायकिलेसं तमाहियं ॥२७॥

(६) एगतमणावाए, इत्थी-पसु-विवज्जिए ।

सयणासणसेवणया, वि वि त्तं स य णा स णं ॥२८॥

एसो बाहिरंगतवो, समासेण वियाहिओ ।

अब्भितरं तवं एत्तो, वुच्छामि अणुपुव्वसो ॥२९॥

पायच्छित्तं^१ विणओ,^२ वेयावच्चे^३ तहेव सज्झाओ^४ ।
 ज्ञाणं^५ च विउसग्गो,^६ एसो अब्भितरो तवो ॥३०॥

(१) आलोयणारिहाईग्रं, पायच्छित्त तु दसविहं ।
 जे भिक्खू वहई सम्मं, पायच्छित्त तमाहियं ॥३१॥

(२) अब्भुट्ठाणं अंजलिकरणं, तहेवासणदायणं ।
 गुरुभत्ति-भाव-सुस्सूसा, विणओ एस वियाहिओ ॥३२॥

(३) आयरियमाईए, वेयावच्चंमि दसविहे ।
 आसेवणं जहायामं, वेयावच्चं तमाहियं ॥३३॥

(४) वायणा^१ पुच्छणा^२ चेव, तहेव परियट्ठणा^३ ।
 अणुप्पेहा^४ धम्मकहा,^५ सज्झाओ पंचहा भवे ॥३४॥

(५) अट्ठ^१ रुद्धाणि^२ वज्जित्ता, ज्ञाएज्जा सुसमाहिए ।
 धम्म^३ सुक्काइं^४ ज्ञाणाइं, ज्ञाणं तं तु बुहा वए ॥३५॥

(६) सयणासणठाणे वा, जे उ भिक्खू न वावरे ।
 कायस्स विउसग्गो, छट्ठो सो परिकित्तिओ ॥३६॥

एवं तवं तु दुविहं, जे सम्मं आयरे मुणी ।
 सो खिप्पं सच्चसंसारा, विप्पमुच्चइ पंडिओ ॥३७॥

॥ त्ति वेमि ॥

॥ चरणविहि-नामं एगतीसइमं अज्झयणं

चरणविहि पवक्खामि, जीवस्स उ सुहावहं ।

जं चरित्ता वहू जीवा, तिण्णा ससारसागरं ॥ १ ॥

एगओ विरइ कुज्जा, एगओ य पवत्तण ।

असंजमे निर्यात्ति च, सजमे य पवत्तण ॥ २ ॥

राग-दोसे य दो पावे, पावकम्मपवत्तणे ।

जे भिक्खू रभई निच्च, से न अच्छइ मंडले ॥ ३ ॥

दडाण गारवाणं च, सल्लाण च तिय तियं ।

जे भिक्खू चयइ निच्च, से न अच्छइ मंडले ॥ ४ ॥

दिन्वे य जे उवसगे, तहा तेरिच्छ-माणसे ।

जे भिक्खू सहई निच्च, से न अच्छइ मंडले ॥ ५ ॥

विगहा-कसाय-सन्नाण, ज्ञाणाण च दुयं तहा ।

जे भिक्खू वज्जई निच्चं, से न अच्छइ मंडले ॥ ६ ॥

वएसु इदियत्थेसु, समिईसु किरियासु य ।

जे भिक्खू जयई निच्च, से न अच्छइ मंडले ॥ ७ ॥

लेसासु छसु काएसु, छक्के आहारकारणे ।

जे भिक्खू जयई निच्चं, से न अच्छइ मंडले ॥ ८ ॥

पिडोग्गहपडिमासु, भयट्ठाणेसु सत्तसु ।

जे भिक्खू जयई निच्च, से न अच्छइ मंडले ॥ ९ ॥

मदेसु वभगुत्तीसु, भिक्खुधम्मम्मि दसविहे ।
जे भिक्खू जयई निच्चं, से न अच्छइ मंडले ॥१०॥

उवासगाण पडिमासु, भिक्खूण पडिमासु य ।
जे भिक्खू जयई निच्चं, से न अच्छइ मंडले ॥११॥

किरियासु भूयगामेसु, परमाहंमिएसु य ।
जे भिक्खू जयई निच्चं, से न अच्छइ मंडले ॥१२॥

गाहासोलसएहि, तहा असजमंमि य ।
जे भिक्खू जयई निच्चं, से न अच्छइ मंडले ॥१३॥

वंभंमि नायज्ज्ञयणेसु, ठाणेसु य ऽसमाहिए ।
जे भिक्खू जयई निच्चं, से न अच्छइ मंडले ॥१४॥

एगवीसाए सवले, वावीसाए परीसहे ।
जे भिक्खू जयई निच्चं, से न अच्छइ मंडले ॥१५॥

तेवीसाइ सूयगडे, रुवाहिएसु सुरेसु अ ।
जे भिक्खू जयई निच्चं से न अच्छइ मंडले ॥१६॥

पणवीसभावणासु, उद्देसेसु दसाइणं ।
जे भिक्खू जयई निच्चं, से न अच्छइ मंडले ॥१७॥

अणगारगुणेहि च, पगप्पंमि तहेव य ।
जे भिक्खू जयई निच्चं, से न अच्छइ मंडले ॥१८॥

पावसुयपसंगेसु, मोहठाणेसु चेव य ।
जे भिक्खू जयई निच्चं, से न अच्छइ मंडले ॥१९॥

सिद्धाइगुणजोगेसु, तेत्तीसासायणासु य ।
 जे भिक्खू जयई निच्चं, से न अच्छइ मंडल ॥२०॥
 इइ एएसु ठाणेसु, जे भिक्खू जयई सया ।
 खिप्प सो सच्चससारा, विप्पमुच्चइ पडिओ ॥२१॥
 ॥ त्ति वेमि ॥

अह पमायट्ठाण-नामं बत्तीसइमं अज्ज्ञयणं

अ च्चं त का ल स्स समूलगस्स,
 सच्चस्स दुक्खस्स उ जो पमोक्खो ।
 तं भासओ मे पडिपुण्णचित्ता,
 सुहेण एगतहिय हियत्थं ॥ १ ॥
 नाणस्स सच्चस्स पगासणाए,
 अन्नाणमोहस्स विवज्जणाए ।
 रागस्स दोसस्स य संखएण,
 एगंतसोक्ख समुवेइ मोक्ख ॥ २ ॥
 तस्सेस मग्गो गुरुविद्धसेवा,
 विवज्जणा वालजणस्स दूरा ।
 सज्झाय एगंतनिसेवणा य,
 सुत्तत्थसंचित्तणया धिई य ॥ ३ ॥

आहारमिच्छे मियमेसणिज्जं,
 सहायमिच्छे निउणत्थबुद्धि ।
 निकेयमिच्छेज्ज विवेगजोग्ग,
 समाहिकामे समणे तवस्वी ॥ ४ ॥

न वा लभेज्जा निउणं सहायं,
 गुणाहिय वा गुणओ समं वा ।
 एणो वि पावाइं विवज्जयंतो,
 विहरेज्ज कामेसु असज्जमाणो ॥ ५ ॥

जहा य अंडप्पभवा बलागा,
 अंड बलागप्पभवं जहा य ।
 एमेव मोहाययणं खु तण्हा,
 मोहं च तण्हाययणं वयंति ॥ ६ ॥

रागो य दोसो वि य कम्मबीयं,
 कम्मं च मोहप्पभव वयंति ।
 कम्मं च जाइमरणस्स मूलं,
 दुक्ख च जाइमरणं वयंति ॥ ७ ॥

दुक्ख हयं जस्स न होइ मोहो,
 मोहो हओ जस्स न होइ तण्हा ।
 तण्हा हया जस्स न होइ लोहो,
 लोहो हओ जस्स न किचणाइं ॥ ८ ॥

रागं च दोसं च तहेव मोहं,
उद्धत्तुकामेण स मू ल जा लं ।
जे जे उवाया पडिवज्जियव्वा,
ते कित्तइस्सामि अहाणुपुण्वि ॥ ९ ॥

रसा पगाम न निसेवियव्वा,
पायं रसा दित्तिकरा नराणं ।
दित्तं च कामा समभिद्ववन्ति,
“डुमं जहा साउफल व पक्खी” ॥ १० ॥

“जहा दवग्गी पउरिधणे वणे,
समारुओ नोवसमं उवेइ ।”
एविदियग्गी वि पगामभोइणो,
न बंभयारिस्स हियाय कस्सई ॥ ११ ॥

विवित्तसेज्जासण जतियाणं,
ओमासणाणं दमिइंदियाणं ।
न रागसत्तू धरिसेइ चित्तं,
“पराइओ वाहिरिवोसहेह” ॥ १२ ॥

“जहा विरालावसहस्स मूले,
न मूसगाणं वसही पसत्था ।”
एमेव इत्थीनिलयस्स मज्झे,
न बंभयारिस्स खमो निवासो ॥ १३ ॥

न रुक्-लावण-विलास-हासं,
 न जंपियं इगिय-पेहियं वा ।
 इत्थीण चित्तंसि निवेसइत्ता,
 दट्ठं ववस्से समणे तवस्सी ॥१४॥

अदंसणं चेव अपत्थणं च,
 अचित्तण चेव अकित्तण च ।
 इत्थीजणस्सारियज्झाणजुग्ग,
 हिय सया बंभवए रयाणं ॥१५॥

कामं तु देवीहि विभूसियाहि,
 न चाइया खोभइउ तिगुत्ता ।
 तहा वि एगंतहिय ति नच्चा,
 विवित्तवासो मुणिण पसत्थो ॥१६॥

मोक्खाभिर्काखस्स उ माणवस्स,
 संसारभीरुस्स ठियस्स धम्मे ।
 नेयारिस्स दुत्तरमत्थि लोए,
 जहित्थिओ वालमणोहराओ ॥१७॥

एए य सगे समइक्कमित्ता,
 सुदुत्तरा चेव भवन्ति सेसा ।
 जहा महासागरभुत्तरित्ता,
 नई भवे अवि गंगासमाणा ॥१८॥

कामाणुगिद्विप्पभवं खु दुक्खं,
 सव्वस्स लोगस्स सदेवगस्स ।
 ज काइयं माणसियं च किंचि,
 तस्सतगं गच्छइ वीयरगो ॥१९॥

‘जहा य किपागफला मणोरमा,
 रसेण वण्णेण य भुज्जमाणा ।
 त खुड्डुए जीविए पच्चमाणा,
 एओवमा कामगुणा विवागे ॥२०॥

जे इदियाण विसया मणुन्ना,
 न तेसु भावं निसिरे कयाइ ।
 न यामणुन्नेसु मणं पि कुज्जा,
 समाहिकामे समणे तवस्सी ॥२१॥

(१) चक्खुस्स रूवं गहण वयंति,
 तं रागहेउ तु मणुन्नमाहु ।
 त दोसहेउ अमणुन्नमाहु,
 समो य जो तेसु स वीयरगो ॥२२॥

रूवस्स चक्खुं गहणं वयंति,
 चक्खुस्स रूवं गहणं वयंति ।
 रागस्स हेउ समणुन्नमाहु,
 दोसस्स हेउं अमणुन्नमाहु ॥२३॥

रूवेसु जो गिद्धिमुवेइ तिरव,
अकालिय पावइ से विणास ।
रागाउरे से 'जह वा पयंगे',
आलोयलोले समुवेइ मच्चु ॥२४॥

जे यावि दोस समुवेइ तिच्चं,
तसि कखणे से उवेइ दुख ।
दुहंतदोसेण सएण जंतू,
न किचि रूव अवरज्ज्ञइ से ॥२५॥

ए ग त र त्ते रइरसि रूवे,
अतालिसे से कुणई पओस ।
दुखस्स सपीलमुवेइ बाले,
न लिप्पई तेण मुणी विरागो ॥२६॥

रूवाणुगासाणुगए य जीवे,
चराचरे हिंसइ ऽणेरूवे ।
चि त्ते हि ते परितावेइ बाले,
पीलेइ अत्तदठगुं किलिट्ठे ॥२७॥

रूवाणुवाएण पंरिगहमि,
उप्पायणे रक्खण-सन्निओगे ।
वए विओगे य कहं सुहं से,
सभोगकाले य अतित्तलाभे ॥२८॥

रूवे अतित्ते य परिग्गहमि,
 सत्तोवसत्तो न उवेइ तुट्ठि ।
 अत्तुट्ठिदोसेण दुही परस्स,
 लेभाविले आययई अदत्तं ॥२९॥

तण्हाभिभूयस्स अदत्तहारिणो,
 रूवे अतित्तस्स परिग्गहे य ।
 मायामुस वड्ढइ लोभदोसा,
 तत्थावि दुक्खा न विमुच्चई से ॥३०॥

मोसस्स पच्छा य पुरत्यओ य,
 पओगकाले य दुही दुरते ।
 एवं अदत्ताणि समाययंतो,
 रूवे अतित्तो दुहिओ अणिस्सो ॥३१॥

रूवाणुरत्तस्स नरस्स एव,
 कत्तो सुहं होज्ज कयाइ किच्चि ?
 तत्थोवभोगे वि किलेसदुक्खं,
 निव्वत्तई जस्स कएण दुक्खं ॥३२॥

एमेव रूवमि गओ पओत्त,
 उवेइ दु क्खो ह प र प रा ओ ।
 पट्ठुट्ठचित्तो य चिणाइ कम्म,
 ज से पुणो होइ दुहं विवागे ॥३३॥

સ્ત્વે વિરત્તો મળુઓ વિસોગો,
 એણ દુઃખો હ પ રં પ રેણ ।
 ન લિપ્પણ ભવમજ્જો વિ સંતો,
 જલેણ વા પોક્કરિણીપલાતં ॥૩૪॥

(૨) સોયસ્ત મહં ગહણ વયંતિ,
 તં રાગહેઝં તુ મળુન્નમાહ ।
 તં દોત્તહેઝં અમળુન્નમાહ,
 નમો ય જો તેનુ સ વીયરાગો ॥૩૫॥

સદ્ધસ્ત સોયં ગહણં વયંતિ,
 સોયસ્ત મહં ગહણં વયતિ ।
 રાગસ્ત હેઝં સમળુન્નમાહ,
 દોમસ્ત હેઝં અમળુન્નમાહ ॥૩૬॥

મદ્દેસુ જો ગિદ્ધિમુવેદિ તિલ્લં,
 અકાલિયં પાવહિ સે વિનાતં ।
 “રાગાઝરે હરિણમિગે વ મુદ્દે,
 સદ્દે અતિત્તે સમુવેદિ મચ્છુ” ॥૩૭॥

જે યાવિ દોતં નમુવેદિ તિલ્લં,
 તત્તિ સ્સણે સે ડ ડવેદિ દુઃખં ।
 દુહંતદોસેણ સણ જંતૂ,
 ન કિંચિ સદ્દં અવરજ્જઈ સે ॥૩૮॥

मोसस्स पच्छा य पुरत्थओ य,
 पओगकाले य दुही दुरंते ।
 एवं अदत्ताणि समाययंतो,
 सद्दे अत्तित्तो दुहिओ अणिस्सो ॥४४॥

सद्दाणुरत्तस्स नरस्स एवं,
 कत्तो सुहं होज्ज कयाइ किंचि ?
 तत्थोवभोगे वि किलेसदुक्ख,
 निव्वत्तई जस्स कएण दुक्खं ॥४५॥

एमेव सहमि गओ पओसं,
 उवेइ दुक्खो ह प रं प रा ओ ।
 पट्टुट्ठचित्तो य चिणाइ कम्मं,
 जं से पुणो होइ दुहं विवागे ॥४६॥

सद्दे विरत्तो मणुओ विसोगो,
 एएण दुक्खो ह प रं प रे ण ।
 न लिप्पए भवमज्जे वि संतो,
 जलेण वा पोक्खरिणीपलासं ॥४७॥

(३) घाणस्स गंधं गहणं वयंति,
 तं रागहेउं तु मणुन्नमाहु ।
 तं दोसहेउं अमणुन्नमाहु,
 समो य जो तेसु स दीयरगो ॥४८॥

गधस्स घाण गहण वयंति,
 घाणस्स गंध गहणं वयति ।
 रागस्स हेउ समणुन्नमाहु,
 दोसस्स हेउं अमणुन्नमाहु ॥४९॥

गंधेसु जो गिद्धिमुवेइ तिप्प,
 अकालिय पावइ से विणासं ।
 “रागाउरे ओसहगंधगिद्धे,
 सप्पे विलाओ विव निवखमंते” ॥५०॥

जे यावि दोस समुवेइ तिप्प,
 तंसि क्खणे से उ उवेइ दुक्ख ।
 दुद्धंतदोसेण सएण जत्त,
 न किच्चि गंधं अवरज्झई से ॥५१॥

ए गंत रत्ते रुइ रंसि गधे,
 अतालसे से कुणई पओस ।
 दुक्खस्स सपीलमुवेइ बाले,
 न लिप्पई तेण मुणी विरागो ॥५२॥

गधाणुगासाणुगए य जीवे,
 चराचरे हि स इ णे ग रु वे ।
 चित्तेहि ते परित
 पीलेइ अत्तट्ठगु, ३॥

ग धा णु वा ए ण परि ग हे ण,
उप्यायणे रक्खणसन्निओगे ।

वए विओगे य कंहं सुहं से ?
सभोगकाले य अतित्तलाभे ॥५४॥

गधे अतित्ते य परिगहमि,
सत्तोवसत्तो न उवेइ तुट्ठि ।

अतुट्ठिदोसेण दुही परस्स,
लोभाविले आययई अदत्त ॥५५॥

तण्हाभिभूयस्स अदत्तहारिणो,
गधे अतित्तस्स परिगहे य ।

मायामुसं वड्ढइ लोभदोसा,
तत्था वि दुक्खा न विमुच्चई से ॥५६॥

मोसस्स पच्छा य पुरत्थओ य,
पओगकाले य दुही दुरत्ते ।

एवं अदत्ताणि समाययंतो,
गंधे अतित्तो दुहिओ अणिस्सो ॥५७॥

गधाणुरत्तस्स नरस्स एव,
कत्तो सुहं होज्ज कयाइ किच्चि ?

तत्थोवभोगे वि किलेसदुक्ख,
निच्चत्तई जस्स कएण दुक्खं ॥५८॥

एमेव गंधमि गओ पओस,
 उवेइ दुखओ ह प रं प रा ओ ।
 पट्टुठचित्तो य चिणाइ कम्म,
 जं ने पुणो होइ दुह विवागे ॥५९॥

गंधे विरत्तो मणुओ विमोगो,
 एएण दुखओ ह प रं प रे ण ।
 न तिप्पई भवमज्जे वि सतो,
 जलेण वा पोखरिणीपलासं ॥६०॥

(४) जिह्माए रसं गहण वयति,
 त रागहेउं तु मणुन्नमाहु ।
 तं दोनहेउं अमणुन्नमाहु,
 समो य जो तेसु म वीयरगो ॥६१॥

रसस्स जिह्म गहण वयति,
 जिह्माए रसं गहण वयति ।
 रागस्स हेउ समणुन्नमाहु,
 दोसस्स हेउं अमणुन्नमाहु ॥६२॥

रसेसु जो गिद्धिमवेइ तिच्च,
 अकालिय पावइ से विणासं ।
 “रागाउरे वडिमविभिन्नकाए,
 मच्छे जहा आमिसभोगिद्धे” ॥६३॥

जे यावि दोसं समुवेइ तिज्ज्वं,
 तंसि क्खणे से उ उवेइ दुक्खं ।
 दुहतदोसेण सएण जंतू,
 न किंचि रसं अवरज्झई से ॥६४॥

ए गंत रत्ते रुइ रसि रसे,
 अतालसे से कुणई पओसं ।
 दुक्खस्स संपीलमुवेइ बाले,
 न लिप्पई तेण मुणी विरागो ॥६५॥

रसाणुगासाणुगए य जीवे,
 चराचरे हिंसइ ऽणेगरूवे ।
 चित्तेहि ते परितावेइ बाले,
 पीलेइ अत्तट्ठगुरू किलिट्ठे ॥६६॥

र सा णु वा ए ण प रि ग्ग हं मि,
 उप्पायणे रक्खणसन्निभोगे ।
 वए विभोगे य कहं सुहं से ?
 संभोगकाले य अतित्तलाभे ॥६७॥

रसे अतित्ते य परिग्गहंमि,
 सत्तोवसत्तो न उवेइ तुट्ठि ।
 अतुट्ठिदोसेण दुही परस्स,
 लोभाविले आययई अबत्तं ॥६८॥

तण्हाभिभूयस्स अदत्तहारिणो,
 रसे अतित्तस्स परिणहे य ।
 मायामुसं वड्ढइ लोभदोसा,
 तत्थावि दुक्खा न विमुच्चई से ॥६९॥

मोसस्स पच्छा य पुरत्थओ य,
 पओगकाले य दुही दुरते ।
 एवं अदत्ताणि समाययंतो,
 रसे अतित्तो दुहिओ अणिस्सो ॥७०॥

रसाणुरत्तस्स नरस्स एवं,
 कत्तो सुह होज्ज कयाइ किञ्चि ?
 तत्थोवभोगे वि किलेसदुक्खं,
 निप्पत्तई जस्स कएण दुक्खं ॥७१॥

एमेव रसम्मि गओ पओसं,
 उ वेइ दुक्खो ह परं प राओ ।
 पदुट्ठचित्तो य चिणाइ कम्मं,
 जं से पुणो होइ दुह विवागे ॥७२॥

रसे विरत्तो भणुओ विसोगो,
 एएण दुक्खो ह परं प रेण ।
 न लिप्पई भवमज्जे वि सत्तो,
 जलेण वा पोव रि ॥७३॥

(५) कायस्स फासं गहणं वयंति,
 तं रागहेउं तु मणुन्नमाहुं ।
 तं दोसहेउं अमणुन्नमाहु,
 समो य जो तेसु स वीयरानो ॥७४॥

फासस्स काय गहणं वयंति,
 कायस्स फासं गहणं वयंति ।
 रागस्स हेउ समणुन्नमाहु,
 दोसस्स हेउं अमणुन्नमाहु ॥७५॥

फासेसु जो गिद्धिमुवेइ तिव्वं,
 अकालियं पावइ से विणासं ।
 'रा गा उ रे सी य ज ला व स न्ने,
 गाहगणीए महीसे विवन्ने' ॥७६॥

जे यावि दोस समुवेइ तिव्वं,
 तसि क्खणे से उ उवेइ दुक्खं ।
 दुद्धंतदोसेण सएण जतू,
 न किंचि फासं अवरज्झई से ॥७७॥

एगंतरत्ते रुडरसि फासे,
 अतालित्ते से कुणई पओसं ।
 दुक्खस्स संपीलमुवेइ बाले,
 न लिप्पई तेण मूणी विरानो ॥७८॥

फासाणुगासाणुए य जीवे,
 चराचरे हिंसइ ऽ णेरूवे ।
 चित्तेहि ते परितावेइ बाले,
 पीलेइ अत्तट्ठगुरु किलिट्ठे ॥७९॥

फासाणुवाएण परिगहेण,
 उप्पायणे रक्खणसन्निओगे ।
 वा, विओगे य कह सुहं से ?
 सभोगकाले य अतित्तलाभे ॥८०॥

फासे अतित्ते य परिगहमि,
 सत्तोवसत्तो न उवेइ तुट्ठ ।
 अतुट्ठिदोसेण दुही परस्स,
 लोभाविले आययई अदत्तं ॥८१॥

तण्हाभिभूयस्स अदत्तहारिणो,
 फासे अतित्तस्स परिगहे य ।
 मायामुसं वड्ढइ लोभदोसा,
 तत्था वि दुक्खा न विमुच्चई से ॥८२॥

मोसस्स पच्छा य पुरत्थओ य,
 पओगकाले य दुही दुरत्ते ।
 एवं अदत्ताणि समाययंतो,
 फासे अतित्तो दुहिओ अणिस्सो ॥८३॥

फासाणुरत्तस्स नरस्स एव,
 कत्तो सुहं होज्ज कयाड किचि ?
 तत्थोवभोगे वि किलेसदुक्खं,
 निव्वत्तई जस्स कएण दुक्ख ॥८४॥

एमेव फासमि गओ पओसं,
 उवेइ दुक्खोहपरंपराओ ।
 पट्टुच्चित्तो य विणाइ कम्म,
 जं से पुणो होइ दुहं विवागे ॥८५॥

फासे विरत्तो मणुओ विसोगो,
 एएण दुक्खोहपरंपरेण ।
 न लिप्पई भवमज्जे वि संतो,
 जलेण वा पोक्खरिणीपलास ॥८६॥

(६) मणस्स भाव गहणं वयंति,
 त रागहेउं तु मणुन्नमाहु ।
 त दोसहेउं अमणुन्नमाहु,
 समो य जो तेसु स वीयरगो ॥८७॥

भावस्स मणं गहण वयंति,
 मणस्स भावं गहण वयंति ।
 रागस्म हेउं समणुन्नमाहु,
 दोसस्स हेउं अमणुन्नमाहु ॥८८॥

भावेसु जो गिद्धिमुवेइ तिच्च,

अकालिय पावइ से विणासं ।

“रागाउरे कामगुणेसु गिद्धे,

करेणुमग्गावहिए गजे वा” ॥८९॥

जे यावि दोस समुवेइ तिच्च,

तसि क्खणे से उ उवेइ दुक्ख ।

दुहंतदोसेण सएण जंतू,

न किचि भाव अवरज्झई से ॥९०॥

एगतरत्ते रुइरसि भावे,

अत्तालिसे से कुणई पओस ।

दुक्खस्स संपीलमुवेइ वाले,

न लिप्पई तेण मुणी विरागो ॥९१॥

भावाणुगासाणुगए य जीवे,

चराचरे हिंसइ ऽ णेगरूवे ।

चित्तेहि ते परितावेइ वाले,

पीलेइ अत्तट्ठगुरु किलिट्ठे ॥९२॥

भावाणुवाएण परिगहेण,

उप्पायणे रक्खणसन्निओगे ।

वए विओगे य कहं सुहं से ?

सन्नोगकाले य अतिसत्ताभे ॥९३॥

भावे अतित्ते य परिग्गहमि,
 सत्तोवसत्तो न उवेइ तुट्ठि ।
 अतुट्ठिदोसेण दुही परस्स,
 लोभाविले आययई अदत्त ॥९४॥

तण्हाभिभूयस्स अदत्तहारिणो,
 भावे अतित्तरस परिग्गहे य ।
 मायामुस वड्ढड लोभदोसा,
 तत्थावि दुवखा न विमुच्चई से ॥९५॥

सोसस्स पच्छा य पुरत्थओ य,
 पओगकाले य दुही दुरत्ते ।
 एव अदत्ताणि समाययत्तो,
 भावे अतित्तो दुहिओ अणिस्सो ॥९६॥

भावाणुरत्तस्स नरस्स एव,
 कत्तो सुह होज्ज कयाइ किच्चि ?
 तत्थोवभोगे वि किलेसदुक्ख,
 निव्वत्तई जस्स कएण दुक्ख ॥९७॥

एमेव भावमि गओ पओस,
 उवेइ दुक्खोहपरपराओ ।
 पटुट्ठचित्तो य च्चिणाइ कम्म,
 ज से पुणो होड दुह विवागे ॥९८॥

भावे विरत्तो मणुओ विसोगो,
 एएण दुक्खोहपरपरेण ।
 न लिप्पई भवमज्झे वि सत्तो,
 जलेण वा पोक्खरिणीपलासं ॥९९॥

एविदियत्था य मणरस अत्था,
 दुक्खस्स हेउ मणुयस्स रागिणो ।
 ते चेव थोवं पि कयाड्ढ दुक्ख,
 न वीयरगस्स करेत्ति किञ्चि ॥१००॥

न कामभोगा समयं उव्वेत्ति,
 न यावि भोगा विगइं उव्वेत्ति ।
 जे तप्पओसी य परिग्गही य,
 सो तेसु भोहा विगइ उव्वेइ ॥१०१॥

कोह च माण च तहेव माय,
 लोह दुगुच्छ अरइ रइं च ।
 हास भय सोगपुमित्थिवेयं,
 नपुसवेय विविहे य भावे ॥१०२॥

आवज्जई एवमणेगह्वे,
 एवविहे कामगुणेषु सन्नो ।
 अन्ने य एयप्पभवे विसेसे,
 कारुणदीणे हिरिमे वइस्से ॥१०३॥

कप्पं न इच्छिज्ज सहायलिच्छू,
 पच्छाणुतावे न तवप्पभाव ।
 एवं वियारे अमियप्पयारे,
 आवज्जइ इंदियचोरवस्से ॥१०४॥

तओ से जायति पओयणाइ,
 निमज्जिउं मोहमहणवंसि ।
 सुहेसिणो दुक्खविणोयणद्धा,
 तप्पच्चय उज्जमए य रागी ॥१०५॥

विरज्जमाणस्स य इदियत्था,
 सद्दाइया तावइयप्पगारा ।
 न तस्स सज्जे वि मणुन्नयं वा,
 निव्वत्तयंती अमणुन्नयं वा ॥१०६॥

एवं ससंकप्प-विकप्पणासु,
 सजायई समयमुवट्ठियस्स ।
 अत्थे य संकप्पयओ तओ से,
 पहीयए कामगुणेषु तण्हा ॥१०७॥

स वीयरगो कयसज्जकिच्चो,
 खवेइ नाणावरणं खणेणं ।
 तहेव ज दंसणमावरेइ,
 ज चंताराय पकरेइ कम्मं ॥१०८॥

सच्चं तओ जाणइ पासए य,
अमोहणे होइ निरंतराए ।

अणासवे ज्ञाण-समाहिजुत्ते,
आउखए मोक्खमुवेइ सुद्धे ॥१०९॥

सो तस्स सच्चस्स दुहस्स मुक्को,
जं वाहई सययं जंतुमेयं ।
दीहामयं विप्पमुक्को पसत्थो,
तो होइ अच्चंतसुही कयत्थो ॥११०॥

अणाइकालप्पभवस्स एसो,
सच्चस्स दुक्खस्स पमोक्खमग्गो ।
वियाहि यो जं समुविच्चसत्ता,
कमेण अच्चंतसुही भवति ॥१११॥
॥ त्ति वेमि ॥

अह कम्मपयडी-नामं तेत्तीसइमं अज्झयण

अट्ट-कम्माइ वोच्छामि, आणुपुण्व जहक्कमं ।
जेह बद्धो अयं जीवो, ससारे परियट्ठई ॥१॥

मूलप्रकृतयः—

नाणस्सावरणिज्ज^१, दंसणावरणं^२ तथा ।
वेयणिज्ज^३ तथा मोहं^४, आउकम्मं^५ तहेव य ॥२॥
नामकम्मं^६ च गोय^७ च, अंतराय^८ तहेव य ।
एवमेयाइं कम्माइ अट्टेव उ समासओ ॥३॥

उत्तरप्रकृतयः—

(१) नाणावरणं पंचविहं, सुयं^१ आभिणिबोहियं^२ ।
ओहिनाणं^३ च तद्वयं, मणनाणं^४ च केवलं^५ ॥४॥
(२) निदा^१ तहेव पयला^२ निदानिदा^३ पयलपयला^४ य ।
तत्तो यथीणगिद्धी^५ उ, पंचमा होइ नायप्पा ॥५॥
चक्खु^१ मच्चक्खू^२ ओहिस्स^३, दंसणे केवले^४ य आवरणे ।
एव तु नवविगप्पं, नायव्वं दंसणावरणं ॥६॥
(३) वेयणीयंपि य दुविहं, साय^१मसायं^२ च आहियं ।
सायस्स उ बहू भेया, एमेव असायस्स वि ॥७॥

- (४) मोहणिज्जपि दुविहं, दंसणे^१ चरणे^२ तथा ।
 दसणं तिविहं वुत्तं, चरणे दुविहं भवे ॥८॥
 सम्मत्तं^१ चेव मिच्छत्तं^२, सम्मामिच्छत्तमेव^३ य ।
 एयाओ तिल्लि पयडीओ, मोहणिज्जस्स दंसणे ॥९॥
 चरित्तमोहणं कम्म, दुविह तु वियाहियं ।
 कसायमोहणिज्जं^१ तु, नोकसाय^२ तहेव य ॥१०॥
 सोलसविहभेएणं, कम्मं तु कसायजं ।
 सत्तविहं नवविहं वा, कम्म च नोकसायजं ॥११॥
 (५) नेरइय^१तिरिक्खाउ^२ मणुस्साउ^३ तहेव य ।
 देवाउय^४ चउत्थं तु, आउकम्मं चउव्विहं ॥१२॥
 (६) नामकम्म तु दुविहं, सुह^१मसुहं^२ च आहियं ।
 सुहस्स उ बहू भेया, एमेव असुहस्स वि ॥१३॥
 (७) गोयं कम्मं दुविह, उच्चं^१ नीयं^२ च आहियं ।
 उच्चं अट्ठविह होइ, एवं नीयं पि आहिय ॥१४॥
 (८) दाणे^१लाभे^२य भोगे^३ ए, उवभोगे^४वीरिए^५तहा ।
 पचविहमंतरायं, समासेण वियाहियं ॥१५॥
 एयाओ मूलपयडीओ, उत्तराओ य आहिया ।
 पएसग्ग खेत्तकाले य, भावं च उत्तरं सुण ॥१६॥
 सव्वेसि चेव कम्माणं, पएसग्गमणंतगं ।
 गंठियसत्ताईयं, अंतो सिद्धाण आहियं ॥१७॥

सच्चजीवाण कम्मं तु, संगहे छद्दि सागय ।
सच्चवेसु वि पएसेसु, सच्चं सच्चवेण बद्धगं ॥१८॥

कर्मणां जघन्योत्कृष्टा च स्थितिः—

उदहीसरिसनामाणं, तीसई कोडिकोडिओ ।
उक्कोसिया ठिई होइ, अंतोमुहुत्तं जहन्निया ॥१९॥
आवरणिज्जाण दुण्हं पि, वेयणिज्जे तहेव य ।
अंतराए य कम्मंमि, ठिई एसा वियाहिया ॥२०॥
उदहीसरिसनामाण सत्तरि कोडिकोडिओ ।
मोहणिज्जस्स उक्कोसा, अंतोमुहुत्तं जहन्निया ॥२१॥
तेत्तीस सागरोवमा, उक्कोसेण वियाहिया ।
ठिई उ आउकम्मस्स, अंतोमुहुत्तं जहन्निया ॥२२॥
उदहीसरिसनामाण, वीसई कोडिकोडिओ ।
नामगोत्ताणं उक्कोसा, अट्ठमुहुत्ता जहन्निया ॥२३॥

कर्मणामनुभागप्रदेशीः—

सिद्धाणऽणंतभागो य, अणुभागा हवंति उ ।
सच्चवेसु वि पएसगां, सच्चजीवेसु इच्छियं ॥२४॥
तम्हा एएसि कम्माणं, अणुभागा वियाणिया ।
एएसि संवरे च्चेव, खवणे य जए बूहे ॥२५॥
॥ त्ति बेमि ॥

॥ लेसज्झयण-नामं चोत्तीसइमं अज्झयणं

लेसज्झयणं पववखामि, आणुपुत्तिं जह्वकमं ।
छण्हं पि कम्मलेसाण, अणुभावे सुणेह मे ॥१॥
नामाइं वण्ण-रम-गंध, फामपरिणामलक्खणं ।
ठाणं ठिइं गइं चाउं, लेसाणं तु सुणेह मे ॥२॥

लेस्यानां नामानि:—

किण्हा^१ नोला^२ य काऊ^३ य, तेऊ^४ पम्हा^५ तहेव य ।
सुक्कलेसा^६ य छट्ठा य, नामाइं तु जह्वकमं ॥३॥

लेस्यानां वर्णा:—

- (१) जोमूयनिद्धसंकासा, गवलरिट्ठगसन्निभा ।
खंजंजनयणनिभा, किण्हलेसा उ वण्णओ ॥४॥
- (२) नोलासोगसंकासा, चामपिच्छममप्पभा ।
वेरत्तिपनिद्धसंकासा, नीललेसा उ वण्णओ ॥५॥
- (३) अयसीपुप्फसंकासा, फोइलच्छदसन्निभा ।
पारेययगोवनिभा, काऊलेसा उ वण्णओ ॥६॥
- (४) हिगुल्लुयघाउमंकासा, तरणाइच्चमन्निभा ।
गुयतुंडपट्टवनिभा, तेउलेसा उ वण्णओ ॥७॥

- (५) हरियालभेयसंकासा, हलिद्दाभेयसमप्यभा ।
 सणासणकुसुमनिभा, पम्हलेसा उ वण्णओ ॥८॥
- (६) संखंककुंदसंकासा, खीरपूरसमप्यभा ।
 रयय-हारसंकासा सुक्कलेसा उ वण्णओ ॥९॥

लेश्यांना रसा -

- (१) जह क डु य तुं ब ग र सो,
 निवरसो कडुयरोहिणिरसो वा ।
 एत्तो वि अणंतगुणो,
 रसो य किण्हाए नायव्वो ॥१०॥
- (२) जह तिकडुयस्स य रसो,
 तिक्खो जह हत्थिपिप्पलीए वा ।
 एत्तो वि अणंतगुणो,
 रसो उ नीलाए नायव्वो ॥११॥
- (३) जह तरुणं ब ग र सो,
 तुवरकविट्ठस्स वा वि जारिसओ ।
 एत्तो वि अणंतगुणो,
 रसो उ काऊण नायव्वो ॥१२॥
- (४) जह प रि ण यं ब ग र सो,
 पक्ककविट्ठस्स वावि जारिसओ ।
 एत्तो वि अणंतगुणो,
 रसो उ तेऊण नायव्वो ॥१३॥

(५) व र वा रु णो ए व रसो,
विविहाण व आसवाण जारिसओ ।

म हु मे र य स्स व रसो,
एत्तो पम्हाए परएणं ॥१४॥

(६) छञ्जूर-मु द्वि य र सो,
खीररसो छंड-सक्कररसो वा ।

एत्तो वि अणंतगुणो,
रसो उ सुक्काए नायव्वो ॥१५॥

श्यान्ता गन्धाः—

जह गो म ड स्स गधो,
सुणगमढस्म व 'जहा अहिमढस्म' ।
एत्तो वि अणंतगुणो,
तेसाणं अप्पसत्थाणं ॥१६॥

जह सुरहिक्कुमुमगंधो, गंधवात्ताण पित्तमाणाण ।
एत्तो वि अणंतगुणो, पत्तत्यत्तेसाणं तिप्पि पि ॥१७॥

प्याना स्पर्शाः—

जह करगयत्त फामो, गोजिब्बाए य नागपत्ताणं ।
एत्तो वि अणंतगुणो, तेसाणं अप्पसत्थाणं ॥१८॥
जह यूरत्त व फामो,
नयणीयम्म य मिरीगकुमुमाण ।

एत्तो वि अणंतगुणो,
पसत्थलेसाण तिण्हं पि ॥१९॥

लेश्यानां परिणामा -

तिविहो व नवविहो वा, सत्तावीसइविहेक्कसीओ वा ।
दुसओ तेयालो वा, लेसाणं होइ परिणामो ॥२०॥

लेश्यानां लक्षणानि-

(१) पंचासवप्पवत्तो, तीहिं अगुत्तो छसुं अविरओ य ।
तिच्चारंभपरिणओ, खुट्ठो साहसिओ नरो ॥२१॥
निद्धंघसपरिणामो, निस्संसो अजिइंदिओ ।
एयजोगसमाउत्तो, किण्हलेसं तु परिणमे ॥२२॥

(२) इ स्सा अ म रि स अ त वो,
अविज्जमाया अहोरिया य ।

गिद्धी पओसे य सढे पमत्ते,
रसलोलुए साय गवेसए य ॥२३॥

आरंभाओ अविरओ, खुट्ठो साहस्सिओ नरो ।
एयजोगसमाउत्तो, नीललेसं तु परिणमे ॥२४॥

(३) वंके वंकसमायरे, नियडिल्ले अणुज्जुए ।
पलिउंचगओवहिए, मिच्छदिट्ठी अणारिए ॥२५॥
उप्फालगदुट्ठुवाई य, तेणे आवि य मच्छरी ।
एयजोगसमाउत्तो, काळुलेसं तु परिणमे ॥२६॥

नीयावित्ती अचवले, अमाई अकुळहले ।
 विणीयविणए दत्ते, जोगव उवहाणव ॥२७॥
 पियधम्मे ददधम्मे ऽवज्जभीरु हिएसए ।
 एयजोगसमाउत्तो, तेउलेस तु परिणमे ॥२८॥
 (५) पयणुकोहमाणे य, मायालीभे य पयणुए ।
 पसतचित्ते दत्तप्पा, जोगव उवहाणवं ॥२९॥
 तहा पयणुवाई य, उवमते जिइंदिए ।
 एयजोगसमाउत्तो, पम्हलेसं तु परिणमे ॥३०॥
 (६) अट्टरहाणि वज्जित्ता, धम्ममुक्काणि ज्ञायए ।
 पसतचित्ते दत्तप्पा, ममिण गुत्ते य गुत्तिहि ॥३१॥
 नरागे बीयराने वा, उवमते जिइंदिए ।
 एयजोगसमाउत्तो, मुक्कलेस तु परिणमे ॥३२॥

अश्याना स्थानानि-—

अत्तपिज्जाणोत्तापिणीण, उत्तपिणीण जे ममया ।
 मग्गाईया नोगा, नेमाण हवति ठाणाइ ॥३३॥

अश्याना निर्वानि-—

मुत्तद तु जहप्पा, तेत्तीमा नागना मुत्तहिया ।
 उगकोता होइ ठिई, नायट्ठा पिइत्तेमाए ॥३४॥
 मुत्तद तु जहप्पा, दम उएँ पनियननगमागममहिया ।
 उगकोता होइ ठिई, नायट्ठा नीमनेमाए ॥३५॥

मुहुत्तद्ध तु जहन्ना, तिण्णुदही पलियमसखभागमव्वहिंया ।
उक्कोसा होइ ठिई, नायव्वा काउलेसाए ॥३६॥

मुहुत्तद्ध तु जहन्ना, दोण्णुदही पलियमसखभागमव्वहिंया ।
उक्कोसा होइ ठिई, नायव्वा तेउलेसाए ॥३७॥

मुहुत्तद्धं तु जहन्ना, दस होति य सागरा मुहुत्तहिंया ।
उक्कोसा होइ ठिई, नायव्वा पम्हलेसाए ॥३८॥

मुहुत्तद्ध तु जहन्ना, तेत्तीस सागरा मुहुत्तहिंया ।
उक्कोसा होइ ठिई, नायव्वा सुक्कलेसाए ॥३९॥

एसा खलु लेसाणं, ओहेण ठिई उ वणिंया होइ ।
चउसु वि गईसु एत्तो, लेसाण ठिइ उ वोच्छामि ॥४०॥

दस वाससहस्साइ, काउए ठिई जहन्निया होइ ।
तिण्णुदही पलिओवम, असखभाग च उक्कोसा ॥४१॥

तिण्णुदही पलिओवम, मसखभागो जहन्नेण नीलठिई ।
दस उदही पलिओवम, मसंखभागं च उक्कोसा ॥४२॥

दसउदही पलिओवम, मसखभागं जहन्निया होइ ।
त्तीससागराइ उक्कोसा, होइ किण्हाए लेसाए ॥४३॥

एसा नेरइयाण, लेसाण ठिई उ वणिंया होइ ।
तेण परं वोच्छामि, तिरियमणुस्साण देवाण ॥४४॥

अतोमुहत्तमद्व, नेमाण ठिई जहिं जहिं जाउ ।

तिग्गिधान नगण वा, वज्जिता केवल नेसं ॥४५॥

मुहुत्तमद्वं तु जह्ना, उपकोमा होइ पुव्वगोटीओ ।

नव्वहिं वग्गिमेहि उणा, नावव्वा मुक्कनेगा ॥४६॥

एणा निरियनगण, नेमाण ठिई उ जणिवा होइ ।

तेण पर चोच्छामि, नेमाण ठिई उ देवाणं ॥४७॥

दम वानगह्ममाउ, गिन्हाए ठिई जह्मिया होइ ।

पलियममग्गिज्जहमो उपकोमा होइ विष्ठाए ॥४८॥

जा गिन्हाए ठिई एण, उपकोमा ना उ ममयमव्वहिवा ।

जह्मणेण नीलाए, पलियममं च उपकोमा ॥४९॥

जा नीलाए ठिई एण, उपकोमा ना उ ममयमव्वहिवा ।

जह्मणेण पाउए, पलियममं च उपकोमा ॥५०॥

तेण दम धोन्नामि, नेउनेगा जहा मुरगणाणं ।

भवणउट-पाणमंतर-जोहम नेमाविवाणं च ॥५१॥

पविओउम जह्मया, उपकोमा नामना उ दुम्वरहिवा ।

पलियममग्गेणेण होइ भातेण नेउए ॥५२॥

दमपाणमह्ममाउ, नेउए ठिई जह्मिया होइ ।

हुन्नुहो पविओउम, भमग्गभाण न उपकोमा ॥५३॥

जा तेऊए ठिई खलु, उक्कोसा सा उ समयमब्भहिया ।
 जहन्नेण पम्हाए, दस उ मुहुत्ताऽहियाइ उक्कोसा ॥५४॥
 जा पम्हाए ठिई खलु, उक्कोसा सा उ समयमब्भहिया ।
 जहन्नेण सुक्काए, तेत्तीसमुहुत्तमब्भहिया ॥५५॥

तिसृभिरधर्मलेश्याभिर्दुर्गति—

किण्हा नीला काऊ, तिन्नि वि एयाओ अहम्मलेसाओ ।
 एयाहिं तिहि वि जीवो, दुग्गइ उववज्जइ ॥५६॥

तिसृभिःधर्मलेश्याभिःसुगति—

तेऊ पम्हा सुक्का, तिन्नि वि एयाओ धम्मलेस्साओ ।
 एयाहिं तिहि वि जीवो, दुग्गइ उववज्जइ ॥५७॥
 लेसाहिं सच्च्वाहिं, पढमे समयमि परिणयाहिं तु ।
 न हु कस्सइ उववाओ, परे भवे अत्थि जीवस्स ॥५८॥
 लेसाहिं सच्च्वाहिं, चरिमे समयमि परिणयाहिं तु ।
 न हु कस्सइ उववाओ, परे भवे होइ जीवस्स ॥५९॥
 अंतमुहुत्तमि गए, अंतमुहुत्तमि सेसए चव ।
 लेसाहिं परिणयाहिं, जांवा गच्छंति परलोयं ॥६०॥
 तम्हा एयांसि लेसाणं, अणुभाव वियाणिया ।
 अप्पसत्थाओ वज्जित्ता, पसत्थाओऽहिंदिउ मुणी ॥६१॥
 ॥ ति बेमि ॥

अह अणगारिज्ज-नामं पणतीसइमं अज्झयणं

सुणेह मे एगगमणा, मग बुद्धेहि देमियं ।
 जमायरतो मियधू, दुक्खाणंतकरे भवे ॥१॥
 गिह्वाम परिचज्ज, पयज्जामस्सिए भुणी ।
 इमे सगे विद्याणिज्जा, जेहि मज्जति माणवा ॥२॥
 तहेव हिमं अलियं, चोज्जं अवंसनेयणं ।
 दृच्छाकामं च लोभं च, मज्जओ परिवज्जए ॥३॥
 मणोहर चित्तघर, मल्लधूधेण वानिय ।
 मक्कावाड पंदुरल्लवोय मणमावि न पत्थाए ॥४॥
 इदियाणि उ निवट्ठन्त, तारिममि उवस्साए ।
 दुक्कवाड निघाणं उ, कामरागविचइदुणे ॥५॥
 नुगाणं नुप्रगारे वा, कयणमूले य इक्कज्जो ।
 पइग्गिक्के पराडे वा, याम नत्थामिरोयाए ॥६॥
 कामुयमि अणावाहे, इन्दीहि अणाभिदुत्ता ।
 सन्य मक्काए वासं, निवट्ठ पग्गमंजए ॥७॥
 न मय गिहाए कुज्जा, जेव अग्गेहि वान्ण ।
 गिहकम्मनमारंभे, भूदाणं रिग्गए यो ॥८॥
 तगाणं धावगन च, मुग्गगाणं वादराण य ।
 तम्हा गिहममारंभे, मंज्जओ परिवज्जए ॥९॥

तहेव भत्तपाणेषु, पयणे पयावणेषु य ।
 पाण-भूय-दयट्ठाए, न पए न पयावए ॥१०॥
 जल-धन्न-निस्सिया जीवा, पुढवी-कट्ट-निस्सिया ।
 हम्मति भत्तपाणेषु, तम्हा भिक्खू न पायए ॥११॥
 विसप्पे सव्वओ धारे, ब्रहुपाणि-विणासणे ।
 नत्थि जोइसमे सत्थे तम्हा जोइं न दीवए ॥१२॥
 हिरण्णं जायरूवं च, मणसा वि न पत्थए ।
 समलेट्ठुकंचणे भिक्खू, विरए कयविककए ॥१३॥
 किणंतो कइओ होइ, विक्किणंतो य वाणिओ ।
 कय-विककयंमि वट्ठंतो, भिक्खू न भवइ तारिसो ॥१४॥
 भिविखयच्चं न केयच्चं, भिक्खुणा भिक्खवित्तिणा ।
 कय-विककओ महादोसो, भिक्खावित्ती सुहावहा ॥१५॥
 समुयाणं उंछमेसिज्जा, जहासुत्तमणिंदिय ।
 लाभालाभमि संतुट्ठे, पिडवायं चरे मुणी ॥१६॥
 अत्तोले न रसे गिद्धे, जिब्भादत्ते अमुच्छिण्णए ।
 न रसट्ठाए भुंजिज्जा, जवणट्ठाए महामुणी ॥१७॥
 अच्चणं रयणं चेव, वदणं पूयणं तहा ।
 इड्ढी-सक्कार-सम्माण, मणसा वि न पत्थए ॥१८॥
 सुक्कज्झाणं, झियाएज्जा, अणियाणे अकिंचणे ।
 वोसट्ठुकाए विहरेज्जा, जाव कालस्स पज्जओ ॥१९॥

निज्जह्किण आहारं, कालधम्मे ज्वट्टिए ।
 जह्किण माणुसं वोदि, पट्टं दुवखा विमूच्चई ॥२०॥
 निम्ममो निरहंकारो, वीयरानो अणामयो ।
 संपत्तो केवलं नाणं, मानयं परिणिव्वए ॥२१॥
 ॥ त्ति वेमि ॥

अह जीवाजीविभत्ति-नामं छत्तीसइमं अज्झयणं

जीवाजीविभत्ति मुणेरंगमणा इअं ।
 ज जाणिऊण भिक्खू, नम्मे जयइ मंजमे ॥१॥
 लोवालोक-स्वरूपम्—

जीवा सेव अजीवा य, एम लोए विद्याहिए ।
 अजीवदेगमागामे, अतोणे से विद्याहिए ॥२॥

द्रव्यादिभिर्जीवाजीवयोः प्ररूपणम्—

दम्यओ' छेतओ' सेव फालओ' भायओ' नहा ।
 पण्यणा तेलि भये जीवाणमजीवाण य ॥३॥

अजीवमेदा—

(१) ऋणिओ सेव ऋवो य, अजीवा इविहा भवे ।
 अण्वो दमहा दत्ता, ऋविलो य चठरिगा ॥४॥

- धम्मत्थिकाए^१ तहेसे^२, तप्पएसे^३ य आहिए ।
 अहम्मे^४ तस्स देसे^५ य, तप्पएसे^६ य आहिए ॥५॥
- आगासे^७ तस्स देसे^८ य, तप्पएसे^९ य आहिए ।
 अद्धासमए^{१०} चेव, अरूवी दसहा भवे ॥६॥
- (२) धम्माधम्मो य दो चेव, लोगमित्ता वियाहिया ।
 लोगालोगे य आगासे, समए समयखेत्तिए ॥७॥
- (३) धम्माधम्मागासा, तिन्निवि एए अणाइया ।
 अपज्जवसिया चेव, सव्वद्ध तु वियाहिया ॥८॥
- समएवि संतइं पप्प, एवमेव वियाहिया ।
 आएसं पप्प साईए, सपज्जवसिएवि य ॥९॥
- (१) खंधा^१ य खंधदेसा^२ य, तप्पएसा^३ तहेव य ।
 परमाणुणो^४ य बोधव्वा, रूविणो य चउप्पिहा ॥१०॥
- (२) एगत्तेण पुहत्तेणं, खंधा य परमाणुणो ।
 लोएगदेसे लोए य, भइयव्वा ते उ खेत्तओ ॥११॥
- सुहुमा सव्वलोगमि लोगदेसे य बायरा ।
 (३) इत्तो कालविभागं तु, तेसि वुच्छ चउप्पिह ॥१२॥
- सतइ पप्प तेऽणाई, अप्पज्जवसिया^१ वि य ।
 ठिईं पडुच्च साईया, सप्पज्जवसिया^२ वि य ॥१३॥
- असंखकालमुक्कोसं^३, एक्को समओ जहन्नय ।
 अजीवाण य रूवीण, ठिईं एसा वियाहिया ॥१४॥

अर्णनकालमुक्त्वोम^१, एवमो नमओ जहमयं ।

अजीवाण य हवीण, अंतरेयं विघाहियं ॥१५॥

(४) वणओ^१ गंधओ^२ सेव, नमओ^३ फामओ^४ तथा ।

सठानओ^५ य वित्रेओ, पणिणामो तेम पंचहा ॥१६॥

(१) वणओ पणिणया जे उ, पंचहा ते पकिणिया ।

फिण्हा^१ नीला^२ य सोहिण^३, हलिहा^४ मुण्णिना^५ तथा ॥१७॥

(२) गंधओ परिणया जे उ, दुविहा ते विघाहिया ।

मुविगघपरिणामो^१, दुविगघा^२ तरेव य ॥१८॥

(३) रमओ परिणया जे उ, पचहा ते पकिणिया ।

नित्त^१-रउय^२-रमाया^३, अविना^४ मरुग नहा ॥१९॥

(४) फामओ परिणया जे उ, अट्टा ते परिणिया ।

कयघडा^१ मउआ^२ सेव, गरया^३ माया^४ तथा ॥२०॥

सोया^१ उट्टा^२ य निट्टा^३ य, नग मुक्का^४ य धाणिया ।

हा फामपरिणया एण, पुण्णवा नमदाणिया ॥२१॥

(५) मठान परिणया जे उ, पचहा ते पकिणिया ।

परिमहना^१ य उट्टा^२ य, नगा^३ मउरंग^४ मायया^५ ॥२२॥

वत्तओ जे मये जिणे, भट्टा मे उ संउजे ।

रमओ फामओ सेव, माण, मठान सेवि य ॥२३॥

वत्तओ जे मय सेवे, माण मे उ माओ ।

रमओ फामओ सेव, भट्टा मठानओ वि य ॥२४॥

વળ્ણઓ લોહિએ જે ઉ, ભઙ્ગે સે ઉ ગંધઓ ।
 રસઓ ફાસઓ ચેવ, ભઙ્ગે સંઠાણઓ વિ ય ॥૨૫॥
 વળ્ણઓ પીયએ જે ઉ, ભઙ્ગે સે ઉ ગંધઓ ।
 રસઓ ફાસઓ ચેવ, ભઙ્ગે સંઠાણઓ વિ ય ॥૨૬॥
 વળ્ણઓ સુવિકલે જે ઉ, ભઙ્ગે સે ઉ ગંધઓ ।
 રસઓ ફાસઓ ચેવ, ભઙ્ગે સંઠાણઓ વિ ય ॥૨૭॥
 ગંધઓ જે ભવે સુઘ્ભી, ભઙ્ગે સે ઉ વળ્ણઓ ।
 રસઓ ફાસઓ ચેવ, ભઙ્ગે સંઠાણઓ વિ ય ॥૨૮॥
 ગંધઓ જે ભવે દુઘ્ભી, ભઙ્ગે સે ઉ વળ્ણઓ ।
 રસઓ ફાસઓ ચેવ, ભઙ્ગે સંઠાણઓ વિ ય ॥૨૯॥
 રસઓ તિત્તએ જે ઉ, ભઙ્ગે સે ઉ વળ્ણઓ ।
 ગંધઓ ફાસઓ ચેવ, ભઙ્ગે સંઠાણઓ વિ ય ॥૩૦॥
 રસઓ કઙ્કુએ જે ઉ, ભઙ્ગે સે ઉ વળ્ણઓ ।
 ગંધઓ ફાસઓ ચેવ, ભઙ્ગે સંઠાણઓ વિ ય ॥૩૧॥
 રસઓ કસાએ જે ઉ, ભઙ્ગે સે ઉ વળ્ણઓ ।
 ગંધઓ ફાસઓ ચેવ, ભઙ્ગે સંઠાણઓ વિ ય ॥૩૨॥
 રસઓ અબિલે જે ઉ, ભઙ્ગે સે ઉ વળ્ણઓ ।
 ગંધઓ ફાસઓ ચેવ, ભઙ્ગે સંઠાણઓ વિ ય ॥૩૩॥
 રસઓ મહુરએ જે ઉ, ભઙ્ગે સે ઉ વળ્ણઓ ।
 ગંધઓ ફાસઓ ચેવ, ભઙ્ગે સંઠાણઓ વિ ય ॥૩૪॥

संठाणओ भवे तंसे, भइए से, उ वण्णओ ।
 गंधओ रसओ चेव, भइए फासओ वि य ॥४५॥
 संठाणओ य चउरसे, भइए से उ वण्णओ ।
 गंधओ रसओ चेव, भइए फासओ वि य ॥४६॥
 जे आययसंठाणे, भइए से उ वण्णओ ।
 गंधओ रसओ चेव, भइए फासओ वि य ॥४७॥
 एसा अजीवविभत्ती, समासेण वियाहिया ।

जीवभेदाः-

इत्तो जीवविभत्ति, वुच्छामि अणुपुच्चसो ॥४८॥
 संसारत्था य सिद्धा य, दुविहा जीवा वियाहिया ।

तां वर्णनम्--

(१) सिद्धा णेगविहा वुत्ता, तं मे कित्तयओ सुण ॥४९॥

इत्थीपुरिससिद्धा य तहेव य नपुंसगा ।

सल्लिगे अन्नल्लिगे य, गिहिल्लिगे तहेव य ॥५०॥

उक्कोसोगाहणाए य, जहत्तमज्झिमाड य ।

उड्ढं अहे य तिरिथं च, समुद्धंमि जलमि य ॥५१॥

दस य नपुंसएसु, वीसं इत्थियासु य ।

पुरिसेसु य अट्ठसयं, समएणेगेण सिज्झइ ॥५२॥

चत्तारि य गिहिल्लिगे, अन्नल्लिगे दसेव य ।

सल्लिगेणं अट्ठसयं, समएणेगेण सिज्झइ ॥५३॥

उक्कोसोगाहणाए य, सिज्झंते जुगवं दुवे ।
चत्तारि जहन्नाए, मज्झे अट्ठुत्तर सय ॥५४॥

चउरुड्ढलोए य दुवे समुद्दे,
तओ जले वोसमहे तहेव य ।
सयं च अट्ठुत्तर तिरियलोए,
समएणेगेण सिज्झई धुवं ॥५५॥

कहिं पडिहया सिद्धा ? कहिं सिद्धा पइट्ठिया ?
कहिं वोदि, चइत्ताण ? कत्थ गंतूण सिज्झई ? ॥५६॥

अलोए पडिहया सिद्धा, लोयग्गे य पइट्ठिया ।
इह वोदि चइत्ताणं, तत्थ गंतूण सिज्झइ ॥५७॥

सिद्धशिलायावर्णनम्—

(२) बारसहिं जोयणेहिं, सव्वट्ठस्सुवारि भवे ।
ईसिपव्वभारत्तामा उ, पुढवी छत्तसठिया ॥५८॥
पणयात्तसयसहस्सा, जोयणाण तु आयया ।
तावइय चेव वित्थिण्णा, तिगुणो साहिय परिरओ ॥५९॥
अट्ठजोयणवाहल्ला, सा मज्झमि वियाहिया ।
परिहायंती चरिमते, मच्छिपत्ताउ तणुययरी ॥६०॥
अज्जुणमुवण्णगमई, सा पुढवी निम्मला सहावेण ।
उत्ताणगच्छत्तगसंठिया य, भणिया जिणवरेहिं ॥६१॥

संखंकुदसंकासा, पंडुरा निम्मला सुहा ।
सीयाए जोयणे तत्तो, लोयतो उ वियाहिओ ॥६२॥

सिद्धानामवस्थिति-क्षेत्रम्—

जोयणस्स उ जो तत्थ, कोसो उवरिमो भवे ।
तस्स कोसस्स छब्भाए, सिद्धाणोगाहणा भवे ॥६३॥
तत्थ सिद्धा महाभागा, लोगगांमि पइट्ठिया ।
भवप्पवंच उम्मुक्का, मिद्धि वरगइं गया ॥६४॥

सिद्धानामवगाहना—

उस्तेहो जस्स जो होइ, भवंमि चरिममि उ ।
तिभागहीणा तत्तो य, सिद्धाणोगाहणा भवे ॥६५॥
(३) एगत्तेण साईया, अपज्जवसियावि य ।
पुहत्तेण अणाइया, अपज्जवसियावि य ॥६६॥
(४) अरुविणो जीवघणा, नाणदंसणसन्निया ।
अउलं सुहं संपत्ता, उवमा जस्स नत्थि उ ॥६७॥
लोगेगदेसे ते सव्वे, नाणदंसणसन्निया ।
संसारपारनित्थिण्णा, सिद्धि वरगइं गया ॥६८॥

संसारिणां जीवानां वर्णनम्—

संसारत्था उ जे जीवा, दुविहा ते वियाहिया ।
तसा^१ य थावरा^२ चेव, थावरा तिबिहा तहिं ॥६९॥

(१) पुढवी^१ आउजीवा^२ य, तहेव य वणस्सई^३ ।

इच्चेय थावरा तिविहा, तेसि भेए सुणेह मे ॥७०॥

दुविहा पुढवीजीवाउ, सुहुमा^१ वायरा तहा^२ ।

पज्जत्ता^१ मपज्जत्ता^२, एवमेए दुहा पुणो ॥७१॥

वायरा जे उ पज्जत्ता, दुविहा ते वियाहिया ।

सण्हा^१ खरा^२ य बोधव्वा, सण्हा सत्तविहा तहिं ॥७२॥

किण्हा^१ नीला^२ य सहिरा^३ य, हालिद्दा^४ सुक्किला^५ तहा ।

पंडु^६-पणग^७ मट्टिया, खरा छत्तीसई विहा ॥७३॥

पुढवी^१ य सक्करा^२ वालुया^३ य,

उवले^४ सिला^५ य लोणू^६से^७ ।

अ य^८-त व^९ त उ य^{१०}-सी सग^{११},

रुप्प^{१२}-सुवण्णे^{१३} य वइरे^{१४} य ॥७४॥

हरि याले^{१५} हिं गु लु ए^{१६},

मणोसिला^{१७} सास^{१८} गज्जण^{१९}-पवाले^{२०} ।

अ ढ भ प ड ल^{२१} ढ भ वा लु य^{२२},

वायरकाए मणिविहाणे ॥७५॥

गोमेज्जए^{२३} य रुयगे^{२४}, अके^{२५} कलिहे य लोहियक्खे य^{२६} ।

मरगय-मसारगल्ले^{२७}, भुयमोयग-इदनीले^{२८} य ॥७६॥

चदण गेरुय हसगढ्मे^{२९}, पुलए^{३०} सोगघिए^{३१} य बोधव्वे ।

चंदप्पह^{३२}-वेरलिए^{३३}, जलक्के^{३४} सूरंक्के^{३५} य ॥७७॥

एए खरपुढवीए, भैया छत्तीसमाहिया ।
 एगविहमणाणत्ता, सुहुमा तत्थ वियाहिया ॥७८॥
 सुहुमा य सच्चलोगंमि, लोगदेसे य बायरा ।
 इत्तो कालविभागं तु, वुच्छ तेसिं चउच्चिहं ॥७९॥
 संतइं पप्पणाईया, अपज्जवसिया वि^१ य ।
 ठिइं पडुच्च साईया, सपज्जवसिया वि^२ य ॥८०॥
 बावीससहस्साइं, वासाणुक्कोसिया भवे ।
 आउठिई पुढवीणं, अंतोमुहुत्तं जहन्निया ॥८१॥
 असंखकालमुक्कोसं^३, अंतोमुहुत्तं जहन्नयं ।
 कायठिई पुढवीणं, तं कायं तु अमुंचओ ॥८२॥
 अणंतकालमुक्कोसं^४ अतोमुहुत्तं जहन्नयं ।
 विजडंमि सए काए, पुढविजीवाण अंतरं ॥८३॥
 एएसिं वण्णओ चेव, गंधओ रसफासओ ।
 संठाणादेसओ वावि, विहाणाइं सहस्सओ ॥८४॥
 (२) दुविहा आउजीवा उ, सुहुमा बायरा तहा ।
 पज्जत्तमपज्जत्ता, एवमेव दुहा पुणो ॥८५॥
 बायरा जे उ पज्जत्ता, पंचहा ते पकित्तिया ।
 सुद्धोदए^१ य उस्से^२ य, हरतणू^३ महिया^४ हिमे ॥८६॥
 एगविहमणाणत्ता, सुहुमा तत्थ वियाहिया ।
 सुहुमा सच्चलोगंमि, लोगदेसे य बायरा ॥८७॥

सतइं पप्पणाईया, अपज्जवसियावि य ।
 ठिइं पडुच्च साईया, सपज्जवसियावि य ॥८८॥
 सत्तेव सहस्साइं, वासाणुवकोसिया भवे ।
 आजठिइं आऊण, अतोमुहुत्त जहन्निया ॥८९॥
 असंखकालमुक्कोसं, अतोमुहुत्तं जहन्नयं ।
 कायठिइं आऊणं, तं कायं तु अमुच्चओ ॥९०॥
 अणंतकालमुक्कोस, अंतोमुहुत्तं जहन्नयं ।
 विजडमि सए काए, आऊजीवाण अतरं ॥९१॥
 एएंसि वण्णओ चेव गंधओ रसफासओ ।
 सठाणादेसओ वावि, विहाणाइं सहस्ससो ॥९२॥
 (३) दुविहा वणस्सईजीवा, सुहुमा वायरा तथा ।
 पज्जत्तमपज्जत्ता, एवमेव दुहा पुणो ॥९३॥
 वायरा जे उ पज्जत्ता, दुविहा ते वियाहिया ।
 साहारणसरीरा^१ य, पत्तेगा^२ य तहेव य ॥९४॥
 पत्तेगसरीराओ, ऽणेगहा ते पकित्तिया ।
 रुक्खा गुच्छा य गुम्मा य, लया वल्ली तणा तथा ॥९५॥
 वलया पध्वगा कुहुणा, जलरुहा ओसही तिणा ।
 हरियकाया उ बोधव्वा, पत्तेगा इह आहिया ॥९६॥
 साहारणसरीराओ, ऽणेगहा ते पकित्तिया ।
 आलुए मूलए चेव, सिगबेरे तहेव य ॥९७॥

हिरिली सिरिली सस्सिरिली, जावई कैयकंदली ।
 पलंडुलसणकंदे य कदली य कुह्वए ॥९८॥
 लोहिणी हूयथी हूय,, कुहगा य तहेव य ।
 कण्हे य वज्जकंदे य, कदे सूरणए तहा ॥९९॥
 अस्सकण्णी य बोधव्वा, सीहकण्णी तहेव य ।
 मुसुंढी य हलिद्दा य, ऽण्णहा एवमायओ ॥१००॥
 एगविहमणाणत्ता, सुहुमा तत्थ वियाहिंया ।
 सुहुमा सव्वलोगमि, लोगदेसे य बायरा ॥१०१॥
 सतइं पप्पऽणाईया, अपज्जवसियावि य ।
 ठिइं पडुच्च साईया, सपज्जवसियावि य ॥१०२॥
 दस चेव सहस्साइ, वासाणुक्कोसिया भवे ।
 वणप्फईण आउं तु, अंतोमूहुत्तं जहन्निया ॥१०३॥
 अणतकालमुक्कोसा, अंतोमूहुत्तं जहन्निया ।
 कायठिई पणगाणं, त कायं तु अमु चओ ॥१०४॥
 असंखकालमुक्कोसं, अंतोमूहुत्तं जहन्नय ।
 विजडमि सए काए, पणगजीवाण अंतरं ॥१०५॥
 एएंसि वण्णओ चेव, गंधओ रसफासओ ।
 सठाणादेसओ बावि, विहाणाइ सहस्सओ ॥१०६॥
 इच्चेए थावरा तिविहा, समासेण वियाहिंया ।
 इत्तो उ तसे तिविहे, वुच्छामि अण्णुप्पव्वसो ॥१०७॥

तेऊ^१ वाऊ^२ य बोधच्चा, उराला य तत्ता^३ तहा ।
 इच्चेए तसा तिविहा, तेसि भेए सुणेह मे ॥१०८॥
 (१) दुविहा तेउजीवा उ, सुहुमा वायरा तहा ।
 पज्जत्तमपज्जत्ता, एवमेए दुहा पुणो ॥१०९॥
 वायरा जे उ पज्जत्ता, णेगहा ते वियाहिया ।
 इंगाले मुंभुरे अगणी, अच्चि जाला तहेव य ॥११०॥
 उक्का विज्जू य बोधच्चा, णेगहा एवमायओ ।
 एगविहमणाणत्ता, सुहुमा ते वियाहिया ॥१११॥
 सुहुमा सव्वलोर्गमि, लोणदेसे य वायरा ।
 इत्तो कालविभाग तु, तेसि वुच्छं चउव्विहं ॥११२॥
 संतइं पप्पणाईया, अपज्जवसियावि^१ य ।
 ठिइं पडुच्च साइया, तपज्जवसियावि^२ य ॥११३॥
 तिण्णेव अहोरत्ता, उक्कोसेण वियाहिया ।
 आउठिई तेऊणं, अतोमुहुत्त जहन्निया ॥११४॥
 असखकालमुक्कोसा^३, अंतोमुहुत्त जहन्निया ।
 कायठिई तेऊणं, तं कायं तु अमुंचओ ॥११५॥
 अणत्तकालमुक्कोसं^४, अंतोमुहुत्तं जहन्नयं ।
 विजडंमि सए काए, तेऊजीवाण अंतरं ॥११६॥
 एएसि वण्णओ चेव^५ गघओ रसफासओ ।
 सठाणादेसओ वावि, विहाणाइं महस्ससो ॥११७॥

(૨) કુવિહા વાઝજીવા ઝ, સુહુમા બાયરા તહા ।
 પઞ્જત્તમપઞ્જત્તા, એવમેએ કુહા પુણો ॥૧૧૮॥
 બાયરા જે ઝ પઞ્જત્તા, પંચહા તે પક્કિત્તિયા ।
 ઝવ્કલિયા^૧ મંડલિયા^૨, ઘણુગુંજા^૩ સુદ્ધવાયા^૪ ય ॥૧૧૯॥
 સંવટ્ટગવાયે^૫ ય, ણેગહા એવસાયઓ ।
 એગવિહમણણત્તા, સુહુમા તત્થ વિયાહિયા ॥૧૨૦॥
 સુહુમા સવ્વલોગંમિ, લોગદેસે ય બાયરા ।
 હત્તો કાલવિભાગં તુ, તેંસિં વુચ્છં ચરુવિહં ॥૧૨૧॥
 સંતઠં પપ્પણાઈયા, અપઞ્જવસિયાવિ^૧ ય ।
 ઠિં પઢુચ્ચ સાઈયા, સપઞ્જવસિયાવિ^૨ ય ॥૧૨૨॥
 તિણ્ણેવ સહસ્સાઈં, વાસાણુવ્કોસિયા ભવે ।
 આઝઠિં વાઝ્ઞં, અંતોમુહુત્ત જહન્નિયા ॥૧૨૩॥
 અસંખકાલમુવ્કોસા^૩, અંતોમુહુત્તં જહન્નિયા ।
 કાયઠિં વાઝ્ઞં, તં કાયં તુ અમુંચઓ ॥૧૨૪॥
 અણતકાલમુવ્કોસ^૪, અંતોમુહુત્તં જહન્નય ।
 વિજ્ઞદમિ સએ કાએ, વાઝ્ઞીવાણ અંતરં ॥૧૨૫॥
 એર્ણસિ વણ્ણઓ ચેવ, ગંધઓ રસપાસઓ ।
 સંઠાણાદેસણો વાવિ, વિહાણાઈં સહસ્સો ॥૧૨૬॥
 (૩) ઝરાલા તસા જે ઝ, ચઝહા તે પક્કિત્તિયા ।
 બેઈંદિયા^૧ તેઈંદિયા^૨, ચઝરો^૩ પંચંદિયા^૪ તહા ॥૧૨૭॥

- (૧) બેઈંદિયા ડ જે જીવા, ઢુવિહા તે પકિત્તિયા ।
 પજ્જત્ત^૧મપજ્જત્તા^૨, તેંસિ ભેઁ સુણેહ મે ॥૧૨૮॥
- કિમિણો સોમગલા ચેવ, અલસા માઢવાહયા ।
 વાસીમુહા ય સિપ્પિયા, સહા સહણગા તહા ॥૧૨૯॥
- પલ્લોયાણુલ્લયા ચેવ, તહેવ ય વરાડગા ।
 જલુગા જાલગા ચેવ, ચદણા ય તહેવ ય ॥૧૩૦॥
- ઇઢ બેઈંદિયા ંં, ડ્ણેગહા ંવમાયઓ ।
 લોગેગદેસે તે સઘ્ઘે, ન સઘ્ઘત્થ વિયાહિયા ॥૧૩૧॥
- સતઢ પપ્પ ડ્ણાઈંયા, અપ્પજ્જવસિયા^૧ વિ ય ।
 ઢિઢ પઢુચ્ચ સાઈંયા, સપ્પજ્જવસિયા^૨ વિ ય ॥૧૩૨॥
- વાસાઈં વારસા ચેવ, ડક્કોસેણ વિયાહિયા ।
 બેઈંદિય આઢઢિઈં અંતોમુહુત્તં જહ્ણિયા ॥૧૩૩॥
- સહિજ્જકાલમુવકોસા^૩, અંતોમુહુત્તં જહ્ણિયા ।
 બેઈંદિયકાયઢિઈં, તં કાયં તુ અમુચઓ ॥૧૩૪॥
- અણંતકાલમુવકોસ^૪, અંતોમુહુત્તં જહ્ણયં ।
 બેઈંદિયજીવાણ, અંતર ચ વિયાહિય ॥૧૩૫॥
- ંંસિ વણઓ ચેવ, ગઘઓ રસપાસઓ ।
 સંઠાણાવેસઓ વાવિ, વિહાણાઈં સહસ્સસો ॥૧૩૬॥
- (૨) તેઈંદિયા ડ જે જીવા, ઢુવિહા તે પકિત્તિયા ।
 પજ્જત્તમપજ્જત્તા, તેંસિ ભેઁ સુણેહ મે ॥૧૩૭॥

कुथु-पिवीलि-उड्डंसा, उक्कलुद्देहिया तथा ।
 तणहार-कट्टुहारा य, मालुगा पत्तहारणा ॥१३८॥
 कप्पासज्झिमिजा य, तिट्ठुगा तउसमिजणा ।
 सदावरी य गुमी य, बोधव्वा इंदगाइया ॥१३९॥
 इदगोवगमाईया, ऽणेगहा एवमायओ ।
 लोगेगदेसे ते सव्वे, न सव्वत्थ वियाहिया ॥१४०॥
 संतइ पप्पऽणाईया, अपज्जवसिया^१ वि य ।
 ठिइ पडुच्च साईया, सपज्जवसिया^२ वि य ॥१४१॥
 एगूणपण्णहोरत्ता, उक्कोसेण वियाहिया ।
 तेइदियआउठिई, अंतोमुहुत्त जहन्निया ॥१४२॥
 सखिज्जकालमुक्कोसा^३, अतोमुहुत्त जहन्निया ।
 तेइदियकायठिई, त कायं तु अमुच्चओ ॥१४३॥
 अणत्तकालमुक्कोसा^४, अंतोमुहुत्त जहन्नियं ।
 तेइदियजीवाणं, अतर तु वियाहिय ॥१४४॥
 एएसं वण्णओ चेव, गंधओ रसफासओ ।
 सठाणादेसओ वावि, विहाणाइं सहस्सओ ॥१४५॥
 (३) चर्जरदिया उजे जीवा, दुविहा ते पकित्तिया ।
 पज्जत्तमपज्जत्ता, तेसिं भेए सुणेह से ॥१४६॥
 अधिया पोत्तिया चेव, मच्छिया मसगा तथा ।
 भसरे कीडपयंगे य, डिक्कुणे कंकणे तथा ॥१४७॥

कुक्कुडे सिगिरीडी य, नदावत्ते य विच्छुए ।
 डोले भिगीरीडी य, विरली अच्छिवेहए ॥१४८॥
 अच्छिले माहए अच्छि, विचित्ते चित्तपत्तए ।
 उह्हजलिया जलकारी य, नीया तंतवयाइया ॥१४९॥
 इइ चउररदिया एए, ण्णेगहा एवमायओ ।
 लोगेगदेसे ते सव्वे, न सव्वत्थ वियाहिया ॥१५०॥
 संतइं पप्पण्णाईया, अपज्जवसिया वि य^१ ।
 ठिइं पडुच्च साईया, सपज्जवसिया वि य^२ ॥१५१॥
 छच्चेव उ मासाऊ, उक्कोसेण वियाहिया ।
 चउररदियआउठिई, अंतोमुहुत्तं जहन्निया ॥१५२॥
 संखिज्जकालमुक्कोसा^३, अंतोमुहुत्तं जहन्निया ।
 चउररदियकायठिई, तं काय तु अमुंचओ ॥१५३॥
 अणतकालमुक्कोसं^१, अंतोमुहुत्तं जहन्नय ।
 चउररदियजीवाणं, अतर च वियाहियं ॥१५४॥
 एएंसि वण्णओ चेव, गंधओ रसफासओ ।
 सठाणादेसओ वावि, विहाणाइ सहस्सओ ॥१५५॥
 (४) पांचदिया उ जे जीवा, चउच्चिहा ते वियाहिया ।
 नेरइय^१तिरिक्खा^२ य, मणुया^३ देवा^१ य आहिया ॥१५६॥

नरक वर्णनम् -

नेरइया सत्तविहा, पुढवीसु सत्तसु भवे ।
 रयणाभ^१ सक्काराभा^२ बालुयाभा^३ य आहिया ॥१५७॥

पंकाभा^४ धूमाभा^५, तमा^६ तमतमा^७ तथा ।
 इइ नेरइया एए, सत्तहा परिकित्तिया ॥१५८॥
 लोगस्स एगदेसमि, ते सव्वे उ वियाहिया ।
 एत्तो कालविभागं तु, वुच्च तेसि चउव्विहं ॥१५९॥
 सतइं पप्पणाईया, अपज्जवसिया^१ वि य ।
 ठिइं पडुच्च साइया, सपज्जवसिया^२ वि य ॥१६०॥
 सागरोवममेग तु, उक्कोसेण वियाहिया ।
 पढमाए जहन्नेणं, दसवाससहस्सिया ॥१६१॥
 तिण्णेव सागरा ऊ, उक्कोसेण वियाहिया ।
 दोच्चाए जहन्नेण, एग तु सागरोवमं ॥१६२॥
 सत्तेव सागरा ऊ, उक्कोसेण वियाहिया ।
 तइयाए जहन्नेण, तिण्णेव सागरोवमा ॥१६३॥
 दस सागरोवमा ऊ, उक्कोसेण वियाहिया ।
 चउत्थीए जहन्नेणं, सत्तेव सागरोवमा ॥१६४॥
 सत्तरस सागरा ऊ, उक्कोसेण वियाहिया ।
 पचमाए जहन्नेण, दस चेव सागरोवमा ॥१६५॥
 बाबीस सागरा ऊ, उक्कोसेण वियाहिया ।
 छट्ठीए जहन्नेण, सत्तरस सागरोवमा ॥१६६॥
 तेत्तीस सागरा ऊ, उक्कोसेण वियाहिया ।
 सत्तमाए जहन्नेणं बाबीसं सागरोवमा ॥१६७॥

जा चेव य आजठिई, नेरइयाणं वियाहिया ।
 सा तेसिं कायठिई, जहनुक्कोसिया भवे ॥१६८॥
 अणंतकालमुक्कोसं, अंतोमुहुत्तं जहन्नयं ।
 विजठमि सए काए, नेरइयाणं तु अंतरं ॥१६९॥
 एएसि वण्णओ चेव, गघओ रसफासओ ।
 संठाणादेसओ वावि, विहाणाइं सहस्ससो ॥१७०॥

पंचेन्द्रिय-तिरश्चां-वर्णनम् -

पंचिंदियतिरिक्खाओ, वुविहा ते वियाहिया ।
 समुच्छिमतिरिक्खाओ^१, गढभवक्कंतिया^२ तहा ॥१७१॥
 वुविहा ते भवे तिविहा, जलयरा^१ थलयरा^२ तहा ।
 नह्यरा य^३ वोधच्चा, तेसिं भेए सुणेह मे ॥१७२॥
 मच्छा^१ य कच्छमा^२ य, गाहा^३ य मगरा^४ तहा ।
 सुसुमारा य वोधच्चा, पंचहा जलयराहिया ॥१७३॥
 लोएगदेसे ते सच्चे, न सच्चत्थ वियाहिया ।
 इत्तो कालविभाग तु, तेसिं वुच्छ चउच्चिह ॥१७४॥
 संतइं पप्पणाईया, अपज्जवसिया वि य^१ ।
 ठिई पडुच्च साईया, सपज्जवसिया वि य^२ ॥१७५॥
 एगा य पुव्वकोडि, उक्कोसेण वियाहिया ।
 आजठिई जलयराणं, अंतोमुहुत्तं जहन्निया ॥१७६॥
 पुव्वकोडिपुहत्तं तु^३, उक्कोसेण वियाहिया ।
 कायठिई जलयराणं, अंतोमुहुत्तं जहन्निया ॥१७७॥

अणंतकालमुक्कोसं^१, अंतोमुहुत्तं जहन्नयं ।
 विजहंमि सए काए, थलयराणं तु अंतरं ॥१७८॥
 एएत्ति वण्णओ चेव, गंधओ रसफासओ ।
 संठाणादेसओ वावि, विहाणाइं सहस्ससो ॥१७९॥
 चउप्पया^१ य परिसप्पा^२, दुविहा थलयरा भवे ।
 चउप्पया चउविहा उ, ते मे कित्तयओ सुण ॥१८०॥

एगखुरा^१ दुखुरा^२ चेव, गंडीपय^३-सणप्फया^४ ।
 हयमाइ-गोणमाइ, - गयमाइ - सीहमाइणो ॥१८१॥
 भुओरगपरिसप्पा य, परिसप्पा दुविहा भवे ।
 गोहाई^१ अहिमाई^२ य, एक्केक्काणेगहा भवे ॥१८२॥
 लोएगदेसे ते सव्वे, न सव्वत्थ वियाहिया ।
 एत्तो कालविभागं तु, वोच्छं तेत्ति चउच्चिहं ॥१८३॥

संतइं पप्पणाईया, अपज्जवसिया^१ वि य ।
 ठिइं पडुच्च साइया, सपज्जवसिया^२ वि य ॥१८४॥
 पलिओवमाइं तिणिण उ^३, उक्कोसेण वियाहिया ।
 आउठिई थलयराणं, अंतोमुहुत्तं जहन्निया ॥१८५॥

पुव्वकोडिपुहुत्तं, उक्कोसेण वियाहिया ।
 कायठिई थलयराणं, अंतोमुहुत्तं जहन्निया ॥१८६॥
 कालमणंतमुक्कोसं, अंतोमुहुत्तं जहन्नय ।
 विजहंमि सए काए, थलयराणं तु अंतरं ॥१८७॥

एएंसि वण्णओ चेव, गंधओ रसफासओ ।
 संठाणादेसणो वावि, विहाणाइं सहस्ससो ॥१८८॥
 चम्मे^१उ लोमपक्खी^२य, तइया समुग्गपक्खिया^३ ।

विययपक्खी^४ य बोधव्वा, पक्खिणो य चउच्चिहा ॥१८९॥
 लोएगदेसे ते सब्बे, न सब्बत्थ वियाहिया ।

इत्तो कालविभाग तु, वोचछं तैसि चउच्चिहं ॥१९०॥
 संतइं पप्पणाईया, अपज्जवसिया वि य^१ ।

ठिइं पडुच्च साईया, सपज्जवसिया वि य^२ ॥१९१॥
 पलिओवमस्स भागो, असंखेज्ज इमो भवे ।

आउठिई खह्यराणं, अंतोमुहुत्तं जहन्निया ॥१९२॥
 पुच्चकोडीपुहत्तेण, उक्कोसेण वियाहिया ।

कायठिई खह्यराणं, अंतोमुहुत्तं जहन्निया ॥१९३॥
 अणंतकालमुक्कोसं, अंतोमुहुत्तं जहन्नयं ।

विजठंमि सए काए, खह्यराणं तु अंतरं ॥१९४॥
 एएंसि वण्णओ चेव, गंधओ रसफासओ ।

संठाणादेसओ वावि, विहाणाइं सहस्ससो ॥१९५॥

पुजानां वर्णनम् —

मणुया दुविहभेया उ, ते मे कित्तयओ सुण ।

संमुच्चिमा^१ य मणुया, गब्भवक्कंतिया तहा ॥१९६॥

गब्भवक्कंतिया जे उ, तिविहा ते वियाहिया ।

अकम्म^१ कम्मभूसा^२ य, अंतरद्दीवया^३ तहा ॥१९७॥

पन्नरस तीसवी हा, भेया अट्टवी सयं ।
 संखा उ कमसो तेसिं, इइ एसा वियाहिया ॥१९८॥
 संमुच्छिमाण एमेव, भेओ होई वियाहियो ।
 लोगस्स एणदेसंमि, ते सग्गे वि वियाहिया ॥१९९॥
 संतइं पप्पणाईया, अपज्जवसिया^१ वि य ।
 ठिइं पडुच्च साईया, सपज्जवसिया^२ वि य ॥२००॥
 पलिओवमाइं तिण्णि वि^३, उक्कोसेण वियाहिया ।
 आउठिई मणुयाणं, अंतोमुहुत्तं जहन्निया ॥२०१॥
 पुब्बकोडिपुहत्तेणं, उक्कोसेण वियाहिया ।
 कायठिई मणुयाणं, अंतोमुहुत्तं जहन्निया ॥२०२॥
 अणंतकालमुक्कोत्तं^४, अंतोमुहुत्तं जहन्नियं ।
 विजडंमि सए काए, मणुयाणं तु अंतरं ॥२०३॥
 एएंसि वण्णओ चेव, गंधओ रसफासओ ।
 संठाणादेसओ वावि, विहाणाइं सहस्सओ ॥२०४॥

देवानां वर्णनम्—

देवा चउव्विहा वुत्ता, ते मे कित्तयओ सुण ।
 भोमिज्ज^१ वाणमंतरं^२, जोइस^३ वेमाणिया^४ तहा ॥२०५॥
 बसहा उ भवणवासी, अट्टहा वणचारिणो ।
 पंचविहा जोइसिया, दुविहा वेमाणिया तहा ॥२०६॥
 (१) असुरा^१ नाम^२ सुवण्णा^३, विज्जू^४ अग्गी^५ वियाहिया ।
 दीओ^६ वहि^७ विसा^८ वाया^९, यणिया^{१०} भवणवासिणो ॥२०७॥

(२) पिताय^१ भूय^२ जक्खा^३ य, रक्खसा^४ किन्नरा^५ किपुरिता^६।
महोरगा^७ य गंधव्वा^८, अट्ठविहा वाणमंतरा ॥२०८॥

(३) चंदा^१ सूर^२ य नक्खत्ता^३, गहा^४ तारागणा^५ तहा ।
दिता विचारिणो चेव, पंचहा जोइसालया ॥२०९॥

(४) वेमाणिया उ जे देवा, दुविहा ते वियाहिया ।
कप्पोवगा^१ य बोधव्वा, कप्पाईया^२ तहेव य ॥२१०॥

कप्पोवगा बारसहा, सोहम्मी^१ साणगा^२ तहा ।
सणकुमार^३ माहिदा^४ बंमलोगा^५ य लंतगा^६ ॥२११॥

महासुक्का^७ सहस्सारा^८, आणया^९ पाणया^{१०} तहा ।
आरणा^{११} अच्चुया^{१२} चेव, इइ कप्पोवगा सुरा ॥२१२॥

कप्पाईया उ जे देवा, दुविहा ते वियाहिया ।
गेविज्जगाणुत्तरा चेव, गेविज्जा नवविहा तहिं ॥२१३॥

हेट्ठिमाहेट्ठिमा^१ चेव हेट्ठिमामज्झिमा^२ तहा ।
हेट्ठिमाउवरिमा^३ चेव मज्झिमाहेट्ठिमा^४ तहा ॥२१४॥

मज्झिमामज्झिमा^५ चेव, मज्झिमाउवरिमा^६ तहा ।
उवरिमाहेट्ठिमा^७ चेव, उवरिमामज्झिमा^८ तहा ॥२१५॥

उवरिमाउवरिमा^९ चेव, इय गेविज्जगा सुरा ।
विजया वेजयंता य, जयंता अपराजिया ॥२१६॥

सव्वत्थसिद्धगा चेव, पंचहाणुत्तरा सुरा ।
इइ वेमाणिया एए, ऽणगहा एवमायओ ॥२१७॥

लोगस्स एगदेसंमि, ते सच्चे वि वियाहिया ।
 इत्तो कालविभागं तु, वुच्छं तेसि चउव्विहं ॥२१८॥
 संतइं पप्पणाईया, अपज्जवसियावि^१ य ।
 ठिइं पडुच्च साइया, सपज्जवसियावि^२ य ॥२१९॥
 साहियं सागरं एक्कं^३, उक्कोसेण ठिई भवे ।
 भोमेज्जाणं जहन्नेणं, दसवाससहस्सिया ॥२२०॥
 पलिओवम दो ऊणा, उक्कोसेण विद्याहिया ।
 असुरिंदवज्जेताण जहन्ना दससहस्सगा ॥२२१॥
 पलिओवममेगं तु, उक्कोसेण ठिई भवे ।
 वंतराणं जहन्नेणं, दसवाससहस्सिया ॥२२२॥
 पलिओवममेगं तु, वासलक्खेण साहियं ।
 पलिओवमऽद्दुभागो, जोइसेसु जहन्निया ॥२२३॥
 दो चेव सागराई, उक्कोसेण वियाहिया ।
 सोहंमंमि जहन्नेणं, एगं च पलिओवमं ॥२२४॥
 सागरा साहिया दुन्नि, उक्कोसेण वियाहिया ।
 ईसाणंमि जहन्नेणं, साहियं पलिओवमं ॥२२५॥
 सागराणि य सत्तेव, उक्कोसेण ठिई भवे ।
 सणकुमारे जहन्नेणं, दुन्नि उ सागरोवमा ॥२२६॥
 साहिया सागरा सत्त, उक्कोसेणं ठिई भवें ।
 माहिंदंमि जहन्नेणं, साहिया दुन्नि सागरा ॥२२७॥

दस चेव सागराइं, उक्कोसेण ठिई भवे ।
 बंभलोए जहन्नेणं, सत्त ऊ सागरोवमा ॥२२८॥
 चउद्दससागराइं, उक्कोसेण ठिई भवे ।
 लंतगंमि जहन्नेण, दस ऊ सागरोवमा ॥२२९॥
 सत्तरससागराइं, उक्कोसेण ठिई भवे ।
 महासुक्के जहन्नेणं, चोद्दस सागरोवमा ॥२३०॥
 अट्टारस सागराइं, उक्कोसेण ठिई भवे ।
 सहस्सारे जहन्नेणं, सत्तरस सागरोवमा ॥२३१॥
 सागरा अउणवीसं तु, उक्कोसेण ठिई भवे ।
 आणयंमि जहन्नेणं, अट्टारस सागरोवमा ॥२३२॥
 बीसं तु सागराइ, उक्कोसेण ठिई भवे ।
 पाणयंमि जहन्नेण, सागरा अउणवीसई ॥२३३॥
 सागरा इक्कवीसं तु, उक्कोसेण ठिई भवे ।
 आरणमि जहन्नेणं, बीसई सागरोवमा ॥२३४॥
 बावीसं सागराइं, उक्कोसेण ठिई भवे ।
 अच्चुयमि जहन्नेण, सागरा इक्कवीसई ॥२३५॥
 तेवीससागराइ, उक्कोसेण ठिई भवे ।
 पढममि जहन्नेण, बावीसं सागरोवमा ॥२३६॥
 चउवीसं सागराइं, उक्कोसेण ठिई भवे ।
 बीइयमि जहन्नेणं, तेवीसं सागरोवमा ॥२३७॥

पणवीसं सागराद्दं, उक्कोसेण ठिई भवे ।
 तद्दयमि जहन्नेणं, चउवीसं सागरोवमा ॥२३८॥
 छब्बीस सागराद्दं, उक्कोसेण ठिई भवे ।
 चउत्थंमि जहन्नेणं, सागरा पणवीसई ॥२३९॥
 सागरा सत्तवीसं तु, उक्कोसेण ठिई भवे ।
 पंचममि जहन्नेणं, सागरा उ छवीसई ॥२४०॥
 सागरा अट्ठवीस तु, उक्कोसेण ठिई भवे ।
 छट्ठंमि जहन्नेणं, सागरा सत्तवीसई ॥२४१॥
 सागरा अउणतीसं तु उक्कोसेण ठिई भवे ।
 सत्तमंमि जहन्नेणं सागरा अट्ठवीसई ॥२४२॥
 तीसं तु सागराद्दं, उक्कोसेण ठिई भवे ।
 अट्ठमंमि जहन्नेणं सागरा अउणतीसई ॥२४३॥
 सागरा इक्कतीसं तु, उक्कोसेण ठिई भवे ।
 नवमंमि जहन्नेणं, तीसई सागरोवमा ॥२४४॥
 तेत्तीसा सागराद्दं, उक्कोसेण ठिई भवे ।
 चउसुं पि विजयाईसुं, जहन्नेणेषक्कीसई ॥२४५॥
 अजह्ममणुक्कोसं, तेत्तीसं सागरोवमा ।
 महाविमाणे सच्चट्ठे, ठिई एसा वियाहिया ॥२४६॥
 जा चेव उ आउठिई, देवाणं तु वियाहिया ।
 सा तेसिं कायठिई, जहन्ममुक्कोसिया भवे ॥२४७॥

अणंतकालमुक्कोसं, अतोमुहुत्त जहन्नय ।
 विजडंमि सए काए, देवाणं हुज्ज अंतरं ॥२४८॥
 अणतकालमुक्कोसं, वासपुहुत्तं जहन्नय ।
 आणयाईण कप्पाण, गेविज्जाणं तु अतर ॥२४९॥
 सखिज्जसागरुक्कोसं, वासपुहुत्त जहन्नय ।
 अणुत्तराण य देवाणं, अंतरं तु वियाहिय ॥२५०॥
 एएसिं वण्णओ चेव, गंधओ रसफासओ ।
 संठाणादेसओ वावि, विहाणाइं सहस्ससो ॥२५१॥
 संसारत्था य सिद्धा य, इय जीवा वियाहिया ।
 रुक्खिणो चेवऽरुक्खी य, अजीवा दुविहा वि य ॥२५२॥
 इय जीवमजीवे य, सोच्चा सद्विहियण य ।
 सच्चनयाणमणुमए, रमेज्ज सजमे मुणी ॥२५३॥

सलेखना विधिः—

तओ बहूणी वासाणि, सामण्णमणुपालिया ।
 इमेण कमजोगेण, अप्पाण संलिहे मुणी ॥२५४॥
 बारसेव उ वासाइ संलेहुक्कोसिया भवे ।
 संवच्छरं मज्झिमिया, छम्मासा य जहम्मिया ॥२५५॥
 पढमे वासच्चउक्कंमि, विगई-निज्जूहणं करे ।
 बिइए वासच्चउक्कंमि, विवित्तं तु तवं चरे ॥२५६॥

एगं त र मा या मं, कट्टु सं व च्छ रे वु वे ।
 तओ सं व च्छ रद्धं तु, नाइविगिट्ठं तवं च रे ॥२५७॥
 तओ स व च्छ रद्धं तु, विगिट्ठं तु तवं च रे ।
 परिमियं चेव आयामं, तंमि सं व च्छ रे करे ॥२५८॥
 कोडी सहियमायामं, कट्टु सं व च्छ रे मुणी ।
 मासद्धमासिएणं तु आहारेण तवं च रे ॥२५९॥

संयमस्य विराधनाया-आराधनायाश्चफलम्-

कंदप्पमाभिओगं च, किब्बिसियं मोहमासुरत्तं च ।
 एयाउ दुग्गईओ, मरणंमि विराहिया होति ॥२६०॥
 मिच्छादंसणरत्ता, सनियाणा उ हिंसगा ।
 इय जे मरंति जीवा, तेसि पुण 'दुल्लहा बोही' ॥२६१॥
 सम्मदंसणरत्ता, अनियाणा सुक्कलेसमोगाढा ।
 इय जे मरंति जीवा, तेसि 'सुलहा भवे बोही' ॥२६२॥
 मिच्छादंसणरत्ता, सनियाणा कण्हलेसमोगाढा ।
 इय जे मरंति जीवा, तेसि पुण 'दुल्लहा बोही' ॥२६३॥
 जिणवयणे अणुरत्ता, जिणवयणं जे करंति भावेण ।
 अमला असंकलिट्ठा, ते होति परित्तसंसारी ॥२६४॥
 बालमरणाणि बहुसो, अकाममरणाणि चेव य बहूणि ।
 मरिहंति ते वराया, जिणवयणं जे न जाणंति ॥२६५॥

बहुभागमविज्ञाणा, समाहिउप्पायगा य गुणगाही ।
 एएणं कारणेण, अरिहा आलोयण सोजं ॥२६६॥
 कंदप्पकुक्कुयाइ, तह सीलसहावहासविगहाइं ।
 विम्हावेतोय परं, कंदप्प भावणं कुणइ ॥२६७॥
 संताजोगं काउं, भूइकम्मं च जे पउंजंति ।
 साय-रम-इडिदहेउं, आभिओगं भावणं कुणइ ॥२६८॥
 नाणस्स केवलीणं, धम्मायरियस्स संघसाहूणं ।
 माई अवण्णवाई, किंविंसियं भावणं कुणइ ॥२६९॥
 अणुवद्धरोसपसरो, तह य निमित्तमि होइ पडिसेवी ।
 एएहि कारणेहि, आसुरियं भावणं कुणइ ॥२७०॥
 सत्थगहण विसभक्खण च, जलण च जलप्पवेसो य ।
 अणायारभंडसेवी, जम्मणमरणाणि वंघंति ॥२७१॥
 इइ पाउकरे वुद्धे, नायए परिनिब्बुए ।
 छत्तीस उत्तरज्ज्ञाए, भवसिद्धियसंवुडे ॥२७२॥
 ॥ त्ति वेमि ॥

॥ मूल सुत्ताणि ॥

(३)

नंदि-सुत्तं

(उक्कालियं)

॥ वियाले वि पढिज्जति ॥

नामकरण—

नंदंति जेण तव-संजमेसु नेव य दरत्ति खिज्जति ।

जायंति न वीणा व, नंदी अ तत्तो समयसत्ता ॥१॥

अ० रा० कोश—

उद्धरण—

पंचमनाण-पुढ्वाओ, तह अंगा उवगाओ ।

आयरिय देवडिढणा, नंदी-मुत्तं सुयोजिय ॥२॥

विसयणिहेसो

- वीरत्युई संघथुई य पुब्बं,
पच्छा य तित्थंगर-नामयाणि ।
नामाणि तत्तो गणहराणं,
तओ थवो णं जिणसासणस्स ॥१॥

थेरावली चउद्दस, दिट्ठताणि य सोऊणं ।

तिणिण परिसयाणं च, भेया पच्छा उ वणिण्या ॥२॥

पंचण्हं खलु नाणाणं, णाम-निहेसणं कयं ।

तओ पच्छा य पच्चक्खं, ओहिनाणं तु वणिगयं ॥३॥

तओ पच्चक्ख-नाणस्स, मणस्स केवलस्स य ।

संगोवंगं सुवण्णहं, वित्थरेण पकित्तियं ॥४॥

परोक्ख-मइनाणस्स, दिट्ठिभेएण कित्तणं ।
 पच्छा चउण्ह बुद्धीणं, सोदाहरण-वण्णनं ॥५॥
 परोक्ख-सुयणाणस्स, भेया बुत्ता चउइसा ।
 एक्कारसंगयस्सावि, तओ पच्छा उ वण्णना ॥६॥
 तओ पच्छा उ संखित्तं, अणुभोगो य चूलिया ।
 दिट्ठिवाओ य सपुब्बो, वण्णिया य जहक्कमं ॥७॥
 बुवालस्स य अंगस्स, आराहणाअ जं फल ।
 वण्णिज्जण उ तं सच्चं, बुत्ता अंगाण निच्चया ॥८॥

णाण-महिमा :-

उक्कोसियं णं भंते ! णाणाराहणं आराहेत्ता कतिहिं भवग्गहणेहिं—
सिज्झंति मुच्चंति परिनिव्वायंति सव्व-दुक्खाणमंतं करेति ?
गोयमा !

अत्थेगइए तेणेव भवग्गहणेणं सिज्झंति जाव
सव्वदुक्खाणमंतं करेति । अत्थेगइए दोच्चेणं भवग्गहणेणं
सिज्झंति . . . जाव . . . सव्वदुक्खाणमंतं करेति ।

अत्थेगइए कप्पोवएसु वा कप्पातीएसु वा उववज्जंति ।
मज्झिमियं णं भंते ! णाणाराहणं आराहेत्ता कतिहिं
भवग्गहणेहिं—ज्झंति वुज्झंति मुच्चंति परिनिव्वायंति
सव्वदुक्खाणमंतं करेति ?

गोयमा !

अत्थेगइए दोच्चेणं भवग्गहणेणं सिज्झंति . . . जाव . . .
सव्वदुक्खाणमंतं करेति । तच्चं पुण भवग्गहणं नाइक्कमइ ।

जहन्नियं णं भंते ! णाणाराहणं आराहेत्ता कतिहिं
भवग्गहणेहिं—सिज्झंति . . . जाव . . . सव्व-
दुक्खाणमंतं करेति ?

गोयमा !

अत्थेगइए तच्चेणं भवग्गहणेणं सिज्झइ जाव .
सव्वदुक्खाणमंतं करेइ—सत्तद्दुभवग्गहणाइं पुण नाइक्कमइ ।

अग श. ८ उ. १०. सू.

* णमोऽस्तु ण तस्स समणस्स भगवओ महावीरस्स *

नंदि-सुत्तं

वीरस्तुतिं -

जयइ जग-जीव-जोणी, वियाणओ जगगुरू जगाणंदो ।
ज ग णा हो जगबंधू, जयइ जगप्पियामहो भयवं ॥१॥
जयइ सुआणं पभवो, तित्थयराणं अपच्छिमो जयइ ।
जयइ गुरू लोगाणं, जयइ महप्पा महावीरो ॥२॥
भद्दं सव्वजगुज्जोयगस्स, भद्दं जिणस्स वीरस्स ।
भद्दं सुरासुरनमंसियस्स, भद्दं धु य र य स्स ॥३॥

॥४॥

गुण-भवण-गाहण, सुय-रयण-भरिय-वंसण-विसुद्ध-रत्थागा ।
संघ-नगर ! भद्दं ते, अखंड-चरित्त-पागारा ॥४॥

। -तव-तु आरयस्स, नमो सम्मत्तपारियत्तस्स ।
अप्पडिचक्कस्स जओ, होउ सया संघ-वक्कस्स ॥५॥
भद्दं सीलपडागूसियस्स, तव-नियम-नुरय-जुत्तस्स ।
संघ-रहस्स भगवओ, सज्झायसुनंविघोसस्स ॥६॥

कम्मरय-जलोहविणिग्गयस्स, सुयरयण-दीहनालस्स ।
 पंचमहच्चय-थिरकणियस्स, गुणकेसरालस्स ॥७॥
 सावग-जण-महुअरिपरिवुडस्स, जिण-सूर-तैयवुद्धस्स ।
 संघ-पउमस्स भद्दं, समण-गण-सहस्सपत्तस्स ॥८॥
 तव-संजम मय-लंछण ! अकिरिय राहुमुह-दुद्धरिस्स ! निच्चं ।
 जय संघचंद ! निम्मल, -सम्मत्तविमुद्ध जोण्हागा ! ॥९॥
 परतित्थिय-गह-पह-नासगस्स, तवतेयदित्त लेसस्स ।
 ना णु ज्जो य स्स ज ए, भद्दं द म सं घ-सू र स्स ॥१०॥
 भद्दं धिइवेला परिगयस्स, सज्झाय जोग मगरस्स ।
 अक्खोहस्स भगवओ, सघसमुदस्स रुंदस्स ॥११॥
 स म्म दं स ण-व र वड्ढर, -दढरूढगाढावगाढ-पेढस्स ।
 धम्मवर-रयण-मंडिय-चामोयर-मे हला गस्स ॥१२॥
 नियमूसिय कणय, सिलायलुज्जल जलंत-चित्त-कूडस्स ।
 नंदणवण मणहर सुरभि, सीलगंधुद्धुमायस्स ॥१३॥
 जीवदया-सुंदर-कंदरूद्धरिय-मुणिवर मइंदइत्तस्स ।
 हेउ-सयधाउपगलंत रयणदित्तोत्तहि गुहस्स ॥१४॥
 संवरवर जल पगलिय, उज्झरपविरायमाणहारस्स ।
 सावग-जण पउर-रवंत, मोर नच्चंत कुहरस्स ॥१५॥
 विणय-नय-पवर मुणिवर, फुरंत विज्जुज्जलंत सिहरस्स ।
 विविहगुण कप्परुक्खग, फलभरकुसुमाउलवणस्स ॥१६॥

नाणवर-रयण-दिप्पंत, कंतवेरुलियविमलवूलस्त ।
 वंदामि विणयपणओ, संघ-महामंदरगिरिस्त ॥१७॥
 गुण-रयणुज्जलकडयं सीलसुगंधि-तवमंडिउद्देसं ।
 सुय-वारसग-सिहरं, संघ-महामंदरं वंदे ॥१८॥
 नगर^१रह^२चक्क^३पउमे^४, जंदे^५सूरे^६समुद्द^७मेरुंमि^८ ।
 जो उवमिज्जइ सययं, तं संघ-गुणायरं वंदे ॥१९॥

तीर्थकरनामानि :-

वंदे उसमं^१मज्जियं^२संभव^३, मभित्तं^४सुमइ^५सुप्पभ^६सुपासं^७ ।
 सत्ति^८पुप्फदंत^९सीयल^{१०}, सिज्जंसं^{११}वासुपुज्जं^{१२}च ॥२०॥
 विमल^{१३}मणत्तं^{१४}य धम्मं^{१५}, सत्ति^{१६}कुंथु^{१७}अरं^{१८}च मल्लि^{१९}च ।
 सुणिसुख्य^{२०}-त्तमि^{२१}-नेमि^{२२}, पासं^{२३}तह वद्धमाणं^{२४}च ॥२१॥

गणधरनामानि :-

पढमित्थ इंदमूई^१, वीए पुण होइ अग्निभूह^२त्ति ।
 तइए य वाउभूई^३, तओ वियत्ते^४सुहम्मे^५य ॥२२॥
 मंडिअ^६-भोरियपुत्ते,^७ अकंपिए^८चेव अयलभाया^९य ।
 मेयज्जे^{१०}य पहात्ते^{११}, गणहरा हुंति वीरस्त ॥२३॥

जिनशासनस्तुति :-

निव्वुइ-पह-सासणयं, जयइ सया सब्बभाव-वेसणयं ।
 कुसमय-मयनासणयं, जिणंदवर वीरसासणयं ॥२४॥

स्थविरावली :-

सुहम्म^१ अग्निवेसाणं, जवूनाम^२ च कात्तवं ।
 पभवं^३ कच्चायण वदे, वच्छं सिज्जंभवं^४ तथा ॥२५॥
 जसभद्द^५ तुगियं वदे, सभूयं^६ चेव माढरं ।
 भद्दवाहुं^७ च पाइल्लं, थूलभंद्दं^८ च गोयम ॥२६॥
 एलावच्चसगोत्तं, वंदामि महागिरि^९ सुहात्थि^{१०} च ।
 तत्तो कोत्तियगोत्तं, बहुलस्स^{११} सरिच्चयं वंदे ॥२७॥
 हारियगुत्तं साइं^{१२} च, वंदिमो हारियं च सामज्जं^{१३} ।
 वदे कोत्तियगोत्तं, सडिल्लं^{१४} अज्जजीयधरं ॥२८॥
 ति-समुद्द-खायकित्ति, दीवसमुद्देसु गहिय-पेयाल ।
 वंदे अज्जसमुद्दं^{१५}, अक्खुभिय-समुद्द-भंभीरं ॥२९॥
 भणग करग, झरगं, पभावगं णाण-दंसणगुणाणं ।
 वंदामि अज्जमंगु^{१६}, सुयसागरपारगं धीरं ॥३०॥
 * वंदामि अज्जघम्मं,^{१७} तत्तो वंदे य भद्दगुत्तं^{१८} च ।
 तत्तो य अज्जवड्ढरं^{१९}, तव-नियम-गुणोहं वड्ढरसमं ॥३१॥
 * वंदामि अज्जरक्खिय^{२०}, खमणे रक्खिय-चारित्त सच्चस्ते ।
 रयणकरंडगभूओ अणुओगो रक्खिओ जेहिं ॥३२॥
 नार्णमि दंसणमि य, तव-विणए णिच्चकालमुज्जुत्तं ।
 अज्जं नदिल-खवण^{२१}, सिरस्ता वंदे पसन्नमणं ॥३३॥

गाथाद्वय वृत्तौ नोक्तम्

वड्ढउ वायगवंशो, जसवंशो अज्जनागहत्थीणं^{२३} ।

वागरण-करण-भंगिय, कम्मपयडीपहाणाणं ॥३४॥

जच्चंजणघाउसमप्पहाणं, मुद्दिय-कुवलयनिहाणं ।

वड्ढउ वायगवंसो, रेवइ-नक्खत्तनामाणं^{२४} ॥३५॥

“अयलपुरा” निक्खंते, कालियसुअ-अणुओगिए घीरे ।

“बभदीवग”-सीहे,^{२५} वायगपयमुत्तमं पत्ते ॥३६॥

जोसं इमो अणुओगो, पयरइ अज्जावि अड्ढभरहंमि ।

बहुनयरनिगयजसे, ते वंदे खंदिलायरिए^{२६} ॥३७॥

तत्तो हिमवंत-महंत-वक्कमे, धिइपरक्कममणंते ।

सज्झायमणंतधरे, हिमवंते^{२७} वंदिमो सिरसा ॥३८॥

कालिय-सुय-अणुओगस्स-धारए, धारए य पुव्वाणं ।

हिमवंतखमासमणे, वंदे णागज्जुणायरिए^{२८} ॥३९॥

मिउमद्दवसंपत्ते अणुपुज्जिं वायगत्तणं पत्ते ।

ओहसुयसमायारे, नागज्जुणवायए वंदे ॥४०॥

गोविंदाणं^{२९} पि नमो, अणुओगे विउलधारणिंदाणं ।

णिच्चं खंतिदयाणं, परूवणे दुल्लभिंदाणं ॥४१॥

तत्तो य भूयदिन्नं^{३०}, निच्चं तव-संजमे अनिव्विणं ।

पंडियजणसामन्नं, वंदामी संजमविहलू ॥४२॥

वर-कणग-तविष्य-चंपग, विमज्जल-वर-कमलगवभसरिवभे ।
 भविष्यजणहिययदइए, दयागुणविसारए धीरे ॥४३॥
 अड्ढभरहप्पहाणे, बहुविह-सज्झाय-सुमुणियपहाणे ।
 अणुओगियवरवसभे, नाइलकुलवंसनंदिकरे ॥४४॥
 भूयहियप्पगवभे, वदे ऽह भूयद्विन्नमायरिए ।
 भवभयवोच्छेयकरे, सीते नागुज्जुणरिसोणं ॥४५॥
 सुमुणिय निच्चानिच्च, सुमुणिय सुत्तत्यधारयं वंदे ।
 सव्भावुव्भावणया, तत्थ लोहिच्च^{३०} णामाणं ॥४६॥
 अत्यमहत्यखाणि, सुसमणवक्खाणकहण निच्चानि ।
 पयईए महरवाणि, पयओ पणमामि *दसगणि^{३१} ॥४७॥
 तव-नियम-सच्च-संजम, विणयज्जव-वृत्ति-मद्ववरयाणं ।
 सीलगुणगादियाण, अणुओगजुगप्पहाणाणं ॥४८॥
 सुकुमालकोमलतले, तेसि पणमामि लक्खणपमत्ये ।
 पाए पावयणीणं, पडिच्छयसयएहिं पणिवइए ॥४९॥
 जे अग्ने भंगवन्ते, कालियसुय-आणुओगिए धीरे ।
 ते पणमिऊण सिरसा, नाणस्स परुवणं वोच्छं ॥५०॥

मेरुतुगस्यविरावली :-

* सूरि बलिस्सह साई, समज्जो संडिलो य जीयधरो ।
 अज्जसमुदो मंगू, नदिल्लो नागहत्थी य ॥
 रेवई सिहो खदिल, हिमव नागज्जुणा य गोविंदा ।
 सिरिभूइदिन्न-लोहिच्च, दूसगणिणो य देवड्ढी ॥
 *सुत्तत्य-रयणभरिए, खम-दम-मद्ववगुणेहिं संपन्ने ।
 देवड्ढिखमासमणे, कासवगुत्ते पणिवयामि ॥

શ્લોકચતુર્દશદ્વિષ્ટાન્તાનિ :-

મેલ-ઘણ^૧ કુહગ^૨-ચાલણ^૩,
 પરિપુણગ^૪-હંસ^૫-મહિસ^૬-મેસે^૭ ય ।
 મસગ^૮-જલૂગ^૯ વિરાલી^{૧૦}.
 જાહગ^{૧૧}-શો^{૧૨}-મેરિ^{૧૩} આશીરી^{૧૪} ॥૧॥

ત્રિવિધા પરિષદા :-

સા સમાસઓ તિવિહા પણ્ણત્તા,
 તં જહા-
 જાણિયા, અજાણિયા, દુઘ્વિયડ્ઢા ।
 જાણિયા જહા-

હીરમિવ જહા હંસા, જે ઘુટ્ટંતિ ઇહ ગુદગુણસમિદ્ધા ।
 દોસે અ વિવજ્જંતો, ત જાણસુ જાણિયં પરિસં ॥૨॥

અજાણિયા જહા-

જા હોઇ પગડ-મહુરા, મિયછાવય-સીહ-કુવકુડયમ્મઆ ।
 રયણમિવ અસંઠવિઆ, અજાણિયા સા મ્મવે પરિસા ॥૩॥

૬^૧ જહા-

ન ય કત્થઇ નિમ્માઓ, ન ય પુચ્છઇ પરિમ્મવસ્સદોસેણ
 વત્થિવ્વ વામપુણ્ણો, ફુટ્ટુઢ ગામિલ્લય વિમ્મડ્ઢો ॥૪॥

पंचविधज्ञानम्—

सुत्तं १ नाणं पंचविहं पणवत्तं,

तं जहा—

१ आमिणिबोहियनाण,

२ सुयनाणं,

३ ओहिनाण,

४ मणपज्जवनाण,

५ केवलनाणं ।

सुत्तं २ तं समासओ दुविहं पणवत्तं,

तं जहा—

१ पच्चक्खं च, २ परोक्खं च ।

सुत्तं ३ से किं तं पच्चक्खं ?

पच्चक्खं दुविहं पणवत्तं,

तं जहा—

१ इदिय-पच्चक्खं, २ नोइदिय-पच्चक्खं ।

सुत्तं ४ से किं तं इंदिय-पच्चक्खं ?

इदिय-पच्चक्खं पंचविहं पणवत्तं,

तं जहा—

१ सोइंदिय-पच्चक्खं,

२ चर्खिदिय-पच्चक्खं,

३ घाणिदिय-पच्चक्खं,

४ जिहिदिय-पच्चक्खं,

५ फासिदिय पच्चक्खं,

से तं इदिय-पच्चक्खं ।

सुत्तं ५ से किं तं नोइंदिय-पच्चक्खं ?

नो इंदिय-पच्चक्खं तिविहं पणत्तं,

तं जहा—

१ ओहिनाणं-पच्चक्खं,

२ मणपज्जवनाण-पच्चक्खं,

३ केवलनाण-पच्चक्खं ।

। धम —

६ से किं तं ओहिनाण-पच्चक्खं ?

ओहिनाण-पच्चक्खं दुविहं पणत्तं

तं जहा—

१ भव-पच्चइयं, २ खओवसमियं च ।

७ से किं तं भव-पच्चइयं ?

भव-पच्चइयं दुण्हं,

तं जहा—

१ देवाणं य, २ नेरइयाणं य ।

मुत्त ८ से कि त खओवसमिय ?

खओवसमियं दुण्हं,

तं जहा—

१ मणुत्ताण य,

२ पंचिदियतिरिखजोणियाण य ।

को हेऊ खाओवसमियं ?

खाओवसमिय-तयावरणिज्जाण कम्माणं-

उदिण्णाण छएण, अणुदिण्णाण उवसमेण-

ओहिनाणं समुप्पज्जइ ।

मुत्त ९ अहवा गुणपडिवत्तस्स अणगारस्स—

ओहि-नाणं समुप्पज्जइ,

त समासओ छड्विहं पणत्तं,

त जहा—

१ आणुगामिय, २ अणाणुगामियं,

३ वड्ढमाणयं, ४ हीयमाणय,

५ पडिवाइय ६ अप्पडिवाइय ।

मुत्त १० से कि त आणुगामिय ओहिनाण ?

आणुगामिय ओहिनाणं दुविहं पणत्तं,

तं जहा—

१ अंतगयं च २ मज्झगयं च ।

से किं तं अंतगयं ?

अतगयं तिविह पण्णत्तं,

तं जहा—

१ पुरओ अंतगयं,

२ मग्गओ अंतगयं,

३ पासओ अंतगयं ।

(१) से किं तं पुरओ अंतगयं ?

पुरओ अंतगयं—

से जहानामए केइ पुरिसे,

उक्कं वा, चडुलियं वा, अत्तायं वा,

माणिं वा, जोइं वा, पईवं वा,

पुरओ काउं पणुल्लेमाणे पणुल्लेमाणे गच्छेज्जा ।

से तं पुरओ अंतगयं ।

(२) से किं तं मग्गओ अंतगयं ?

मग्गओ अंतगयं—

से जहानामए केइ पुरिसे,

उक्कं वा, चडुलियं वा, अत्तायं वा,

माणिं वा, जोइं वा, पईवं वा,

मग्गओ काउं अणुकड्ढेमाणे अणुकड्ढेमाणे गच्छेज्जा,

से तं मग्गओ अंतगयं ।

(३) से कि तं पासओ अंतगयं ?

पासओ अतगय—

से जहा नामए केइ पुरिसे,

उक्कं वा, चडुलिय वा, अलायं वा,

मणि वा, जोइ वा, पईवं वा,

पुरओ काउं परिकड्ढेमाणे परिकड्ढेमाणे गच्छिज्जा ।

से तं पासओ अंतगयं ।

से तं अंतगयं ।

से कि त मज्झगयं ?

मज्झगय—

से जहा नामए केइ पुरिसे,

उक्कं वा, चडुलिय वा, अलाय वा,

मणि वा, जोइ वा, पईवं वा,

मत्थए काउ समुव्वहमाणे समुव्वहमाणे गच्छिज्जा,

से तं मज्झगयं ।

अंतगयस्स मज्झगयस्स य को पइविसेसो ?

पुरओ अंतगएणं ओहिनाणेणं पुरओ चेव

सखिज्जाणि वा असंखिज्जाणि वा जोयणाइ जाणइ, पासइ ।

मगओ अंतगएण ओहिनाणेण मगओ चेव

संखिज्जाणि वा असंखिज्जाणि वा जोयणाइं जाणइ, पासइ ।
 पासओ अंतगएणं ओहिनाणेणं पासओ चैव
 संखिज्जाणि वा असंखिज्जाणि वा जोयणाइं जाणइ, पासइ ।
 मज्झगएणं ओहिनाणेणं सब्बओ समंता—
 संखिज्जाणि वा असंखिज्जाणि वा जोयणाइं जाणइ, पासइ ।
 से त्त अणुगामिय ओहिनाणं ॥१०॥

सुत्तं ११ से किं त अणुगामिय ओहिनाण ?

अणुगामियं ओहिनाण से जहा नामए केइ पुरिसे एण
 महत्त जोइट्ठाण काउ तस्सेव जोइट्ठाणस्स परिपेरत्तेहिं, परिपेरत्तेहिं
 परिघोलेमाणे परिघोलेमाणे तमेव जोइट्ठाण पासइ ।
 अन्नत्थगए न जाणइ, न पासइ ।

एवामेव अणुगामिय ओहिनाण जत्थेव समुप्पज्जइ
 तत्थेव संखेज्जाणि वा, असंखेज्जाणि वा,
 संबद्धाणि वा, असंबद्धाणि वा,
 जोयणाइ जाणइ पासइ ।
 अन्नत्थगए (न जाणइ) न पासइ ।
 से त्तं अणुगामियं ओहिनाणं ।

सुत्तं १२ से किं त वड्ढमाणय ओहिनाणं ?

वड्ढमाणयं ओहिनाणं—
 पसत्थेसु अज्झवसायट्ठाणेषु वट्ठमाणस्स वड्ढमाणचरित्तस्स

विमुज्जमाणस्स विमुज्जमाण-चरित्तस्स

सत्त्वओ समंता ओही वड्ढइ ।

गाहाओ-

जावइया तिसमया-हारगस्म, सुहुमस्स पणगजीवस्स ।

ओगाहणा जहन्ना, ओहिखित्तं जहन्नं तु ॥१॥

सव्व-बहु-अगणिजीवा, निरंतरं जत्तियं भरिज्जंसु ।

खित्तं सव्वदिसागं, परमोही खित्तं निद्धिद्धो ॥२॥

अंगुलमावलियाणं, भागमसखिज्ज दोमु संखिज्जा ।

अंगुलमावलिअंतो, आवलिया अंगुलपुहुत्तं ॥३॥

हत्थंमि मुहुत्तंतो, दिवसतो गाउअंमि बोद्धव्वो ।

जोयण दिवसपुहुत्तं, पक्खतो पन्नवीसाओ ॥४॥

भरहमि अड्ढमासो, जंवुद्धिवमि साहिओ मासो ।

वासं च मणुयलोए, वासपुहुत्तं च ख्यगंसि ॥५॥

सखिज्जमि उ काले, दीवसमुद्दा वि होति संखिज्जा ।

कालंमि असखिज्जे, दीवसमुद्दा उ भइयव्वा ॥६॥

काले चउण्ह वुड्ढी, कालो भइअच्चु खित्तवुड्ढीए ।

वुड्ढीए दव्वपज्जव, भइयव्वा खित्तकाला उ ॥७॥

सुहुमो य होइ कालो, तत्तो सुहुमयर हवइ खित्तं ।

अंगुलसेढीमित्ते, ओसप्पिणिओ असखिज्जा ॥८॥

से त्तं वड्ढमाणय ओहिनाणं ।

सुत्तं १३ से किं तं हीयमाणयं ओहिनाणं ?

हीयमाणयं ओहिनाणं—अप्पसत्थेहि अज्झवसायट्ठारोह
वट्टमाणस्स वट्टमाण चरित्तस्स
संकिलिस्समाणस्स, संकिलिस्समाण—चरित्तस्स
सम्भवो समन्ता ओही परिहायइ,
से त्तं हीयमाणयं ओहिनाणं ।

सुत्तं १४ से किं तं पडिवाइ ओहिनाणं ?

पडिवाइ-ओहिनाणं जहन्नेणं अंगुलस्स—
असंखिज्जइ भागं वा, संखिज्जइ भागं वा,
बालगं वा, बालगपुहुत्तं वा,
लिक्खं वा, लिक्खपुहुत्तं वा,
जूयं वा, जूयपुहुत्तं वा,
जवं वा, जवपुहुत्तं वा,
अंगुलं वा, अंगुलपुहुत्तं वा,
पायं वा, पायपुहुत्तं वा,
विहत्थि वा, विहत्थिपुहुत्तं वा,
रयणिं वा, रयणिपुहुत्तं वा,
कुच्छि वा, कुच्छिपुहुत्तं वा,
धणुं वा, धणुपुहुत्तं वा,
गाउयं वा, गाउयपुहुत्तं वा,

जोयणं वा, जोयणपुहुत्तं वा,
 जोयणसय वा, जोयणसयपुहुत्तं वा,
 जोयणसहस्सं वा, जोयणमहस्सपुहुत्तं वा,
 जोयणलक्ख वा, जोयणलक्खपुहुत्तं वा,
 जोयण-कोडि वा, जोयण-कोडिपुहुत्तं वा,
 जोयण-कोडाकोडि वा, जोयण-कोडाकोडिपुहुत्तं वा,
 जोयण-संखेज्जं वा, जोयण-संखेज्जपुहुत्तं वा,
 जोयण-असंखेज्जं वा, जोयण-असंखेज्जपुहुत्तं वा,
 उक्कोसेण लोय वा पासित्ताण पडिचइज्जा ।
 से त्त पडिवाइ ओहिनाण ।

सुत्त १५ से कि त अपडिवाइ-ओहिनाणं ?

अपडिवाइ-ओहिनाणं-

जेण अलोगस्स एगमवि आगास-पएस जाणइ, पासइ ।

तेण परं अपडिवाइओहिनाण ।

से त्तं अपडिवाइ-ओहिनाण ।

सुत्त १६ त समासओ चउच्चिह पणत्त,

त जहा-

दव्वओ, खेत्तओ, कालओ, भावओ ।

तत्थ दव्वओ णं ओहिनाणी-

जहन्नेणं अणंताइं रुविदव्वाइं जाणइ, पासइ ।

उक्कोसेणं सव्वाइं रुविदव्वाइं जाणइ, पासइ ।

खित्तओ णं ओहिनाणी-

जहन्नेणं अंगुलस्स असंखिज्जइभागं जाणइ, पासइ ।

उक्कोसेणं असंखिज्जाइं-

अलोगे लोणप्पमाणमित्ताइं खंडाइं जाणइ, पासइ ।

कालओ णं ओहिनाणी-

जहन्नेणं आवलियाए असंखिज्जइभागं जाणइ, पासइ ।

उक्कोसेणं असंखिज्जाओ उस्सप्पिणीओ अवसप्पिणीओ-

अईयमणागयं च कालं जाणइ, पासइ ।

भावओ णं ओहिनाणी-

जहन्नेणं अणंते भावे जाणइ, पासइ,

उक्कोसेण वि अणंते भावे जाणइ, पासइ ।

सव्वभावाणमणंतभागं जाणइ, पासइ ।

गाहाओ-

ओही भवपच्चइओ, गुणपच्चइओ य वण्णिओ दुविहो ।

तस्स य बहू विगप्पा, दव्वे खित्ते अ काले य ॥९॥

नेरइय-देव-तित्थंकरा य, ओहिस्स ऽवाहिरा हुंति ।

पासंति सव्वओ खलु, सेसा वेसेण पासंति ॥१०॥

से तं ओहिनाण-पच्चदखं ।

मनः पर्यवज्ञानम्ः—

सु १७ से किं तं मणपज्जवनाणं ?

मणपज्जवनाणं भंते ! किं मणुस्साणं उप्पज्जइ, अमणुस्साणं ?
गोयमा ! मणुस्साणं, नो अमणुस्साणं ।

जइ मणुस्साणं—

किं सम्मुच्छिम-मणुस्साणं, गढभवक्कतिय-मणुस्साणं ?
गोयमा ! णो सम्मुच्छिम-मणुस्साणं, गढभवक्कतिय-मणुस्साणं ।

जइ गढभवक्कतिय-मणुस्साणं—

किं कम्मभूमिअ-गढभवक्कतिय-मणुस्साणं,
अकम्मभूमिय-गढभवक्कतिय-मणुस्साणं,
अंतरदीवग-गढभवक्कतिय-मणुस्साणं ?

गोयमा ! कम्मभूमिअ-गढभवक्कतिय-मणुस्साणं,
णो अकम्मभूमिअ-गढभवक्कतिय-मणुस्साणं,
णो अंतरदीवग-गढभवक्कतिय-मणुस्साणं ।

जइ कम्मभूमिअ-गढभवक्कतिय-मणुस्साणं—

किं सखेज्जवासाउय-कम्मभूमिअ-गढभवक्कतिय-मणुस्साणं,
असंखेज्जवासाउय-कम्मभूमिअ-गढभवक्कतिय-मणुस्साणं ?

गोयमा ! संखेज्जवासाउय-कम्मभूमिअ-गढभवक्कतिय-मणुस्साणं,
णो असंखेज्जवासाउय-कम्मभूमिअ-गढभवक्कतिय-मणुस्साणं ।

जइ संखेज्जवासाउय-कम्मभूमिअ-गब्भवक्कंतिय मणुस्साण-

किं पज्जत्तग-संखेज्जवासाउय-कम्मभूमिअ-गब्भवक्कंतिय-मणुस्साण-

अपज्जत्तग-संखेज्जवासाउय-कम्मभूमिअ-गब्भवक्कंतिय-मणुस्साण-

गोयमा । पज्जत्तग - संखेज्जवासाउय - कम्मभूमिअ - गब्भवक्कंतिय-

मणुस्साणं,

णो अपज्जत्तग-संखेज्जवासाउय-कम्मभूमिअ-गब्भवक्कंतिय-मणुस्साणं ।

जइ पज्जत्तग-संखेज्जवासाउय-कम्मभूमिअ-गब्भवक्कंतिय-मणुस्साण-

किं सम्मदिट्ठि-पज्जत्तग-संखेज्जवासाउय-कम्मभूमिअ-गब्भवक्कंतिय-

मणुस्साणं,

मिच्छदिट्ठि-पज्जत्तग-संखेज्जवासाउय-कम्मभूमिअ-गब्भवक्कंतिय-

मणुस्साणं,

सम्माभिच्छदिट्ठि - पज्जत्तग - संखेज्जवासाउय - कम्मभूमिअ-

गब्भवक्कंतिय-मणुस्साणं ?

गोयमा ! सम्मदिट्ठि-पज्जत्तग-संखेज्जवासाउय-कम्मभूमिअ-

गब्भवक्कंतिय-मणुस्साणं,

णो मिच्छदिट्ठि-पज्जत्तग-संखेज्जवासाउय-कम्मभूमिअ-गब्भवक्कंतिय-

मणुस्साणं,

णो सम्माभिच्छदिट्ठि - पज्जत्तग - संखेज्जवासाउय - कम्मभूमिअ-

गब्भवक्कंतिय-मणुस्साणं,

जइ सम्मदिट्ठि-पज्जत्तग-संखेज्जवासाउय-कम्मभूमिअ-गब्भवक्कंतिय-

मणुस्साणं-

किं सजय - सम्मदिट्ठि - पज्जत्तग - संखेज्जवासाउय - कम्मभूमिअ-
गव्वभवक्कतिय-मणुस्साण,

असजय- सम्मदिट्ठिपज्जत्तग-संखेज्जवासाउय-कम्मभूमिअ - गव्वभवक्कं
तिय-मणुस्साणं,

संजयासजय - सम्मदिट्ठि-पज्जत्तग - संखेज्जवासाउय - कम्मभूमिअ-
गव्वभवक्कतिय मणुस्साण ?

गोयमा ! सजय-सम्मदिट्ठि - पज्जत्तग-संखेज्जवासाउय-कम्मभूमिअ-
गव्वभवक्कतिय-मणुस्साण,

णो असंजय - सम्मदिट्ठि-पज्जत्तग - संखेज्जवासाउय - कम्मभूमिअ-
गव्वभवक्कतिय-मणुस्साण,

णो सजयासजय-सम्मदिट्ठि-पज्जत्तग-संखेज्जवासाउय-कम्मभूमिअ-
गव्वभवक्कतिय-मणुस्साणं ।

जइ सजय-सम्मदिट्ठि - पज्जत्तग - संखेज्जवासाउय - कम्मभूमिअ-
गव्वभवक्कतिय-मणुस्साणं-

किं पमत्त-सजय-सम्मदिट्ठि-पज्जत्तग- संखेज्जवासाउय-कम्मभूमिअ-
गव्वभवक्कतिय-मणुस्साण,

अपमत्त-संजय-सम्मदिट्ठि- पज्जत्तग - संखेज्जवासाउय - कम्मभूमिअ-
गव्वभवक्कतिय-मणुस्साण ?

गोयमा ! अपमत्त-संजय-सम्मदिट्ठि - पज्जत्तग - संखे
कम्मभूमिअ-गव्वभवक्कतिय-मणुस्साणं,

णो पमत्त-संजय-सम्मदिट्ठि-पज्जत्तग-संखेज्जवासाउय-कम्मभूमिय-
गव्वभवक्कंतिय-मणुस्साणं—

जइ अपमत्त-संजय-सम्मदिट्ठि-पज्जत्तग-संखेज्जवासाउय-कम्मभूमिय-
गव्वभवक्कंतिय-मणुस्साणं—

किं इड्ढिपत्त-अपमत्त-संजय-सम्मदिट्ठि-पज्जत्तग-संखेज्जवासाउय-
कम्मभूमिय-गव्वभवक्कंतिय-मणुस्साणं,

अणिअड्ढिपत्त-अपमत्त-संजय-सम्मदिट्ठि-पज्जत्तग-संखेज्जवासाउय-
कम्मभूमिय-गव्वभवक्कंतिय-मणुस्साणं ?

गोयमा ! इड्ढिपत्त-अपमत्त-संजय-सम्मदिट्ठि-पज्जत्तग-संखेज्जवा-
साउय-कम्मभूमिय-गव्वभवक्कंतिय-मणुस्साणं,

णो अणिअड्ढिपत्त-अपमत्त-संजय-सम्मदिट्ठि-पज्जत्तग-संखेज्जवासाउय-
कम्मभूमिय-गव्वभवक्कंतिय-मणुस्साणं मणपज्जवत्ताणं समुप्पज्जइ ।

सुत्तं १८ तं च दुविहं उप्पज्जइ,

तं जहा—

१ उज्जुमई य, २ विउलमई य ।

तं समासओ चउग्विहं पणत्तं,

तं जहा—दव्वओ, खित्तओ, कालओ, भावओ ।

तथ दव्वओ णं उज्जुमई अणंते अणंतपएसिणं खंधे जाणइ, पासइ ।

तं चैव विउलमई अब्भहियतराए, विउलतराए—

विसुद्धतराए, वित्तिमिरतराए जाणइ, पासइ ।

खेत्तओ णं उज्जुमई य जह्वेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं
 उक्कोसेणं अहे जाव इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए-
 उवरिमहेट्ठिल्ले खुड्डगपयरे,
 उड्डं-जाव-जोइसस्स उवरिमतले,
 तिरियं-जाव-अंतोमणुस्सखित्ते
 अड्ढाइज्जेसु दीवसमुद्देसु
 पन्नरससु कम्मभूमिसू, तिसाए अकम्मभूमिसु
 छप्पन्नाए अंतरदीवगेसु
 सन्निर्पंचिदियाणं पज्जत्तयाण मणोगए भावे जाणइ, पासइ,
 तं चेव विउलमई अड्ढाइज्जेहि अंगुलेहि अब्भहियतरं विउलतरं,
 विसुद्धतरं वित्तिमिरतराणं खेत्त जाणइ, पासइ ।

कालओ णं उज्जुमई-

जह्वेणं पलिओवमस्स असखिज्जयभागं
 उक्कोसेणं पि पलिओवमस्स असंखिज्जयभागं
 अतीयमणागयं वा काल जाणइ, पासइ,
 तं चेव विउलमई अब्भहियतराणं, विउलतराणं
 विसुद्धतराणं वित्तिमिरतराणं जाणइ, पासइ ।
 भावओ णं उज्जुमई अणंते भावे जाणइ, पासइ,
 सच्चभावानं अणंतभागं जाणइ, पासइ ।
 तं चेव विउलमई अब्भहियतराणं विउलतराणं
 विसुद्धतराणं वित्तिमिरतराणं जाणइ, पासइ ।

गाहा—मणपज्जवनाणं पुण, जणमणपरिचिंतिअत्थपागडणं ।

माणुसखित्तनिबद्धं, गुणपच्चइअं चरित्तवओ ॥१॥

से त्तं मणपज्जवणाणं ।

केवलज्ञानम्—

सुत्तं १९ से किं तं केवलनाणं ?

केवलनाणं दुविहं पणत्तं,

तं जहा—

(१) भवत्थकेवलनाणं च ।

(२) सिद्धकेवलनाणं च ।

से किं तं भवत्थकेवलनाणं ?

भवत्थकेवलनाणं दुविहं पणत्तं,

तं जहा—

(१) सजोगिभवत्थकेवलनाणं च,

(२) अजोगिभवत्थकेवलनाणं च ।

से किं तं सजोगिभवत्थकेवलनाणं ?

सजोगिभवत्थकेवलनाणं दुविहं पणत्तं,

तं जहा—

(१) पढमसमय—सजोगि—भवत्थकेवलनाणं च

(२) अपढमसमय—सजोगि—भवत्थकेवलनाणं च ।

अहवा-

(१) चरमसमय-सजोगी-भवत्यकेवलनाण च ।

(२) अचरमसमय-सजोगी-भवत्यकेवलनाणं च ।

से तं सजोगिभवत्यकेवलनाणं ।

से किं त अजोगिभवत्यकेवलनाणं ?

अजोगिभवत्यकेवलनाणं दुविहं पणत्तं,

तं जहा-

(१) पढमसमय-अजोगि-भवत्यकेवलनाणं च

(२) अपढमसमय-अजोगि-भवत्यकेवलनाणं च ।

अहवा-

(१) चरमसमय-अजोगि-भवत्यकेवलनाणं च

(२) अचरमसमय-अजोगि-भवत्यकेवलनाणं च ।

से तं अजोगिभवत्यकेवलनाणं ।

से तं भवत्यकेवलनाणं ।

मुत्त २० से किं त सिद्धकेवलनाणं ?

सिद्धकेवलनाणं दुविहं पणत्तं,

तं जहा-

(१) अणंतरसिद्धकेवलनाणं च

(२) परंपरसिद्धकेवलनाणं च ।

सुत्तं २१ से कि तं अणंतरसिद्धकेवलनाणं ?

अणंतरसिद्ध केवलनाणं पण्णरसविहं पण्णत्त,

तं जहा—

- | | |
|----------------------|---------------------|
| १ तित्थसिद्धा | २ अतित्थसिद्धा |
| ३ तित्थयरसिद्धा | ४ अतित्थयरसिद्धा |
| ५ सयं बुद्धसिद्धा | ६ पत्तेयबुद्धसिद्धा |
| ७ बुद्धबोहियसिद्धा | |
| ८ इत्थिलिंगसिद्धा | ९ पुरिसालिंगसिद्धा |
| १० नपुंसकालिंगसिद्धा | |
| ११ सलिंगसिद्धा | १२ अन्नलिंगसिद्धा |
| १३ गिहिलिंगसिद्धा | |
| १४ एगसिद्धा | १५ अणेगसिद्धा |

से त्तं अणंतरसिद्ध—केवलनाणं ।

सुत्त २२ से कि त परंपरसिद्ध केवलनाणं ?

परंपरसिद्ध केवलनाणं अणेगविहं पण्णत्त,

तं जहा—

अपढमसमयसिद्धा, दुसमयसिद्धा,
तिसमयसिद्धा, चउसमयसिद्धा, 'जाव' दससमयसिद्धा
संखिज्ज समयसिद्धा, असंखिज्ज समयसिद्धा,
अणंत समयसिद्धा,

से त परंपरसिद्ध-केवलनाणं ।

से तं सिद्धकेवलनाणं ।

त समासओ चउव्विह पणत्त,

त जहा-

दव्वओ, खित्तओ, कालओ, भावओ ।

तत्थ दव्वओ ण केवलनाणी सव्वदव्वाइं जाणइ पासइ ।

खित्तओ ण केवलनाणी सव्वं खित्त जाणइ पासइ ।

कालओ णं केवलनाणी सव्वं कालं जाणइ पासइ ।

भावओ णं केवलनाणी सव्वे भावे जाणइ पासइ ।

गाहा-अह सव्व दव्व परिणाम-भावविणत्ति कारणमणंतं ।

सा स य म प्प डि वा ई, ए ग वि ह केवलनाणं ॥१॥

सुत्त २३ गाहा-केवलनाणेणऽत्थे, नाउ जे तत्थ पणवणजोगे ।

ते भासइ तित्थयरो, वइजोगसुअं हवइ सेसं ॥२॥

से तं केवलनाण ।

से त नोइदियपच्चक्खं ।

से त पच्चक्खनाणं ।

परोक्षज्ञानम्

सुत्त २४ से कि तं परक्खनाण ?

परक्खनाणं द्रुविहं पणत्तं,

तं जहा-

(१) आभिणिबोहियनाणपरोक्खं च

(२) सुयनाणपरोक्खं च ।

जत्थ आभिणिबोहियनाणं तत्थ सुयनाणं,

जत्थ सुयनाणं तत्थ आभिनिबोहियनाणं ।

दो वि एयाइं अण्णमण्णमणुगयाइं,

तहवि पुण इत्थ आयरिआ नाणत्तं पण्णावति-

अभिणिबुज्झइ त्ति आभिणिबोहियनाणं,

सुणेइ त्ति सुयं,

मइपुच्चं जेण सुअ, न मई सुयपुग्गिया ।

सुत्तं २५ अविसेसिया मई-मइनाण च मइअण्णाण च ।

विसेसिया-

सम्मदिट्ठिस्स मई मइनाणं,

मिच्छादिट्ठिस्स मई मइ-अन्नाणं ।

अविसेसियं सुयं-सुयनाणं च सुयअन्नाण च ।

विसेसिअं सुअं-

सम्मदिट्ठिस्स सुअं सुयनाणं,

मिच्छदिट्ठिस्स सुअं सुय-अन्नाणं ।

मत्तिज्ञानम्-

सुत्तं २६ से किं तं आभिणिबोहियनाणं ?

आभिणिबोहियनाणं दुविहं पण्णत्तं,

तं जहा—

१ सुयनिस्सियं च, २ असुयनिस्सियं च ।

से किं तं असुयनिस्सियं ?

असुयनिस्सियं चउव्विहं पण्णत्तं,

तं जहा—

गाहाओ—

उप्पत्तिया^१ वेणइआ^२, कम्मया^३ परिणामिया^४ ।

बुद्धी चउव्विहा वृत्ता, पंचमा नोवलवमइ ॥१॥

पुव्वमदिट्ठमस्सुय, मवेइयं तवखणविसुद्धगहियत्था ।

अव्वाहयफलजोगा, बुद्धी उप्पत्तिया नाम ॥१॥

भरहसिल^१ मिढ^२ कुक्कुड^३ तिल^४ बालुय^५ हत्थि^६अगड^७ वणसंडे^८ ।

पायस^९ अइआ^{१०} पत्ते^{११}, खाडहिला^{१२} पचपियरो^{१३} य ॥२॥

भरहसिल^१ पणिय^२ रुक्खे^३, खुड्डुग^४ पड^५ सरड^६ काय^७ उच्चारे^८ ।

गय^९ घयण^{१०} गोल^{११} खभे^{१२}, खुड्डुग^{१३} मग्गि^{१४}त्थि^{१५} पड^{१६} पुत्ते^{१७} ॥३॥

महुत्तिय^{१८} मुद्दि^{१९} अके^{२०}, नाणए^{२१} भिक्खु^{२२} चेडगनिहाणे^{२३} ।

सिक्खा^{२४} य अत्थसत्थे^{२५}, इच्छा य महु^{२६}सयसहस्ते^{२७} ॥४॥

भरनित्थरणसमत्था, तिच्चगा—सुत्तत्थ—गहिय—पेयाला ।

उभओ लोग फलवई, विणयसमुत्था हवइ बुद्धी ॥१॥

निमित्तं^१ अत्यसत्थे^२ अ लेहे^३ गणिए^४ अ कूच^५ अस्से^६ य ।
 गद्दभ^७ लक्खण^८ गंठी^९ अगए^{१०} रहिए^{११} य गणिया^{१२} य ॥२॥
 सीआ साडी दीहं च, तणं अवसच्चयं च कुंचस्स^{१३} ।
 निच्चोदए^{१४} य गोणे, घोडग-पडणं च रुक्खाओ^{१५} ॥३॥
 उवओग - दिट्ठसारा, कम्म - पसंग-परिघोलण-विसाला ।
 साहुक्कार फलवई, कम्मसमुत्था हवइ बुद्धी ॥१॥
 हेरणिणए^१ करिसए^२, कोलिअ^३ डोवे^४ य मुत्ति^५ घय^६ पवए^७ ।
 तुन्नाए^८ चड्ढई^९, पूयइ^{१०} य घड^{११} चित्तकारे^{१२} य ॥२॥
 अणुमाण हेउ दिट्ठंत साहिया, वय विवाग परिणामा ।
 हि य नि स्से य स फ ल व ई, बुद्धी परिणामिया नाम ॥१॥
 अमए^१ सिद्धि^२ कुमारे^३, देवी^४ उदिओदए हवइ राया^५ ।
 साहू य नंदिसेणे^६, धणदत्ते^७ सावग^८ अमच्चे^९ ॥२॥
 खमए^{१०} अमच्चपुत्ते^{११}, चाणक्के^{१२} चेव थूलभद्दे^{१३} य ।
 ना सिक्क सुं द रि नं दे^{१४}, बइरे^{१५} परिणामिआ बुद्धी ॥३॥
 चलणाहण^{१६} आमंडे^{१७}, मणी^{१८} य सप्पे^{१९} य खग्गी^{२०} थूमिदे^{२१} ।
 पारिणामिय-बुद्धीए, एवमाई उदाहरणा ॥४॥

से त्तं अस्सुयनिस्सियं ।

से किं तं सुयनिस्सियं ?

सुयनिस्सियं चउच्चिहं पणत्तं,

तं जहा-

उग्गहे, ईहा, अवाओ, धारणा ।

सुत्तं २७ से किं तं उग्गहे ?

उग्गहे दुविहे पणत्ते,
तं जहा-

अत्युग्गहे य वंजणुग्गहे य ।

सुत्तं २८ से किं तं वंजणुग्गहे ?

वंजणुग्गहे चउत्विहे पणत्ते
तं जहा-

(१) सोइंदिय वजणुग्गहे, (२) घाणिंदिय वंजणुग्गहे,
(३) जिन्मिंदिय वंजणुग्गहे (४) फासिंदिय वंजणुग्गहे ।
से तं वंजणुग्गहे ।

सुत्तं २९ से किं तं अत्युग्गहे ?

अत्युग्गहे छत्विहे पणत्ते,
तं जहा-

१ सोइंदिय-अत्युग्गहे
२ चक्खिंदिय-अत्युग्गहे
३ घाणिंदिय-अत्युग्गहे
४ जिन्मिंदिय-अत्युग्गहे
५ फासिंदिय-अत्युग्गहे
६ नोइंदिय-अत्युग्गहे ।

सुत्तं ३० तस्स णं इमे एगट्ठिया नाणाघोसा नाणावंजणा

पंच नामधिज्जा भवति,
तं जहा-

- १ ओगेण्हया
- २ अवधारणया
- ३ सवणया
- ४ अवलंबणया
- ५ मेहा ।
- से तं उग्गहे ।

सुत्तं ३१ से किं तं ईहा ?

तं जहा—

- (१) सोइंदिय-ईहा (२) चक्खदिय-ईहा
- (३) घाणिदिय-ईहा (४) जिब्भदिय-ईहा
- (५) फासिदिय-ईहा (६) नो इंदिय-ईहा ।

तीसे णं इमे एगद्धिया, नाणाघोसा, नाणावज्जणा
पच नामध्वज्जा भवन्ति,

तं जहा—

- १ आभोगणया २ मग्गणया
- ३ गवेसणया ४ चित्ता ५ विमंसा ।
- से तं ईहा ।

सुत्तं ३२ से किं तं अवाए ?

अवाए छव्विहे पणत्ते,

तं जहा—

(१) सोइंदिय-अवाए (२) चदिखदिय-अवाए

(३) घाणिंदिय-अवाए (४) जिनिंदिय-अवाए

(५) फासिंदिय-अवाए (६) णो-इंदिय-अवाए,

तस्स णं इमे एगट्ठिया नाणाघोसा नाणावजणा

पंच नामधिज्जा भवति,

१ आजट्ठणया २ पच्चाजट्ठणया

३ अवाए ४ वुद्धो ५ विण्णाणे ।

से त्त अवाए ।

मुत्त ३३ से कित धारणा ?

धारणा छव्विहा पणत्ता,

तं जहा—

(१) सोइंदिय-धारणा (२) चदिखदिय-धारणा

(३) घाणिंदिय-धारणा (४) जिनिंदिय-धारणा

(५) फासिंदिय-धारणा (६) नो-इंदिय-धारणा ।

तोसे णं इमे एगट्ठिया, नाणाघोसा, नाणावजणा

पंच नामधिज्जा भवति,

तं जहा—

१ धरणा २ धारणा ३ ठवणा ४ पइट्ठा ५ कोट्ठे

से त्त धारणा ।

सुत्तं ३४ उग्गहे इक्कसमइए,
 अंतोमुहुत्तिया ईहा,
 अंतोमुहुत्तिए अवाए,
 धारणा संखेज्जं वा कालं, असंखेज्जं वा कालं ।

सुत्तं ३५ एवं अट्ठावीसइविहस्स आभिणिबोहियनाणस्स
 वंजणुग्गहस्स परूवणं करिस्सामि
 पडिबोहग्गदिट्ठंतेणं मल्लग्गदिट्ठंतेणं य ।
 से कि तं पडिबोहग्गदिट्ठंतेणं ?
 पडिबोहग्गदिट्ठंतेणं—
 से जहा नामए केइ पुरिसे
 कंचि पुरिसं सुत्तं पडिबोहेज्जा “अमुगा अमुगत्ति”
 तत्थ चोयगे पन्नवगं एवं वयासी—
 कि एगसमयपविट्ठा पुग्गला गहणमागच्छंति
 दुसमयपविट्ठा पुग्गला गहणमागच्छंति

(१)व—दससमयपविट्ठा पुग्गला गहणमागच्छंति
 संखिज्जसमय पविट्ठा पुग्गला गहणमागच्छंति
 असंखिज्जसमय पविट्ठा पुग्गला गहणमागच्छंति ?
 एवं वयंतं चोयगं पणवए एवं वयासी—
 “नो एगसमयपविट्ठा पुग्गला गहणमागच्छंति,
 नो दुसमयपविट्ठा पुग्गला गहणमागच्छंति,

आय-नो एगममयपविट्टा पुग्गन्ना गणपमागच्छंति,

नो मणिज्जममयपविट्टा पुग्गन्ना गणपमागच्छंति

अमणिज्जममयपविट्टा पुग्गन्ना गणपमागच्छंति ।

मे नं पविट्ठोहगच्छि मेण ।

मे हि तं मत्तगदिट्ठंतेणं ?

मत्तगदिट्ठंतेणं-

से ज्ञानामा, केइ पुग्गिमे

आवागमोमाओ मत्तग ग्गाय

तन्वेण उदगाविट्ठ पप ज्ञिग्गमा मे नद्वे,

अग्गेवि पविट्ठते सेज्जि नद्वे,

एव पविट्ठपमाणेसु पविट्ठपमाणेसु-

होही से उदगाविट्ठ, जे णं तं मत्तग रावेहिदं ति,

होही मे उदगाविट्ठ, जे ण तंति मत्तगसि ठाहिदंति,

होही से उदगाविट्ठ, जे ण तं मत्तग भरिहिदंति,

होही से उदगाविट्ठ, जे ण तं मत्तग पयाहेहिदंति ।

एयमेव पविट्ठपमाणेहि पविट्ठपमाणेहि-

अणंतेहि पुग्गलेहि जाहे तं वंजणं पूरियं होइ-

ताहे 'हं' ति करेइ, नो चेव णं जाणइ "के एस सदाइ" ?

तओ ईहं पविमइ, तओ जाणइ "अमूगे एस सदाइ" ।

तओ अवायं पविमइ, तओ से उच्चगयं हवइ ।

तओ धारणं पविमइ,

तओ णं धारेइ संखिज्जं वा कालं, असंखिज्जं वा कालं ।

से जहा नामए केइ पुरिसे

अव्वत्तं सद्द सुणिज्जा, तेणं सद्दो त्ति उग्गहिए

नो चेव णं जाणइ, 'के वेस सद्दाइ ?' ।

तओ ईहं पविसइ, तओ जाणइ 'अमुगे एस सद्दे ।'

तओ अवायं पविसइ, तओ से उवगयं हवइ ।

तओ धारणं पविसइ,

तओ णं धारेइ संखिज्जं वा कालं, असंखेज्जं वा काल ।

से जहानामए केइ पुरिसे—

अव्वत्तं रुवं पासिज्जा, तेणं रुवे त्ति उग्गहिए,

नो चेव णं जाणइ 'के वेस रुव त्ति' ?

तओ ईहं पविसइ, तओ जाणइ 'अमुगे एस रुवे' ।

तओ अवायं पविसइ, तओ से उवगयं हवइ ।

तओ धारणं पविसइ,

तओ णं धारेइ संखेज्जं वा कालं, असंखेज्जं वा कालं ।

से जहा नामए केइ पुरिसे—

अवत्तं गंधं अग्घाइज्जा, तेणं गंधं त्ति उग्गहिए

नो चेव णं जाणइ 'के वेस गंधे त्ति' ?

तओ ईह पविसइ, तओ जाणइ 'अमुगे एस गंधे ।'

तओ अवायं पविसइ, तओ से उवगयं हवइ ।

तओ धारण पविसइ,
 तओ णं धारेइ सखेज्ज वा कालं, असंखेज्ज वा काल ।
 से जहा नामए केइ पुरिसे—
 अव्वत्तं रस आसाइज्जा, तेण रसो त्ति उग्गहिए,
 नो चेव ण जाणइ “के वेस रसो त्ति” ?
 तओ ईह पविसइ, तओ जाणइ “अमुगे एस रसे” ।
 तओ अवाय पविसइ, तओ से उवगय हवइ ।
 तओ धारण पविसइ,
 तओ ण धारेइ सखेज्ज वा कालं, असंखेज्ज वा काल ।
 से जहा नामए केइ पुरिसे—
 अव्वत्त फासं पडिसवेइज्जा, तेण फासेत्ति उग्गहिए
 नो चेव णं जाणइ “के वेस फासो त्ति ?”
 तओ ईह पविसइ, तओ जाणइ “अमुगे एस फासे” ।
 तओ अवायं पविसइ, तओ से उवगयं हवइ,
 तओ धारणं पविसइ,
 तओ णं धारेइ सखेज्जं वा कालं, असंखेज्जं वा कालं ।
 से जहा नामए केइ पुरिसे—
 अव्वत्त सुमिण पासिज्जा, तेण सुमिणो त्ति उग्गहिए,
 नो चेव णं जाणइ “के वेस सुमिणो त्ति ?”
 तओ ईहं पविसइ, तओ जाणइ “अमुगे एस सुमिणे ।”

तओ अवायं पविसइ, तओ से उवगयं हवइ ।

तओ धारण पविसइ,

तओ णं धारेइ संखेज्जं वा काल, असंखेज्जं वा कालं ।

से त्तं मल्लगदिट्ठं ते णं ।

सुत्तं ३६ तं समासओ चउव्विहं पण्णत्तं,

तं जहा—

१ दव्वओ, २ खित्तओ, ३ कालओ, ४ भावओ ।

तत्थ दव्वओ णं आभिणिबोहियनाणी आएसेणं

सव्वाइं दव्वाइं जाणइ न पासइ ।

खेत्तओ णं आभिणिबोहियनाणी आएसेणं

सव्वं खेत्तं जाणइ, न पासइ ।

कालओ णं आभिणिबोहियनाणी आएसेणं

सव्वं कालं जाणइ, न पासइ ।

भावओ णं आभिणिबोहियनाणी आएसेणं

सव्वे भावे जाणइ, न पासइ ।

गाहाओ—

उग्गह ईहाऽवाओ य, धारणा एवं हुंति चत्तारि ।

आभिणिबोहियनाणस्स, भेयवत्थू समासेणं ॥१॥

अत्याणं उग्गहणमि, उग्गहो तह वियालणे ईहा ।
 ववसायम्मि अवाओ, धरणं पुण धारणं विति ॥२॥
 उग्गहं इक्कं समय, ईहावाया मुहुत्तमद्धं तु ।
 कालमसंखं संखं च, धारणा होइ नायव्वा ॥३॥
 पुट्ठं सुणेइ सद्द, रुवं पुण पासइ अपुट्ठं तु ।
 गंधं रस च फासं च, बद्धपुट्ठं वियागरे ॥४॥
 भात्ता समसेढीओ, मह जं सुणइ मीसियं सुणइ ।
 वीसेढी पुण सद्दं, सुणेइ नियमा पराघाए ॥५॥
 ईहा अपोह वीमंसा, मग्गणा य गवसेणा ।
 सन्ना सई मई पन्ना, सत्वं आभिणिवोहिय ॥६॥
 से तं आभिणिवोहियनाण-परोक्ख ।
 से त्त मइनाण ।

श्रुतज्ञानम्:-

सुत्तं ३७ से किं तं सुयनाणपरोक्खं ?

सुयनाणपरोक्खं चोदसविहं पणत्त,

तं जहा-

१ अक्खरसुयं, २ अणक्खरसुयं,

३ सणिसुयं, ४ असणिसुयं,

५ सम्मसुयं, ६ मिच्छासुयं,

७ साइयं, ८ अणाइयं,

९ सपज्जवसियं १० अपज्जवसियं,
 ११ गमियं, १२ अगमियं,
 १३ अंगपविट्ठं, १४ अणंगपविट्ठं ।

सुत्तं ३८ (१) से किं तं अक्खरसुयं ?

अक्खरसुयं तिविहं पणत्तं,

तं जहा—

१ सन्नक्खरं, २ वंजणक्खरं, ३ लद्धिअक्खरं ।

(१) से किं तं सन्नक्खरं ?

सन्नक्खरं- अक्खरस्स संठाणागिई ।

से तं सन्नक्खरं ?

(२) से किं तं वंजणक्खरं ?

वंजणक्खरं-अक्खरस्स वंजणाभिलावो ।

से तं वंजणक्खरं ।

(३) से किं तं लद्धि-अक्खरं ?

लद्धिअक्खरं-अक्खर-लद्धियस्स लद्धि-अक्खर समुप्पज्जइ,

तं जहा—

१ सोइंदिय-लद्धि-अक्खरं,

२ चर्विखदिय-लद्धि-अक्खरं,

३ घाणिंदिय-लद्धि-अक्खरं,

४ रमणिंदिय-लद्धि-अक्खरं,

५ फासिंदिय-लद्धि-अक्खरं,

६ नोइंदिय-लद्धि-अक्खरं,

से तं लद्धि-अक्खरं ।

मे तं अक्खरसुयं ।

(२) से किं तं अणक्खरसुयं ?

अणक्खरसुयं अणेगविहं पणत्तं,

तं जहा—

गाहा—ऊससियं नीससियं, निच्छूढं खासियं च छोयं च ।

निस्सिधियमणुसारं, अणक्खरं छेलियाईयं ॥१॥

से तं अणक्खरसुयं ।

सुत्त ३९ (३) से किं तं सण्णिसुयं ?

सण्णिसुयं तिविहं पणत्तं,

तं जहा—

१ कालिओवएसेणं, २ हेऊवएसेणं, ३ दिट्ठिवाओवएसेणं ।

(१) से किं तं कालिओवएसेणं ?

कालिओवएसेणं—जस्स णं अत्थि-ईहा, अवोहो, मग्गणा,

गवेसणा, चिंता, वीमंसा,
 से णं सण्णी त्ति लब्भइ,
 जस्स णं नत्थि ईहा, अवोहो, मग्गणा, गवेसणा,
 चिंता, वीमंसा, से णं असण्णी त्ति लब्भइ ।
 से त्तं कालिओवएसेणं ।

(२) से किं तं हेऊवएसेणं ?

हेऊवएसेणं—जस्स णं अत्थि अभिसंधारणपुब्बिया करणसत्ती
 से णं सण्णी त्ति लब्भइ,
 जस्स णं णत्थि अभिसंधारणपुब्बिया करणसत्ती
 से णं असण्णी त्ति लब्भइ,
 से त्तं हेऊवएसेणं ।

(३-४) से किं तं दिट्ठिवाओवएसेणं ?

दिट्ठिवाओवएसेणं—सण्णिसुयस्स खओवसमेण—
 सण्णी लब्भइ,
 असण्णिसुयस्स खओवसमेण—
 असण्णी लब्भइ ।

से त्तं दिट्ठिवाओवएसेणं ।

से त्तं सण्णिसुयं, से त्तं असण्णिसुय ।

सुत्तं ४० (५) से किं तं सम्मसुयं ?

सम्मसुयं—जं इमं अरिहंतेहि भगवन्तेहि

उप्पण्णनाणदंसणघरेहि

तेलुक्कनिरिक्खमहिप्पूइएहि

तोय-पडुप्पण्ण-मणागय जाणएहि

सच्चवण्णूहि सच्चदरिसीहि

पणीयं दुवालसंगं गणिपिडगः—

त जहा—

१ आयारो २ सूयगडो ३ ठाणं

४ समवाओ ५ विवाहपण्णत्तो ६ नायाधम्मकहाओ

७ उवासगदसाओ ८ अंतगडदसाओ ९ अणुत्तरोववाइयदसाओ

१० पण्हावागरणं ११ विवागसुयं १२ दिट्ठिवाओ ।

इच्चेय दुवालसंगं गणिपिडगं—

चोद्दस पुट्ठिस्स सम्मसुय,

अमिण्णदसपुट्ठिस्स सम्मसुय,

तेण परं भिण्णेसु भयणा ।

से तं सम्मसुयं ।

सुत्तं ४१ (६) से किं तं मिच्छासुयं ?

मिच्छासुयं—जं इमं अण्णाणिएहि मिच्छादिट्ठिएहि—

सच्छंदबुद्धि—मइविगप्पियं,

त जहा—

भारह, रामायणं, भीमासुखं,
कोडिल्लयं, सगडभद्वियाओ, खोडमुह
कप्पासियं, नागसुहुमं, कणगसत्तारी,
वड्ढेसियं, बुद्धवयणं, तेरासियं,
काविलियं, लोगाययं, सट्ठित्तं,
माढरं, पुराणं, वागरणं,
भागवयं, पायंजलि, पुत्तदेवयं,
लेहं, गणियं, सउणखय, नाडयाइ,

अहवा बावत्तारि कलाओ,

चत्तारि य वेया संगोदंया,

एयाइं मिच्छादिट्ठिस्स मिच्छत्तापरिगहियाइं मिच्छासुयं ।

एयाइं चेव सम्मदिट्ठिस्स सम्मत्तपरिगहियाइं सम्मसुयं ।

अहवा मिच्छादिट्ठिस्स वि एयाइं चेव सम्मसुय ।

कम्हा ?

सम्मत्तहेउत्तणओ ।

जम्हा ते मिच्छदिट्ठिओ

तेहिं चेव समएहिं चोइया समाणा

केइ सपक्खदिट्ठिओ चयंति ।

से तं मिच्छासुयं ।

[त्त ४२ (७-८) से कि तं साइयं सपज्जवसियं

(९-१०) अणाइयं अपज्जवसियं च ?

इच्चेयं दुवात्तसंगं गणिपिडगं

वुच्छित्तिनयद्वयाए साइयं सपज्जवसिय,

अव्वुच्छित्तिनयद्वयाए अणाइयं अपज्जवसिय ।

तं समासओ चउच्चिहं पणत्त,

तं जहा—

दव्वओ खेत्ताओ कालओ भावओ

तत्थ दव्वओ ण सम्मसुयं एगं पुरिसं पडुच्च—

साइयं सपज्जवसियं,

बह्वे पुरिसेय पडुच्च अणाइयं अपज्जवसियं ।

खेत्ताओ णं पंच भरहाइं, पंच एरवयाइं पडुच्च—

साइय सपज्जवसियं,

पंच महाविदेहाइं पडुच्च—अणाइयं अपज्जवसियं ।

कालओ ण उस्सप्पिणिं ओसप्पिणिं च पडुच्च—

साइयं सपज्जवसिय,

नो उस्सप्पिणिं नो ओसप्पिणिं पडुच्च—

अणाइय अपज्जवसियं ।

भावओ णं जे जया जिणपणत्ता भावा

[श्रुत०]

नदि-मुत्त

आघविज्जंति, पणविज्जंति, पणविज्जंति
दंसिज्जंति, निदंसिज्जंति, उवदंसिज्जंति

तया ते भावे पडुच्च साइयं सपज्जवसिय,
खाओवसमिय पुण भावं पडुच्च अणाइयं अपज्जवसियं ।

अहवा भवसिद्धिस्स सुयं साइय सपज्जवसिय, च,
अभवसिद्धिस्स सुयं अणाइयं अपज्जवसिय च ।

सव्वागासपएसग्ग सव्वागासपएसोह
अणंतगुणियं पज्जवक्खरं निप्फज्जइ,

सव्वजीवाणं पि य णं—

अवक्खरस्स अणतभागो निच्चुग्घाडिओ चिट्ठइ ।
जइ पुण सो वि आवरिज्जा तेण जीवो अजीवत्तं पावेज्जा

‘सुट्ठुवि मेहसमुदए, होइ पभा चदसूराण’—
से त्तं साइय सपज्जवसिय ।

से त्तं अणाइयं अपज्जवसियं ।

सुत्तं ४३ (११) से किं तां गमिय ?
गमियं दिट्ठिवाओ ।

(१२) से किं त अगमियं ?
अगमियं कालिय सुय ।

से त गमियं, से तं अगमियं ।

अहवा तं समामओ दुविहं पणत्तं,

तं जहा-

(१३-१४) १ अंगपविहं २ अंगवाहिरं च ।

से किं तं अंगवाहिरं ?

अंगवाहिरं दुविहं पणत्तं,

तं जहा-

१ आवसयं च २ आवस्मयवद्विहं, च ।

(१) से किं तं आवस्मयं ?

आवस्मयं छविहं पणत्तं,

तं जहा-

१ सामाइयं २ चउदीमन्यओ ३ वंदणयं

४ पडिक्कमणं ५ काउस्मगो ६ पच्चदधानं ।

से तं आवस्मयं ।

(२) से किं तं आवस्मयवद्विहं ?

आवस्मयवद्विहं दुविहं पणत्तं,

तं जहा-

१ कालियं च, २ उक्कालियं च ।

मे किं तं उक्कालियं ?

उक्कालियं अणेगविहं पणत्तं,

तं जहा—

दसवेअलिय¹, कप्पियाकप्पियं²,

चुल्लकप्पसुयं³ महाकप्पसुयं⁴

उववाइयं⁵ रायपसेणियं⁶ जीवाभिगमो,⁷

पण्णवणा⁸, महापण्णवणा⁹, पमायप्पयायं¹⁰,

नंदी¹¹, अणुओगद्वाराइ¹², देविदत्थओ¹³,

तंदुलवेयलियं¹⁴, चंदाविज्जयं¹⁵, सूरपण्णत्ती¹⁶,

पोरिसिमंडलं¹⁷, मंडलपवेसो¹⁸, विज्जाचरणविणिच्छओ¹⁹,

गणिविज्जा²⁰, ज्ञाणविभत्ती²¹, मरणविभत्ती²²,

आयविसोही²³, वीयरगसुयं²⁴, संलेहणासुयं²⁵,

विहारकप्पो²⁶, चरणविही²⁷, आउरपच्चवखाणं²⁸,

महापच्चवखाणं²⁹ एवमाइ ।

से तं उक्कालियं ।

से किं तं कालियं ?

कालिय अणेगविहं पणत्तं,

तं जहा—

उत्तरज्झयणाइं¹, दसाओ², कप्पो³, ववहारो⁴,

निसीहं^५, महानिसीहं^६, इसिभासियाइं^७,
 जंबूदीवपण्णत्ती^८, दीवसागरपन्नत्ती^९, चंदपन्नत्ती^{१०},
 खुड्डियाविमाणविभत्ती^{११}, महल्लियाविमाणविभत्ती^{१२},
 अंगचूलिया^{१३} वग्गचूलिया^{१४}, विवाहचूलिया^{१५},
 अरुणोववाए^{१६}, वरुणोववाए^{१७}, गरुलोववाए^{१८},
 धरणोववाए^{१९}, वेसमणोववाए^{२०},
 वेलंधरोववाए^{२१}, देवदोववाए^{२२},
 उट्ठाणसुयं^{२३} समुट्ठाणसुयं^{२४},
 नागपरियावणियाओ^{२५}, निरयावलियाओ^{२६},
 कप्पियाओ^{२७}, कप्पवडंसियाओ^{२८},
 पुप्फियाओ^{२९}, पुप्फिचूलियाओ^{३०}, वण्होदसाओ^{३१},
 आसीविस-भावणाणं^१, दिट्ठिविस-भाविणाणं^२,
 सुमिण-भावणाणं^३, महासुमिण-भावणाणं^४
 तेयगी निसग्गाणं^५

एवमाइयाइं चउरासीइ पइन्नगसहस्साइं—

भगवओ अरहओ उसहसामिस्स आइतित्थयरस्स ।

तहा संखिज्जाइं पइन्नगसहस्साइं—मज्झिमगाणं जिणवराणं ।

चोदसपन्नइगसहस्साइं भगवओ बद्धमाणसामिस्स,

सुत्तं ४६ से किं तं सूयगडे ?

सूयगडे णं लोए सूइज्जइ, अलोए सूइज्जइ,

लोयालोए सूइज्जइ,

जीवा सूइज्जंति, अजीवा सूइज्जंति, जीवाजीवा सूइज्जंति
ससमए सूइज्जइ, परसमइ सूइज्जइ, ससमय-परसमए सूइज्जइ

सूयगडे णं असीयस्स किरियावाइसयस्स,

चउरासीइए अकिरियावाईणं

सत्तट्ठीए अण्णाणिआवाईणं—

वत्तीसाए वेणइज्ज—वाईणं—

तिण्हं तेसट्ठाणं पासंडियसयाणं

वूहं किच्चा ससमए ठाविज्जइ ।

सूयगडेणं परित्ता वायणा,

संखिज्जा अणुओगदारा, संखेज्जा वेढा,

संखेज्जा सिलोगा, संखिज्जाओ-निजुत्तीओ,

(संखिज्जाओ संगहणीओ) संखिज्जाओ पडिबत्तीओ ।

से णं अंगट्ठयाए बिइए अंगे,

वो सुयक्खंधा, तेवीस अज्झयणा,

तेत्तीसं उद्देसणकाला, तेत्तीसं समुद्देसणकाला,

छत्तीसं पयसहस्साणि पयग्गेण,

संखिज्जा अक्खरा, अणंता गमा, अणंता पज्जवा,
 परित्ता तसा, अणंता थावरा,
 सासय-कड-निबद्ध-निकाइया जिणपणत्ता भावा
 आघविज्जंति, पणविज्जति, परूविज्जंति
 दसिज्जंति, निदसिज्जंति, उवदसिज्जंति ।
 से एवं आया, एवं नाया, एवं विण्णाया,
 एवं चरण-करण-परूवणा आघविज्जइ ।
 से तं सुयग्गे ।

सुत्त ४७ से किं तं ठाणे ?

ठाणे णं जीवा ठाविज्जंति, अजीवा ठाविज्जंति, जीवा-
 जीवा ठाविज्जंति,
 ससमए ठाविज्जइ, परसमए ठाविज्जइ, ससमय-परमए
 ठाविज्जइ ।
 लोए ठाविज्जइ, अलोए ठाविज्जइ, लोयालोए ठाविज्जइ
 ठाणे णं टंका, कूडा, सेला, सिहरिणो, पवभारा,
 कुडाइं, गुहाओ, आगरा, दहा, नईओ आघविज्जति ।
 ठाणे णं एगाइयाए एगुत्तरियाए बुद्धीए
 दसट्ठाणग-विबुद्धियाणं भावाणं परूवणा आघविज्जइ ।
 ठाणे णं परित्ता वायणा,
 संखेज्जा अणुभोगदारा-संखेज्जा वेठा,

संखिज्जा सिलोगा, संखेज्जाओ निज्जुत्तीओ,
संखेज्जाओ संगहणीओ, संखेज्जाओ पडिवत्तीओ ।

से णं अंगट्टयाए तईए अंगे,
एगे सुयक्खंधे, दस अज्झयणा,
एगवीसं उद्देसणकाला, एगवीसं समुद्देसणकाला,
वावत्तरि पयसहस्साइं पयग्गेणं,
संखेज्जा अक्खरा, अणंता गमा, अणंता पज्जवा,
परित्ता तसा, अणंता थावरा,
सासय-कड-निबद्ध-निकाइया जिणपणत्ता भावा
आधविज्जंति, पणविज्जंति, परूविज्जंति
दंसिज्जंति, निदंसिज्जंति, उवदंसिज्जंति ।
से एवं आया, एवं नाया, एवं विण्णाया
एवं चरण-करण-परूवणा आधविज्जइ ।
से त्तं ठाणे ।

त्तं ४८ से किं तं समवाए ?

समवाए णं जीवा समासिज्जंति, अजीवा समासिज्जंति,
जीवाजीवा समासिज्जंति ।

ससमए समासिज्जइ, परसमए समासिज्जइ, ससमय-
परसमए समासिज्जइ ।

लोए समासिज्जइ, अलोए समासिज्जइ, लोयालोए
समासिज्जइ ।

समवाए णं एगाइयाणं एगुत्तरियाणं—
ठाणत्तय-विबड्ढयाणं भावाणं परूवणा आघविज्जइ ।
दुवालसविहस्स य गणिपिडगस्स पल्लवगे समासिज्जइ ।
समवायस्सणं परित्ता दायणा,
संखिज्जा अणुभोगदारा, संखिज्जा वेढा
संखिज्जा सिलोगा, संखिज्जाओ निज्जुत्तीओ,
संखिज्जाओ संगहणीओ, संखिज्जाओ पडिवत्तीओ ।

से णं अंगहुयाए चउत्थे अंगे—
एगे सुयक्खंधे, एगे अज्झयणे,
एगे उद्देसणकाले, एगे समुद्देसणकाले,
एगे चोयाले पय-सयसहस्से पयग्गेणं,
संखेज्जा अक्खरा, अणंता गमा, अणंता पज्जवा,
परित्ता तसा, अणंता थावरा
सासय-कड-निवद्ध-निकाइया जिणपणत्ता भावा
आघविज्जंति, पण्णविज्जंति, परुविज्जंति
वंसिज्जंति, निदंसिज्जंति, उवदंसिज्जंति ।
से एवं आया, एवं नाया, एवं विण्णाया,
एवं चरण-करण-परूवणा आघविज्जइ ।
से त्तं समवाए ।

सुत्तं ४९ से किं तं विवाहे ?

विवाहे णं जीवा विआहिज्जंति, अजीवा विआहिज्जंति,
जीवाजीवा विआहिज्जंति,

ससमए विआहिज्जइ, परसमए विआहिज्जइ, ससमय-
परसमए विआहिज्जइ,

लोए विआहिज्जइ, अलोए विआहिज्जइ, लोयालोए
विआहिज्जइ,

विवाहस्स णं परित्ता वायणा,
संखिज्जा अणुओगदारा, संखिज्जा वेढा ।

संखिज्जा सिलोगा, संखिज्जाओ निज्जुत्तीओ,
संखिज्जाओ संगहणीओ संखिज्जाओ पडिवत्तीओ ।

से णं अंगट्ठयाए पंचमे अंगे—

एगे सुयक्खंधे, एगे साइरेगे अज्झयणसए,
वस उद्देसगसहस्साइं, वससमुद्देसगसहस्साइं,

छत्तीसं वागरण-सहस्साइं,

वो लक्खा अट्ठासीइं पयसहस्साइं पयग्गेणं,
संखिज्जा अक्खरा, अणता गमा, अणंता पज्जवा,

परित्ता तसा, अणंता थावरा,

सासय-कड-निबद्ध-निकाइया जिणपणत्ता भावा
आघविज्जंति, पणविज्जंति, परुविज्जंति,

दंसिज्जंति, निदंसिज्जंति, उवदंसिज्जंति ।
 से एवं आया, एवं नाया, एवं विण्णाया,
 एवं चरण-करण-परूवणा आघविज्जइ ।
 से त्तं विवाहे ।

सुत्त ५० से किं त नायाधम्मकहाओ ?

नायाधम्मकहासु णं—

नायाणं नगराईं, उज्जाणाईं, चेइयाईं, वणसंडाईं, समोसरणाईं,
 रायाणो, अम्मापियरो,
 धम्मारिया, धम्मकहाओ, इहलोइयपरलोइया इडिढविसेसा,
 भोगपरिच्चाया, पच्चज्जाओ, परिआया,
 सुयपरिग्गहा तवोवहाणाईं, संलेहणाओ,
 भत्तपच्चक्खाणाइ पाओवगमणाईं, देवतोगगमणाईं,
 सुकुलपच्चाइयाओ, पुणवोहिलाभा, अंतकिरियाओ
 य आघविज्जंति ।

दस धम्मकहाणं वग्गा,

तत्थ णं एगमेगाए धम्मकहाए पंच पंच अक्खाइयासयाईं,
 एगमेगाए अक्खाइयाए पंच पंच उवक्खाइयासयाईं,
 एगमेगाए उवक्खाइयाए पंच पंच अक्खाइयउवक्खाइयासयाईं,
 एवमेव सपुच्चावरेणं अद्धुद्धाओ कहाणगकोडीओ—
 हंवति त्ति समक्खायं ।

नायाधम्मकहाणं परित्ता वायणा,

संखिज्जा अणुओगदारा, संखिज्जा वेढा,
 संखिज्जा सिलोगा संखिज्जाओ निज्जुत्तीओ,
 संखिज्जाओ संगहणीओ, संखिज्जाओ पडिवत्तीओ ।
 से णं अंगट्ठयाए छट्ठे अंगे—

दो सुयक्खगधा
 एगूणवीसं अज्झयणा,
 एगूणवीसं उद्देसणकाला,
 एगूणवीसं समुद्देसणकाला,
 संखेज्जाइं पयसहस्साइं पयग्गेण,
 संखेज्जा अक्खरा, अणंता गमा, अणंता पज्जवा,
 परित्ता तसा, अणंता थावरा, सासय-कड-निबद्ध-निकाइया
 जिणपण्णत्ता भावा—

आघविज्जंति, पण्णविज्जति, परूविज्जति,
 दंसिज्जति, निदंसिज्जंति, उवदंसिज्जंति ।
 से एव नाया, एवं नाया एवं विण्णाया,
 एव चरण-करण-परूवणा आघविज्जइ ।
 से त नायाधम्मकहाओ ।

सुत्तं ५१ से किं तं उवासगदसाओ ? .

उवासगदसासु णं समणोवासयाणं—
 नगराइं, उज्जाणाइं, चेइयाइं, वणसंडाइं, समोसरणाइं,

रायाणो, अम्मापियरो, धम्मायरिया, धम्मकहाओ,
 इहलोइयपरलोइया इड्ढिविसेसा.
 भोगपरिच्चाया, परिआया,
 सुयपरिग्गहा, तओवहाणाइं,
 सीलव्वय-गुण-वेरमण-पच्चक्खाण-पोसहोववास-
 संपडिवज्जणया

पडिमाओ, उवसग्गा, सलेहणाओ,
 भत्तपच्चक्खाणाइं पाओवगमणाइं, देवलोगगमणाइं
 सुकुलपच्चाइआओ, पुणवोहिलाभा,
 अंतकिरियाओ य आघविज्जंति ।

उवासगदसाण परित्ता वायणा,
 सखेज्जा अणुओगदारा, संखिज्जा वेढा,
 सखेज्जा सिलोगा, संखिज्जाओ निज्जुत्तीओ,
 संखिज्जाओ संगहणीओ संखिज्जाओ पडिवत्तीओ,
 ते णं अंगट्ठयाए सत्तमे अंगे,
 एगे सुयक्खधे, दस अज्झयणा,
 दस उद्देसणकाला, दस सम्भेसणकाला,
 संखेज्जाइं पयसहस्ताइं पयग्गेणं,
 संखिज्जा अक्खरा, अणंता गमा, अणंता पज्जवा,
 परित्ता तसा, अणंता थावरा,
 सासय-क्कड-निबद्ध-निकाइया जिणपणत्ता भावा

आघविज्जंति, पन्नविज्जंति, परूविज्जंति
 दंसिज्जंति, निदंसिज्जंति, उवदंसिज्जंति ।
 से एवं आया, एवं नाया, एवं विण्णाया
 एवं चरण-करण-परूवणा आघविज्जइ ।
 से तं उवासगदसाओ ।

सुत्तं ५२ से किं तं अंतगडदसाओ ?

अंतगडदसासु णं अंतगडाणं—
 नगराइं, उज्जाणाइं, चेइयाइं, वणसंडाइं, समोसरणाइं
 रायाणो, अम्मापियरो, धम्मायरिया, धम्मकहाओ,
 इहलोइयपरलोइया इड्ढिविसेसा,
 भोगपरिच्चाया, पच्चज्जाओ, परिआया,
 सुयपरिगहा, तवोवहाणाइं, संलेहणाओ,
 भत्तपच्चक्खाणाइं, पाओवगमणाइं,
 अंतकिरियाओ य आघविज्जंति ।
 अंतगडदसासु णं परित्ता वायणा,
 संखिज्जा अणुओगदारा, संखेज्जा वेढा,
 संखिज्जा सिलोगा, संखिज्जाओ निजुत्तीओ,
 संखिज्जाओ संगहणीओ संखिज्जाओ पडिदत्तीओ ।
 से णं अंगट्ठयाए अट्ठमे अंगे—

एगे सुयक्खंधे, अट्ट वग्गा,
 अट्ट उट्टेसणकाला, अट्ट समुट्टेसणकाला,
 संखेज्जाइं पयसहस्साइं पयग्गेणं,
 संखिज्जा अवखरा, अणंता गमा, अणंता पज्जवा,
 परित्ता तसा, अणंता थावरा,
 सासय-कड-निबद्ध-निकाइया जिणपण्णत्ता भावा
 आघविज्जंति, पण्णविज्जंति, परूविज्जंति,
 दसिज्जंति, निदसिज्जंति, उववंसिज्जंति ।
 से एवं आया, एवं नाया, एवं विण्णया,
 एव चरण-करण-परूवणा आघविज्जइ ।
 से त्त अतगडदसाओ ।

सुत्तं ५३ से किं त अणुत्तरोववाइयदसाओ ?

अणुत्तरोववाइयदसासु णं अणुत्तरोववाइयाणं—
 नगराइ, उज्जाणाइं, चेइयाइं, वणसंडाइं, समोसरणाइं,
 रायाणो, अम्मापियरो, धम्मायरिया, धम्मकहाओ,
 इह लोइयपरलोइया इड्ढियिसेसा,
 भोगपरिच्चागा, पव्वज्जाओ, परिआया,
 सुयपरिग्गहा, तवोवहाणाइं, पडिमाओ,
 उवसग्गा, संलेहणाओ, भत्तपच्चक्खाणाइं, पाओवगमणाइं,
 अणुत्तरोववाइयत्ते उववत्ती सुकुलपच्चायाइओ,

पुणबोहिलाभा, अंतकिरियाओ य आघविज्जंति ।

अणुत्तरोववाइयदसासु णं परित्ता वायणा,
संखेज्जा अणुओगदारा, संखेज्जा वेढा,
संखेज्जा सिलोगा, संखेज्जाओ निज्जुत्तीओ,
संखेज्जाओ संगहणीओ, संखेज्जाओ पडिवत्तीओ ।

से णं अंगदुयाए नवमे अंगे,
एगे सुयवद्धे, तित्ति वग्गा,
तित्ति उद्देसणकाला, तित्ति समुद्देसणकाला,
संखेज्जाइं पयसहस्साइं पयग्गेणं,
संखेज्जा अक्खशा, अणंता गमा, अणंता पज्जवा,
परित्ता तसा, अणंता थावरा,
सासय-कड-निबद्ध-निकाइया जिणपणत्ता भावा
आघविज्जंति, पणविज्जंति, परुविज्जंति
दंसिज्जंति, निदंसिज्जंति, उवदंसिज्जंति ।
से एवं आया, एवं नाया, एवं विण्णया
एवं चरण-करण-परुवणा आधविज्जइ ।
से तं अणुत्तरोववाइयदसाओ ।

सुत्तं ५४ से कि तं पण्हावागरणाइं ?

पण्हावागरणेषु णं अट्ठुत्तरं पसिणसयं,
अट्ठुत्तरं अपसिणसयं

अट्णुत्तारं पसिणापसिणसयं,
तं जहा—

अंगुट्ठपसिणाइं, बाहुपसिणाइं, अद्दागपसिणाइं
अग्ने वि विचित्ता विज्जाइसया,
नागसुवण्णेहिं सद्धिं दिव्वा संवाया आघविज्जंति ।

पण्हावागरणां परित्ता वायणा,
संखिज्जा अणुओगदारा, संखिज्जा वेढा,
संखिज्जा सिलोगा, संखिज्जाओ निज्जुत्तीओ,
संखिज्जाओ संगहणीओ, संखिज्जाओ पडिवत्तीओ ।
से णं अंगट्ठयाए दसमे अंगे,

एगे सुयक्खंधे, पणयालीसं अज्झयणा,
पणयालीसं उट्ठेसणकाला, पणयालीसं समुट्ठेसणकाला,
संखेज्जाइं पयसहुस्साइं पयग्गेणं,
संखेज्जा अक्खरा, अणंता गमा, अणता पज्जवा,
परित्ता तसा, अणंता थावरा

सासय-कड-निबद्ध-निकाइया जिणपण्णत्ता भावा
आघविज्जंति, पण्णविज्जंति, परूविज्जंति
दंसिज्जंति, निदंसिज्जंति, उवदंसिज्जंति ।
से एवं आया, एवं नाया, एवं विण्णाया,
एवं चरण-करण-परूवणा आघविज्जइ ।
से तं पण्हावागरणाइं ।

सुत्तं ५५ से किं तं विवागसुयं ?

विवागसुए णं सुकडडुक्कडाणं कम्माणं—

फलविवागे आघविज्जइ ।

तत्थ णं दसं दुह-विवागा, दस सुह-विवागा ।

से किं तं दुह-विवागा ?

दुह-विवागेसु णं दुहविवागाण—

नगराइं, उज्जाणाइं, वणसंडाइं, चेइयाइं, समोसरणाइं

रायाणो, अम्मापियरो, धम्मायरिया, धम्मकहाओ,

इहलोइय-परलोइया इड्ढिविसेसा,

निरयगमणाइं, संसारभव-पवंचा, दुहपरंपराओ,

दुक्कुलपच्चायाइओ, दुल्लहवोहियत्तं आघविज्जइ ।

से तं दुहविवागा ।

से किं तं सुहविवागा ?

सुहविवागेसु णं सुह-विवागाणं

नगराइं, उज्जाणाइं वणसंडाइं चेइयाइं, समोसरणाइं,

रायाणो, अम्मापियरो, धम्मायरिया, धम्मकहाओ,

इहलोइय-परलोइया इड्ढिविसेसा,

भोगपरिच्चाया, पच्चज्जाओ, परिआया, सुयपरिग्गहा,

तवोवहाणाइं, संलेहणाओ, भत्तपच्चक्खाणाइं, पाओवगमणाइं

देवलीगमणाइं, सुहपरंपराओ, सुकुलपच्चायाइओ,

पुणवोहिलाभा, अंतकिरियाओ य आघविज्जंति ।

सेत्तं सहविवागा ।

विवागसुयस्स णं परित्ता वायणा,
 संखिज्जा अणुओगदारा, संखिज्जा वेढा,
 संखिज्जा सिलोगा, संखिज्जाओ निज्जुत्तीओ,
 संखिज्जाओ संगहणीओ, संखिज्जाओ पडिवत्तीओ ।
 से णं अंगट्ठयाए इक्कारसमे अंगे,
 दो सुयक्खंधा वीसं अज्झयणा,
 वीसं उद्देसणकाला, वीसं समुद्देसणकाला,
 संखेज्जाइं पयसहस्साइं पयग्गेणं,
 संखेज्जा अवखरा, अणंता गमा, अणंता पज्जवा,
 परित्ता तसा, अणंता थावरा,
 सासय-कड-निबद्ध-निकाइया जिणपण्णत्ता भावा
 आघविज्जंति, पण्णविज्जंति, परूविज्जंति,
 दसिज्जति, निदसिज्जंति, उवदंसिज्जंति ।
 से एवं आया, एवं नाया, एवं विण्णाया,
 एव चरण-करण-परूवणा आघविज्जइ ।
 से त्तं विवागसुयं ।

सुत्त ५६ से किं त दिट्ठियाए ?

दिट्ठियाए णं सत्त्वभावपरूवणा आघविज्जइ ।
 से समासओ पंचविहे पण्णत्ते,
 त जहा—

१ परिकम्मे २ सुत्ताइं ३ पुच्चगाए ४ अणुओगे, ५ चूलिया ।

से किं तं परिकम्मे ?

परिकम्मे सत्तविहे पणत्ते,

तं जहा—

१ सिद्धसेणिया-परिकम्मे

२ मणुस्ससेणिया-परिकम्मे

३ पुट्ठसेणिया-परिकम्मे

४ ओगाढसेणिया-परिकम्मे

५ उवत्तंपज्जणसेणिया परिकम्मे

६ विप्पजहणसेणिया-परिकम्मे

७ चुयाचुयसेणिया-परिकम्मे ।

से किं तं सिद्धसेणिया परिकम्मे ?

सिद्धसेणियापारेकम्मे चउद्दसविहे पणत्ते,

तं जहा—

१ माउगापयाइं २ एगद्धियपयाइं

३ अट्ठापयाइं ४ पाढो आगासपयाइं

५ केउभूयं ६ रासिबद्धं

७ एगगुणं ८ दुगुणं

९ तिगुणं १० केउभूयं

११ पडिग्गहो १२ संसार पडिग्गहो

९ संसारपडिग्गहो १० नंदावत्तं

११ पुट्ठावत्तं ।

से त्तं पुट्ठसेणियापरिकम्मे । (३)

से किं त्तं ओगाढसेणिया परिकम्मे ?

ओगाढसेणिया परिकम्मे इक्कारसविहे पणत्ते ।

तं जहा—

१ पाढोआगासपयाइं २ केउभूयं

३ रासिबद्धं ४ एगगुणं

५ दुगुणं ६ तिगुणं

७ केउभूयं ८ पडिग्गहो

९ संसारपडिग्गहो १० नंदावत्तं

११ ओगाढावत्तं ।

से त्तं ओगाढसेणिया-परिकम्मे ? (४)

से किं त्तं उवसंपज्जणसेणिया-परिकम्मे ?

उवसंपज्जणसेणिया-परिकम्मे इक्कारसविहे पणत्ते,

तं जहा—

१ पाढोआगासपयाइं २ केउभूयं

३ रासिबद्धं ४ एगगुणं

५ दुगुणं ६ तिगुणं

७ केउभूयं ८ पडिग्गहो

९ संसारपडिग्गहो १० नंदावत्तं

११ उवसंपज्जणावत्तं ।

से तं उवसंपज्जणसेणिया-परिकम्मे । (५)

से किं तं विप्पजहणसेणिया-परिकम्मे ?

विप्पजहणसेणिया-परिकम्मे इक्कारसविहे पणत्ते,

त जहा—

१ पाढोआगासपयाइ २ केउभूयं

३ रासिबद्धं ४ एगगुणं

५ दुगुणं ६ तिगुणं

७ केउभूयं ८ पडिग्गहो

९ संसारपडिग्गहो १० नंदावत्तं

११ विप्पजहणावत्तं ।

से तं विप्पजहणसेणिया परिकम्मे । (६)

से किं तं चुयाचुयसेणिया परिकम्मे ?

चुयाचुयसेणिया-परिकम्मे इक्कारसविहे पणत्ते,

त जहा—

१ पाढोआगासपयाइ २ केउभूयं

३ रासिबद्धं ४ एगगुणं

५ दुगुणं ६ तिगुणं

७ केउभूयं ८ पडिग्गहो

९ संसारपडिग्गहो १० नंदावत्तं

११ चुयाचुयवत्तं ।

से त्तं चुयाचुयसेणिया-परिकम्मे । (७)

छ-चउक्क नइयाइं, सत्ता तेशसियाइं,
से त्तं परिकम्मे ।

से किं तं सुत्ताइं ?

सुत्ताइं बावीसं पण्णत्ताइं,

तं जहा-

१ उज्जुसुयं २ परिणयापरिणयं ३ बहुभंगियं

४ विजयचरियं ५ अणंतरं ६ परंपरं

७ मासाणं ८ संजूहं ९ संभिण्णं

१० आहव्वायं ११ सोवत्थियावत्तं १२ नंदावत्तं

१३ बहुलं १४ पुट्ठापुट्ठं १५ वियावत्तं

१६ एवंभूयं १७ दुयावत्तं १८ वत्तमाणपय

१९ समभिरूढं २० सन्वओभइं २१ पण्णासं

२२ दुप्पडिग्गहं ।

इच्चेइयाइं बावीसं सुत्ताइं छिन्न-छेयनइयाणि-

ससमयसुत्तपरिवाडीए ।

इच्चेइयाइं बावीसं सुत्ताइं अच्छिन्न-छेयनइयाणि-

आजीवियसुत्तापरिवाडिए ।

इच्चेइयाइं बावीस सुत्ताइं तिगणइयाणि-

तेरासियसुत्तापरिवाडीए ।

इच्चेइयाइं बावीसं सुत्ताइ चउक्कनइयाणि-

ससमयसुत्तापरिवाडीए ।

एवामेव सपुब्बावरेणं अट्ठासीइ सुत्ताइं भवति त्ति मक्खायं ।

से तं सुत्ताइं ।

से किं तं पुब्बगए ?

पुब्बगए चउद्दसविहे पण्णत्ते,

तं जहा-

१ उप्पायपुब्बं २ अग्गाणीय

३ वीरियं ४ अत्थिनत्थि-प्पवायं

५ नाण-प्पवाय ६ सच्चप्पवायं

७ आय-प्पवायं ८ कम्म-प्पवायं

९ पच्चक्खाण-प्पवायं १० विज्जाणु-प्पवायं

११ अवंशं १२ पाणाऊ

१३ किरियाविसाल १४ लोकविदुसारं ।

१ उप्पायपुब्बस्स णं दसवत्थू, चत्तारि चूलियावत्थू पण्णत्ता,

२ अग्गाणीयपुब्बस्स णं चोद्दसवत्थू, दुवालसचूलियावत्थू पण्णत्ता

- ३ वीरियपुव्वस्स णं अट्ठवत्थू, अट्ठ चूलियावत्थू पण्णत्ता,
 ४ अत्थि-नत्थिप्पवायपुव्वस्स णं अट्ठारस वत्थू,
 दसचूलियावत्थू पण्णत्ता,
 ५ नाणप्पवायपुव्वस्स णं बारस वत्थू पण्णत्ता,
 ६ सच्चप्पवायपुव्वस्स णं दोण्णि वत्थू पण्णत्ता,
 ७ आयप्पवायपुव्वस्स णं सोलस वत्थू पण्णत्ता,
 ८ कम्मप्पवायपुव्वस्स णं तीसं वत्थू पण्णत्ता,
 ९ पच्चक्खाणपुव्वस्स णं वीसं वत्थू पण्णत्ता,
 १० विज्जाणुप्पवायपुव्वस्स णं पन्नरस वत्थू पण्णत्ता,
 ११ अवङ्गपुव्वस्स ण बारस वत्थू पण्णत्ता,
 १२ पाणाऊपुव्वस्स णं तेरस वत्थू पण्णत्ता,
 १३ किरियाविसालपुव्वस्स णं तीसं वत्थू पण्णत्ता,
 १४ लोकविदुसारपुव्वस्स णं पणवीस वत्थू पण्णत्ता,

गाहाओ-

दस^१-चोद्दस^२-अट्ठ^३-अट्ठारसेव^४-बारस^५-दुवे^६ य वत्थूणि ।
 सोलस^७-तीसा^८-वीसा^९-पन्नरस^{१०} अणुप्पवायंमि ॥१॥
 बारस-इक्कारसमे,^{११} बारसमे^{१२} तेरसेव वत्थूणि ।
 तीसा पुण तेरसमे^{१३}, चोद्दसमे^{१४} पण्णवीसाओ ॥२॥

चत्तारि-दुवालस-अट्ट चेव, दस चेव चुल्लवत्थूणि ।
आइल्लाण-चउण्हं, सेसाणं चूलिया नत्थि ॥३॥
से तं पुव्वगए ।

से किं तं अणुओगे ?
अणुओगे दुविहे पणत्ते,
तं जहा-

१ मूलपढमाणुओगे, २ गंडियाणुओगे य ।
से किं तं मूलपढमाणुओगे ?
मूलपढमाणुओगे णं अरहताणं भगवताणं-
पुव्वभवा, देवलोगगमणाइं, आउं, चवणाइं,
जम्मणाणि, अभिसेया, रायवरसिरीओ,
पव्वज्जाओ, तवा य उग्गा,
केवलनाणुप्पयाओ, तित्थ पवत्तणाणि य,
सीसा, गणा, गणहरा, अज्जा, पवत्तिणीओ,
संघस्स चउव्विहस्स जं च परिमाणं,
जिण-मणपज्जव-ओहिनाणी,
सम्मत्तसुयनाणिणो य, वाई,
अणुत्तरगई य, उत्तरवेउव्विणो य मुणिणो,
जत्तिया सिद्धा, सिद्धिपहो जहा देसिओ,
जच्चिरं च कालं, पाओवगया-

जेहिं जत्तियाइं भत्ताइं अणसणाए छेइत्ता अंतगडे,
 मुणिवरूत्तामे तिमिरओघविप्पमुक्के, मुखसुहमणुत्तर च पत्ते,
 एवमन्ने य एवमाइभावा मूलपढमाणुओगे कहिया ।
 से तं मूलपढमाणुओगे ।

से किं तं गंडियाणुओगे ?

गंडियाणुओगे-कुलगरगंडियाओ, तित्थयरगंडियाओ,
 चक्कवट्टिगंडियाओ, वासुदेवगंडियाओ,
 गणधरगंडियाओ, भट्टवाहुगंडियाओ,
 तवोकम्मगंडियाओ, हरिवंसगंडियाओ,
 उस्सप्पिणीगंडियाओ जित्तंतरगंडियाओ,
 ओसप्पिणीगंडियाओ,

अमर-नर-तिरिय-तिरय गइ-गमण-विविह-
 परियट्टणाणुओगेसु एवमाइयाओ गंडियाओ
 आघविज्जंति, ।

से तं गंडियाणुओगे ।

से तं अणुओगे ।

से किं तं चूलियाओ ?

चूलियाओ-आइल्लाणं चउण्हं पुक्खाणं चूलिया,
 सेसाइ पुक्खाइं अचूलियाइं ।
 से तं चूलियाओ ।

दिट्ठिपवायस्स णं परित्ता वायणा,
 संखेज्जा अणुभोगदारा, संखेज्जा वेढा,
 संखेज्जा सिलोगा, संखेज्जाओ निज्जुत्तीओ,
 संखेज्जाओ संगहणीओ, संखेज्जाओ पडिवत्तीओ ।
 से ण अंगट्टयाए वारसमे अंगे,
 एगे सुयक्खंधे चोद्दसपुच्चाइं,
 संखेज्जा वत्थू, संखेज्जा चूलवत्थू,
 संखेज्जा पाहुडा, संखेज्जा पाहुडपाहुडा,
 संखेज्जाओ पाहुडियाओ, संखेज्जाओ पाहुडपाहुडियाओ,
 संखेज्जाइं पयसहत्साइं पयग्गेण,
 संखिज्जा अक्खरा, अणंता गमा, अणता पज्जधा,
 परित्ता तसा, अणंता थावरा,
 सासय-कड-निब्रद्ध-निकाइया, जिणपणत्ता भावा
 आघविज्जंति, पणविज्जंति, परुविज्जंति,
 दंसिज्जति, निदंसिज्जंति, उवदंसिज्जंति ।
 से एव आया, एवं नाया, एवं विण्णाया,
 एवं चरण-करण-परुवणा आघविज्जइ ।
 से तं दिट्ठियाए ।

सुत्त ५७ इच्छेइयस्मि दुवालसगे गणिपिडगे

अणंता भावा, अणंता अभावा,

अणंता हेऊ, अणंता अहेऊ,
 अणंता कारणा, अणंता अकारणा,
 अणंता जीवा, अणंता अजीवा,
 अणंता भवसिद्धिआ, अणंता अभवसिद्धिआ,
 अणंता सिद्धा, अणंता असिद्धा पणत्ता ।

गाहा— भावमभावा हेऊमहेऊ, कारणमकारणे चेव ।
 जीवाजीवाभविय-मभविया सिद्धा असिद्धा य ॥१॥

इच्चेइयं दुवालसंगं गणिपिडगं—

तीए काले अणंता जीवा अणाए विराहिता—
 चाउरंतं संसार कंतारं अणुपरियट्टिसु ।

इच्चेइयं दुवालसंगं गणिपिडगं—

पडुप्पण्णकाले परित्ता जीवा आणाए विराहिता—
 चाउरंतं संसार कंतारं अणुपरियट्टंति ।

इच्चेइयं दुवालसंगं गणिपिडगं—

अणागए काले अणंता जीवा आणाए विराहिता—
 चाउरंतं संसार-कंतारं अणुपरियट्टिस्संति ।

इच्चेइयं दुवालसंगं गणिपिडगं—

तीए काले अणंता जीवा आणाए आराहिता
 चाउरंतं संसार-कंतारं वीईवइंसु ।

इच्छेइय दुवालसगं गणिपिडगं—

पडुप्पणकाले परिस्ता जीवा आणाए आराहिस्ता—
चाउरतं संसार-कतार वीईवयंति—

इच्छेइय दुवालसगं गणिपिडगं—

अणाए काले अणता जीवा आणाए आराहिस्ता—
चाउरतं संसार-कतारं वीईवइस्संति ।

इच्छेइय दुवालसगं गणिपिडगं—

न कयाइ नासी,
न कयाइ न भवइ,
न कयाइ न भविस्सइ,

भुवि च, भवइ य, भविस्सइ य,
धुवे, नियए, सासए,
अक्खए, अव्वए, अवट्ठिए, निच्चे ।
से जहा नामए पंच अत्थिकाया—

न कयाइ नासी,
न कयाइ नत्थि,
न कयाइ न भविस्सइ,

भुवि च, भवइ य, भविस्सइ य,
धुवा, नियया, सासया,

अक्खया, अक्खया, अवट्ठिया, निच्चा,
एवामेव दुवालसंगं गणिपिडग-

न कयाइ नासी,
न कयाइ नत्थि,
न कयाइ न भविस्सइ,

भुवि च, भवइ य भविस्सइ य,
धुवे, नियए, सासए,
अक्खए, अक्खए, अवट्ठिए, निच्चे ।
से समासओ चउव्विहे पणत्ते,
तं जहा-

दक्खओ, खित्तओ, कालओ, भावओ ।
तत्थ दक्खओ णं सुयणाणी उवउत्ते-
सव्वदक्खाइ जाणइ पासइ ।

खित्तओ ण सुयणाणी उवउत्ते-
सव्व खेत्त जाणइ पासइ ।

कालओ णं सुयणाणी उवउत्ते-
सव्वं काल जाणइ पासइ ।

भावओ णं सुयणाणी उवउत्ते
सव्वे भावे जाणइ पासइ ।

॥ मूल सुत्ताणि ॥

(४)

अणुओगद्वार-सुत्तं

(उपफानियं)

॥ अणुओगद्वार-सुत्तं ॥

विसयणिद्देसो--

पुच्चं भेया उ नाणस्स, नाणोद्देसाइयं तओ ।
वुत्ता सरूव-भेया अ, सुत्तस्साऽऽवस्सगयस्स य ॥१॥
सुयस्स खलु खंधस्स, तओ कया परूवणा ।
उवक्कमस्स तत्तो णं, आणुपुव्वी-विवेयणा ॥२॥
एगादीण दसंताणं, तओ नाम-निरूवणे ।
नाणाविहाण भावाणं, वण्णनं तु जहक्कमं ॥३॥
पच्छा चउव्विहा वुत्ता, पमाणस्स परूवणा ।
दव्वओ खेतओ चेव, कालओ भावओ तहा ॥४॥
भे ि, दव्वमाणे पकित्तिणं ।
अंगुलस्स तहा पच्छा, तिण्णि भेया उ वणिण्या ॥५॥
सव्वेसिं किल जीवाणं, भणिओगाहणा तओ ।
पच्छा काले य जीवाणं, सव्वणं वणिण्या ठिई ॥६॥
तत्तो दव्वस्स पंचण्हं, सरीराणं तु कित्तिणं ।
पमाण-भेयाणं, पच्चक्खाईण वण्णनं ॥७॥
तत्तो दंसण-चारित्त-नयाणं तु परूवणा ।
वुत्ता संखा तओ भेया, चत्तव्वआ अ वणिण्या ॥८॥
अत्थस्स-अहिगारस्स, समोयारस्स णं तओ ।
णिक्खेवाणुगमाणं तु, णिरूवणा णयस्स य ॥९॥

किं अंगवाहिरस्स उद्देसो समुद्देसो,
अणुण्णा, अणुओगो य पवत्तइ ?

उ० अंगपविट्ठस्स वि उद्देसो . . . * जाव . . . पवत्तइ,
अणंगपविट्ठस्स^१ वि उद्देसो . . . * जाव . . . पवत्तइ।
इमं पुण पट्ठवणं पट्ठुच्च अणंगपविट्ठस्स^२ अणुओगो पवत्तइ।

मुत्तं ४ प्र० जइ अणंगपविट्ठस्स^३ अणुओगो,
किं कालिअस्स जाव . अणुओगो पवत्तइ,
उक्कालिअस्स . . जाव . . अणुओगो पवत्तइ ?

उ० कालियस्स वि अणुओगो पवत्तइ,
उक्कालियस्स वि अणुओगो पवत्तइ।
इमं पुण पट्ठवणं पट्ठुच्च उक्कालियस्स अणुओगो यवत्त

मुत्तं ५ प्र० जइ उक्कालिअस्स अणुओगो,
किं आवस्सगस्स अणुओगो ?

आवस्सग-वइरित्तस्स अणुओगो
उ० आवस्सगस्स वि अणुओगो
आवस्सगवइरित्तस्स वि अणुओगो
इमं पुण पट्ठवणं पट्ठुच्च आवस्सगस्स अणुओगो।

१ अगवाहिरस्स वि । २ अगवाहिरस्स । ३ अगवाहिरस्स ।

* दोनो जगह इसी सूत्र की पक्ति १-२, के सम्मान प्राप्त है ।

तं जहा.—

१ नामावस्सयं, २ ठवणावस्सयं,
३ दब्बावस्सयं, ४ भावावस्सयं ।

सुत्तं ९ प्र० से किं तं नामावस्सयं ?

उ० नामावस्सयं—जस्सणं जीवस्स वा, अजीवस्स वा,
जीवाण वा, अजीवाण वा,
तदुभयस्स वा, तदुभयाण वा,
'आवस्सए' त्ति नामं कज्जइ,
से त्तं नामावस्सयं ।

सुत्तं १० प्र० से किं तं ठवणावस्सयं ?

उ० ठवणावस्सयं—जं णं कट्ठकम्मे वा, पोत्थकम्मे वा,
चित्तकम्मे वा, लेप्पकम्मे वा,
गंथिमे वा, वेढिमे वा,
पूरिमे वा, संघाइमे वा,
अक्खे वा, वराडए वा
एगो वा, अणेगो वा,
सब्भावठवणा वा, असब्भावठवणा वा
"आवस्सए" त्ति ठवणा ठविज्जइ,
से त्तं ठवणावस्सयं ।

तिण्णि अणुवउत्ता, आगमओ तिण्णि दब्बावस्सयाइं,
एव जावइआ अणुवउत्ता, आगमओ तावइआइं ताइं दब्बावस्सयाइं,
एवमेव ववहारस्स वि ।

संगहस्स णं एगो वा, अणेगा वा,
अणुवउत्तो वा, अणुवउत्ता वा,
आगमओ दब्बावस्सयं वा, दब्बावस्सयाणि वा,
से एगे दब्बावसए ।

उज्जुसुयस्स-एगो अणुवउत्तो
आगमओ एगं दब्बावस्सयं, पुहुत्तं नेच्छइ ।
तिण्हं सहनयाणं जाणए अणुवउत्ते अवत्थु ।

कम्हा ?

जइ जाणए, अणुवउत्ते न भवति,
जइ अणुवउत्ते जाणए न भवति,
तम्हा णत्थि आगमओ दब्बावस्सयं ।
से त्त आगमओ दब्बावस्सयं ।

सुत्तं १५ प्र० से कि तं नो-आगमओ दब्बावस्सयं ?

उ० नो-आगमओ दब्बावस्सयं तिविहं पण्णत्तं,
तं जहा—

१ जाणय-सरीर-दब्बावस्सयं,

२ भविअ-सरीर-दब्बावस्सयं,

।

जिणोवदिद्वेणं भावेणं

‘आवस्सए’ त्ति पयं सेयकाले मिक्खिस्सड न ताव सिक्खइ ।

प्र० जहा को ददुंतो ?

उ० अयं महु-कुंभे भविस्सइ, अयं घय-कुंभे भविस्सइ ।

से तं भविअ-सरीर-दव्वावस्सयं ।

सुत्तं १८ प्र० से किं त जाणयसरीर-भविअसरीरवइरित्तं दव्वावस्सए ?

उ० जाणयसरीर-भविअसरीर-वइरित्तं दव्वावस्सए—

तिविहे पण्णत्ते,

तं जहा—

१ लोइयं, २ कुप्पावणियं, ३ लोउत्तरिअं

सुत्तं १९ प्र० से किं त लोइयं दव्वावस्सय ?

उ० लोइयं दव्वावस्सय—

जे इमे राईसर-तलवर-माडंविअ-कोडुविअ—

इवम-सेट्ठि-सेणावइ-सत्थवाह-पग्निइओ,

कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए सुविमलाए

फुल्लुप्पल-कमल-कोमलुम्मिलिअम्मि-अहापंडुरे पभाए,

रत्तासोगप्पगास-किंसुअ-मुअमुह-गुंजद्धरागसरिसे

कमलागर-नलिणि-संडवोहए उट्ठिअम्मि सूरे,

सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेअसा जलंते,

मुहधोअण-इत्तपक्खालण-तेल्ल-फणिह-सिद्धत्थ-

सुत्तं २१ प्र० से किं तं लोगुत्तरियं दब्बावस्सयं ?

उ० लोगुत्तरियं दब्बावस्सयं—

जे इमे समणगुणमुक्कजोगी छक्कायनिरणुकंपा,
हया इव उद्दामा, गया इव निरंकुसा,
घट्ठा, मट्ठा, तुप्पोट्ठा, पंडुरपडपाउरणा,
जिणाणमणाणाए सच्छंदं विहरिऊण—
उभओ कालं आवस्सयस्स उवट्ठंति ।

से त्तं लोगुत्तरियं दब्बावस्सयं ।

से त्तं जाणयसरीर-भविअसरीरवइरित्तं दब्बावस्सयं

से त्तं नो-आगमओ दब्बावस्सयं ।

से त्तं दब्बावस्सयं ।

सुत्तं २२ प्र० से किं तं भावावस्सयं ?

उ० भावावस्सयं दुविहं पणत्तं,

तं जहा—

१ आगमओ अ, २ नो आगमओ अ ।

सुत्तं २३ प्र० से किं तं आगमओ भावावस्सयं ?

उ० आगमओ भावावस्सयं जाणए उवउत्ते ।

से त्तं आगमओ भावावस्सयं ।

सुत्तं २४ प्र० से किं तं नो आगमओ भावावस्सयं ?

उ० नो आगमओ भावावस्सयं तिविहं पणत्तं,

अणत्थ कत्थइ मणं अकरेमाणे
 उभओ कालं आवस्सयं करेति ।
 से त्तं लोगुत्तरियं भावावस्सयं ।
 से त्तं नो-आगमतो भावावस्सयं ।
 से त्तं भावावस्सयं ।

सुत्तं २८ तस्स णं इमे एगट्ठिआ-

णाणाघोसा णाणावंजणा णामधेज्जा भवंति,
 तं जहा-

गाहाओ-आवस्सयं^१ अवस्संकरणिज्जं^२, धुवनिग्गहो^३ विसोही^४ अ ।
 अज्झयणछक्कवग्गो^५, नाओ^६ आराहणा^७ मग्गो^८ ॥१॥
 समणेण सावएण य, अवस्स कायच्चयं हवइ जम्हा ।
 अंतो अहोनिस्सय य, तरहा 'आवस्सय' नाम ॥२॥
 से त्तं आवस्सय ।

श्रुत-स्वरूपम्-

सुत्तं २९ प्र० से कि त सुय ?

उ० सुअ चउळ्हिह पणत्त,

त जहा-

१ नाम-सुअ २ ठवणा-सुअं ३ दव्व-सुअ ४ भाव-सुअं ।

कम्हा ?

“अणुवओगो” दव्वमिति कट्ठु ।

नेगमस्स णं एगो अणुवउत्तो आगमओ एगं दव्वसुअं

... * जाव तिण्हं सहनयाणं जाणए अणुवउत्ते अवत्थु ।

कम्हा ?

जइ जाणए अणुवउत्ते न भवइ,

जइ अणुवउत्ते जाणइ न भवइ,

तम्हा णत्थि आगमओ दव्वसुअं ।

से त्तं आगमओ दव्वसुअं ।

सुत्तं ३४ प्र० से किं तं नो आगमओ दव्वसुअं ?

उ० नो आगमओ दव्वसुअं तिविहं पणत्त,

तं जहा—

१ जाणयसरीरदव्वसुअं, २ भविअसरीरदव्वसुअं,

३ जाणयसरीर-भविअसरीरवइरित्त दव्वसुअं ।

सुत्तं ३५ प्र० से किं त जाणयसरीरदव्वसुअं ?

उ० जाणयसरीरदव्वसुअं—

“सुअ” त्ति पयत्थाहिगारजाणयस्स—

ज सरीरय ववगय-चुअ-चाविअ-चत्तदेह

*सूत्र न० १४ से पूरा पाठ कहना चाहिए ।

प्र० से किं तं बोडयं ?

उ० बोडयं कप्पासमाइ ।

से तं बोडयं ।

प्र० से किं तं कीडयं ?

उ० कीडयं पंचविह पणत्तं,

तं जहा-

१ पट्टे २ मलए ३ अंसुए ४ चीणंसुए ५ किमिरागे ।

से तं कीडयं ।

प्र० से किं तं वालयं ?

उ० वालयं पंचविहं पणत्तं,

तं जहा-

१ उण्णिए २ उट्टिए ३ मिअलोमिए ४ कोतवे ५ किट्टिसे ।

से तं वालयं ।

प्र० से किं तं वक्कयं ?

उ० वक्कयं* सणमाइ ।

से तं वक्कयं ।

से तं जाणयसरीर-भविअसरीरवइरित्तं दव्वसुअं ।

से तं नो नो आगमओ दव्वसुअं ।

से तं दव्वसुअं ।

५.७० ६ (अतसी) पाठ है ।

काविलं, लोगायत्तं, सद्वित्तं,

माढर-पुराण-वागरण-नाडगाइं ।

अह्वा वावत्तरिकलाओ, चत्तारिअ वेआ संगोवंगा ।

से तं लोइअं नो आगमओ भावसुअं ।

सुत्तं ४२ प्र० से कि तं लोउत्तरिअं नो आगमओ भावसुअ ?

उ० लोउत्तरिअं नो आगमओ भावसुअं—

जं इमं अरिहत्तेहिं भगवंतेहिं,

उप्पण्ण-णाण-दंसणधरेहिं,

तीय-पच्चुपण्ण-मणागय-जाणएहिं,

सव्वण्णूहिं, सव्वदरिसीहिं,

तिलुक्क-चहित-महितपूइएहिं,

अप्पडिहय-वरनाण-दसणधरेहिं

पणीअ दुवालसगं पणिपिडगं,

तं जहा—

१ आयाओ, २ सूयगडो, ३ ठाणं,

४ समवाओ, ५ विवाहपण्णत्ती, ६ णायाधम्मकहाओ,

उवासगदसाओ, ८ अंतगडदसाओ, ९ अणुत्तरोववाइयदसाओ

१० पण्हावागरणाइं, ११ विवागसुअं, १२ दिट्ठिवाओ य ।

से तं लोउत्तरियं नो आगमओ भावसुअ ।

से तं नो आगमओ भावसुअं ।

से तं भावसुअं ।

मुत्तं ४३ तस्त णं इमे एगट्ठिआ, णाणावोसा, णाणावज्जणा
नामधेज्जा भवति,
तं जहा—

गाहा—सुअ-सुत्त-गंय-सिद्धंत-मासणे आणवयण उवएसे ।
पन्नवण आगमे वि अ, एगट्ठा पज्जवा सत्ते ॥१॥
से तं सुअं ।

स्कधस्वत्पम्—

मुत्तं ४४ प्र० से किं तं खंधे ?
उ० खंधे चउच्चिहे पणत्ते,
तं जहा—
१ नामखंधे २ ठवणाखंधे ३ दव्वखंधे ४ भावखंधे ।

मुत्तं ४५ नामद्ववणाओ*पुव्वमणिआणुक्कमेण भाणिअव्वाओ ।

मुत्तं ४६ प्र० से किं तं दव्वखंधे ?
उ० दव्वखंधे दुविहे पणत्ते,
तं जहा—
१ आगमओय २ तो आगमओ य ।
प्र० से किं तं आगमओ दव्वखंधे ?
उ० आगमओ दव्व-खंधे-जस्त ण 'खंधे' ति पयं

*सूत्र ९, १०, ११, के समान पाठ कहे

सिक्खियं *जाव सेत्तं भविअसरीर दब्बखंधे ।
नवर खंधाभिलादो ।

प्र० से किं तं जाणयसरीर भविअसरीर वइरित्ते दब्बखंधे ?

उ० जाणयसरीर-भविअसरीरवइरित्ते दब्बखंधे तिविहे पणत्ते,
तं जहा—

१ सचित्ते, २ अचित्ते, ३ मीसए ।

सुत्तं ४७ प्र० से किं तं सचित्ते दब्बखंधे ?

उ० सचित्ते दब्ब-खंधे अणेगविहे पणत्ते,
तं जहा—

हय-खंधे गय-खंधे

किन्नर-खंधे किंपुरस-खंधे

महोरग-खंधे, गंछच्च-खंधे

उसमखंधे ।

से त्तं संचित्तं दब्बखंधे ।

सुत्तं ४८ प्र० से किं तं अचित्तं दब्बखंधे ?

उ० अचित्तं दब्बखंधे अणेगविहे पणत्ते,

तं जहा—

{ दुपसिए खंधे, तिपएसिए, जाव दसपएसिए खंधे
सखिज्ज पएसिए खंधे, असंखिज्ज पएसिए खंधे,

*सूत्र न० १३ से १७ पर्यन्त के समान पाठ है ।

सुत्तं ५२ प्र० से किं तं अकसिणखंधे ?

उ० अकसिणखंधे—से चेव दुपएसियाइ खंधे
 . . *जाव . . अणंतपएसिए खंधे ।
 से त्तं अकसिणखंधे ।

सुत्तं ५३ प्र० से किं तं अणेगदवियखंधे ?

उ० अणेगदवियखंधे—तस्स चेव देसे अवचिए
 तस्स चेव देसे उवचिए ।
 से त्तं अणेगदविअखंधे ।
 से त्तं जाणयसरीर-भविअसरीरवइरित्ते दब्बखंधे ।
 से त्तं नो आगमओ दब्बखंधे ।
 से त्तं दब्बखंधे ।

सुत्तं ५४ प्र० से किं तं भावखंधे ?

उ० भावखंधे दुविहे पणत्ते, ।
 तं जहा—
 १ आगमओ अ २ नो-आगमओ अ ।

सुत्तं ५५ प्र० से किं त आगमओ भावखंधे ?

उ० आगमओ भावखंधे जाणए उवउत्ते ।
 से त्तं आगमओ भावखंधे ।

सुत्तं ५६ प्र० से किं तं आगमओ भावखंधे ?

उ० नो आगमओ भावखंधे—

*सूत्र न ४८ से पूरा पाठ कहें ।

एतन्नि शेषं सामाद्वयमाद्वयान् छत्तुं अस्तमयानां
 गन्तव्य-जानिन्, गन्तव्येन निपत्रे
 यत्तन्मन्त्र-प्रमाणं भावज्यं त्ति नमन्त ।
 मे नं नो अगमन्तो भावज्ये ।
 मे न भावज्यो ।

सुतं ५३ अग्नौ न इमे द्वाह्यानां पाप्माद्योनां पाप्माद्यज्या
 गन्तव्येन भवन्ति,
 न भवन्ति—

पाप्मा-गन्तव्येन स विद्याय, पाप्मे यन्ते तद्देव गन्तो य ।
 पुत्रं रिद्धे निगन्ते, गन्ताए आउत तन्मूहे ॥१॥
 मे नं यन्ते ।

सुतं ५४ आद्वयमन्त्रं न इमे अत्याह्वयान् भवन्ति,
 न भवन्ति—

गात्रा—गात्रमन्त्राणां विद्मः, उचिस्तपः गुणयजो भ पटिवत्तो ।
 यन्मिश्रम निदन्ता, यन्निगिद्धं गुणधारणा चैव ॥१॥

सुतं ५५ गात्रा—आद्वयमन्त्रं गन्तो, विद्वन्तो यन्निगो ममासेनं ।
 एनो एपदेवक, पुन अस्तमय कित्तद्वन्तामि ॥१॥

तं गन्ता—

१ सामाद्वयं २ छत्तवीगन्तव्यो ३ यद्वयं
 ४ पटिवत्तमन्त्र ५ काउस्ताम्यो ६ पञ्चपद्याण ।

तत्थ पढमं अज्झयण सामाद्वयं—

तस्स णं उमे चत्तारि अणुयोगद्वारा भवति,

तं जहा—

१ उक्कमे २ निक्खेवे ३ अणुगमे ४ नए ।

उपक्रमस्वरूपम्—

सुत्तं ६० प्र० (१) से किं त उक्कमे ?

उ० उक्कमे छविहे पणत्ते,

तं जहा—

१ णामोक्कमे २ ठणोक्कमे ३ दव्वोक्कमे

४ खेत्तोक्कमे ५ कालोक्कमे ६ भावोक्कमे ।

णाम-ठवणाओ गयाओ* ।

प्र० से किं तं दव्वोक्कमे ?

उ० दव्वोक्कमे दुविहे पणत्ते,

तं जहा—

१ आगमओ य २ नो आगमओ य ।

• * जाव • सेत्त भविअसरीरदव्वोक्कमे ।

प्र० से किं तं जाणयसरीर-भविअसरीरवड्ढरित्तं दव्वोक्कमे ?

उ० जाणयसरीर-भविअसरीरवड्ढरित्तं दव्वोक्कमे—

तिविहे पणत्ते,

*सूत्र न० ९, १०, ११, अनुसार पाठ कहे

*सूत्र न० १३ से १८ अनुसार पाठ कहे ।

त नृणां-

१ मन्त्रित्वे न अन्तित्वे न मन्त्रिण ।

मुक्तं ६१ प्र० मे किं न मन्त्रित्वं दृष्टीयमानं ?

उ० मन्त्रित्वं दृष्टीयमानं मन्त्रित्वे पण्यते,

त नृणां-

१ दुपयान न चउपयान २ अपयान ।

मन्त्रित्वे पण्यते,

त नृणां-

१ मन्त्रित्वमे न च कर्तृविज्ञाने अ ।

मुक्तं ६२ मे किं न दुपयान उपयक्तमे ?

दुपयान-मन्त्रणं, मन्त्रणं, मन्त्रणं, मन्त्रणं,

मन्त्रित्वं, मन्त्रित्वं, मन्त्रित्वं, मन्त्रित्वं,

मन्त्रित्वं, मन्त्रित्वं, मन्त्रित्वं, मन्त्रित्वं,

मन्त्रित्वं, मन्त्रित्वं, मन्त्रित्वं, मन्त्रित्वं ।

मे त नृणां उपयक्तमे ।

मुक्तं ६३ प्र० मे किं न चउपयान उपयक्तमे ?

उ० चउपयान-आगम्यं, मन्त्रित्वं, इत्यादि ।

मे त नृणां उपयक्तमे ।

* मन्त्रित्वं ।

सुत्तं ६४ प्र० से कि तं अपए उवक्कमे ?

उ० अपयाण-अवाण अंबाडगाणं इच्चाइ ।

से त्तं अपश्रोवक्कमे ।

से त्तं सच्चित्त-दव्वोवक्कमे ।

सुत्तं ६५ प्र० से कि त्तं अचित्त-दव्वोवक्कमे ?

उ० अचित्त-दव्वोवक्कमे-

खंडाईणं, गुडाईणं मच्छडीणं ।

से त्तं अचित्तं दव्वोवक्कमे ।

सुत्तं ६६ प्र० से कि त्तं मीसए-दव्वोवक्कमे ?

उ० मीसए-दव्वोवक्कमे-

से चेव थासग-आयसगाइ-मंडिए आसाइ ।

से त्तं मीसए दव्वोवक्कमे ।

से त्तं जाणयसरीर-भविअसरीरवइरित्तं दव्वोवक्कमे ।

से त्तं नो आगमओ दव्वोवक्कमे ।

से त्तं दव्वोवक्कमे

सुत्तं ६७ प्र० से कि त्तं खेतोवक्कमे ?

उ० खेतोवक्कमे-

ज ण हलकुलिआईहि खेत्ताइ उवक्कमिज्जति ।

से त्तं खेतोवक्कमे ।

— मुत्तं ६८ प्र० मे किं तं कानोदयकमे ?

उ० कानोदयकमे—

अ ष नास्मिन्नाह्नि कानोदयकमण कोरु ।

मे त्त कानोदयकमे ।

मुत्तं ६९ प्र० मे किं तं भावोदयकमे ?

उ० भावोदयकमे दुषिहे पणत्तं,

त जहा—

१ आगमओ अ ० नो आगमओ अ ।

तस्य आगमओ जाणा उदउत्ते ।

प्र० मे किं तं नो आगमओ भावोदयकमे ?

उ० नो आगमओ भावोदयकमे दुषिहे पणत्तं,

त जहा—

१ पणत्तये अ २ अपणत्तये अ ।

प्र० मे किं तं अपणत्तये नो आगमओ भावोदयकमे ?

उ० अपणत्तये नो आगमओ भावोदयकमे—

मेत्तं अपणत्तये भावोदयकमे ।

टोदिणि गणिआ-अमन्त्तार्णि ।

प्र० मे किं तं पणत्तये नो आगमओ भावोदयकमे ?

उ० पणत्तये गणत्तार्णि ।

से त्तं पणत्तये भावोदयकमे

मे त्त नो आगमओ भावोदयकमे ।

मे त्त भावोदयकमे ।

सुत्तं ७० अहवा उवक्कमे छव्विहे पणत्ता,

त जहा—

१ आणुपुव्वी २ नाम ३ पमाण ४ दत्तव्वया

५ अत्थाहिगारे ६ समोआरे ।

आनुपूर्वी द्वारम्

सुत्तं ७१ प्र० (१) से किं तं आणुपुव्वी ?

उ० आणुपुव्वी दसविहा पणत्ता,

तं जहा—

१ नामाणुपुव्वी २ ठवणाणुपुव्वी

३ दव्वाणुपुव्वी ४ खेत्ताणुपुव्वी

५ कालाणुपुव्वी ६ उक्कित्तणाणुपुव्वी

७ गणणाणुपुव्वी ८ सठाणाणुपुव्वी

९ सामाआरी आणुपुव्वी १० भावाणुपुव्वी ।

सुत्त ७२ १-२ नाम-ठवणा ओ* गयाओ ।

प्र० (३) से किं त दव्वाणुपुव्वी ?

उ० दव्वाणुपुव्वी दुविहा पणत्ता,

त जहा—

१ आगमओ अ २ नो आगमओ अ ।

प्र० से किं त आगमओ दव्वाणुपुव्वी ?

उ० आगमओ दव्वाणुपुव्वी—

*सूत्र न० ९, १०, ११, के अनुसार पूरा पाठ कहे ।

सम्भवं 'आणुपुच्छि' ति एष निविण्त्वं,
जियं, जियं, नित्यं, पविजयं* जाय नो अणुपेहाए ।

ब्रह्मा ?

अणुपुच्छो गो दत्तमिति षट् ।

योगमस्तु न गो अणुपुच्छो आगमजो ग्ना दत्ताणुपुच्छी,

* जाय जाणाय अणुपुच्छे जयत्पु ।

ब्रह्मा ?

जह जाणाय, अणुपुच्छे न भवत् ।

जह अणुपुच्छे जाणाय न भवति,

सम्भवा नमि आगमजो दत्ताणुपुच्छी ।

मे तं आगमजो दत्ताणुपुच्छी ।

प्र० मे नि त गो-आगमजो दत्ताणुपुच्छी ?

उ० नो-आगमजो दत्ताणुपुच्छी ति विहा पणत्ता,

तं जहा-

१ जाणय-मरीर-दत्ताणुपुच्छी,

२ पविज-मरीर-दत्ताणुपुच्छी,

३ जाणय-मरीर-पविज-मरीर-वदन्ति दत्ताणुपुच्छी ।

प्र० से पि त जाणय-मरीर-दत्ताणुपुच्छी ?

उ० 'आणुपुच्छि' पत्तन्याहिनार जाणयस्म

मृत् न० १३ के अनुसार पूरा पाठ कहें । मृत् न० १४ के अनुसार
संठ कहें ।

जं सरीरयं ववगय-च्चय-चाविय-चत्तदेहं-

सेसं जहा *दव्वावस्सए तहा भाणिअव्वं *जाव

से त्तं जाणयसरीर-दव्वाणुपुव्वी ।

प्र० से किं तं भविअसरीर-दव्वाणुपुव्वी ?

उ० भविअ-सरीर-दव्वाणुपुव्वी-

जे जीवे जोणी-जम्मण-निव्वंते

सेसं जहा दव्वावस्सए . . *जाव . .

से त्तं भविअसरीर दव्वाणुपुव्वी ।

प्र०, से किं तं जाणयसरीर-भविअसरीर-वइरित्ता
दव्वाणुपुव्वी ?

उ० जाणयसरीर-भविअसरीर-वइरित्ता दव्वाणुपुव्वी-

दुविहा पण्णत्ता,

तं जहा-

१ उवणिहिआ य २ अणोवणिहिआ य ।

तत्थ णं जा सा उवणिहिआ सा ठप्पा ।

तत्थ णं जा सा अणोवणिहिआ, सा दुविहा पण्णत्ता,

तं जहा-

१ नेगम-ववहाराणं २ संगहस्स य ।

*सूत्र न १६ की पक्ति ४ से पक्ति १३ तक का पाठ कहें ।

*सूत्र न १७ की पक्ति ४ से ८ तक का पाठ कहें ।

सुत्त ७३ प्र० (१) से किं त नेगम-ववहाराणं अणोवणिहिआ-
दव्वाणुपुव्वी ?

उ० नेगम-ववहाराणं अणोवणिहिआ दव्वाणुपुव्वी-
पंचविहा पणत्ता,
तं जहा-

१ अट्ठपयपरूवणया, २ भंगसमुक्कित्तणया

३ भंगोवदंसणया ४ समोआरे ५ अणुगमे ।

सुत्तं ७४ प्र० (१) से किं तं नेगम-ववहाराणं अट्ठपयपरूवणया ?

उ० नेगम-ववहाराणं अट्ठपयपरूवणया-

तिपएसिए आणुपुव्वी जाव दसपएसिए आणुपुव्वी,

संखेज्जपएसिए आणुपुव्वी,

असंखिज्जपएसिए आणुपुव्वी,

अणंतपएसिए आणुपुव्वी,

परमाणुपोग्गले अणुणापुव्वी,

दुपएसिए अवत्तव्वए,

तिपएसिआ आणुपुव्वीओ *जाव

अणंतपएसिआओ आणुपुव्वीओ,

परमाणुपोग्गला अणुणापुव्वीओ

दुपएसिआइं अवत्तव्वयाइं ।

से तं नेगम-ववहाराणं अट्ठपयपरूवणया ।

सुत्तं ७५ प्र० एआए णं नेगम-ववहाराणं अट्टपयपरूवणयाए
कि पओटाणं ?

उ० एआए णं नेगम-ववहाराणं अट्टपयपरूवणयाए
भगसमुदिकत्तणया कज्जइ ।

सुत्तं ७६ प्र० (२) से कि तं नेगम-ववहारा भगसमुदिकत्तणया ?
उ० नेगम-ववहाराणं भगसमुदिकत्तणया ।

- १ अत्थि आणुपुच्ची,
- २ अत्थि अणाणुपुच्ची,
- ३ अत्थि अवत्तव्वए,
- (एक वचनान्तास्त्रय)
- ४ अत्थि आणुपुच्चीओ,
- ५ अत्थि अणाणुपुच्चीओ,
- ६ अत्थि अवत्तव्वयाइ ।

(बहुवचनान्तास्त्रय) एवमसयोगत षड्भगा भवन्ति—

- ७ अह्वा अत्थि आणुपुच्ची अ अणाणुपुच्ची अ, १
- ८ अह्वा अत्थि आणुपुच्ची अ अणाणुपुच्चीओ अ, २
- ९ अह्वा अत्थि आणुपुच्चीओ अ अणाणुपुच्ची अ, ३

संयोगपक्षे पदत्रयस्य त्रयोद्विकसयोगा.—

- १० अह्वा अत्थि आणुपुच्चीओ अ अणाणुपुच्चीओ अ, ४
- ११ अह्वा अत्थि आणुपुच्ची अ अवत्तव्वए अ ५
- १२ अह्वा अत्थि आणुपुच्ची अ, अवत्तव्वयाइ अ ६

२५ अहवा अत्थि आणुपुच्चीओ अ,

अणाणुपुच्चीओ अ, अवत्तच्चवए अ । ७

२६ अहवा अत्थि आणुपुच्चीओ अ,

अणाणुपुच्चीओ अ, अवत्तच्चयाइं अ । ८

ति संओगे एए अट्ठभंगा

एवं सच्चैऽवि छव्वीसं भंगा ।

से त्तं नेगम-ववहाराणं भंगसमुक्कित्तणया ।

सुत्तं ७७ प्र० एआए णं नेगम-ववहाराणं भंगसमुक्कित्तणयाए
किं पओअणं ?

उ० एआए णं नेगम-ववहाराणं भंगसमुक्कित्तणयाए
भंगोवदंसणया कीरइ ।

सुत्तं ७८ प्र० (३) से किं तं नेगम-ववहाराणं भंगोवदंसणया ?

उ० नेगम-ववहाराणं भंगोवदंसणया-

१ तिपएसिए आणुपुच्ची

२ परमाणुपोगले अणाणुपुच्ची

३ दुपएसिए अवत्तच्चवए

४ अहवा तिपएसिया आणुपुच्चीओ

५ परमाणुपोगला अणाणुपुच्चीओ

६ दुपएसिया अवत्तच्चयाइं ।

७-१० अहवा तिपएसिए अ परमाणुपोगले अ
आणुपुच्चीअ अणाणुपुच्ची अ, चउभंगो । ४

२६ अहवा तिपएसिआ य परमाणुपोगला अ, दुपएसिया अ
 अणुपुव्वीओ अ, अणणुपुव्वीओ य, अवत्तव्वयाइं य । ८
 से तं नेगम-व्वहाराण भंगोवदसणया ।

सुत्तं ७९ प्र० (४) से किं तं समोअरे ?

समोअरे (भणिज्जइ) ।

नेगम-व्वहाराणं आणुपुव्वीदव्व्वाइं कहिं समोअरंति ?

किं आणुपुव्वी-दव्व्वाइं समोअरंति

अणणुपुव्वीदव्व्वाइं समोअरंति

अवत्तव्वयदव्व्वाइं समोअरंति ?

उ० नेगम-व्वहाराण आणुपुव्वीदव्व्वाइं आणुपुव्वीदव्व्वाइं

समोअरंति,

नो अणणुपुव्वीदव्व्वाइं समोअरंति,

नो अवत्तव्वयदव्व्वाइं समोअरंति ।

प्र० नेगम-व्वहाराणं अणणुपुव्वीदव्व्वाइं कहिं समोअरंति ?

किं आणुपुव्वीदव्व्वाइं समोअरंति

अणणुपुव्वीदव्व्वाइं समोअरंति

अवत्तव्वयदव्व्वाइं समोअरंति ?

उ० ओ आणुपुव्वीदव्व्वाइं समोअरंति,

अणणुपुव्वीदव्व्वाइं समोअरंति,

नो अवत्तव्वयदव्व्वाइं समोअरंति ।

उ० नो संखिज्जाइं, नो असंखिज्जाइं, अणंताइं ।

*एवं अणाणुपुव्वीदव्वाइं

अवत्तव्वगदव्वाइं य अणंताइं भाणिअव्वाइं ।

सुत्त ८३ प्र० (३) नेगम-ववहाराणं अणाणुपुव्वीदव्वाइं लोगस्स
कतिभागे होज्जा ?

किं संखिज्जइभागे होज्जा,

असंखिज्जइभागे होज्जा,

संखेज्जेसु भागेसु होज्जा,

असंखेज्जेसु भागेसु होज्जा,

सव्वलोए होज्जा ?

उ० एगं दव्वं पडुच्च लोगस्स—

संखिज्जइभागे वा होज्जा,

असंखिज्जइभागे वा होज्जा,

संखेज्जेसु भागेसु वा होज्जा,

सव्वलोए वा होज्जा ।

णाणादव्वाइं पडुच्च—

नियमा सव्वलोए होज्जा ।

प्र० नेगम-ववहाराणं अणाणुपुव्वीदव्वाइं

किं लोगस्स संखिज्जइभागे होज्जा ?

*इसी सूत्र की पक्ति १ से पक्ति ३ तक का पाठ कहें ।

सच्चलोगं वा फुसंति ।

णाणादच्चाइं पडुच्च नियमा सच्चलोगं फुसंति ।

प्र० णेम-ववहाराणं अणाणुपुच्चीदच्चाइं लोगस्स

किं संखेज्जइभागं फुसंति * जाव

सच्चलोगं फुसंति ?

उ० एगं दच्चं पडुच्च-

नो संखिज्जइभागं फुसंति,

असंखिज्जइभागं फुसंति ।

नो संखिज्जे भागे फुसंति,

नो असंखिज्जे भागे फुसंति,

नो सच्चलोअं फुसंति ।

णाणादच्चाइं पडुच्च नियमा सच्चलोअं फुसंति ।

एवं अवत्तच्चगदच्चाइ भाणिअच्चाइं ।

सुत्तं ८५ प्र० (५) णेम-ववहाराणं आणुपुच्चीदच्चाइ

कालओ केवच्चिरं होइ ?

उ० एग दच्चं पडुच्च-

जहण्णेणं असंखेज्ज कालं,

उक्कोसेणं एगं समयं,

*यहाँ ई १ सूत्र के पहले प्रश्न का पूरा पाठ कहै ।

किं संखिज्जइभागे होज्जा

असंखिज्जइभागेसु होज्जा

संखेज्जेसुभागे होज्जा

असंखेज्जेसु भागेसु होज्जा ?

उ० नो संखिज्जइभागे होज्जा,

नो असंखिज्जइभागे होज्जा,

नो संखेज्जेसु भागेसु होज्जा,

नियमा असंखेज्जेसु भागेसु होज्जा ।

प्र० णेमववहारारणं अणुपुव्वीदव्वाइं

सेसदव्वाणं कइभागे होज्जा ?

किं संखेज्जइभागे होज्जा

असंखिज्जइभागे होज्जा

संखेज्जेसु भागेसु होज्जा

असंखेज्जेसु भागेसु होज्जा ?

उ० नो संखेज्जइभागे होज्जा,

असंखेज्जइभागे होज्जा,

नो संखेज्जेसु भागेसु होज्जा,

नो असंखेज्जेसु भागेसु होज्जा,

एवं अवत्तव्वगदव्वाणि वि भाणियव्वाणि ।

८८ प्र० (८) णेम-ववहारारणं अणुपुव्वीदव्वाइं

कयरंमि भावे होज्जा ?

आणुपुव्वीदव्वाइं दव्वट्ठयाए असंखेज्जगुणाइं ।
 पएसट्ठयाए णेमम-ववहारणं सव्वत्थोवाइं ।
 अणणुपुव्वीदव्वाइं अ पएसट्ठयाए,
 अवत्तव्वगदव्वाइं पएसट्ठयाए विसेसाहिआइ ।
 आणुपुव्वीदव्वाइं पएसट्ठयाए अणंतगुणाइं ।
 दव्वट्ठपएसट्ठयाए सव्वत्थोवाइं
 णेमम-ववहारणं अवत्तव्वगदव्वाइं दव्वट्ठयाए,
 अणणुपुव्वीदव्वाइं दव्वट्ठयाए अपसट्ठयाए-
 विसेसाहिआइं ।

अवत्तव्वगदव्वाइं पएसट्ठयाए विसेसाहिआइ ।
 आणुपुव्वीदव्वाइं दव्वट्ठयाए असंखेज्जगुणाइं ।
 ताइं चेव पएसट्ठयाए अणंतगुणाइं ।
 से तं अणुगमे ।
 मे तं नेमम-ववहारणं अणोवणिहिआ दव्वाणुपुव्वी ।

सुत्तं १० प्र० (२) से किं तं संगहस्स अणोवणिहिआ दव्वाणुपुव्वी ?

उ० संगहस्स अणोवणिहिआ दव्वाणुपुव्वी-
 पंचविहा पणत्ता,
 त जहा-

१ अट्ठपयपरुव्वणया २ भगसन्नुविकत्तणया
 ३ भगोवदंसणया ४ समोआरे ५ अणुगमे ।

मुत्त ९१ प्र० (१) से किं तं संगहस्स अट्ठपयपरूवणया ?

उ० संगहस्स अट्ठपयपरूवणया—

तिपएसिया आणुपुव्वी, चउप्पएसिया आणुपुव्वी,

जाव दसपएसिआ आणुपुव्वी,

संखेज्जपएसिया आणुपुव्वी,

असंखिज्जपएसिया आणुपुव्वी,

अणंतपएसिया आणुपुव्वी,

परमाणुयोगला अणुपुव्वी,

टुपएसिया अवत्तच्चए ।

से तं संगहस्स अट्ठपयपरूवणया ।

मुत्त ९२ प्र० एआए णं संगहस्स अट्ठपयपरूवणयाए किं पओअणं ?

उ० एआए णं संगहस्स अट्ठपयपरूवणयाए

संगहस्स भंगसमुक्कित्तणया कज्जड ।

प्र० (२) से किं तं संगहस्स भंगसमुक्कित्तणया ?

उ० संगहस्स भंगसमुक्कित्तणया ।

१ अत्थि आणुपुव्वी,

२ अत्थि अणुपुव्वी,

३ अत्थि अवत्तच्चए,

४ अहवा अत्थि आणुपुव्वी अ, अणुपुव्वी अ,

५ अहवा अत्थि आणुपुव्वी अ अवत्तच्च

६ अहवा अत्थि अणाणुपुब्बी अ, अवत्तच्चए अ,

७ अहवा अत्थि आणुपुब्बी अ,

अणाणुपुब्बी अ, अवत्तच्चए अ ।

एवं सत्तभंगा ।

से तं संगहस्स भंगसमुक्कित्तणया ।

प्र० एआए णं संगहस्स भंगसमुक्कित्तणयाए किं पओअणं ?

उ० एआए णं संगहस्स भंगसमुक्कित्तणयाए—

संगहस्स भंगोवदंसणया कीरइ ।

सुत्तं ९३ प्र० (३) से किं तं संगहस्स भंगोवदंसणया ?

उ० संगहस्स भंगोवदंसणया—

१ तिपएसिया आणुपुब्बी

२ परमाणुपोगला अणाणुपुब्बी

३ दुपएसिया अवत्तच्चए

४ अहवा तिपएसिया य परमाणुपुगला य

आणुपुब्बी अ अणाणुपुब्बी अ,

५ अहवा तिपएसिया य, दुपएसिया य

आणुपुब्बी अ अवत्तच्चए अ,

६ अहवा परमाणुपोगला य, दुपएसिया य,

अणाणुपुब्बी अ, अवत्तच्चए अ,

७ अहवा तिपएसिया य परमाणुपोगला य

दुष्पुत्र्या य आणुपुत्र्या य अणानुपुत्र्या य,
अपतप्य य ।

मे तां समस्तम् भोगोद्वेगमया ।

मुन १४ प्र० (४) मे किं तं संगतम् समोअरे ?

संगतम् समोअरे (भगिस्तम्)

संगतम् आणुपुत्र्यादव्याहं कीहि समोअरति ?

किं आणुपुत्र्या दव्योहि समोअरति

अणानुपुत्र्या दव्योहि समोअरति

अपतप्य-दव्योहि समोअरति ?

उ० संगतम् आणुपुत्र्यादव्याहं आणुपुत्र्यादव्योहि समोअरति,

नो अणानुपुत्र्यादव्योहि समोअरति,

नो अपतप्य-दव्योहि समोअरति ।

* एवं दोषि वि गृह्याणं गृह्याणं समोअरति ।

मे सा समोअरे ।

मुन १५ (५) मे किं तं सणुगमे ?

सणुगमे अट्टपिरे पणसं ?

न गृह्या-

गृह्या—'संतप्यपरपणया,' दव्यवमाणं च गित्तं^१ फुत्तणा^२ य ।

कामो^३ य अतरं^४ भग^५ भावे^६ अप्पावह^७ मत्ति ॥१॥

* वेगानि आणुपुत्र्यादव्याहं कीहि 'अणानुपुत्र्यादव्याह' और
अपतप्यदव्याह मगापार ऊपर मत प्रश्नोत्तर दो बार कहें ।

प्र० (१) संगहस्स आणुपुव्वीदच्चाइं किं अत्थि नत्थि ?

उ० णियमा अत्थि ।

*एवं दोन्नि वि ।

प्र० (२) संगहस्स आणुपुव्वीदच्चाइं

किं संखिज्जाइं असंखिज्जाइं अणंताइं ?

उ० नो संखिज्जाइं, नो असंखिज्जाइं, नो अणंताइं ।

नियमा एगारासी ।

*एवं दोन्नि वि ।

प्र० (३) संगहस्स आणुपुव्वीदच्चाइं लोगस्स कइभागे होज्जा ?

किं संखिज्जइभागे होज्जा,

असंखिज्जइभागे होज्जा,

संखेज्जेसु भागेषु होज्जा,

असंखेज्जेसु भागेषु होज्जा,

सच्चलोए होज्जा ?

उ० नो संखिज्जइभागे होज्जा,

नो असंखिज्जइभागे होज्जा,

नो संखेज्जेसु भागेषु होज्जा

नो असंखेज्जेसु भागेषु होज्जा

रेखाकित आणुपुव्वीदच्चाइ की जगह 'अणुपुव्वीदच्चाइ' और 'अवत्तव्वगदच्चाइ' लगाकर उपर का प्रश्नोत्तर दो बार कहें ।

*एवं दोस्मि वि ।

प्र० ७ संगहस्स आणुपुब्बीदव्वाइ

सेसदव्वाणं कइभागे होज्जा ?

किं संखिज्जइभागे होज्जा,

असंखिज्जइभागे होज्जा,

संखेज्जेसु भागेसु होज्जा,

असंखेज्जेसु भागेसु होज्जा ?

उ० नो संखिज्जइभागे होज्जा,

नो असंखिज्जइभागे होज्जा,

नो संखेज्जेसु भागेसु होज्जा,

नो असंखेज्जेसु भागेसु होज्जा

नियमा तिभागे होज्जा ।

*एवं दोस्मि वि ।

प्र० (८) संगहस्स आणुपुब्बीदव्वाइं कयरम्मि भावे होज्जा?

उ० नियमा साइपारिणामिए भावे होज्जा ।

*एवं दोस्मि वि ।

अप्पाबहं नत्थि ।

से तं अणुगमे ।

२* रेखाकित आणुपुब्बीदव्वाइ की जगह 'अणुपुब्बीदव्वाइ' और 'अवत्तव्वगदव्वाइ' लगाकर उपर का प्रश्नोत्तर दो बार कहे ।

सुत्तं ९८ अहवा ओवणिहिधा दच्चाणुपुच्ची तिविहा पणत्ता,
तं जहा—

१ पुच्चाणुपुच्ची २ पच्छाणुपुच्ची ३ अणाणुपुच्ची ।

प्र० से कि तं पुच्चाणुपुच्ची ?

उ० पुच्चाणुपुच्ची—

१ परमाणुपोगले,

२ दुपएसिए,

३ तिपएसिए,

• जाव • • दसपएसिए,

सखिज्जपएसिए,

असंखिज्जपएसिए,

अणंतपएसिए ।

से तं पुच्चाणुपुच्ची ।

प्र० से कि त पच्छाणुपुच्ची ?

उ० पच्छाणुपुच्ची—

अणंतपएसिए • • जाव • • परमाणुपोगले ।

से तं पच्छाणुपुच्ची ।

प्र० से कि त अणाणुपुच्ची ?

उ० अणाणुपुच्ची—एआए चंव एगाइआए एगुत्तरिआए

अणंत गच्छगयाए सेढीए अणमण्णभासो दुरूवूणो ।

*अणु के पणोन्नय मे आए हुए पाठ को उल्टे क्रम से कहें ।

१ अट्टपयपरूवणया, २ भंगसमुविकत्तणया
३ भंगोवदंसणया, ४ समोआरे, ५ अणुगमे ।

प्र० (१) से किं तं णेगम-ववहारणं अट्टपयपरूवणया ?

उ० णेगम-ववहारणं अट्टपयपरूवणया—

तिपएसोगाढे आणुपुव्वी,

• • जाव • • वसपएसोगाढे आणुपुव्वी,

संखिज्जपएसोगाढे आणुपुव्वी,

असंखिज्जपएसोगाढे आणुपुव्वी,

एगपएसोगाढे आणुपुव्वी,

दुपएसोगाढे अवत्तच्चए,

तिपएसोगाढा आणुपुव्वीओ,

• • जाव • • वसपएसोगाढा आणुपुव्वीओ,

संखेज्जपएसो गाढा आणुपुव्वीओ

असंखेज्जपएसोगाढा आणुपुव्वीओ,

एगपएसोगाढा अणाणुपुव्वीओ,

दुपएसोगाढा अवत्तच्चगाइं—

से तं णेगम-ववहारणं अट्टपयपरूवणया ।

प्र० एआए णं णेगम-ववहारणं अट्टपयपरूवणयाए ।

किं पओअणं ?

उ० एआए नेगम-ववहारणं अट्टपयपरूवणयाए

णेगम-ववहारणं भंगसमुविकत्तणया किज्जइ ।

प्र० (२) से किं तं णेगम-ववहारणं भंगसमुविकत्तणया ?

७ अहवा त्तिएसोगाढे अ, एगपएसोगाढे अ

आणुपुच्ची अ, अणाणुपुच्ची अ,

*एवं तहा चेव, दच्चाणुपुच्चीगमेणं छच्चीस भंगा
भाणिअच्चा ।

• जाव • • से त्त णेगम-ववहारणं भंगोवदसणया ।

प्र० (४) से किं तं समोआरे ?

समोआरे-

णेगम-ववहारणं आणुपुच्चीदच्चाइ कहि समोअरंति ?

किं आणुपुच्चीदच्चेहिं समोअरंति

अणाणुपुच्चीदच्चेहिं समोअरंति

अवत्तव्वयदच्चेहिं समोअरंति ?

उ० आणुपुच्चीदच्चाइं आणुपुच्चीदच्चेहिं समोअरंति,

नो अणाणुपुच्चीदच्चेहिं समोअरंति,

नो अवत्तव्वयदच्चेहिं समोअरंति ।

एवं तित्ति वि सट्ठाणे सट्ठाणे समोअरंति

त्ति भाणियच्चाइ ।

से त्त समोआरे ।

प्र० (५) से किं त अणुगमे ?

उ० अणुगमे नव विहे पण्णत्ते

तं जहा-

इ सूत्र ७८ के समान पाठ कहे ।

सखेज्जेसु भागेसु वा होज्जा,
 असखिज्जेसु भागेसु वा होज्जा,
 देसुणे, वा लोए होज्जा ।
 णाणादच्चाइं पडुच्च नियमा सच्चलोए होज्जा ।

प्र० णेम-ववहारणं अणुपुव्वीदच्चाणं पुच्छा

उ० एगं दच्चं पडुच्च-

नो संखिज्जइभागे होज्जा,
 असखिज्जइभागे होज्जा ।
 नो सखेज्जेसु भागेसु होज्जा,
 नो असंखेज्जेसु भागेसु होज्जा,
 नो सच्चलोए होज्जा ।
 णाणादच्चाइ पडुच्च नियमा सच्चलोए होज्जा ।
 एवं अवत्तव्वगदच्चाणि वि भाणिअच्चाणि ।

प्र० (४) णेम-ववहारण अणुपुव्वीदच्चाइं लोगस्स-

किं संखिज्जइभागं फुसंति,
 असखिज्जइभागं फुसंति,
 संखेज्जे भागे फुसंति,
 असंखेज्जे भागे फुसंति,
 सच्चलोगं फुसंति ?

उ० एगं दच्चं पडुच्च-

संखिज्जइभागं वा फुसइ,

- प्र० (७) णेगम-ववहारणं आणुपुव्वीदव्वाइं
सेसदव्वाणं कइभागे होज्जा ?
- उ० ' तिणिण वि जहा दव्वाणुपुव्वीए ।
- प्र० (८) णेगम-ववहारणं आणुपुव्वीदव्वाइं
कयरगिम् भावे होज्जा ?
- उ० तिन्नि वि नियमा साइपरिणामिए भावे होज्जा ?
एवं दोन्नि वि ।
- प्र० (९) एएसि णं भंते !
णेगम-ववहारणं
आणुपुव्वीदव्वाणं
अणाणुपुव्वीदव्वाणं
अवत्तव्वगदव्वाणं य
दव्वट्ठयाए, पएसट्ठयाए, दव्वट्ठपएसट्ठयाए
कयरे कयरेहिंते
अप्पा वा, ब्रह्मया वा,
तुल्ला वा, विसेसाहिया वा?
- उ० गोयमा ।
सच्चत्थोवाइं णेगम-ववहारणं अवत्तव्वगदव्वाइं
दव्वट्ठयाए ।
अणाणुपुव्वीदव्वाइं दव्वट्ठयाए विसेसाहिआइं ।

*सूत्र ८७ के समान पाठ कहें ।

प्र० (१) से किं तं संगहस्स अट्ठपयपरूवणया ?

उ० संगहस्स अट्ठपयपरूवणया—

तिपएसोगाढे आणुपुव्वी,

चउप्पएसोगाढे आणुपुव्वी,

• • जाव • • दसपएसोगाढे आणुपुव्वी,

संखिज्जपएसोगाढे आणुपुव्वी,

असंखिज्जपएसोगाढे आणुपुव्वी,

एगपएसोगाढे अणाणुपुव्वी,

दुपएसोगाढे अवत्तव्वए ।

से त्तं संगहस्स अट्ठपयपरूवणया ।

प्र० एआए णं संगहस्स अट्ठपयपरूवणयाए किं पओअणं ?

उ० संगहस्स अट्ठपयपरूवणयाए—

संगहस्स भंगसमुक्कित्तणया कज्जइ ।

प्र० (२) से किं तं संगहस्स भंगसमुक्कित्तणया ?

उ० संगहस्स भंगसमुक्कित्तणया—

१ अत्थि आणुपुव्वी,

२ अत्थि अणाणुपुव्वी,

३ अत्थि अवत्तव्वए,

४ अहवा अत्थि आणुपुव्वी अ, अणाणुपुव्वी अ,

किं आणुपुव्वोदव्वोहिं समोअरंति
 अणाणुपुव्वोदव्वोहिं समोअरंति . .
 अवत्तव्वयदव्वोहिं समोअरंति ?

उ० तिग्णिं वि सट्ठाणे समोअरंति,
 ते तं समोअरे ।

प्र० (५) ते किं तं अणुगमे ?

उ० अणुगमे अट्ठविहे पणत्ते,
 तं जहा-

गाहा—^१संतपयपत्तवणया^२, दव्वपमाणं च खित्तं^३ फुत्तणा^४ य ।

कालो^५ य अंतरं^६, भागं^७ भावे^८ अप्पाबहुं^९ गत्थि ॥१॥

प्र० (१) संगहस्स आणुपुव्वोदव्वोहिं किं अत्थि गत्थि ।

उ० गियमा अत्थि ।

एवं दुग्णिं वि ।

सेसगदाराइं जहा दव्वानुपुव्वोए संगहस्स

तहा खेत्तानुपुव्वोए वि भाणिअव्वाइं

. . जाव . . ते तं अणुगमे ।

ते तं संगहस्स अणोवणिहिया खेत्तानुपुव्वो ।

ते तं अणोवणिहिया खेत्तानुपुव्वो ।

सुत्तं १०३ प्र० ते किं तं उवणिहिया खेत्तानुपुव्वो ?

उ० उवणिहिया खेत्तानुपुव्वो तिविहा पणत्ता,
 तं जहा-

प्र० से किं तं पच्छाणुपुव्वी ?

उ० पच्छाणुपुव्वी—

तमत्तमप्पभा • जाव • रयणप्पभा ।

से तं पच्छाणुपुव्वी ।

प्र० से किं तं अणाणुपुव्वी ?

उ० अणाणुपुव्वी—एआए चेव एगाइआए एगुत्तरिआए
सत्त-गच्छगयाए सेहोए अण्णमण्णव्वासो दुरूव्वो ।

से तं अणाणुपुव्वी ।

तिरिअ-लोअ-खेत्ताणुपुव्वी ति विहा पण्णत्ता ।

तं जहा—

१ पुव्वाणुपुव्वी २ पच्छाणुपुव्वी ३ अणाणुपुव्वी ।

प्र० से किं तं पुव्वाणुपुव्वी ?

उ० पुव्वाणुपुव्वी—

गःहाओ—जंबूहीवे लवणे, धायइ कालोअ पुद्वखरे वरणे ।

खीर-घय-खोअ-नंती, अरुणवरे कुंडले रुअगे ॥१॥

*आभरण-वत्थ-नांधे, उप्पल-तिलए अ पउस निहि रयणे ।

वासहर-दह-नईओ, विजया वक्खार कप्पिदा ॥२॥

*जंबूहीवाओ खलु निरतरा सेसया असखडमा ।

भुयग वर कुसवराविय कोचचराभरणमाईय ॥

यह गाया भी वाचनान्तर मे पाई जाती है ।

११ आरणे, १२ अच्चुए,
 १३ गेवेज्ज-विमाणा, १४ अणुत्तर-विमाणा,
 १५ ईसिपम्भारा,
 से तं पुव्वाणुपुव्वी ।

प्र० से किं तं पच्छाणुपुव्वी ?

उ० पच्छाणुपुव्वी—

ईसिपम्भारा · जाव · · सोहम्मे ।

से तं पच्छाणुपुव्वी ?

प्र० से किं तं अणाणुपुव्वी ?

उ० अणाणुपुव्वी—एआए चेव एगाइआए एगुत्तरिआए
 पत्तरस-गच्छगयाए सेढीए अण्णमण्णम्भासो दुरुवूणो ।
 से तं अणाणुपुव्वी ।

अहवा ओवणिहिया खेत्ताणुपुव्वी तिविहा पण्णत्ता,
 तं जहा—

१ पुव्वाणुपुव्वी २ पच्छाणुपुव्वी ३ अणाणुपुव्वी अ ।

प्र० से किं तं पुव्वाणुपुव्वी ?

उ० पुव्वाणुपुव्वी—

एगपएसोगाढे

दुपएसोगाढे · जाव · · दसपएसोगाढे · · जाव · · ·

संखिज्जपएसोगाढे

तं जहा—

१ णेगम-ववहाराणं २ संगहस्स य ।

सुत्तं १०६ प्र० से किं तं णेगम-ववहाराणं अणोवणिहिआ
कालाणुपुब्बी ?

उ० णेगमववहाराणं अणोवणिहिआ कालाणुपुब्बी-
पंचविहा पणत्ता,

तं जहा—

१ अट्ठपयपरूवणया, २ भंगसमुक्कित्तणया

३ भंगोवदंसणया ४ समोआरे ५ अणुगमे ।

सुत्तं १०७ प्र० (१) से किं तं णेगम-ववहाराणं अट्ठपयपरूवणया ?

उ० णेगम-ववहाराणं अट्ठपयपरूवणया—

तिसमयट्ठिइए आणुपुब्बी,

• • जाव • • दससमयट्ठिइए आणुपुब्बी,

संखिज्जसमयट्ठिइए आणुपुब्बी,

असंखिज्जसमयट्ठिइए आणुपुब्बी,

एगसमयट्ठिइए अणाणुपुब्बी,

दुसमयट्ठिइए अवत्तच्चए,

तिसमयट्ठिइआओ आणुपुब्बीओ,

• जाव • संखेज्ज समय ठिईयाओ आणुपुब्बीओ

असंखेज्ज समय ठिईयाओ अणुपुब्बीओ

एगसमयट्ठिइआओ अणाणुपुब्बीओ,

दुसमयट्ठिइआइं अवत्तच्चगाइं ।

सुत्तं १०९ प्र० (३) से किं तं णेगम-ववहाराणं भंगोवदंसणया ?

उ० णेगम-ववहाराणं भंगोवदंसणया-

तिसमयट्ठिइए आणुपुच्ची

एगसमयट्ठिइए अणाणुपुच्ची

दुसमयट्ठिइए अवत्तच्चए

तिसमयट्ठिइयाओ आणुपुच्चीओ,

एगसमयट्ठिइयाओ अणाणुपुच्चीओ,

दुसमयट्ठिइआइं अवत्तच्चगाइं,

अहवा तिसमयट्ठिइए अ, एगसमयट्ठिइए अ

आणुपुच्ची अ, अणाणुपुच्ची अ,

* एवं दच्चाणुपुच्चीगमेणं छच्चीसं भंगा भाणिअच्चा

• जाव • से तं णेगम-ववहाराणं भंगोवदंसणया ।

सुत्तं ११० प्र० (४) से किं तं समोआरे ?

समोआरे-

णेगम-ववहाराणं आणुपुच्चीदच्चाइं कहिं समोअरंति ?

किं आणुपुच्चीदच्चेहिं समोअरंति

अणाणुपुच्चीदच्चेहिं समोअरंति

अवत्तच्चयदच्चेहिं समोअरंति ?

* सूत्र ७८ के समान पाठ कहें ।

उ० एवं तिणिण वि सट्ठाणे समोअरंति इति भाणिअच्चं ।
से त्तं समोआरे ।

सुत्त १११ प्र० (५) से कि तं अणुगमे ?

उ० अणुगमे तवविहे पणत्ते,
तं जहा—

गाहा—संतपयपरूवणया^१, दव्वयमाणं^२ च खित्त^३ फुसणा^४ य ।
कालो^५ य अंतरं^६, भाग^७ भावे^८ अप्पावहुं^९ चेव ॥१॥

प्र० (१) णेगम-ववहाराणं आणुपुव्वीदव्वाइं

कि अत्थि, णत्थि ?

उ० णियमा तिणिण वि अत्थि ।

प्र० (२) णेगम-ववहाराणं आणुपुव्वीदव्वाइं

कि संखिज्जाइं, असंखिज्जाइं, अणंताइं ?

उ० नो संखिज्जाइं, असंखिज्जाइं, नो अणंताइं ।
एवं दुणिण वि

प्र० (३) णेगम-ववहाराणं आणुपुव्वीदव्वाइं लोगस्स—

कि सखिज्जइभागे होज्जा,

असंखिज्जइभागे होज्जा.

३* रेखाकित आरु० ..दव्वाइ की जगह 'अणाणुपुव्वीदव्वाइं' और
'अवत्तव्वगदव्वाइ' लगाकर उपर का प्रश्न दो बार कहें ।

संखेज्जेसु भागेसु वा होज्जा,
असंखेज्जेसु भागेसु वा होज्जा,
सव्वलोए वा होज्जा ?

उ० एगं दव्वं पडुच्च लोगस्स-

संखेज्जइभागे वा होज्जा,
असंखेज्जइभागे वा होज्जा,
संखेज्जेसु भागेसु वा होज्जा,
असंखेज्जेसु भागेसु वा होज्जा,
*देसूणे वा लोए होज्जा ।

णाणा दव्वाइं पडुच्च नियमा सव्वलोए होज्जा ।

(आएसंतरेण वा सव्वपुच्छासु होज्जा)

*एवं अणाणुपुव्वीदव्वाणि

अवत्तव्वदव्वाणि वि जहा णेम-ववहाराणं
खेत्ताणुपुव्वीए ।

एवं फुसणा कालापुव्वीए वि जहा चेव भाणिअव्वा ।

प्र० (५) णेम-ववहाराणं, आणुपुव्वीदव्वाइं-
कालओ केवच्चिरं होति ?

उ० एगं दव्वं पडुच्च-

जहण्णेणं तिणिण समया,

*पदेसूणे इत्यपि क्वचित् ।

*पृष्ठ ४८१ पक्ति ७ से पृष्ठ ४८३ पक्ति ७ तक के समान पाठ कहें ।

उक्कोसेणं असंखेज्जं कालं ।

णाणादच्चाइं पडुच्च सच्चद्धा ।

प्र० णेगम-ववहाराणं अणाणुपुव्वीदच्चाइं कालओ
केवच्चिरं होति ?

उ० एगं दच्चं पडुच्च अजहणमणुक्कोसेणं एकं समयं,
णाणादच्चाइं पडुच्च सच्चद्धा ।

प्र० अवत्तच्चदच्चाणं पुच्छा ?

उ० एगं दच्चं पडुच्च अजहणमणुक्कोसेणं दो समया,
णेगम-ववहाराणं णाणादच्चाइं पडुच्च सच्चद्धा ।

प्र० णेगम-ववहाराणं आणुपुव्वीदच्चाणमंतरं
कालओ केवच्चिरं होति ?

उ० एगं दच्चं पडुच्च—

जहण्णेणं एगं समयं,

उक्कोसेणं दो समया

णाणादच्चाइं पडुच्च णत्थि अंतरं ।

प्र० णेगम-ववहाराणं अणाणुपुव्वीदच्चाणं
अंतरं कालओ केवच्चिरं होइ ?

उ० एगं दच्चं पडुच्च जहण्णेणं दो समया,

उक्कोसेणं असंखेज्जं कालं ।

णाणादच्चाइं पडुच्च णत्थि अंतरं ।

प्र० णेगम-ववहारारणं अवत्तव्वगदव्वारणं पुच्छा ?

उ० एगं दव्वं पडुच्च जहण्णेणं एगं समयं

उवकोसेणं असंखेज्जं कालं ।

णाणादव्वाइं पडुच्च णत्थि अंतरं ।

*भाग-भाव-अप्याबहुं चेव जहा खेत्ताणुपुव्वीए

तहा भाणिअव्वाइं

. . जाव . . से त्तं अणुगमे ।

से त्त णेगम-ववहारारणं अणोवणिहिया कालाणुपुव्वी ।

सुत्तं ११२ प्र० से किं तं संगहस्स अणोवणिहिया कालाणुपुव्वी ?

उ० संगहस्स अणोवणिहिया कालाणुपुव्वी

पंचविहा पणत्ता,

तं जहा—

१ अट्ठपयपरूवणया २ भंगसमुक्कित्तणया

४ भंगोवदंसणया ४ समोआरे ५ अणुगमे ।

सुत्तं ११३ प्र० (१) से किं तं संगहस्स अट्ठपयपरूवणया ?

उ० संगहस्स अट्ठपयपरूवणया—

एआइं पंच वि दाराइं जहा खेत्ताणुपुव्वीए संगहस्स

कालाणुपुव्वीए तहा वि भाणिअव्वाणि ।

पृ० ४८३ पक्ति १५ से पृष्ठ ४८५ पक्ति १२ तक के समान पाठ जानना ।

णवरं ठिइ अभिलाओ,

‘जाव’ से तं अणुगमे ।

से तं संगहस्स अणोवणिहिया कालाणुपुव्वी ।

के तं अणोवणिहिया कालाणुपुव्वी ।

सुत्तं ११४ प्र० से किं तं ओवणिहिआ कालाणुपुव्वी ?

*ओवणिहिआ कालाणुपुव्वी तिविहा पणत्ता,

तं जहा-

१ पुव्वाणुपुव्वी २ पच्छाणुपुव्वी ३ अणाणुपुव्वी ।

प्र० से किं तं पुव्वाणुपुव्वी ?

उ० पुव्वाणुपुव्वी-

१ समए २ आवलिआ

३ आणापाणू ४ थोवे

५ लवे ६ मुहुत्ते

७ अहोरत्ते ८ पक्खे

९ मासे १० उऊ

११ ओयणे १२ संवच्छरे

१३ जुणे १४ वाससए

* सूत्र १०२ पृष्ठ ४८६ पक्ति २ से पृष्ठ ४८८ पक्ति १६ तक के समानपाठ जानना । *वाचनान्तर मे आगे आया हुआ *चिह्नित पाठ पहले है और यह बाद मे है ।

१५ वाससहस्ते	१६ वाससयसहस्ते
१७ पुव्वंगे	१८ पुव्वे
१९ तुडिअंगे	२० तुडिए
२१ अडडंगे	२२ अडडे
२३ अववंगे	२४ अववे
२५ हुहुअंगे	२६ हुहुए
२७ उप्पलंगे	२८ उप्पले
२९ पउमंगे	३० पउमे
३१ णलिअंगे	३२ णलिणे
३३ अत्थनिऊरंगे	३४ अत्थनिऊरे
३५ अउअंगे	३६ अउए
३७ नउअंगे	३८ नउए
३९ पउअंगे	४० पउए
४१ चूलिअंगे	४२ चूलिआ
४३ सीसपहेलिअंगे	४४ सीसपहेलिआ
४५ पलिओवमे	४६ सागरोवमे
४७ ओसप्पिणी	४८ उसप्पिणी
४९ पोगलपरिअट्टे	५० अतीतअट्टा
५१ अणागयट्टा	५२ सब्बट्टा

से तं पुच्चाणुपुच्ची ।

प्र० से किं तं पच्छाणुपुच्ची ?

उ० पच्छाणुपुच्ची—

सव्वद्धा अणागयद्धा

जाव समए ।

से तं पच्छाणुपुच्ची ।

प्र० से किं तं अणाणुपुच्ची ?

उ० अणाणुपुच्ची—एयाए चेव एगाइआए एगुत्तरिआए
अणंत-गच्छायाए सेढीए अण्णसण्णवभासो दुब्बूणो ।

से तं अणाणुपुच्ची ।

* अहवा ओवणिहिआ कालाणुपुच्ची तिविहा पणत्ता,
तं जहा

१ पुच्चाणुपुच्ची २ पच्छाणुपुच्ची ३ अणाणुपुच्ची ।

प्र० से किं तं पुच्चाणुपुच्ची ?

उ० पुच्चाणुपुच्ची—

एगसमयट्ठिइए

दुसमयट्ठिइए

तिसमयट्ठिइए

जाव . . . दससमयट्ठिइए,

* वाचनान्तर मे यह पाठ पहले है और पहले का चिह्नित * पाठ
वाद मे है ।

संखिज्जसमयट्ठिइए,
असंखिज्जसमयट्ठिइए,
से त्तं पच्चाणुपुच्ची ।

प्र० से किं त्तं पच्चाणुपुच्ची ?

उ० पच्चाणुपुच्ची—

असंखिज्जसमयट्ठिइए, 'जाव' एगसमयट्ठिइए
से त्तं पच्चाणुपुच्ची ।

प्र० से किं त्तं अणाणुपुच्ची ?

प्र० अणाणुपुच्ची—एआए च़ेव एगाइआए एगुत्तरिआए
असंखिज्ज—गच्छगयाए सेढीए अणमण्णन्मासो
दूरूवूणो ।
से त्तं अणाणुपुच्ची ।
से त्तं ओवणिहिआ कालाणुपुच्ची ।
से त्तं कालाणुपुच्ची ।

११५ प्र० (६) से किं त्तं उक्कित्तणाणुपुच्ची ?

उ० उक्कित्तणाणुपुच्ची तिर्विहा पणत्ता,
त्तं जहा—

१ पुच्चाणुपुच्ची २ पच्चाणुपुच्ची ३ अणाणुपुच्ची अ

प्र० से किं त्तं पुच्चाणुपुच्ची ?

उ० पुच्चाणुपुच्ची—

१ उत्तमे	२ अजिए
३ संभवे	४ अभिणंदणे
५ सुमती	६ पउमप्पहे
७ सुपासे	८ चंदप्पहे
९ सुविहि	१० सीतले
११ सेज्जंसे	१२ वासुपुज्जे
१३ विमले	१४ अणंते
१५ धम्मो	१६ सती
१७ कुंयू	१८ अरे
१९ मल्ली	२० मुणिसुव्वए
२१ णमी	२२ अरिद्वुणेमि
२३ पासे	२४ वद्धमाणे

से त्तं पुव्वाणुपुव्वी ।

प्र० से किं तं पच्छाणुपुव्वी ?

उ० पच्छाणुपुव्वी—

वद्धमाणे जाव उत्तमे ।

से त्तं पच्छाणुपुव्वी ।

प्र० से किं तं अणाणुपुव्वी ?

उ० अणाणुपुव्वी-एआइ चेव एगाइआए एगुत्तरिआए

चउवीस-गच्छगयाए सेढीए अणमणव्वासो दुरूवूणे

से त्तं अणाणुपुव्वी ।

से त्तं उक्कित्तणाणुपुव्वी ।

सुत्तं० ११६ प्र० (७) से किं त्तं गणणाणुपुव्वी ?

उ० गणणाणुपुव्वी तिविहा पणत्ता,

त्तं जहा—

१ पुव्वाणुपुव्वी २ पच्छाणुपुव्वी ३ अणाणुपुव्वी,

से किं त्तं पुव्वाणुपुव्वी ?

पुव्वाणुपुव्वी—

एगो, दस, सयं

सहस्सं, दस-सहस्साइं

सयसहस्सं, दस-सय सहस्साइं,

कोडी, दस-कोडिओ,

कोडीसयं, दस-कोडिसयाइं,

से त्तं पुव्वाणुपुव्वी ।

प्र० से किं त्तं पच्छाणुपुव्वी ?

उ० पच्छाणुपुव्वी—

दस-कोडिसयाइं . . . जाव . . . एगो ।

से त्तं पच्छाणुपुव्वी ।

प्र० से किं त्तं अणाणुपुव्वी ?

उ० अणाणुपुव्वी-एआए चेव एगाइआए एगुत्तरिआए

दस कोडिसय-गच्छगयाए सेढीए अण्णमण्णव्भासो

दुरूवूणो ।

से त्तं अणाणुपुव्वी ।

से त्तं गणाणुपुव्वी ।

सुत्तं ११७ प्र० (८) से किं तं संठाणाणुपुव्वी

उ० संठाणाणुपुव्वी ति विहा पणत्ता,

तं जहा-

१ पुव्वाणुपुव्वी २ पच्छाणुपुव्वी, ३ अणाणुपुव्वी ।

प्र० से किं तं पुव्वाणुपुव्वी ?

उ० पुव्वाणुपुव्वी-

१ समचउरसे, २ निगोहमंडले, ३ सादी,

४ खुज्जे, ५ वामणे, ६ हुंडे ।

से त्तं पुव्वाणुपुव्वी ।

प्र० से किं तं पच्छाणुपुव्वी ?

उ० ६ हुंडे जाव समचउरसे ।

से त्तं पच्छाणुपुव्वी ।

प्र० से किं तं अणाणुपुव्वी ?

उ० अणाणुपुव्वी-एआए चेव एगाइआए एगुत्तरिआए

छ-गच्छगयाए सेढीए अण्णमण्णव्भासो दुरूवूणो ।

से त्तं अणाणुपुब्बी ।

से त्त संठाणाणुपुब्बी ।

सुत्तं ११८ प्र० (९) से किं तं सामायाराणुपुब्बी ?

उ० सामायारा-णुपुब्बी तिविहा पणत्ता,
तं जहा-

१ पुब्बाणुपुब्बी २ पच्छाणुपुब्बी ३ अणाणुपुब्बी ।

से किं तं पुब्बाणुपुब्बी ?

पुब्बाणुपुब्बी-

गाहा—इच्छा^१-मिच्छा^२-तहक्कारो^३, आवस्सिआ^४ य निसीहिआ^५ ।

आपुच्छणा^६ य पडिपुच्छा^७, छंदणाय^८ य निमंतणा^९ ॥१॥

उवसंपया^{१०} य काले, सामायारी भवे दसविहा उ ।

से त्तं पुब्बाणुपुब्बी ।

प्र० से किं तं पच्छाणुपुब्बी ।

उ० पच्छाणुपुब्बी—उवसंपया, जाव इच्छागारो ।

से त्तं पच्छाणुपुब्बी ।

प्र० से किं तं अणाणुपुब्बी ?

उ० अणाणुपुब्बी—एआए चेव एआएआए एगुत्तरिआए

इस-गच्छगयाए सेढीए अणमण्णभासो दुरूवूणो ।

से त्तं अणाणुपुब्बी ।

से तं सामायाराणुपुव्वी ।

सुत्तं ११९ प्र० (१०) से किं तं भावाणुपुव्वी ?

उ० भावाणुपुव्वी तिविहा पणत्ता,

तं जहा-

१ पुव्वाणुपुव्वी २ पच्छाणुपुव्वी ३ अणाणुपुव्वी ।

से किं तं पुव्वाणुपुव्वी ?

पुव्वाणुपुव्वी-

१ उदइए २ उवसमिए ३ खइए

४ खओवसमिए ५ पारिणामिए ६ सन्निवाइए

से तं पुव्वाणुपुव्वी ।

प्र० से किं तं पच्छाणुपुव्वी ?

उ० पच्छाणुपुव्वी-

६ सन्निवाइए 'जाव' उदइए ।

से तं पच्छाणुपुव्वी ।

प्र० से किं तं अणाणुपुव्वी ?

उ० अणाणुपुव्वी-एआए चेव एगाइआए एगुत्तरिआए

छ-गच्छगयाए सेदीए अणमण्णव्वासो डुरूव्वणो ।

से तं अणाणुपुव्वी ।

से तं भावाणुपुव्वी ।

से तं 'आणुपुव्वी' ति पवं समत्त ।

नामाधिकारः—

सुत्तं १२० प्र० से किं तं णामे ?

उ० णामे दसविहे पणत्ते,

तं जहा—

१ एग-णामे २ दु-णामे

३ ति-णामे ४ चउ-णामे

५ पंच-णामे ६ छ-णामे

७ सत्त-णामे ८ अट्ठ-णामे

९ नव-णामे १० दस-णामे ।

सुत्तं १२१ प्र० से किं तं एग-णामे ?

उ० एगणामे—

गाहा—णामाणि जाणि काणि वि, दव्वाण गुणाण पज्जवाणं च ।

तेसि आगम-निहसे, 'नामं' त्ति परुविआ सण्णा ॥

से त्तं एगणामे ।

१२२ प्र० से किं तं दुनामे ?

उ० दुनामे दुविहे पणत्ते,

तं जहा—

१ एगक्खरिए अ २ अणेगक्खरिए अ ।

प्र० से किं तं एगक्खरिए ?

उ० एगक्खरिए अणेगविहे पणत्ते,

त जहा-

ही, श्री, घी, स्त्री ।

से त्त एगक्खरिए ।

प्र० से किं तं अणेगक्खरिए ?

उ० अणेगक्खरिए-अणेगविहे पणत्ते, तं जहा-

कत्ता, वीणा, लत्ता, माला ।

से त्तं अणेगक्खरिए ।

अहवा दुनामे दुविहे पणत्ते,

तं जहा-

जीवणामे अ, अजीवणामे अ ।

प्र० से किं तं जीव-णामे ?

उ० जीव-णामे अणेगविहे पणत्ते,

तं जहा-

देवदत्तो, जण्णदत्तो, विण्हुदत्तो, सोमदत्तो ।

से त्तं जीव-णामे ।

प्र० से किं त अजीव-णामे ?

उ० अजीव-णामे अणेगविहे पणत्ते,

तं जहा-

घडो, पडो, कडो, रहो ।

से त्तं अजीव-णामे ।

अहवा दुनामे दुविहे पणत्ते,

तं जहा-

१ विसेसिए अ २ अविसेसिए अ ।

अविसेसिए-दब्बे ।

विसेसिए- जीवदब्बअवेअ, अजीवदब्बे अ ।

अविसेसिए-जीवदब्बे ।

विसेसिए- णेरइए, तिरिक्खजोणिए, मणुस्से, देवे ।

अविसेसिए-णेरइए ।

विसेसिए- रयणप्पहाए, सक्करप्पहाए,

वालुअप्पहाए, पंकप्पहाए

धूमप्पहाए, तम्माए, तमतम्माए ।

अविसेसिए-रयणप्पहापुढवि-णेरइए ।

विसेसिए- पज्जत्तए अ, अपज्जत्तए अ ।

एवं 'जाव

अविसेसिए-तमतम्मापुढवि-नेरइए ।

विसेसिए- पज्जत्तए अ, अपज्जत्तए अ ।

अविसेसिए-तिरिक्खजोणिए ।

विसेसिए- एगिंदिए, बेइंदिए, तेइंदिए

चर्चरिंदिए, पौंदिंदिए ।

अविसेसिए-एगिंदिए ।

विसेसिए- पुढविकाइए, आउकाइए,
तेउकाइए, वाडकाइए, वणस्सइकाइए ।

अविसेसिए-पुढविकाइए ।

विसेसिए- सुहुम-पुढविकाइए अ
वादर-पुढविकाइए अ ।

अविसेसिए-सुहुम-पुढविकाइए ।

विसेसिए- पज्जत्तय-सुहुम-पुढविकाइए अ
अपज्जत्तय-सुहुम-पुढविकाइए अ ।

अविसेसिए-वादर-पुढविकाइए ।

विसेसिए- पज्जत्तय-वादर-पुढविकाइए अ,
अपज्जत्तय-वादर-पुढविकाइए अ ।

एवं आउकाइए, तेउकाइए
वाडकाइए, वणस्सइकाइए

अविसेसिअ-विसेसिय-

पज्जत्तय-अपज्जत्तयभेएहि भाणिअव्वा ।

अविसेसिए-वेइंदिए ।

विसेसिए- पज्जत्तय-वेइंदिए अ,
अपज्जत्तय-वेइंदिए अ ।

एवं तेइंदिअ-चउरिदिआ वि भाणिअव्वा ।

अविसेसिए- पच्चिदिअ-तिरिक्ख-ओणिए ।

विसेसिए- जलयर-पंचिदिय-तिरिक्ख-जोणिए,
थलयर-पंचिदिय-तिरिक्ख-जोणिए,
खहयर-पंचिदिय-तिरिक्ख-जोणिए ।

अविसेसिए-जलयर-पंचिदिय-तिरिक्ख-जोणिए ।

विसेसिए-संमुच्छिम-जलयर-पंचिदिय-तिरिक्ख-जोणिए अ ।
गम्भवक्कतिअ-जलयर-पंचिदिय-तिरिक्ख-
जोणिए अ ।

अविसेसिए-संमुच्छिम-जलयर-पंचिदिय-तिरिक्ख-जोणिए अ ।
विसेसिए-पज्जत्तय-संमुच्छिम-जलयर-पंचिदिय-तिरिक्ख-
जोणिए अ ।

अपज्जत्तय-संमुच्छिम-जलयर-पंचिदिय-
तिरिक्ख-जोणिए अ ।

अविसेसिए-गम्भवक्कतिअ-जलयर-पंचिदिय-तिरिक्ख-
जोणिए अ ।

विसेसिए- पज्जत्तय-गम्भवक्कतिअ-जलयर-पंचिदिय-
तिरिक्ख-जोणिए अ ।
अपज्जत्तय-गम्भवक्कतिअ-जलयर-पंचिदिय-
तिरिक्ख-जोणिए अ ।

अविसेसिए-थलयर प चिदिय-तिरिक्ख-जोणिए ।

विसेसिए- चउत्थय-थलयर-पंचिदिय-तिरिक्ख-जोणिए अ,

- 'परिस'प चउप्पय-प'चिदिय-तिरिक्ख-जोणिए अ ।
 अविसेसिए—चउप्पय-थलयर-प'चिदिय-तिरिक्ख-जोणिए ।
 विसेसिए—सम्मच्छिम-चउप्पय-थलयर-प'चिदिय-तिरिक्ख-
 जोणिए अ ।
 गढभवक्क'तिय-चउप्पय-थलयर-प'चिदिय-
 . तिरिक्ख-जोणिए अ ।
 अविसेसिए—सम्मच्छिम-चउप्पय-थलयर-प'चिदिय-
 तिरिक्ख-जोणिए अ ।
 विसेसिए—पज्जत्तय-सम्मच्छिम-चउप्पय-थलयर-
 प'चिदिय-तिरिक्ख-जोणिए अ ।
 अपज्जत्तय-सम्मच्छिम-चउप्पय-थलयर-प'चिदिय-
 तिरिक्ख-जोणिए अ ।
 अविसेसिए—गढभवक्क'तिअ-चउप्पय-थलयर-प'चिदिय-
 तिरिक्ख-जोणिए ।
 विसेसिए— पज्जत्तय-गढभवक्क'तिअ-चउप्पय-थलयर-
 प'चिदिय-तिरिक्ख-जोणिए अ,
 अपज्जत्तय-गढभवक्क'तिअ-चउप्पय-थलयर-
 प'चिदिय-तिरिक्ख-जोणिए अ ।
 अविसेसिए—परिसप्प-थलयर-प'चिदिय-तिरिक्ख-जोणिए ।
 विसेसिए—उरपरिसप्प-थलयर-प'चिदिय-तिरिक्ख-जोणिए अ,

भुजपरिसप्प-थलयर-पंचिदिय-तिरिक्ख-जोणिए ।

एते वि सम्मुच्छिमा पज्जत्तगा अपज्जत्तगा य
गब्भवक्कंतिआ वि पज्जत्तगा अपज्जत्तगा य
भाणिअव्वा ।

अविसेसिए-खहयर-पंचिदिय-तिरिक्ख-जोणिए ।

विसेसिए-सम्मुच्छिम-खहयर-पंचिदिय-तिरिक्ख-जोणिए अ,
गब्भवक्कतिय-खहयर-पंचिदिय-तिरिक्ख-
जोणिए अ ।

अविसेसिए-सम्मुच्छिम-खहयर-पंचिदिय-तिरिक्ख-
जोणिए अ,

विसेसिए-पज्जत्तय-सम्मुच्छिम-खहयर-पंचिदिय-
तिरिक्ख-जोणिए अ,
अपज्जत्तय-सम्मुच्छिम-खहयर-पंचिदिय-
तिरिक्ख-जोणिए अ ।

अविसेसिए-गब्भवक्कतिय-खहयर-पंचिदिय-तिरिक्ख-
जोणिए ।

विसेसिए-पज्जत्तय-गब्भवक्कतिय-खहयर-पंचिदिय-
तिरिक्ख-जोणिए अ ।
अपज्जत्तय-गब्भवक्कतिय-खहयर-पंचिदिय-
तिरिक्ख-जोणिए अ ।

अविसेसिए-मणुस्से ।

विसेसिए- सम्मुच्छिम-मणुस्से अ,
गढमवक्कंतिय-मणुस्से अ ।

अविसेसिए-सम्मुच्छिम-मणुस्से ।

विसेसिए- पज्जत्तग-सम्मुच्छिम-मणुस्से अ ।
अपज्जत्तग-सम्मुच्छिम-मणुस्से अ ।

अविसेसिए- गढमवक्कंतिय-मणुस्से ।

विसेसिए- कम्मभूमिओ य,
अकम्मभूमिओ य,
अंतरदीवओ य,
संखिज्जवासाउ य,
असंखिज्जवासाउ य,
पज्जत्तापज्जत्तओ ।

अविसेसिए-देवे ।

विसेसिए- भवणवासी, वाणमंतरे,
जोइसिए, वेमाणिए अ ।

अविसेसिए-भवणवासी ।

विसेसिए- १ असुरकुमारे २ नागकुमारे,
३ सुवण्णकुमारे ४ विज्जकुमारे,
५ अग्गीकुमारे ६ दीवकुमारे,

७ उदहिकुमारे ८ दिसाकुमारे

९ वाउकुमारे १० थणिअकुमारे ।

सव्वोसि वी अविसेसिअ-विसेसिअ-पज्जत्तग-अपज्जत्तग
भेया भाणिअव्वा ।

अविसेसिए—चाणमंतरे

विसेसिए— पिसाए^१ भूए^२ जक्खे^३ रक्खसे^४,

किण्णरे^५ किपुरिसे^६ महोरगे^७ गंधव्वे^८ ।

एएसि वि अविसेसिअ-विसेसिअ-पज्जत्तग अपज्जत्तग
भेया भाणिअव्वा ।

अविसेसिए—जोइसिए ।

विसेसिए— चंदे^१ सूरे^२ गहगणे^३ नक्खत्ते^४ ताराव्वे^५ ।

एतेसि वि अविसेसिय-विसेसिय-पज्जत्तय-अपज्जत्तय
भेया भाणिअव्वा ।

अविसेसिए—वेमाणिए ।

विसेसिए— कप्पोवगे अ, कप्पातीतए अ ।

अविसेसिए—कप्पोवगे ।

विसेसिए— १ सोहम्मे २ ईसाणे

३ सणकुमारे ४ माहिंदे

५ वंभलोए ६ लंतए

७ भहासुक्के ८ सहस्तारे

९ आणए १० पाणए
११ आरणे १२ अच्चुए

एएँस अविसेसिअ विसेसिअ-अपज्जत्तग-पज्जत्तग भैया
भाणिअव्वा ।

अविसेसिए-कप्पात्तीतए ।

विसेसिए-गेवेज्जए अ ।

अणुत्तरोववाइए अ ।

अविसेसिए-गेवेज्जए ।

विसेसिए- १ हेट्ठिम गेवेज्जए,

२ मज्झिम गेवेज्जए,

३ उवरिम गेवेज्जए ।

अविसेसिए-हेट्ठिम गेवेज्जए ।

विसेसिए- १ हेट्ठिम-हेट्ठिम-गेवेज्जए,

२ हेट्ठिम-मज्झिम-गेवेज्जए,

३ हेट्ठिम-उवरिम-गेवेज्जए ।

अविसेसिए-मज्झिम गेवेज्जए

विसेसिए- १ मज्झिम-हेट्ठिम-गेवेज्जए,

२ मज्झिम-मज्झिम-गेवेज्जए,

३ मज्झिम-उवरिम-गेवेज्जए ।

अविसेसिए-उवरिम गेवेज्जए ।

विसेसिए- १ उवरिम हेट्ठिम-गेवेज्जए । —

२ उवरिम-मज्झिम-गेवेज्जए,

३ उवरिम-उवरिम-गेवेज्जए ।

एएसिं सव्वेसिं अविसेसिय-विसेसिय-अपज्जत्तग-पज्जत्तग
भेया भाणिअव्वा ।

अविसेसिए-अणुत्तरोववाइए ।

विसेसिए-विजयए^१ वेजयंतए^२,

जयंतए^३ अपराजिअए^४,

सव्वट्ठसिद्धए अ^५ ।

एएसिं वि सव्वेसिं अविसेसिय-विसेसिय-अपज्जत्तग-
पज्जत्तग भेया भाणिअव्वा ।

अविसेसिए-अर्जावदव्वे ।

विसेसिए-धम्मत्थिकाए^१ अधम्मत्थिकाए^२

आगासत्थिकाए^३ पोग्गलत्थिकाए^४

अद्धासमय अ^५ ।

अविसेसिए-पोग्गलत्थिकाए ।

विसेसिए- परमाणुपोग्गले,

दुपएसिए,

तिपएसिए,

जाव अणंतपएसिए अ ।

से तं दुत्तामे ।

सुत्तं १२३ प्र० से किं तं तिनामे ?

उ० ति-नामे तिविहे पणत्ते,

तं जहा-

१ दव्व-णामे

२ गुण-णामे

३ पज्जव-णामे अ ।

प्र० से किं तं दव्व-णामे ?

उ० दव्व-णामे छव्विहे पणत्ते,

तं जहा-

१ धम्मत्थिकाए

२ अघम्मत्थिकाए

३ आगासत्थिकाए

४ जीवत्थिकाए

५ पुग्गलत्थिकाए

६ अट्ठा-समए अ ।

से तं दव्व-णामे ।

प्र० से किं तं गुण-णामे ?

प्र० गुण-णामे पंचविहे पणत्ते,

तं जहा-

१ वण्ण-णामे २ गंध-णामे

३ रस-णामे ४ फास-णामे

५ संठाण-णामे - - - - -

प्र० से कि तं वण्ण-णामे ? - - - - -

उ० वण्ण-णामे-पंचविहे पणत्ते,
तं जहा-

१ काल-वण्ण-णामे

२ नील-वण्ण-णामे

३ लोहिअ-वण्ण-णामे

४ हालिद्द-वण्ण-णामे

५ सुविकल्ल-वण्ण-णामे ।

से तं वण्ण-णामे ।

प्र० से किं तं गंध-णामे ?

उ० गंध-णामे दुविहे पणत्ते,
तं जहा-

१ सुरभि-गंध-णामे अ,

२ दुरभि-गंध-णामे अ ।

से तं गंध-णामे ।

प्र० से किं तं रस-णामे ?

उ० रस-णामे पंचविहे पणत्ते,
तं जहा-

- १ तित-रस-णामे २ कडुअ-रस-णामे
- ३ कसाय-रस-णामे ४ अबिल-रस-णामे
- ५ महुअ-रस-णामे अ ।

से तं रस-णामे ।

प्र० से किं त फास-णामे ?

उ० फास-णामे अट्टविहे पणत्ते,

त जहा-

- १ कक्खड-फास-णामे
- २ मउअ-फास-णामे
- ३ गरुअ-फास-णामे
- ४ लहुअ-फास-णामे
- ५ सीत-फास-णामे
- ६ उसिण-फास-णामे
- ७ णिद्ध-फास-णामे
- ८ लुक्ख-फास-णामे अ ।

से तं फास-णामे

प्र० से किं तं संठाण-णामे ?

उ० संठाण-णामे पंचविहे पणत्ते,

तं जहा-

- १ परिमंडल-संठाण-णामे
- २ चट्ट-संठाण-णामे

३ तंस-संठाण-णामे

४ चउरंस-संठाण-णामे

५ आयत्त-संठाण-णामे ।

से त्तं संठाण-णामे ।

से त्तं गुणणामे ।

प्र० से किं तं पज्जव-णामे ?

उ० पज्जव-णामे अणेगविहे पणत्ते,

तं जहा-

एगगुण कालए,

दुगुण कालए,

तिगुण कालए, ... जाव ... दसगुण कालए

संखिज्जगुण कालए,

असंखिज्जगुण कालए

अणत्तगुण कालए,

एवं नील-लोहिय-हालिह-सुन्निकला वि भाणिअव्वा ।

एगगुण-सुरभिगंधे,

दुगुण-सुरभिगंधे,

तिगुण-सुरभिगंधे ... जाव ... अणत्तगुण-सुरभिगंधे ।

एवं दुरभिगंधो वि भाणिअच्चो ।

एगगुण तित्ते, जाव अणंतगुणतित्ते ।

एव कडुअ-कसाय-अंबिल-महुरा वि भाणिअध्वा ।

एगगुणकक्खडे, जाव अणंतगुणकक्खडे ।

एवं मउअ-गरुअ-लहुअ-सीत-उसिण-णिद्ध-

लुक्खा वि भाणिअध्वा ।

से तं पज्जव-णामे ।

गाहाओ-त पुण णामं तिविहं, इत्थी पुरिसं णपुंसं चेव ।

एएसि तिण्हं पि, अंतम्मि अ परूवणं वोच्छं ॥१॥

तत्थ पुरिसस्स अंता, आ-इ-ऊ-ओ हवंति चत्तारि ।

ते चेव इत्थिआओ, हवंति ओकार परिहीणा ॥२॥

अंतिअ-इतिअ-उंतिअ, अंता उ णपुसगस्स बोद्धव्वा ।

एतेसि तिण्हं पि अ, वोच्छामि निर्दसणे एत्तो ॥३॥

आगारंतो 'राया' ईगारत्तो गिरी' अ 'सिहरी' अ ।

ऊगारंतो 'बिण्हू', दुमो ओ अंता उ पुरिसाणं ॥४॥

आगारंता 'माला', ईगारंता 'सिरी' अ 'लच्छी' अ ।

ऊगारंता 'जबू', 'बहू' अ अंता उ इत्थीणं ॥५॥

अंकारंतं 'धन्नं', इंकारंतं नपुंसगं 'अच्छं' ।
 उंकारं तो पीलुं, 'महुं' च अंता णपुंसाणं ॥६॥
 से त्तं ति-णामे ।

सुत्तं १२४ प्र० से किं तं चउणामे ?

उ० चउणामे चउव्विहे पणत्ते,

तं जहा-

१ आगमेणं २ लोवेणं

३ पयईए ४ विगारेणं ।

प्र० से किं तं आगमेणं ?

उ० आगमेणं-

पद्मानि, पयांसि, कुण्डानि ।

से त्तं आगमेणं ।

प्र० से किं तं लोवेणं ?

उ० लोवेणं-ते अन्न=तेऽन्न, पटो अन्न=पटोऽन्न,

घटो अन्न=घटोऽन्न ।

से त्तं लोवेणं ।

प्र० से किं तं पयईए ?

उ० पयईए-

अग्नी-एत्तौ, पटू इमौ

शाले एते, माले इमे ।

से तं पगईए ।

प्र० से किं तं विगारेणं ?

उ० विगारेणं—

दण्डस्य + अग्रं = दंडाग्रं

सा—आगता = साऽऽगता

दधि—इदं = दधीदं

नदी—इह = नदीह

मधु—उदकं = मधूदकं

वधू—ऊहते = वधूहते ।

से तं विगारेणं ।

से तं चउणामे ।

मुत्तं १२५ प्र० से किं तं पंचणामे ?

उ० पंचणामे पंचविहे पण्णत्ते,
तं जहा—

१ नाभिकं

२ नैपातिकं

३ आख्यातिकं

४ औपसर्गिकं

५ मिश्रम् च ।

‘अञ्च’ इति नामिकम् ।

‘खलु’ इति नैपातिकम्

‘धावत्ति’ इति आख्यातिकम्

‘परि’ इत्यौपसर्गिकम्

‘संयतः’ इति मिश्रम् ।

से त्तं पञ्चणामे ।

सुत्तं १२६ प्र० से किं तं छण्णामे ?

उ० छण्णामे छच्चिहे पण्णत्ते,

तं जहा—

१ उदइए २ उवत्तमिए ३ खइए

४ खओवत्तमिए ५ पारिणामिए ६ सन्निवाइए ।

प्र० से किं तं उदइए ?

उ० उदइए बुविहे पण्णत्ते,

तं जहा—

१ उदइए अ २ उदय-निप्फल्ले अ ।

प्र० से किं तं उदइए ?

उ० उदइए—अट्ठण्हं कम्मपयडीणं उदएणं ।

से त्तं उदइए ।

प्र० से किं तं उदय-निप्फल्ले ?

उ० उदयनिप्फल्ले बुविहे पण्णत्ते,

तं जहा-

१ जीवोदयनिष्फन्ते अ,

२ अजीवोदयनिष्फन्ते अ ।

से किं तं जीवोदयनिष्फन्ते ?

जीवोदयनिष्फन्ते अणोगविहे पणत्ते,

तं जहा-

णेरइए, तिरिक्खजोणिए, मणुस्से, देवे,

पुढविकाइए जाव तसकाइए,

कोइफसाई जाव लोहकसाई

इत्यीवेदए, पुरिसवेदए, णपुंसगवेदए,

कण्हलेसे जाव सुक्कलेसे,

मिच्छादिट्ठी, सम्मदिट्ठी, सम्ममिच्छादिट्ठी,

अविरए, असण्णी, अण्णाणी,

आहारए, छउमत्थे, सजोगी

संसारत्थे, असिद्धे ।

से तं जीवोदयनिष्फन्ते ।

प्र० से किं तं अजीवोदयनिष्फन्ते ?

उ० अजीवोदयनिष्फन्ते अणोगविहे पणत्ते,

तं जहा-

उरालियं वा सरीरं,

उरालिअ-सरीर-पओगपरिणामिअं वा दव्वं,

वेउव्वियं वा सरीरं,

वेउव्वियं-सरीर-पओगपरिणामिअं वा दव्वं,

एवं आहारगं सरीरं, तेअगं सरीरं, कम्मग-सरीरं च
भाणिअव्वं ।

पओग परिणामिए वण्णे, गंधे, रसे, फासे ।

से त्तं अजीवोदयनिष्फण्णे ।

से त्तं उदयनिष्फण्णे ।

से त्तं उदइए ।

प्र० से किं तं उवसमिए ?

उ० उवसमिए दुविहे पणत्ते,

तं जहा-

१ उवसमे अ,

२ उवसमनिष्फण्णे अ ।

प्र० से किं तं उवसमे ?

उ० उवसमे-मोहणिजस्स-कम्मस्स-उवसमेणं ।

से त्तं उवसमे ।

प्र० से किं तं उवसमनिष्फण्णे ?

उ० उवसमनिष्फण्णे अणेगविहे पणत्ते,

तं जहा-

उवसंतकोहे जाव 'उवसंतलोभे
 उवसंत-पेज्जे, उवसंत-दोसे
 उवसंत-दंसणमोहणिज्जे, उवसंत-चरित्तमोहणिज्जे
 उवसामिआ-सम्मत्तलद्धी, उवसामिआ-चरित्तलद्धी,
 उवसंतकसाय-छउमत्थवीयरगे ।
 से तं उवसमनिप्फणो ।
 से तं उवसमिए ।

प्र० से किं तं खइए ?
 उ० खइए दुविहे पणत्ते,
 तं जहा—
 १ खए अ २ खयनिप्फणो अ ।
 से किं तं खइए ?
 खइए—अट्टण्हं कम्मपयडीणं खइए णं ।
 से तं खइए ।

प्र० से किं तं खयनिप्फणो ?
 उ० खयनिप्फणो अणेगविहे पणत्ते,
 तं जहा—

उप्पण्ण-णाणदंसणघरे, अरहा, जिणे, केवली,
 खीण-आभिणिबोहिय-णाणावरणे,

खीण-सुअ-णाणावरणे,
 खीण-ओहि-णाणावरणे,
 खीण-मणपज्जव-णाणावरणे,
 खीण-केवल-णाणावरणे,
 अणावरणे, निरावरणे, खीणावरणे
 णाणावरणिज्ज-कम्मविप्पमुक्के,

केवलदंसी, सव्वदंसी,

खीणनिद्वे, खीणनिदानिद्वे,
 खीणपयसे, खीणपयलापयसे,
 खीणथीणगिद्धि,
 खीणचक्खुदंसणावरणे,
 खीण-अचक्खुदंसणावरणे,
 खीण-ओहिदंसणावरणे,
 खीण-केवलदंसणावरणे,
 अणावरणे निरावरणे खीणावरणे
 दरिसणावरणिज्ज-कम्मविप्पमुक्के,
 खीण-साया-वेअणिज्जे
 खीण-असाया-वेअणिज्जे
 अवेअणे निव्वेअणे खीणवेअए
 सुभासुभ-वेअणिज्ज-कम्मविप्पमुक्के,

खीणकोहे जाव . खीणलोहे
 खीणपेज्जे, खीणदोसे
 खीणदंसणमोहणिज्जे, खीणचरित्तमोहणिज्जे
 अमोहे, निम्मोहे, खीणमोहे
 मोहणिज्ज-कम्म-विप्पमुक्के,

खीण-णेरइअ-आउए
 खीण-तिरिख-जोणि-आउए
 खीण-मणुस्ताउए
 खीण-देवाउए
 अणाउए निराउए खीणाउए
 आउ-कम्म-विप्पमुक्के

गइ-जाइ-सरीरंगोवंग-वंधण-
 संघायण-संधयण-संठाण-
 अणेग-वोद्धि-यिदं-संघाय-विप्पमुक्के,
 खीण-सुभ-नामे
 खीण-असुभ-णामे
 अणामे निण्णामे खीण-णामे
 सुभासुभणाम-कम्म-विप्पमुक्के

खीण-उच्चागोए
 खीण -णीआगोए

अणोएः निग्गोए खीण-गोए
 उच्च-णीय-गोत्तकम्म-विप्पमुक्के,
 खीण-दाणंतराए
 खीण-लाभंतराए
 खीण भोगंतराए
 खीण-उवभोगंतराए
 खीण वीरियंतराए
 अणंतराए णिरंतराए खीणंतराए
 अंतराय-कम्म-विप्पमुक्के,
 सिद्धे ब्रुद्धे सुत्ते परिणिच्चुए
 अंतगडे सव्वदुक्खप्पहीणे ।
 से त्तं खयनिष्फण्णे ।
 से त्तं खइए ।

प्र० से किं तं खओवसमिए ?

उ० खओवसमिए दुविहे पणत्ते

तं जहा—

१ खओवसमे अ, २ खओवसमनिष्फत्ते अ ।

प्र० से किं तं खओवसमे ?

उ० खओवसमे—चउण्हं घाइकम्माणं खओवसमेणं,

तं जहा—

१ णाणावरणिज्जस्स २ दंसगावरणिज्जस्स
३ मोहणिज्जस्स ४ अंतराइयस्स खओवसमेणं
से तं खओवसमे ।

प्र० से किं तं खओवसम-निष्फण्णे ?

उ० खओवसम-निष्फण्णे अणेगविहे पणत्ते,

तं जहा-

खओवसमिआ आभिणिबोहिअ-णाणलद्धी

• जाव • खओवसमिआ-मणपज्जव-णाणलद्धी

खओवसमिआ मइ-अण्णाणलद्धी

खओवसमिआ सुअ-अण्णाणलद्धी

खओवसमिआ विभंग-णाणलद्धी

खओवसमिआ चक्खुदंसणलद्धी

खओवसमिआ अक्खुदंसणलद्धी

खओवसमिआ ओहिदंसणलद्धी

एवं सम्मदंसणलद्धी

मिच्छादंसणलद्धी

सम्ममिच्छादंसणलद्धी

खओवसमिआ समाइअ चरित्तलद्धी

• एवं • • छेदोवट्ठावणलद्धी

	परिहारविसुद्धिय-लद्धी
	सुहुमसंपराय-चरित्तलद्धी
एवं	चरित्ताचरित्तलद्धी
खओवसमिआ	दाणलद्धी
एवं	लाभलद्धी
	भोगलद्धी
	उवभोगलद्धी
खओवसमिआ	वीरिआ-लद्धी
एवं	पंडिअ-वीरिअलद्धी
	बाल-वीरिअलद्धी
	वाल-पंडिअ-वीरिअलद्धी
खओवसमिआ	सोईंदियलद्धी
जाव	फासिंदअलद्धी
खओवसमिए	आयारंगधरे
एवं	सुअगडंगधरे
	ठाणंगधरे
	समवायंगधरे
	विवाहपण्णत्तिघरे
	णायाधम्मकहाधरे
	उवासगदसंगंधरे

अंतगडदसांगधरे
 अणुत्तरोववाइअदसांगधरे
 पण्हावागरणधरे
 दिवागसुअधरे,
 खओवसमिए दिट्ठिवायधरे
 खओवसमिए णवपुव्वी ···
 जाव चउदसपुव्वी,

खओवसमिए गणी ।
 खओवसमिए वायए ।
 से तं खओवसमनिप्फण्णे ।
 से त्त खओवसमिए ?

प्र० से किं तं पारिणामिए ?
 उ० पारिणामिए दुविहे पण्णत्ते
 तं जहा—

१ साइपारिणामिए अ
 २ अणाइपारिणामिए अ ।

प्र० से किं तं साइपारिणामिए ?
 उ० साइपारिणामिए अणेगविहे पण्णत्ते,
 तं जहा—

गाहा—जुण्णसुरा जुण्णगुल्लो, जुण्णघयं जुण्णतंडुला चेव ।

अब्भमाय अब्भरुक्खा, सण्णा गंधव्वणगरा य ॥१॥

उक्कावाया, दिसादाहा
 गज्जियं बिज्जू णिग्घाया
 जूवया जक्खादिता
 धूमिआ महिआ रयुग्घाया
 चंदोवरागा सूरुवरागा
 चंदपरिवेसा सूरपरिवेसा
 पडिचंदा पडिसूरा
 इंदधणू उदगमच्छा
 कविहसिया अमोहा
 वासा वासघरा
 गामा णगरा घरा
 पव्वता पायला भवणा

निरया—१ रयणप्पहा २ सक्करप्पहा
 ३ वालुअप्पहा ४ पंक्कप्पहा
 ५ धूमप्पहा ६ तमप्पहा
 ७ तमतमप्पहा ।

सोहम्मो .. जाव .. अच्चुए
 गेवेज्जे, अणुत्तरे, ईसिप्पभारा,
 परमाणुयोगले दुपएसिए, जाव · अणंतपएसिए ।
 से त्तं साइपारिणामिए

प्र० से किं तं अणाइपरिणामिए ?

उ० अणाइपरिणामिए—

१ घम्मत्थिकाए, २ अधम्मत्थिकाए,

३ अंगासत्थिकाए, ४ जीवत्थिकाए,

५ पुगलत्थिकाए, ६ अट्ठासमए ।

लोए, अलोए

भवसिद्धिआ, अभवसिद्धिआ ।

से त्तं अणःइपरिणामिए

से त्तं पारिणामिए ।

प्र० से किं तं सण्णिवाइए ?

उ० सण्णिवाइए—एएसिं चैव

उदइअ-उवसमिअ—

खइअ-खओवंसमिअ—

परिणामिआणं भावाणं ।

दुगसंजोएणं तिगसंजोइणं चउवकसंजोएणं पंचग-

संजोएणं

जे निप्फज्जंति, सव्वे ते सन्निवाइए नामे ।

तत्थ णं दस दुअ-संयोगा,

दस तिअ-संयोगा,

पंच चउवक-संयोगा

एगे पंचक-संजोगे ।

तत्थ णं जे ते दस दुग-संयोगा ते णं इमे-

- (१) अत्थि णामे उदइए-उवसम-निष्फण्णे
- (२) अत्थि णामे उदइए-खाइय-निष्फण्णे
- (३) अत्थि णामे उदइए-खओवसम-निष्फण्णे
- (४) अत्थि णामे उदइए-पारिणामिअ-निष्फण्णे
- (५) अत्थि णामे उवसमिय-खय-निष्फण्णे
- (६) अत्थि णामे उवसमिय-खओवसम-निष्फण्णे
- (७) अत्थि णामे उवसमिय-पारिणामिय-निष्फण्णे
- (८) अत्थि णामे खइय-खओवसम-निष्फण्णे
- (९) अत्थि णामे खइय-पारिणामिअ-निष्फण्णे
- (१०) अत्थि णामे खओवसमिय-पारिणामिअ-निष्फण्णे

प्र० कयरे से नामे उदइअ-उवसम-निष्फण्णे ?

उ० उदइए त्ति मणुस्से, उवसंता कसाया,
एस णं से णामे उदइय-उवसम-निष्फण्णे ।

प्र० कयरे से णामे उदइअ-खय-निष्फण्णे ?

उ० उदइए त्ति मणुस्से, खइअं सम्मत्तं,
एस णं से नामे उदइअ-खय-निष्फण्णे ।

प्र० कयरे से णामे उदइअ-खओवसम-निष्फण्णे ?

उ० उदइए त्ति मणुस्से, खओवसमिआइं इंदिआइं,
एस णं से णामे उदइय-खओवसम-निष्फण्णे ।

प्र० कयरे से णामे उदइए-परिणामिअ-निष्फण्णे ?

उ० उदइए त्ति मणुस्से, परिणामिए जीवे,
एस णं से णामे उदइअ-परिणामिअ-निष्फण्णे ।

प्र० कयरे से णामे उवसमिअ-खय-निष्फण्णे ?

उ० उवसंता कसाया, खइअं सम्मत्तं,
एस णं से णामे उवसमिय-खय-निष्फण्णे ।

प्र० कयरे से णामे उवसमिय-खओवसम-निष्फण्णे ?

उ० उवसंता कसाया, खओवसमिआइं इंदिआइं,
एस णं से णामे उवसमिअ-खओवसम-निष्फण्णे ।

प्र० कयरे से णामे उवसमिअ-पारिणामिअ-णिष्फण्णे ?

उ० उवसंता कसाया, पारिणामिए जीवे,
एस णं से णामे उवसमिअ-पारिणामिअ-निष्फण्णे ।

प्र० कयरे से णामे खइअ-खओवसम-निष्फण्णे ?

उ० खइअं सम्मत्तं, खओवसमिआइं इदिआइं
एस णं से णामे खइअ-खओवसम-निष्फण्णे ।

प्र० कयरे से णामे खइए-पारिणामिअ-निष्फण्णे ?

उ० खइअं सम्मत्तं, पारिणामिए जीवे,
एस णं से णामे खइअ-पारिणामिअ-निष्फण्णे ।

પ્ર૦ કયરે સે ણામે ખઓવસમિઅ-પરિણામિઅ-નિષ્ફળે ?

ઉ૦ ખઓવસમિઆઈં ઈંદિઆઈં, પરિણામિએ જીવે,
એસ ણં સે ણામે ખઓવસમિય-પારિણામિઅ-નિષ્ફળે ।

તત્થ ણં જે તે દસ તિગ-સંજોગા તે ણં ઇમે-

- (૧) અત્થિ ણામે ઉદ્દહઅ-ઉવસમિય-ખંય-નિષ્ફળે,
- (૨) અત્થિ ણામે ઉદ્દહએ-ઉવસમિઅ-ખઓવસમ-
નિષ્ફળે
- (૩) અત્થિ ણામે ઉદ્દહઅ-ઉવસમિઅ-પારિણામિઅ-
નિષ્ફળે
- (૪) અત્થિ ણામે ઉદ્દહઅ-હાહઅ-ખઓવસમ-નિષ્ફળે
- (૫) અત્થિ ણામે ઉદ્દહએ-હાહઅ-પરિણામિઅ-નિષ્ફળે
- (૬) અત્થિ ણામે ઉદ્દહઅ-ખઓવસમિઅ-પારિણામિઅ-
નિષ્ફળે
- (૭) અત્થિ ણામે ઉવસમિઅ-હાહઅ-ખઓવસમ-
નિષ્ફળે
- (૮) અત્થિ ણામે ઉવસમિઅ-હાહઅ-પારિણામિઅ-
નિષ્ફળે
- (૯) અત્થિ ણામે ઉવસમિઅ-ખઓવસમિઅ-
પારિણામિઅ-નિષ્ફળે ।

(१०) अत्थि णामे खइअ-खओवसमिअ-
परिणामिअनिष्फण्णे ।

प्र० कयरे से णामे उदइअ-उवसमिय-खय-निष्फण्णे ?

उ० उदइए त्ति मणुस्से,
उवसता कसाया,
खइअं सम्मत्तं,

एस णं से णामे उदइअ-उवसमिअ-खय-निष्फण्णे ।

प्र० कयरे से णामे उदइय-उवसमिय-खओवस-
मियनिष्फण्णे ?

उ० उदइए त्ति मणुस्से,
उवसता कसाया,
खओवसमिआइं इंदिआइं

एस णं से णामे उदइय-उवसमिअ-खओवसम-निष्फण्णे ।

प्र० कयरे से णामे उदइय-उवसमिअ-पारिणामिय-निष्फण्णे?

उ० उदइए त्ति मणुस्से
उवसता कसाया
पारिणामिए जीवे—

एस णं से णामे उदइअ-उवसमिअ-पारिणामिअ-निष्फण्णे ।

प्र० कयरे से णामे उदइअ-खइअ-खओवसम-निष्फण्णे ?

उ० उदइए त्ति मणुस्से

खइअं सम्मत्तं

खओवसमिआइं इंदियाइं

एसं णं से णामे उदइअ-खइअ-खओवसम-निष्फण्णे ।

प्र० कयरे से णामे उदइअ-खइअ-पारिणामिअ-निष्फण्णे ?

उ० उदए त्ति मणुस्से

खइअं सम्मत्तं

पारिणामिए जीवे

एसं णं से णामे उदइअ-खइअ-पारिणामिअ-निष्फण्णे ।

प्र० कयरे से णामे उदइअ-खओवसमिय-

पारिणामिअ-निष्फण्णे ?

उ० उदइए त्ति मणुस्से

खओवसमिआइं इंदियाइं पारिणामिए जीवे

एसं णं से णामे उदइअ-खओवसमिअ-पारिणामिअ-निष्फण्णे

प्र० कयरे से णामे उवसमिअ-खइअ-खइअ-खओवसम-
निष्फण्णे ?

उ० उवसंता कसाया

खइअं सम्मत्तं

- खओवसमिआइं इदिआइं
 एस णं से णामे उवसमिअ-खइअ-खओवसम-निप्फण्णे ।
 प्र० कयरे से णामे उवसमिअ-खइअ-पारिणामिअ-निप्फण्णे?
 उ० उवसंता कसाया
 खइअं सम्मत्तं
 पारिणामिए जीवे
 एस णं से णामे उवसमिअ-खइअ-पारिणामिअ-निप्फण्णे ।
 प्र० कयरे से णामे उवसमिअ-खओवसमिअ-
 पारिणामिअ-निप्फण्णे ?
 उ० उवसंता कसाया
 खओवसमिआइं इदिआइं
 पारिणामिए जीवे
 एस णं से णामे उवसमिअ-खओवसमिअ-
 पारिणामिअ-निप्फण्णे ।
 प्र० कयरे से णामे खइअ-खओवसमिय-पारिणामिअ-
 निप्फण्णे ।
 उ० खइअं सम्मत्तं
 खओवसमिआइं इदिआइं
 पारिणामिए जीवे
 एस णं से णामे खइअ-खओवसमिअ-पारिणामिअ-निप्फण्णे ।

तत्थ णं जे ते पंच चउक्कसंजोगा ते णं इमे-

(१) अत्थि णामे-

उदइअ-उवसमिअ-खइअ-खओवसम-निष्फण्णे ।

(२) अत्थि णामे-

उदइअ-उवसमिअ-खइअ-पारिणामिअ-निष्फण्णे ।

(३) अत्थि णामे-

उदइअ-उवसमिअ-खओवसमिअ-पारिणामिअ-निष्फण्णे ।

(४) अत्थि णामे-

उदइअ-खइअ-खओवसमिअ-पारिणामिअ-निष्फण्णे ।

(५) अत्थि णामे-

उवसमिअ-खइअ-खओवसमिअ-पारिणामिअ-निष्फण्णे ।

प्र० कयरे से णामे-

उदइअ-उवसमिअ-खइअ-खओवसम-निष्फण्णे ?

उ० उदइए त्ति मण्णुस्से

उवसंता कसाया

खइअं सम्मत्तं

खओवसमिआइं इंदिआइं

एस णं से णामे उदइअ-उवसमिअ-खइअ-

खओवसम-निष्फण्णे ।

प्र० कयरे से णामे—

उदइअ-उवसमिअ-खइअ-पारिणामिअ-निप्फण्णे ?

उ० उदइए त्ति मणुस्से

उवसंता कसाया

खइअं सम्मत्तं

पारिणामिए जीवे ।

एस णं से णामे उदइअ-उवसमिअ-खइअ-

पारिणामिअ-निप्फण्णे ।

प्र० कयरे से णामे—

उदइए - उवसमिअ - खओवसमिअ - पारिणामिअ -
निप्फण्णे ?

उ० उदइए त्ति मणुस्से

उवसंता कसाया

खओवसमिआइं इंदिआइं पारिणामिए जीवे ।

एस णं से णामे उदइअ-उवसमिअ-खओवसमिअ-

पारिणामिए जीवे ।

प्र० कयरे से णामे—

उदइअ-खइअ खओवसमिय-पारिणामिय-निप्फण्णे ?

उ० उदइए त्ति मणुस्से

खइअं सम्मत्तं

खओवसमिआइं इंदिआइं

पारिणामिए जीवे

एम णं से णामे उदडअ-खडअ-खओवसमिअ-

पारिणामिअ-णिप्फण्णे ।

प्र० कयरे से णामे-

उवसमिअ-खडअ-खओवसमिअ-पारिणामिअ-

णिप्फण्णे ?

उ० उवसंता कसाया

खडअं सम्मत्तं

खओवसमिआइं इंदिआइं

पारिणामिए जीवे ।

एस णं से णामे उवसमिअ-खडअ-खओवसमिअ-

पारिणामिअ-णिप्फण्णे ।

तत्थ णं जे से एक्के पंचगसंजोए से णं इमे-

(१) अत्थि णामे-

उदडअ-उवसमिअ-खडअ-खओवसमिअ-

पारिणामिआ-णिप्फण्णे ।

प्र० कयरे से णामे-

उदडअ-उवसमिअ-खडअ-खओवसमिअ-

पारिणामिअ-णिप्फण्णे ?

उ० उदइए त्ति मणुस्से
 उवसंता कसाया
 खइयं सम्मत्तं
 खओवसमिआइं इंदिआइं
 पारिणामिए जीवे
 एत्त णं से णामे उदइअ-उवसमिअ-खइय-^१
 खओवसमिअ-पारिणामिअ-णिप्फण्णे ।
 से त्तं सन्निवाइए ।
 से त्तं छण्णामे ।

सुत्तं १२७ प्र० से किं तं सत्तणामे ?

उ० सत्तणामे
 सत्तसरा पण्णत्ता,
 तं जहा—

गाहा—सज्जे रिसहे गंधारे, सज्जिमे पंचमे सरे ।
 *धेवए चेव नेसाए, सरा सत्त विआहिण ॥१॥
 एएत्ति णं सत्तण्ह सराणं सत्त सरट्ठाणा पण्णत्ता,
 तं जहा—

गाहाओ—सज्जं च अगजीहाए, उरेज रिसहं तरं ।
 कटुगएण गधारं, सज्जजीहाए सज्जिमं ॥२॥

* रेवए ।

नासाए पंचमं बूआ, दंतोद्वेण अ धेवत्तं ।
 भमुहक्खेवेणं णेसायं, सरट्ठाणा वि आहिआ ॥२॥
 सत्तसरा जीवणिस्सिआ पणत्ता,
 तं जहा-

गाहाओ-सज्जं र व इ मऊरो, कुक्कुडो रिसभं सरं ।
 हंसो र व इ गंधारं, मज्झिमं च गवेलगा ॥१॥

अह कुसुम-संभवे काले, कोइत्ता पंचमं सरं ।
 छट्ठं च सारसा कुंचा, नेसायं सत्तमं गओ ॥२॥
 सत्तसरा अजीवणिस्सिआ पणत्ता,
 तं जहा-

सज्जं र व इ मुअंगो, गोमुही रिसहं सरं ।
 संखो र व इ गंधारं, मज्झिमं पुण मल्लरी ॥१॥

चउच्चरण पइट्ठाणा, गोहिआ पंचमं सरं ।
 आडंबरो धेवइयं, महाभेरी अ सत्तमं ॥२॥
 एएँस णं सत्तण्हं सराणं सत्त सर-लक्खणा पणत्ता,
 तं जहा-

गाहाओ-सज्जेणं लहई वित्ति, कयं च न विणस्सइ ।
 गावो पुत्ता य मित्ता य, नारीणं होइ बल्लहो ॥१॥

रिसहेण उ *एसज्जं, सेणावच्चं धणाणि य ।
 वत्थगंधमलंकारं, इत्थिओ सयणाणि य ॥२॥
 गंधारे गीतजुत्तिण्णा, वज्जवित्ती कलाहिआ ।
 हवन्ति कइणो पण्णा, जे अण्णे सत्थपारगा ॥३॥
 मज्झिम-सरमंता उ, हवन्ति सुहजीविणो ।
 खायई पियई देई, मज्झिम-सरमस्सिओ ॥४॥
 पंचमसरमंता उ, हवन्ति पुहवीपई ।
 सूरा संगहकत्तारो, अणेगगणनायगा ॥५॥
 धे व य-सरमता उ, हवन्ति बुहजीविणो ।
 *साउणिया वाउरिया, सोयरिआ य मुट्ठिआ ॥६॥
 णिसायसरमंता उ, हवन्ति कलहकारगा ।
 जंधाचरा लेहवाहा, हिण्डगा भारवाहगा ॥७॥
 एएत्ति णं सत्तण्हं सथाणं तओ गामा पण्णत्ता,
 तं जहा—
 १ सज्जगामे, २ मज्झिमगामे, ३ गंधारगामे ।
 सज्जगामस्स णं सत्त मुच्छणाओ पण्णत्ताओ,
 तं जहा—

*पसेज्ज ।

*कुचेला य कुवित्ती य, चोरा चडालमुट्ठिआ । पाठान्तर.

गाहा—सग्गी^१ कोरविआ^२ हरिया^३, रयणी^४ अ सारकंता^५ य ।

छट्ठी अ सारसी^६ नाम, सुद्धसज्जा^७ य सत्तमा ॥१॥

मज्झिमगामस्स णं सत्त मुच्छणाओ पणत्ताओ,
तं जहा—

उत्तरमंदा रयणी, उत्तरा उत्तरासमा ।

अस्सोक्कंता य सोवीरा, अभिरूवा होइ सत्तमा ॥१॥

गंधारगामस्स णं सत्त मुच्छणाओ पणत्ताओ,
तं जहा—

मंदी अ खुडिडा, पूरिमा य चउत्थी अ सुद्धगंधारा ।

उत्तरगंधारा वि अ, सा पंचमिआ हवइ मुच्छाउ ॥१॥

सुद्धुत्तरमायामा, सा छट्ठी सच्चओ य णायव्वा ।

अह उत्तरायया कोडिमा य सा सत्तमी मुच्छा ॥२॥

प्र० सत्तसरा कओ हवंति ? गीयस्स का हवइ जोणी ?

कइस्समया उसासा ? कइ वा गीयस्स आगारा ॥३॥

उ० सत्तसरा नाभीओ, हवति गीयं च रुइयजोणी ।

पायसमा उसासा, तिण्णि य गीयस्स आगारा ॥४॥

अवसाणे उज्झंता, तिन्नि वि गीयस्स आगारा ।

आइ-मउ आरभंता, समुव्वहंता य मज्झयारम्मि ।

अवसाणे उज्झंता, तिन्नि वि गीयस्स आगारा ॥५॥

छद्दोसे अट्टगुणे, तिण्णि अ वित्ताइं दो य भणिईओ ।
 जो नाही सो गाहिइ, सुसिक्खिओ रंगमज्झमि ॥६॥
 भीयं^१ बुअं^२ उप्पिच्छं^३, उत्तालं^४ च कमसो मुणेअव्वं ।
 कागस्सरं^५ मणुणासं^६ छद्दोसा होंति गीअस्त ॥७॥
 पुण्णं^१ रत्तं^२ च अलंकिअं^३, च वत्तं^४ च तहेवमविघुट्ठं^५ ।
 महुरं समं^७ सुललिअं^८ अट्टगुणा होति गीअस्त ॥८॥
 उरं^१ कंठं^२ सिरं^३ विशुद्धं च गिज्जते मज्जअं^४ रिभियं^५ पदवद्धं^६ ।
 समतालपडुक्खेवं, सत्तस्सरसीभरं गीयं ॥९॥
 अवखरसमं^१ पयसमं^२ तालसमं^३ लयसमं^४ च गहसमं^५ ।
 नीससि-ओससिअसमं^६ संचारसमं^७ सरा सत्त ॥१०॥
 निद्दोसं^१ सारमंतं^२ च, हेउ जुत्तं^३ मलंकिअं^४ ।
 उवणीणं^५ सोवयारं^६ च, मिअं^७ महुरमेव^८ य ॥११॥
 समं^१ अद्धसमं^२ चेव, सव्वत्थ विसमं^३ च जं ।
 तिण्णि वित्तं पयाराइं, चउत्थं नोवल्लभइ ॥१२॥
 सक्कया पायया चेव, भणिईओ होति दोण्णि वा ।
 सरमडलमि गिज्जते, पसत्था इसिभासिआ ॥१३॥

प्र० केसी गायइ महुरं, केसी गायइ खरं च ल्खं च ।
 केसी गायइ चउरं, केसी अ विलंविअं दुत्तं केसी ॥१४॥
 *विस्सरं पुण केरिसी ?

* गाथाअधिकमिद पद ।

उ० गोरी गायति महरं सामा गायइ खरं च खखं च ।
 काली गायइ चउरं, काणाय विलंबियं दुतं अंधा ॥१५॥
 *विस्सरं पुण पिगला ।
 सत्तसरा तओ गामा, मुच्छणा इक्कवीसइ ।
 ताणा एगूणपण्णासं, सम्मत्तं सरमंडलं ॥१६॥
 से तं सत्तणामे ।

सुत्तं १२८ प्र० से किं तं अट्टनामे ?

उ० अट्टनामे—

अट्टविहा वयण-विभत्ती पणत्ता,

तं जहा—

निद्देसे पढमा होइ, बित्तिआ उवएसणे ।

तइया करणम्मि कया, चउत्थी संपयावणे ॥१॥

पंचमी अ अवायाणे, छट्ठी सस्तामिवायणे ।

सत्तमी सण्णिहाणत्थे, अट्टमा ऽऽमंतणी भवे ॥२॥

तत्थ पढमा विभत्ती, निद्देसे 'सो इमो अहं व' ति ।

'बिइआ पुण उवएसे' भण कुणसु इमं व तं व' ति ॥३॥

तइया करणम्मि कया 'भणिअं च कयं च तेण व मए वा

'हंदि णमो साहाए, हवइ चउत्थी पयाणम्मि ॥४॥

* इदमपि गाथाऽधिकं पद ।

‘अवणय गिण्ह य एत्तो, इउ’ त्ति वा पंचमी अवायाणे ।
छट्ठी तस्स इमस्स वा, गयस्स वा सामिसंवंधे ॥५॥
हवइ पुण सत्तमी, तं इमस्मि आहारकालभावे अ ।
आमंतणी भवे, अट्ठमी उ जह ‘हे जुवाण’ त्ति ॥६॥
से तं अट्ठणामे ।

सुत्तं १२९ प्र० से किं तं नव-णामे ?

उ० नव-णामे—

णव-कव्व-रसा पणत्ता,

तं जहा—

गाहाओ-वीरो^१सिंगारो^२, अब्भुओ^३ अ रोद्दो^४ अ होइ वोद्धव्वो ।

वेलणओ^५ वीभच्छो^६, हासो^७ कलुओ^८ पसंतो^९अ ॥१॥

(१) तत्थ परिच्चायम्मि अ* तव चरणे सत्तुजण विणासे अ ।

अणुसय धिति, परक्कमलिंगो वीरो रसो होइ ॥१॥

वीर रसो जहा—

सो नाम महावीरो, जो रज्जं पयहिअण पव्वइओ ।

काम-क्कोह-महासत्तु, पक्ख निग्घायणं कुणइ ॥२॥

(२) सिंगारो नाम रसो-रति-संजोगामिलाससंजणो ।

मंडण-विलास-विव्वोज, हास-लीला-रभण लिंगो ॥१॥

* दाण तव ।

सिगारो रसो जहा-

- महुर जिलास-सललिअं, हिय-उम्मादणकरं जुवाणाणं ।
 सामा सद्दामं, दाएति मेहला दामं ॥२॥
 (३) विम्हयकरो अपुव्वो, ऽणुभूअपुव्वो य जो रसो होइ ।
 हरिस-विसाउप्पत्ति-लक्खणो अब्भुओ नामं ॥१॥

अव्भुओ रसो जहा-

- अव्भुअतरमिह एत्तो, अन्नं कि अत्थि जीवलोगम्मि ?
 जं जिणवयणे अत्था, तिकालजुत्ता विणज्जंति ॥२॥
 (४) भय-जणण-रूव-सद्दंधयार, चिंता कहा समुप्पण्णो ।
 संमोह-संभम-विसाय, सरणालिगो रसो रोदो ॥१॥

रोदो रसो जहा-

- भिउडि-विडंबिअ-मुहो, सवट्ठोइ इअ रूहिरमाकिण्णो ।
 हणसि पसु असुर-णिओ, भीमरसिअ अइरोइ ! रोदोसि ॥२॥
 (५) विणओवयार-गुज्झगुरु-दारमेरावइक्कमुप्पण्णो ।
 वेलणओ नाम रसो, लज्जा सका-करण-लिगो ॥१॥

वेलणओ रसो जहा-

- कि लोइअकरणीओ, लज्जणीअतरं ति लज्जयामु ति ।
 वारिज्जम्मि गुरयणो, परिवंदइ जं बहुप्पोत्तं ॥२॥
 (६) असुइ-कुणिम-डुहंसण, संजोगवभासगंधनिष्फण्णो ।
 निव्वेअडिहिंसालक्खणो, रसो होइ बीभच्छो ॥१॥

बीभच्छो रसो जहा—

असुइ-मलभरिय-निज्झर, सभाव-दुग्गंधि-सव्वकालं पि ।

घण्णा उ सरीरकालि, बहुभअकलुसं विमुंचंति ॥२॥

(७) रुव-वय-वेस-भासा, विवरीअविलंबणासमुप्पणो ।

हासो मणप्पहासो, पगासल्लिगो रसो होइ ॥१॥

हासो रसो जहा—

पासुत्त-मसिमंडिअ, पडिबुद्धं देवरं पलोअंति ।

ही जह थणभरकपण, पणमिअमज्झा हसइ सामा ॥२॥

(८) पिअ-विप्पओग बंध, वह वाहि-विणिवायसंभमुप्पणो ।

सोइअ-विलाविअ-पम्हाण-रुणाल्लिगो एसो करुणो ॥१॥

करुणो रसो जहा—

पज्झायकिलामिअयं, वाहागयपप्पुअच्छिअं बहुसो ।

तस्स विओगे पुत्त !, दुव्वलयं ते मुहं जायं ॥२॥

(९) निद्वोस-मण-समाहाण, संभवो जो पसंतभावेणं ।

अविकारलक्खणो सो, रसो पसंतो त्ति णायव्वो ॥१॥

पसतो रसो जहा—

सवभाव-निव्विगारं, उवसत-पसंत-सोमदिट्ठीअं ।

ही ! जह मुणिणो सोहइ, मुहकमलंपीवरसिरीअं ॥२॥

एए नव-कव्व-रसा, वत्तीसादोसविहिसमुप्पण्णा ।

गाहाहिं मुणेयव्वा, हवंति सुद्धा वा मीसा वा ॥३॥

से तं णवणामे ।

सुत्तं १३० प्र० से किं तं दसनामे ?

उ० दसनामे दसविहे पणत्ते,
तं जहा—

१ गोण्णे, २ नोगोण्णे, ३ आयाणपएणं, ४ पड्डिवक्खपएणं,
५ पाहणयाए, ६ अणाडअसिद्धंतेणं, ७ नामेणं, ८ अवयवेणं,
९ संजोगेणं, १० पमाणेणं ।

प्र० (१) से किं तं गोण्णे ?

उ० गोण्णे—

खमइ त्ति खमणो
तवइ त्ति तवणो
जलइ त्ति जलणो
पवइ त्ति पवणो
से त्तं गोण्णे

प्र० (२) से किं तं नो गोण्णे ?

उ० अकुंतो सकुंतो
अमुग्गो समुग्गो
अमुद्दो समुद्दो
अलालं पलालं
अकुलिया सकुलिया
नो पलं असइ त्ति पलासो

अमाइवाइए माइवाहए
अबीअवावए बीअवावए
नो इंदगोवए इंदगोवे ।
से त्तं नो गोण्णे ।

प्र० (३) से किं तं आयाणपएणं ?

उ० आयाणपएणं—(धम्मोमंगलं चूलिआ)

आवंती चाउरंगिज्जं
असंखयं अहातत्थिज्जं
अहइज्जं जण्णइज्जं
पुरिसइज्जं (उसुकारिज्जं)
एलइज्जं वीरियं
धम्मो मग्गो
समोसरणं जम्मइयं ।
से त्तं आयाणपएणं ।

प्र० (४) से किं तं पडिवक्खपएणं ?

उ० पडिवक्खपएणं—

नवेसु गामागर-णगर-खेड-कव्वड-मड्ढं-
दोणमुह-पट्टणासम-संवाह-सन्निवेसेसु निविस्समाणेसु
असिवा सिवा
अग्गी सीअलो

विसं महरुं
 कल्लालघरसु अंबिलं साउअं,
 जे लाउए से अलाउए
 जे सुंभ ए से कुसुंभए
 आलवंते विवलीअभासए ।
 से तं पडिक्खणएणं ।

प्र० (५) से किं तं पाहणयाए ?

उ० पाहणयाए—

असोगवणे सत्तवणवणे
 चंपगवणे पुत्तागवणे
 नागवणे चूअवणे
 उच्छुवणे दक्खवणे सालिवणे ।
 से तं पाहणयाए ।

प्र० (६) से किं तं अणाइ-सिद्धंतेणं ?

उ० अणाइसिद्धंतेणं—

धम्मत्थिकाए, अधम्मत्थिकाए, आगासत्थिकाए
 जीवत्थिकाए, पुगलत्थिकाए अद्दासमए ।
 से तं अणाइयसिद्धंतेणं ।

प्र० (७) से किं तं नामेणं ?

उ० नामेणं—

पिउ-पिआमहस नामेणं उन्नामिज्जइ ।

से तं नामेणं ।

प्र० (८) से किं तं अवयवेणं—

उ० अवयवेणं—

सिंगी सिही विसाणी, दाढी पक्खी खुरी नही वाली ।

दुपय-चउप्पय-वहुप्पया, नंगुली केसरी काउही ॥१॥

परिअरवंधेण भडं जाणेज्जा, महिलिअं निवसणेणं ।

सित्थेणं दोणवायं काव च इक्काए गाहाए ॥२॥

से तं अवयवेणं ।

प्र० (९) से किं तं संजोएणं ?

उ० संजोगे चउव्विहे पणत्ते,

तं जहा—

१ दव्वसंजोगे, २ खेतसंजोगे,

३ कालसंजोगे, ४ भावसंजोगे ।

प्र० (१) से किं तं दव्वसंजोगे ?

उ० दव्वसंजोगे तिचिहे पणत्ते,

तं जहा—

१ सच्चित्ते २ अच्चित्ते ३ मीसए ।

प्र० (१) से किं तं सच्चित्ते ?

उ० सच्चित्ते—

गोहिं गोमिए
 महिसीहिं माहिसीए
 ऊरणीहिं ऊरणीए
 उट्टीहिं उट्टवाले
 से त्तं सचित्ते ।

प्र० (२) से किं तं अचित्ते ?

उ० अचित्ते—

छत्तेणं छत्ती
 दंढेणं दंढी
 पडेणं पडी
 घडेणं घडी
 कडेणं कडी
 से त्तं अचित्ते ।

प्र० (३) से किं तं मीसए ?

उ० मीसए—

हलेणं हालिए
 सगडेणं सागडिए
 रहेणं रहिए
 नावाए नाविए
 से त्तं मीसए ।
 से त्तं दव्वसंजोगे ।

प्र० (४) से किं तं खेत्तसंजोगे ?

उ० खेत्तसंजोगे—

भारहे एरवए
हेमवए एरण्णवए
हरिवासए रम्मगवासए
देवकुरुए उत्तरकुरुए
पुव्वविदेहए अवरविदेहए ।

अहवा—

भागहे मालवए
सोरद्धए मरहद्धए कोंकणए ।
से तं खेत्तसंजोगे ।

प्र० (३) से किं तं कालसंजोगे ?

उ० कालसंजोगे—

१ सुसमसुसमए, २ सुसमए,
३ सुसमदूसमाए, ४ दूसमसुसमए,
५ दूसमए, ६ दूसमदूसमए ।

अहवा—

१ पावसए, २ वासारत्तए, ३ सरद्धए,
४ हेमतए, ५ वसंतए, ६ गिम्हए ।
से तं कालसंजोगे ।

प्र० (४) से किं तं भावसंजोगे ?

उ० भावसंजोगे दुविहे पणत्ते,

तं जहा-

१ पसत्थे अ, २ अपसत्थे अ ।

प्र० से किं तं पसत्थ ?

उ० पसत्थे-

नाणेण नाणी

दंसणेणं दंसणी

चरित्तेण चरित्ती ।

से तं पसत्थे ।

प्र० से किं तं अपसत्थे ?

उ० अपसत्थे-

कोहेणं कोही

माणेणं माणी

मायाए मायी

लोहेणं लोही ।

से तं अपसत्थे ।

से तं भावसंजोगे ।

से तं संजोएणं ।

प्र० (१०) से किं तं पमामेणं ?

उ० पमाणे चउव्विहे पणत्ते,

तं जहा—

१ नाम-प्पमाणे २ ठवण-प्पमाणे

३ दव्व-प्पमाणे ४ भव-प्पमाणे ।

प्र० से किं तं नाम-प्पमाणे ?

उ० नामप्पमाणे—

जस्स णं जीवस्स वा, अजीवस्स वा

जीवाण वा, अजीवाण वा

तदुभयस्स वा, तदुभयाणं वा

‘पमाणे’ त्ति नामं कज्जइ ।

से त्तं णामप्पमाणे ।

प्र० से किं तं ठवण-प्पमाणे ?

उ० ठवण-प्पमाणे सत्तविहे पणत्ते,

तं जहा—

गाहा—णक्खत्त^१-देवय^२-कुले^३ पासंड^४गणे^५ अ जीविआहेउं^६ ।

आभिप्पाइअणामे^७ ठवणानामं तु सत्तविहं ॥

प्र० (१) से किं तं णक्खत्तणामे ?

उ० णक्खत्तणामे—

कत्तिआहिं जाए—कत्तिए, कत्तिआदिण्णे

कत्तिआधम्मे कत्तिआसम्मे
कत्तिआदेवे कत्तिआदासे
कत्तिआसेणे कत्तिआरक्खिए ।

रोहिणीहि जाए—
रोहिणिए, रोहिणिविन्ने
रोहिणिधम्मे रोहिणिसम्मे
रोहिणिदेवे रोहिणिदासे
रोहिणिसेणे रोहिणिरक्खिए य ।
एवं सव्वनक्खत्तेसु नामा भाणिअव्वा ।

एत्थ संगहणि-गाहाओ—

कत्तिअ^१ रोहिणि^२-मिगसर^३-अट्ठा^४ य पुणव्वसू^५ अ पुस्से अ^६ ।
तत्तो अ अस्सिलेसा^७ महा^८ उ दो फग्गुणीओ^९ अ^{१०} ॥१॥
हत्थो^{११} चित्ता^{१२} सातो^{१३}, विसाहा^{१४} तह य होइ अणुराहा^{१५} ।
जेट्ठा^{१६} मूला^{१७} पुव्वासाढा^{१८}, तह उत्तरा^{१९} चैव ॥२॥
अभिई^{२०} सवण^{२१} धणिट्ठा^{२२}, सतमिसदा^{२३} दोअहोति^{२४} भद्दवया^{२५} ।
रेवइ^{२६} अस्सिणि^{२७} भरणी^{२८}, ऐसा नक्खत्तपरिवाडी ॥३॥
से तं नक्खत्तणामे ।

प्र० (२) से किं तं देवया-णामे ?

उ० देवया-णामे—

अग्निदेवयाहिं जाए—

अग्निए, अग्निदिण्णे,

अग्निधम्मे अग्निसम्मै,

अग्निदेवे, अग्निदासे

अग्निसेणे अग्निरक्खिए ।

एवं सच्चनक्खत्त-देवधानामा भाणिअन्वा ।

एत्थ पि संगहणि-गाहाओ—

अग्गी^१-पयावइ^२-सोमे^३ रुहो^४ आदिति^५-विहस्सई^६ सप्पे^७ ।

पिति^८-भग^९-अज्जम^{१०}-सविआ^{११} तट्ठा^{१२} वाऊ^{१३} य इंदग्गी^{१४} ॥१॥

मित्तो^{१५}इंदो^{१६}निरई^{१७} आऊ^{१८}विस्सो^{१९} अ वंम^{२०} विण्हू^{२१} अ ।

वसु^{२२}-वरुण^{२३}-अय-^{२४}-विवद्धि^{२५}, पूसे^{२६} आसे^{२७} जमे^{२८} चेव ॥२॥

से तं देवयणामे ।

प्र० (३) से किं तं कुलनामे ?

उ० कुलनामे—

जग्गे, भोग्गे, रायण्णे, खत्तिए, इक्खागे, णाए, कोरन्वे ।

से तं कुलनामे ।

प्र० (४) से किं तं पासंडणामे ?

उ० पासंडणामे—

‘समणे थ पंडरंगए भिक्खू कावालियए अ तावसए ।

परिव्वायणे’

से तं पासंडनामे ।

प्र० (५) से किं तं गणनामे ?

उ० गणनामे—

मल्ले, मल्लदिण्णे, मल्लधम्मो, मल्लसम्मो,

मल्लदेवे, मल्लदासे, मल्लसेणे, मल्लरक्खिए ।

से तं गणनामे ।

प्र० (६) से किं तं जीविय-नामे ?

उ० जीविय-नामे—

अवकरए, उक्कुरुडए, उज्झअए,

कज्जवए, सुप्पए ।

से तं जीविय-नामे ।

प्र० (७) से किं तं आभिप्पाउए-नामे ?

० आभिप्पाउए-नामे—

अंबए, निंबए, बबूलए, पलासए, सिणए, पीलुए, करीरए ।

से तं आभिप्पाइअ-नामे ।

से तं ठवणप्पमाणे ।

प्र० से किं तं दव्वप्पमाणे ?

उ० दव्वप्पमाणे छव्विहे पणत्ते,

तं जहा—

धम्मत्थिकाए · · जाव अद्धात्तमए ।

से तं दव्वप्पमाणे ।

प्र० से किं तं भावप्पमाणे ?

उ० भावप्पमाणे चउव्विहे पणत्ते,

तं जहा—

१ सामासिए, २ तद्धितए, ३ घाउए, ४ निरुत्तिए ।

प्र० (१) से किं तं सामासिए ?

उ० सामासिए—सत्त समासा भवन्ति,

तं जहा—

गाहा—ददे^१ अ बहुव्वीही^२, कम्मधारय^३ दिग्गु अ^४ ।

तप्पुरिस^५ अव्वईभादे^६, एवकसेसे^७ अ सत्तमे ॥१॥

प्र० (१) से किं तं दंदे समासे ?

उ० दंदे समासे—

दन्ताश्च = औष्ठी च दन्तोष्ठम्

स्तनी च = उदरं च स्तनोदरम्

वस्त्रं च = पात्रं च वस्त्रपात्रम्

अश्वश्च=माहिषश्च अश्वमहिषम्
 अहिश्च=नकुलश्च अहिनकुलम् ।
 से त्तं द्दं समासे ।

प्र० (२) से किं तं बहुव्वीही समासे ?

उ० बहुव्वीही समासे—

फुल्ला इमंमि गिरिम्मि कुडय कयंवा
 सो इमो गिरीफुल्लियकुडुयकयंवो ।
 से त्तं बहुव्वीही समासे ।

प्र० (३) से किं तं कम्मधारए समासे ?

उ० कम्मधारए समासे—

धवलो=वसहो धवलवसहो
 किण्हो=मियो किण्हमियो
 सेतो =पडो सेतपडो
 रत्तो =पडो रत्तपडो
 से त्तं कम्मधारए समासे ।

प्र० (४) से किं तं दिगुसमासे ?

उ० दिगुसमासे—

तिण्णि=कडुगा तिकडुगं-
 तिण्णि=महुराणि तिमहुरं

तिण्णि=गुणा तिगुणं
 तिण्णि=पुरा तिपुरं
 तिण्णि=सरा तिसरं
 तिण्णि=पुक्खरा तिपुक्खरं
 तिण्णि=विदुआ तिबिदुअ
 तिण्णि=पहा तिपहं
 पंच=णईओ पंचणयं
 सत्त=गया सत्तगयं
 नव=तुरंगा नवतुरंगं
 दस=गामा दसगामं
 दस=पुरा दसपुर ।
 से तं दिग्गुसमासे ।

प्र० (५) से किं तं तप्पुरिसे समासे ?

उ० तप्पुरिसे समासे-

तित्थे=कागो तित्थकागो
 वणे=हत्यी वणहत्यी
 वणे=वराहो वणवराहो
 वणे=महिस्सो वणमहिस्सो
 वणे=मयूरो वणमयूरो,
 से तं तप्पुरिसे समासे ।

प्र० (६) से किं तं अव्वईभावे समासे ?

उ० अव्वईभावे समासे—

अणुगामं, अणुणइयं, अणुफरिहं, अणुचरिअं ।

से तं अव्वईभावे समासे ।

प्र० (७) से किं तं एगसेसे समासे ?

उ० एगसेसे समासे—

जहा एगो पुरिसो तथा बहवे पुरिसा ।

जहा बहवे पुरिसा तथा एगो पुरिसो ।

जहा एगो करिसावणो तथा बहवे करिसावणा ।

जहा बहवे करिसावणा तथा एगो करिसावणो ।

जहा एगो साली तथा बहवे सालिणो ।

जहा बहवे सालिणो तथा एगो साली ।

से तं एगसेसे समासे ।

से तं सामासिए ।

प्र० (२) से किं तं तद्धितए ?

उ० तद्धितए अट्ठविहे पणत्ते,

तं जहा—

गाहा—कम्मे^१ सिण्प^२सिलोए^३, संजोग^४ समीअवो^५ अ संजूहे^६ ।

इस्सरिअ^७ अवच्चेण^८ य, तद्धितणामं तु अट्ठविहं ॥

प्र० (१) से किं तं कम्मणामे ?

उ० कम्मणामे—

तणहारए, कट्टुहारए, पत्तहारए,
दोसिए, सोत्तिए, कप्पासिए,
भंडवेयालिए, कोलालिए ।
से तं कम्मणामे ।

प्र० (२) से किं तं सिप्प-णामे ?

उ० सिप्प-णामे—

तुण्णए तंतुवाए पट्टकारे उपट्टे वरुडे
मुजकारे कट्टुकारे छत्तकारे वज्झकारे
पोत्थकारे चित्तकारे दंतकारे लेप्पकारे
सेलुकारे कोट्टिमकारे
से तं सिप्प-णामे ।

प्र० (३) से किं तं सिलोअ-नामे ?

उ० सिलोअ-नामे—

समणे, माहणे, सव्वातिही ।
से तं सिलोअ-नामे ।

प्र० (४) से किं तं संजोग-नामे ?

उ० संजोग-नामे—

रण्णो ससुरए
 रण्णो जामाउए
 रण्णो साले
 रण्णो भाउए
 रण्णो भगणीवई
 से तं संजोग-नामे ।

प्र० (५) से किं तं समीव-नामे ?

उ० समीव-नामे—

गिरिस्ससमीवे=णयरं गिरिणयरं
 विदिताएसमीवे=णयर वेदिसंणयरं
 बेन्नाए समीवे=णयरं बेन्नायडं
 तगराए समीवे=णयरं तगरायडं
 से तं समीव-नामे ।

प्र० (६) से किं तं संजूह-नामे ?

उ० संजूह-नामे—

तरंगवइक्कारे, मलयवइक्कारे, अत्ताणुसट्ठिकारे, बिंदुकारे ।
 से तं संजूह-नामे ।

प्र० (७) से किं तं ईसरिअ-नामे ?

उ० ईसरिअ-नामे—

राईसरे तलवरे माडंविए कोडुविए
इग्गे सेट्टी सत्यवाहे सेणावई ।
से त्तं ईसरिअ-णामे ।

प्र० (८) से किं तं अवच्च-नामे ?

उ० अवच्च-नामे—

अरिहंतमाया, चक्कवट्टिमाया,
वलदेवमाया, वासुदेवमाया,
रायमाया भुणिमाया वायगमाया ।
से त्तं अवच्चनामे ।
से त्तं तद्धियए ।

प्र० (३) से किं तं धाउए ?

उ० धाउए—

भूसत्तायां परस्मैभाषा
एध वृद्धौ, स्पृष्टं संहर्षे
गाधू प्रतिष्ठातिप्सयोर्ग्रन्थे च, बाधू लोडने ।
से त्तं धाउए ।

प्र० (४) से किं तं निरुत्तिए ?

उ० निरुत्तिए—

मह्मां शेते=महिषः
भ्रमति च रीति च=भ्रमरः

मुहुमुहुलसतीति = मुसलं
 कपेरिवलम्बते त्थेति च करोति = कपित्थ,
 चिदितिकरोति खल्लं च भवति = चिक्खल
 ऊर्ध्वकर्ण = उलूक.
 मेखस्य माला = मेखला ।
 से त्तं निरुत्तिए ।
 से त्तं भावप्पमाणे ।
 से त्तं पमाणनामे ।
 से त्तं दसनामे ।
 से त्तं नामे ।
 नाम त्ति पयं समत्तं ।

प्रमाणाधिकार-

सुत्तं० १३१ प्र० से किं तं पमाणे ?

उ० पमाणे चउव्विहे पणत्ते,
तं जहा-

१ दव्वप्पमाणे, २ खेत्तप्पमाणे, ३ कालप्पमाणे,
४ भावप्पमाणे ।

सुत्तं० १३२ प्र० (१) से किं तं दव्व-प्पमाणे ?

उ० दव्व-प्पमाणे दुविहे पणत्ते,
तं जहा-

१ पएसत्तिप्फण्णे अ, २ विभागत्तिप्फण्णे अ ।

प्र० (१) से कि तं पएसनिष्फण्णे ?

उ० पएसनिष्फण्णे—

परमाणुपोगले दुपएसिए जाव दसपएसिए
संखिज्जपएसिए असंखिज्जपएसिए अणतपएसिए।
से तं पएसनिष्फण्णे ।

३

प्र० से कि तं विभागनिष्फण्णे ?

उ० विभागनिष्फण्णे पंचविहे पणत्ते,
तं जहा—

१ माणे, २ उम्माणे, ३ अवमाणे, ४ गणिमे,
५ पडिमाणे ।

प्र० (१) से कि तं माणे ?

उ० माणे दुविहे पणत्ते,
तं जहा—

१ धन्नमाणप्पमाणे अ, २ रसमाणप्पमाणे अ ।

प्र० (१) से कि तं धन्तमाणप्पमाणे ?

उ० धन्तमाणप्पमाणे—

दो असईओ = पसई
दो पसईओ = सेतिया
चत्तारि सेईआओ = कुलओ

चत्तारि कुलया = पत्थो
 चत्तारि पत्थया = आढगं
 चत्तारि आढगाइं = दोणो
 सट्ठि आढयाइं = जहन्ने कुंभे
 असीइ आढयाइं = मज्झिमे कुंभे
 आढयसयं = उक्कोसए कुंभे
 अट्ठ य आढयसइए = वाहे ।

प्र० एएणं धन्तमाणपमाणेणं किं पओअणं ?

उ० एएणं धण्णमाणपमाणेणं—

मुत्तोली-मुख-इदुर-अलिद-अपवारिसंसियाणं
 धण्णाणं

धण्णमाणप्पमाणनिव्वित्तिलक्खणं भवइ ।

से तं धण्णमाणपमाणे ।

प्र० (२) से किं तं रसमाणप्पमाणे ?

उ० रसमाणप्पमाणे—

धण्णमाणप्पमाणाओ चउभागविबड्ढिइए

अडिंभतरसिहाजुत्ते रसमाणप्पमाणे विहिज्जइ,

तं जहा—

चउसट्ठिआ (४ चउपलपमाणा)

चत्तीसिआ (८ अट्ठपलपमाणा)

सोलसिआ (१६ सोलसपलपमाणा)
 अट्टभाइआ (३२ वत्तीसपलपमाणा)
 चउभाइआ (६४ चउसट्ठिपलपमाणा)
 अट्ठमाणी (१२८ सयाहिअ अट्ठाइमपलपमाणा)
 माणी (२५६ द्वा सयाहिअ छप्पणपलपमाणा)
 दो चउसट्ठिआओ=वत्तीसिआ
 दो वत्तिसिआओ=सोलसिआ
 दो सोलसिआओ=अट्टभाइआ
 दो अट्टभाइआओ=चउभाइया
 दो चउभाइआओ=अट्ठमाणि
 दो अट्ठमाणीओ=माणी ।

प्र० एएणं रसमाणप्पमाणेणं किं पओअणं ?

उ० एएणं रसमाणप्पमाणेणं—

चारक-घडक-करक-कलसिअ-गग्गरि
 दइअ-करोडिअ-कुडिअ-संसियाण रसाणं
 रसमाणप्पमाण-निट्ठित्तिलक्खण भवइ ।
 से तं रसमाणपमाणे ।
 से तं माणे ।

‘कुडिअ दोससिआण ।

प्र० (२) से किं तं उम्माणे ?

उ० उम्माणे—जं णं उम्मिणिज्जइ,
तं जहा—

अद्धकरिसो करिसो, अद्धपलं पलं,
अद्धतुला तुला, अद्धभारो भारो ।

दो अद्धकरिसा = करिसो

दो करिसा = अद्धपलं

दो अद्धपलाइं = पलं

पंचुत्तरपलसइआ = तुला

दसतुलाओ = अद्धभारो

बीसं तुलाओ = भारो ।

प्र० एएणं उम्माणपमाणेणं किं पओअणं ?

उ० एएणं उम्माणपमाणेण पत्ताऽगुरु-तगर-चोअअ-

कुंकुम-खंड-गुल-मच्छडिआईणं दव्वाणं

उम्माण-पमाणनिव्वित्तिलक्खणं भवइ ।

से तं उम्माणपमाणे ।

प्र० (३) से किं तं ओमाणे ?

उ० ओमाणे—जं णं ओमिणिज्जइ,

तं जहा—

हत्थेण वा, दण्डेण वा, धणुएण वा, जुगेण वा,
नालिआए वा, अक्खेण वा मुसलेण वा ।

गाहा—दंड-धणु-जुग-नालिआ य, अक्ख-मुसलं च चउहत्थं ।

दसनालियं च रज्जुं, विआण ओमाणसण्णाए ॥१॥

वत्थुम्मि हत्थमेज्जं, खित्ते दंडं धणु च पथम्मि ।

खायं च नालिआए, विआण ओमाणसण्णाए ॥२॥

प्र० एएणं अवमाणपमाणेणं किं पओअणं ?

उ० एएणं अवमाणपमाणेणं खाय-चिअ-रइअ-
करकचिण-कड-पड-भित्ति-परिक्खेवसंसियाणं
दव्वाणं

अवमाण-पमाण-निव्वित्ति-लक्खणं भवइ ।

से तं अवमाणे ।

प्र० (४) से किं तं गणिमे ?

उ० गणिमे—ज णं गणिज्जइ,

तं जहा—

एगो दस सयं सहस्सं दससहस्साइं,

सयसहस्सं दससयसहस्साइं कोडी ।

प्र० एएणं गणिम-प्पमाणेणं किं पओअणं ?

उ० एएणं गणिम-प्पमाणेणं भित्त-भित्ति-भत्त-चेअण-

आय, - च्वयनिसंसिआणं दच्चाणं,
गणिम-पमाणनिव्वित्तिलक्खणं भवइ ।
से तं गणिमे ।

प्र० से किं तं पडिमाणे ?

उ० पडिमाणे—जं णं पडिमिणिज्जइ,

तं जहा—

गुंजा कागणी निप्फावो कम्ममासओ मंडलओ
सुवण्णो ।

पंच गुंजाओ = कम्ममासओ

चत्तारि कागणीओ = कम्ममासओ

सिणिणि निप्फावा = कम्ममासओ

एवं ऋजक्को कम्ममासओ = (काकिण्यपेक्षया)

वारस कम्ममासया = मंडलओ

एवं अडयालिसएकागणीए = मंडलओ

सोलसकम्ममासया = सुवण्णो

एवं चउसट्ठिएकागणीए = सुवण्णो ।

प्र० एएणं पडिमाणप्पमाणेणं किं पओअणं ?

उ० एएणं पडिमाणप्पमाणेणं सुवण्ण-रजत-मणि-

मोत्तिअ,

संख-सिल-प्पवालाईणं दच्चाणं

पडिमाणप्पमाण-निव्वित्तिलक्खणं भवइ ।

से त्तं पडिमाणे ।

से त्तं विभागनिप्फण्णे ।

से त्तं इव्वप्पमाणे ।

मुत्तं० १३३ प्र० (प० २) से किं तं खेत्तपमाणे ?

उ० खेत्तपमाणे दुविहे पणत्ते,

त जहा-

१ पएसनिप्फण्णे २ विभागनिप्फण्णे अ ।

प्र० (खे० १) से किं तं पएसनिप्फण्णे ?

उ० पएसनिप्फण्णे-

एगपएसोगाढे दुपएसोगाढे तिपएसोगाढे,

जाव ।

संखिज्जपएसोगाढे असंखिज्जपएसोगाढे ।

से त्तं पएसनिप्फण्णे ।

प्र० (खे० २) से किं तं विभागनिप्फण्णे ?

उ० विभागनिप्फण्णे-

गाहा—अंगुल-विहत्थि-रयणी, कुच्छी धणु गाउअं च वोद्धव्वं ।

जोयण-सेढी-पयरं, लोगमलोगे वि य तहेव ॥

प्र० से किं तं अंगुले ?

उ० अंगुले तिविहे पणत्ते,

तं जहा--

१ आयंगुले, २ उस्सेहंगुले, ३ पमाणंगुले ।

प्र० (१) से किं तं आयंगुले ?

आयंगुले--

जे णं जया मणुस्सा भवन्ति तेसिं णं तथा ।

अप्पणो अंगुलेणं दुवालसअंगुलाइं मुहं,

नवमुहाइं पुरिसे पमाणजुत्ते भवइ,

दोण्णिए पुरिसे माणजुत्ते भवइ,

अट्ठभारं तुलमाणे पुरिसे उम्माणजुत्ते भवइ ।

गाहाओ--माणुम्माणपमाण जुत्ता, लक्खणवज्जणगुणेहि उववेआ ।

उत्तमकुलप्पसूआ, उत्तमपुरिसा मुणेअन्वा ॥१॥

होति पुण अहियपुरिसा, अट्ठसयं अंगुलाण उन्विद्धा ।

छण्णउइ अहमपुरिसा, चउरुत्तरमज्झिमिल्ला उ ॥२॥

हीणा वा अहिया वा, जे खलु सरसत्तसारपरिहीणा ।

ते उत्तमपुरिसाणं, अवस्स पेसत्तणमुवेति ॥३॥

एएणं अंगुलपमाणेणं

छ अंगुलाइं=पाओ

दो पाया=विहत्थी

दो विहत्थीओ=रयणी

दो रयणीओ=कुच्छी

दो कुच्छोओ=दंडं धणू जुगं नालिआ अक्खे
मुसले ।

दो धणुसहस्साइं=गाउअ

चत्तारिगाउआइं=जोअणं ।

प्र० एएणं आयंगुलपमाणेणं किं पओअणं ?

उ० एएणं आयंगुलेपमाणेणं जे णं जया मणुस्सा हवन्ति,

तेसिं णं तथा आयंगुलेणं,

अगड-तलाग-दह-नदी वावि-पुक्खरिणी-दीहिय-

गुजालिआओ सरा सरपंतिआओ सरसरपंतिआओ

विलपंतिआओ,

आरामुज्जाण-काणण-वण-वणसंड-वणराईओ,

देवउल-सभा-पवा-थूभ-खाइअ-परिहाओ

पागार-अट्टालय-चरिअ-दार-नोपुर-तोरण-पासाय

घर-सरण-लयण-आवण-सिंघाडग-तिग-चउक्क-

चच्चर चउम्मह-महापह-पह-सगड-रह-जाण-जुग-

गिल्ली थिल्ली-सिविअ-संदमाणिआओ,

लोही-लोहकडाह-कडुच्छुय-आसण-सतण-खंभ-

भंडमत्तोवगरणमाईणि

अज्जकालिआइं च जोअणाइं मविज्जन्ति ।

से समासओ तिविहे पणत्ते,

तं जहा—

१ सूई अंगुले २ पयरंगुले ३ घणंगुले ।

१. अंगुलायया एगपएसिया सेढी सूई अंगुले

२. सूई सूईए गुणिआ पयरंगुले

३. पयरं सूईए गुणिअं घणंगुले ।

प्र० एएसिं णं भत्ते । सूईअंगुल-पयरंगुल-घणंगुलाण

कयरे कयरेहितो—

अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ?

उ० सच्चत्थोवे सूईअंगुले,

पयरंगुले असंखेज्जगुणे,

घणंगुले असंखिज्जगुणे ।

से त्तं आयंगुले ।

प्र० (१) से किं तं उस्सेहंगुले ?

उ० उस्सेहंगुले अणेगविहे पणत्ते,

तं जहा—

—परमाणू तसरेणू, रहरेणू अगगयं च वालस्स ।

लिव्खा जूआ य जवो, अट्ठगुण विवड्ढिआ कमसो ॥१॥

प्र० से किं तं परमाणू ?

उ० परमाणू डुविहे पणत्ते,

तं जहा-

१ सुहुमे अ २ वावहारिए अ ।

तत्थ णं जे से सुहुमे से ठप्पे ।

प्र० से किं तं वावहारिए ?

उ० वावहारिए से णं अणंताणं

सुहुमपोगलाणं समुदयसमिति-समागमेणं-से एगे

वावहारिए परमाणुपोगले निप्फज्जइ ।

प्र० से णं भंते । असिघारं वा खुरघारं वा
ओगाहेज्जा ?

उ० हन्ता, ओगाहेज्जा ।

प्र० से णं तत्थ छिज्जेज्ज वा, भिज्जेज्ज वा ?

उ० नो इणद्धे समद्धे, नो खलु तत्थ सत्थं कमइ ।

प्र० से णं भंते । अगणिकायस्स मज्झंमज्झेणं
वीईवएज्जा ?

उ० हन्ता, वीईवएज्जा ।

प्र० से णं भंते ! तत्थ डहेज्जा ?

उ० नो इणद्धे समद्धे, नो खलु तत्थ सत्थं कमइ ।

प्र० से णं भंते । पुक्खरसंवट्ठगस्स महामेहस्स
मज्झंमज्झेणं वीईवएज्जा ?

उ० हन्ता, वीईवएज्जा ।

प्र० से णं तत्थ उदउल्ले सिया ?

उ० नो इणद्धे समद्धे, णो खलु तत्थ सत्थं कमइ ।

प्र० से णं भंते ! गंगाए महाणईए पडिसोयं
हव्वमागच्छेज्जा ?

उ० हंता हव्वमागच्छेज्जा ।

प्र० से णं तत्थ विणिघायमावज्जेज्जा ?

उ० नो इणद्धे सणद्धे । नो खलु तत्थ सत्थं कमइ ।

प्र० से णं भंते ! उदगावत्तं वा, उदगबिंदु वा
ओगाहेज्जा ?

उ० हंता, ओगाहेज्जा ।

प्र० से णं तत्थ कुच्छेज्जा वा ? परियावज्जेज्ज वा ?

उ० णो इणद्धे समद्धे, नो खलु तत्थ सत्थं कमइ ।

ग्राहा—सत्येण मुतिक्खेण वि, छित्तुं भेत्तुं च जं किर न सक्का ।

तं परमाणुं सिद्धा, वयंति आइं पमाणानं ॥१॥

अणंताणं वावहारिअ-परमाणुपोगलाणं

समुदय-समिति-समागमेणं सा एगा-

उसण्हसण्हिआ इ वा, सण्हसण्हिआ इ वा,

उड्ढरेणू इ वा, तसरेणू इ वा, र्हरेणू इ वा

अट्ट उसण्हसण्हिआओ सा एगा=सण्हसण्हिआ

अट्ट सण्हसण्हिआओ सा एगा=उड्ढरेणू

अट्ट उड्ढरेणूओ सा एगा=तसरेणू

अट्ट तसरेणूओ सा एगा=रहरेणू

अट्ट रहरेणूओ=देवकुरु उत्तरकुरुणं-

मणुआणं से एगे वालग्गे,

अट्ट देवकुरु-उत्तरकुरुणं मणुआणं वालग्गा=

हरिवास-रम्मगवासाणं मणुआणं से एगे वालग्गे ।

अट्ट हरिवास-रम्मगवासाणं मणुस्साणं वालग्गा=

हेमवय-हेरणवयवासाणं मणुस्साणं से एगे वालग्गे ।

अट्ट हेमवय, हेरणवयवासाणं मणुस्साणं

वालग्गा=

पुव्वविदेह-अवरविदेहाणं मणुस्साणं से एगे वालग्गे ।

अट्ट पुव्वविदेह-अवरविदेहाणं मणुस्साणं वालग्गा=

भरह-एरवयाणं मणुस्साणं से एगे वालग्गे ।

अट्ट-भरह-एरवयाणं मणुस्साणं वालग्गा=

सा एगा लिक्खा ।

अट्ट लिक्खाओ=सा एगा जूआ ।

अट्ट जूआओ =से एगे जवमज्जे ।

अट्ट जवमज्जे =से एगे उस्सेहंगुले ।

एएणं अंगुल पमाणेणं-

छ अंगुलाइं=पादो
 बारस अंगुलाइं=विहत्थी
 चउवीसं अंगुलाइं=रयणी
 अडयालीसं अंगुलाइं=कुच्छी
 छन्नवइ अंगुलाइं=से एगे वंडे इवा, घणूइ वा
 जुगेइ वा, नालिआइ वा
 अक्खेइ वा, मुसलेइ वा ।
 एएणं धणुप्पमाणेणं दो धणुसहस्साइं=गाउअं
 चत्तारि गाउआइं=जोअणं ।

- प्र० एएणं उस्सेहंगुलेणं किं पओअणं ?
 उ० एएणं उस्सेहंगुलेणं णेरइय-तिरिक्खजोणिअ
 मणुस्स-देवाणं सरीरोगाहणा मविज्जइ ।
 प्र० णेरइआणं भंते ! के महालिआ सरीरोगाहणा
 पण्णत्ता ?
 उ० गोयमा दुविहा पण्णत्ता,
 तं जहा—
 १ भवधारणिज्जा अ २ उत्तरवेउट्ठिआ य ।
 तत्थ ण जा सा भवधारणिज्जा सा ण—
 जहण्णेण अंगुलस्स असंखेज्जइभाग ।
 उक्कोसेणं पच्च धणुसयाइ ।

तत्थ णं जा सा उत्तरवेउव्विआ सा ।

जहण्णेणं अंगुलस्स संखेज्जइभागं ।

उक्कोसेणं धणुसहस्सं ।

प्र० रयणप्पहाए पुढवीए नेरइआणं भंते ।

के महालिया सरीरोगाहणा पणत्ता ?

उ० गोयमा ! दुविहा पणत्ता,

तं जहा—

१ भवधारणिज्जा य २ उत्तरवेउव्विआ य ।

तत्थ णं जा सा भवधारणिज्जा सा ।

जहण्णेणं अंगुलस्स असंखिज्जइभागं

उक्कोसेणं—सत्तधणूइं तिण्णिरयणीओ छच्च

अंगुलाइं ।

तत्थ णं जा सा उत्तरवेउव्विआ सा

जहण्णेणं अंगुलस्स सखेज्जइभागं

उक्कोसेणं पण्णरसधणूइं दोण्णि रयणीओ—

वारस अंगुलाइं ।

प्र० *सक्करप्पहापुढवीए नेरइआणं भंते ।

के महालिया सरीरोगाहणा पणत्ता ?

उ० गोयमा ! दुविहा पणत्ता,

तं जहा—

इवं सव्वाण दुविहा भवधारणिज्जा—

१ भवधारणिज्जा य २ उत्तरवेउव्विया य ।

तत्थ णं जा सा भवधारणिज्जा सा

जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं
उक्कोसेणं पण्णरसधणूइं, दुण्णि रयणीओ
बारसअंगुलाइं ।

तत्थ णं जा सा उत्तरवेउव्विया सा

जहण्णेणं अंगुलस्स संखेज्जइभागं
उक्कोसेणं एकतीसं धणूइं इक्करयणी अ ।

प्र० वालुअप्पहापुढवीए णेरइयाणं भंते ।

के महालिआ सरीरोगाहणा पण्णत्ता ?

उ० गोयमा । दुविहा पण्णत्ता,

तं जहा—

१ भवधारणिज्जा य २ उत्तरवेउव्विया य ।

तत्थ णं जा सा भवधारणिज्जा सा

जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं,
उक्कोसेणं एकतीसं धणूइं इक्करयणी अ ।

तत्थ णं जा सा उत्तरवेउव्विया सा

जहण्णेणं अंगुलस्स संखेज्जइभागं,
उक्कोसेणं बासद्विधणूइं दो रयणीओ अ ।

प्र० एवं सत्त्वासि पुढवीणं पुच्छा भाणिअत्ता ।

उ० पंकप्पहाए पुढवीए भवधारणिज्जा

जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं

उक्कोसेणं वासट्ठि धणूइं दो रयणीओ य ।

उत्तरवेउत्थिया—

जहण्णेणं अंगुलस्स संखेज्जइभागं,

उक्कोसेणं पणवीसं धणुसयं ।

धूमप्पहाए भवधारणिज्जा

जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं

उक्कोसेणं पणवीसं धणुसयं ।

उत्तरवेउत्थिया—

जहण्णेणं अंगुलस्स संखेज्जइभागं

उक्कोसेणं अड्ढाइज्जाइं धणुसयाइं ।

तमाए भवधारणिज्जा—

जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं

उक्कोसेणं अड्ढाइज्जाइं धणुसयाइं

उत्तरवेउत्थिया—

जहण्णेणं अंगुलस्स संखेज्जइभागं

उक्कोसेणं पंच धणुसयाइं ।

प्र० तमतमाए पुढवीए नेरइयाणं भंते ।
के महालिआ सरीरोगाहणा पणत्ता ?

उ० गोयमा ! दुविहा पणत्ता,
तं जहा—

१ भवधारणिज्जा थ २ उत्तरवेउच्चिया थ ।

तत्थ णं जा सा भवधारणिज्जा सा
जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं
उक्कोसेण पच धणुसयाइं ।

तत्थ णं जा सा उत्तरवेउच्चिया सा
जहण्णेण अंगुलस्स संखेज्जइभाग
उक्कोसेणं धणुसहस्साइ ।

प्र० असुरकुमाराण भते । के महालिआ सरीरोगाहणा
पणत्ता ?

उ० गोयमा ! दुविहा पणत्ता,
तं जहा—

१ भवधारणिज्जा थ २ उत्तरवेउच्चिया थ ।

तत्थ णं जा सा भवधारणिज्जा सा
जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं
उक्कोसेण सत्तरयणीओ,

तत्थ ण जा सा उत्तरवेउव्विया सा

जहण्णेण अगुलस्स संखेज्जइभाग

उक्कोसेणं जोयणसयसहस्स ।

एव असुरकुमारगमेण जाव--थणियकुमाराणं ताव
भाणिअव्व ।

प्र० पुढविकाइआण भत्ते ! के महालिआ सरीरोगाहणा
पणत्ता ?

उ० गोयमा ! जहण्णेण अगुलस्स असंखेज्जइभागं

उक्कोसेण वि अगुलस्स असंखेज्जइभाग ।

एवं सुहुमाणं ओहिआण अपज्जत्तगाणं पज्जत्तगाणं
च भाणिअव्व ।

एवं जाव वादरवाउकाइयाणं अपज्जत्तगाणं
पज्जत्तगाणं भाणिअव्वं ।

प्र० वणस्सइकाइयाणं भत्ते ! के महालिया सरीरोगाहणा
पणत्ता ?

उ० गोयमा ! जहण्णेण अगुलस्स असंखेज्जइभागं

उक्कोसेण सातिरेग जोयणसहस्सं ।

सुहुमवणस्सइकाइयाणं ओहिआण--

अपज्जत्तगाणं पज्जत्तगाणं तिण्ह पि

जहण्णेण अंगुलस्स असंखेज्जइभागं

उक्कोसेणं वि अंगुलस्स असंखेज्जइभाग ।

बायरवणस्सइकाइयाणं—ओहिआण

जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभाग

उक्कोसेणं सातिरेगं जोयणसहस्सं ।

अपज्जत्तगाणं—

जहण्णेण अंगुलस्स असंखेज्जइभागं

उक्कोसेण वि अंगुलस्स असंखेज्जइभाग ।

पज्जत्तगाणं—

जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभाग

उक्कोसेण सातिरेगं जोअणसहस्स ।

प्र० बेइदिआणं पुच्छा—

उ० गोयमा । जहन्नेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं

उक्कोसेणं बारसजोअणाइ ।

अपज्जत्तगाणं—

जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं

उक्कोसेणं वि अंगुलस्स असंखेज्जइभागं ।

पज्जत्तगाणं—

जहण्णेण अंगुलस्स संखेज्जइभागं

उक्कोसेणं बारसजोअणाइ ।

प्र० तेइंदियाणं पुच्छा—

उ० गोयमा ! जहण्णेण अंगुलस्स असंखेज्जइभागं
उक्कोसेण तिण्णि गाउआइं ।

अपज्जत्तगाणं—

जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभाग
उक्कोसेण वि अंगुलस्स असंखेज्जइभागं ।

पज्जत्तगाणं—

जहण्णेणं अंगुलस्स संखेज्जइभागं
उक्कोसेण तिण्णि गाउआइं ।

प्र० चउरिंदियाण पुच्छा—

उ० गोयमा ! जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं
उक्कोसेणं चत्तारि गाउआइं ।

अपज्जत्तगाणं—

जहण्णेणं उक्कोसेण वि अंगुलस्स असंखेज्जइभागं ।

पज्जत्तगाणं—

जहण्णेणं अंगुलस्स संखेज्जइभागं
उक्कोसेणं चत्तारि गाउआइं ।

प्र० पंचिंदियतिरिदखजोणियाणं भत्ते ! के महालिया ,
सरीरोगाहणा पण्णत्ता ?

उ० गोयमा ! जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं
उक्कोसेणं जोयणसहस्सं ।

प्र० जलयर-पंचिदिय-तिरिक्ख-जोणियाणं पुच्छा-

उ० गोयमा ! एवं चेव ।

प्र० सम्मुच्छिम-जलयर-पंचिदियतिरिक्ख-जोणियाणं पुच्छा

उ० गोयमा ! जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं
उक्कोसेणं जोयणसहस्स ।

प्र० अपज्जत्तग-सम्मुच्छिम-जलयर-पंचिदियातिरिक्ख-
जोणियाणं पुच्छा-

जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं

उक्कोसेणं वि अंगुलस्स असंखेज्जइभागं ।

० पज्जत्तग-संमुच्छिम-जलयर-पंचिदिय-तिरिक्ख-जोणियाणं
पुच्छा-

उ० गोयमा ! जहण्णेणं अंगुलस्स संखेज्जइभागं
उक्कोसेणं जोयणसहस्सं ।

प्र० गब्भवक्कंतिय-जलयर-पंचिदियपुच्छा-

गोयमा ! जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं
उक्कोसेणं जोयणसहस्सं ।

प्र० अपज्जत्तग-गब्भवक्कंतिय-जलयर-पंचिदियपुच्छा-

उ० गोयमा ! जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं
उक्कोसेणं वि अंगुलस्स असंखेज्जइभागं ।

प्र० पज्जत्तग-गढमवक्कन्तिअ-जलयरपुच्छा-

उ० गोयमा ! जहण्णेणं अगुलस्स संखेज्जइभागं
उवक्कोसेण जोअणसहस्स ।

प्र० चउप्पय-थलयर-पंचिंदियपुच्छा-

उ० गोयमा ! जहण्णेण अगुलस्स असखेज्जइभागं
उवक्कोसेण छ गाउआइ ।

प्र० सम्मुच्छिम-जउप्पय-थलयरपुच्छा-

उ० गोयमा ! जहण्णेण अगुलस्स असखेज्जइभागं
उवक्कोसेणं गाउअपुहुत्तं ।

प्र० अपज्जत्तग-सम्मुच्छिम-चउप्पय-थलयरपुच्छा-

उ० गोयमा ! जहण्णेणं अगुलस्स असखेज्जइभागं
उवक्कोसेणं वि अंगुलस्स असंखेज्जइभागं

प्र० पज्जत्तग-सम्मुच्छिम-चउप्पय-थलयरपुच्छा-

उ० गोयमा ! जहण्णेणं अगुलस्स सखेज्जइभागं
उवक्कोसेण गाउअपुहुत्त ।

प्र० गढमवक्कन्तिअ-चउप्पय-थलयरपुच्छा-

उ० गोयमा ! जहण्णेण अगुलस्स असखेज्जइभागं
उवक्कोसेण छ गाउआइ ।

प्र० अपज्जत्तग-गढभवक्कत्तिअ-चउप्पय-थलयरपुच्छा—

उ० गोयमा । जहण्णेण अगुलस्स असखेज्जइभाग
उक्कोसेण वि अंगुलस्स असखेज्जइभाग ।

प्र० पज्जत्तग-गढभवक्कत्तिअ-चउप्पय-थलयरपुच्छा—

उ० गोयमा । जहण्णेण अगुलस्स सखेज्जइभाग
उक्कोसेणं छ गाउआई ।

प्र० उरपरिसप्प-थलयर-पाचिदियपुच्छा—

उ० गोयमा । जहण्णेण अगुलस्स असखेज्जइभाग
उक्कोसेण जोअणसहस्स ।

प्र० सम्मुच्छिम-उरपरिसप्प-थलयरपुच्छा—

उ० गोयमा । जहण्णेण अगुलस्स असखेज्जइभाग
उक्कोसेण जोअणपुहुत्त ।

प्र० अपज्जत्तग-सम्मुच्छिम-उरपरिसप्प-थलयरपुच्छा—

उ० गोयमा । जहण्णेण अगुलस्स असखेज्जइभाग
उक्कोसेण वि अगुलस्स असखेज्जइभाग

प्र० पज्जत्तग-समुच्छिम-उरपरिसप्प-थलयरपुच्छा—

उ० गोयमा । जहण्णेण अगुलस्स सखेज्जइभाग
उक्कोसेण जोअणपुहुत्त ।

प्र० गढभवक्कतिअ-उरपरिसप्प-थलयरपुच्छा-

उ० गोयमा ! जहण्णेण अंगुलस्स असखेज्जइभाग
उक्कोसेण जोअणसहस्स ।

प्र० अयज्जत्तग-गढभवक्कतिय-उरपरिसप्प-थलयरपुच्छा-

उ० गोयमा ! जहण्णेण अंगुलस्स असखेज्जइभाग
उक्कोसेण वि अंगुलस्स असंखेज्जइभाग ।

प्र० पज्जत्तग-गढभवक्कतिअ-उरपरिसप्प-थलयरपुच्छा-

उ० गोयमा ! जहन्नेण अंगुलस्स सखेज्जइभाग
उक्कोसेण जोअणसहस्स ।

प्र० भुअपरिसप्प-थलयरपंचिदियाण पुच्छा-

उ० गोयमा ! जहण्णेण अंगुलस्स असखेज्जइभाग
उक्कोसेण गाउअपुहुत्तं ।

प्र० सम्मुच्छिम-भुअपरिसप्प-थलयर-पंचिदियाण पुच्छा-

उ० गोयमा ! जहण्णेण अंगुलस्स असखेज्जइभाग
उक्कोसेण धणुपुहुत्त ।

प्र० अपज्जत्तग-सम्मुच्छिम-भुअपरिसप्प-थलयराण पुच्छा-

उ० गोयमा ! जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभाग
उक्कोसेण वि अंगुलस्स असंखेज्जइभाग ।

प्र० पज्जत्तग-सम्मूच्छिम-भुअपरिसप्पाणं पुच्छा-

उ० गोयमा ! जहण्णेण अंगुलस्स संखेज्जइभाग
उक्कोसेण घणुपुहुत्त ।

प्र० गम्भवक्कतिय-भुअपरिसप्प-थलयराण पुच्छा-

उ० गोयमा ! जहण्णेण अंगुलस्स असंखेज्जइभाग
उक्कोसेणं गाउअपुहुत्त ।

प्र० अपज्जत्तग-भुअपरिसप्पाण पुच्छा-

उ० गोयमा ! जहण्णेण अंगुलस्स असंखेज्जइभाग
उक्कोसेण वि अंगुलस्स असंखेज्जइभाग ।

प्र० पज्जत्तग-भुअपरिसप्पाण पुच्छा-

उ० गोयमा ! जहण्णेण अंगुलस्स संखेज्जइभाग
उक्कोसेणं गाउअपुहुत्त ।

प्र० खहयर-पंचिदियपुच्छा-

उ० गोयमा ! जहण्णेण अंगुलस्स असंखेज्जइभाग
उक्कोसेणं घणुपुहुत्त ।

सम्मूच्छिम-खहयराणं जहा भुअग परिसप्प-सम्मूच्छियाण
तिसु वि गमेसु, तहा भाणिअव्व ।

प्र० गम्भवक्कतिय-खहयरपुच्छा-

उ० गोयमा ! जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभाग
उक्कोसेणं घणुपुहुत्त ।

प्र० अपज्जत्तम-गद्वभवक्कतिअ-खहयरपुच्छा-

उ० गोयमा ! जहण्णेण अंगुलस्स असंखेज्जइभागं
उक्कोसेण वि अंगुलस्स असंखेज्जइभागं ।

प्र० पज्जत्तम-गद्वभवक्कतिअ-खहयरपुच्छा-

उ० गोयमा ! जहण्णेणं अंगुलस्स सखेज्जइभागं
उक्कोसेणं धणुपुहुत्तं ।

एत्थ संगहणिगाहाओ हवंति,
त जहा-

गाहाओ-जोअणसहस्स-गाउयपुहुत्त, तत्तो अ जोअणपुहुत्तं ।
दोण्हं तु धणुपुहुत्तं, सम्मुच्छिमे होइ उच्चत्तं ॥१॥
जोअणसहस्स छगाउआइं, तत्तो अ जोयणसहस्स ।
गाउअपुहुत्तमुअगे, पक्खीसु भवे धणुपुहुत्तं ॥२॥

प्र० मणुस्साणं भंते । के महालिआ सरीरोगाहणा
पण्णत्ता ?

उ० गोयमा ! जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं
उक्कोसेणं तिणिण गाउआइं ।

प्र० सम्मुच्छिम-मणुस्साण पुच्छा-

उ० गोयमा ! जहण्णेण अंगुलस्स असंखेज्जइभागं
उक्कोसेण वि अंगुलस्स असंखेज्जइभागं ।

प्र० गब्भवक्केतियमणुस्साणं पुच्छा—

उ० गोयमा ! जएन्नेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं,
उक्कोसेणं तिण्णि गाउयाइं ।

प्र० अपज्जत्तग-गब्भवक्केतिय-मणुस्साणं पुच्छा—

उ० गोयमा ! जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं
उक्कोसेणं वि अंगुलस्स असंखेज्जइभागं ।

प्र० पज्जत्तग-गब्भवक्केतिय-मणुस्साणं पुच्छा—

प्र० पज्जत्तग-गब्भवक्केतिय-मणुस्साणं पुच्छा—

उ० गोयमा ! जहण्णेणं अंगुलस्स संखेज्जइभागं
उक्कोसेणं तिण्णि गाउआइं ।

वाणमंतराण भवधारणिज्जा य उत्तरवेउच्चिआ य

जहा असुरकुमाराण तहा भाणिअव्वा ।

जहा वाणमंतराण तहा जोइसियाण वि ।

प्र० सोहम्मे कप्पे देवाणं भते ! के महालिआ सरीरोगाहणा
पण्णत्ता ?

उ० गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता,
तं जहा—

१ भवधारणिज्जा अ २ उत्तरवेउच्चिआ य ।

तत्थ णं जा सा भवधारणिज्जा सा—

जहण्णेणं अगुलस्स असंखेज्जइभाग
उक्कोसेणं सत्तरयणीओ ।

तत्थ णं जा सा उत्तरवेउच्चिण सा—

जहण्णेण अंगुलस्स सखेज्जइभाग ।
उक्कोसेणं जोयणसयसहस्स ।
जहा सोहम्मे तहा ईसाणकप्पे वि भाणिअच्च
जहा सोहम्मकप्पाणं देवाणं पुच्छा
तहा सेसकप्पदेवाणं पुच्छा भाणिअच्चा,
जाव—अच्चुअकप्पो ।

सणकुमारे भवधारणिज्जा—

जहण्णेणं अगुलस्स असंखेज्जइभागं
उक्कोसेण छ रयणीओ ।

उत्तरवेउच्चिथा जहा सोहम्मे तहा भाणिअच्चा ।
जहा सणकुमारे तहा माहिदे वि भाणिअच्चा ।

बभलोगलंतगेसु भवधारणिज्जा—

जहण्णेणं अगुलस्स असंखेज्जइभाग
उक्कोसेण पचरयणीओ
उत्तरवेउच्चिया जहा सोहम्मे ।

महासुक्क-सहस्सारेसु भवधारणिज्जा-

जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभाग

उक्कोसेण चत्तारि रयणीओ ।

उत्तरवेउव्विया जहा सोहम्मे-

आणत-पाणत-आरण-अच्चुएसु चउसु वि

भवधारणिज्जा-

जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं

उक्कोसेणं तिण्णि रयणीओ ।

उत्तरवेउव्विया जहा सोहम्मे ।

प्र० गेवेज्जगदेवाणं भते । के महालिया सरीरोगाहणा पणत्ता ?

उ० गोयमा ! गेवेज्जगदेवाण एगे भवधारणिज्जए सरीरए पणत्ते,
से जहण्णेण अंगुलस्स असंखेज्जइभाग
उक्कोसेणं दुण्णि रयणीओ ।

प्र० अणुत्तरोववाइअदेवाण भते । के महालिया सरीरोगाहणा पणत्ता ?

उ० गोयमा ! एगे भवधारणिज्जे सरीरगे पणत्ते,
से जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभाग

तं समणस्स भगवओ महावीरस्स अट्ठगुल,
त सहस्सगुणं पमाणगुलं भवड ।

एएणं अंगुलपमाणेणं छ अगुलाइं=पादो
दो पाया-डुवालसअगुलाइं =विहत्थी

दो विहत्थीओ=रयणी

दो रयणीओ =कुच्छी

दो कुच्छीओ =धणू

दो धणुसहस्साइ=गाउअं

चत्तारिगाउआइं=जोअणं ।

प्र० एएणं पमाणंगुलेण किं पयोअणं ?

उ० एएणं पमाणंगुलेणं

पुढवीणं कडाण पातालाणं

भवणाणं भवणपत्त्यडाणं

निरयाणं निरयावलीणं निरयपत्त्यडाणं

कप्पाणं विन्नाणाणं विमाणावलीणं विमाणपत्त्यडाणं

टक्काणं कूडाणं सेलाणं तिहरीणं

पद्भाराणं विजयाणं वदद्धाराणं

वासाणं वासहराणं वासहरपद्वयाणं

*वेलाणं वेइयाणं दाराणं तोरणाणं

दीवाणं समुदाणं,

वलयाणं ।

सुत्त १३४ प्र० से कि तं कालप्पमाणे ?

उ० कालप्पमाणे द्विविहे पणत्ते,
तं जहा—

१ पएसनिप्फण्णे अ २ विभागनिप्फण्णे अ ।

सुत्त १३५ प्र० से कि तं पएसनिप्फण्णे ?

उ० पएसनिप्फण्णे—

एगसमयट्ठिईए दुसमयट्ठिईए तिसमयट्ठिईए ••जाव••
दससमय-ट्ठिईए,
संखिज्जसमयट्ठिईए असखिज्जसमयट्ठिईए,
ते तं पएस-निप्फण्णे ।

सुत्त १३६ प्र० से कि तं विभाग-णिप्फण्णे ?

उ० विभाग-णिप्फण्णे—

१२ “समयावलिअ-मुहुत्ता, दिवस-अहोरत्त पक्ख-मासा य ।
संवच्छर-जुग-पलिभा, सागर ओसप्पि-परिअट्ठा ॥१॥”

सुत्त १३७ से कि तं समए ?

उ० समयस्स ण परूवणं करिस्सामि—
से जहानामए दुण्णागदारए सिआ,
तरुणे बलवं जुगवं जुवाणे,
अप्पातंके थिरग्गहत्ये,

अण्णम्मि काले उवरिल्ले तंतू छिज्जइ
 अण्णम्मि काले हिट्ठिल्ले तंतू छिज्जइ
 तम्हा ते समए न भवइ,
 एवं वयंत पण्णवय चोयए एवं वयासी-

प्र० जेणं कालेण तेण तुण्णागदारए णं
 तीसे पडसाडिआए वा, पट्टसाडियाए वा
 उवरिल्ले तंतू छिण्णे से समए भवइ ?

उ० न भवइ ?

प्र० कम्हा ?

उ० जम्हा सखेज्जाण पम्हाण समुदय-समिति-समागमेणं
 एगे तंतू निप्फज्जइ,
 उवरिल्ले पम्हे अच्छिण्णे हिट्ठिल्ले पम्हे न छिज्जइ
 अण्णम्मि काले उवरिल्ले पम्हे छिज्जइ
 अण्णम्मि काले हेट्ठिल्ले पम्हे छिज्जइ,
 तम्हा से समए न भवइ ।
 एवं वयंत पण्णवयं चोअए एव वयासी-

प्र० जेणं कालेण तेण तुण्णागदारए णं
 तस्स तनुस्स उवरिल्ले पम्हे छिण्णे
 से समए भवइ ?

उ० न भवइ ।

प्र० कम्हा ?

उ० जम्हा अणताण सघायाणं समुदय-समिति समागमेण
एगे पम्हे निप्फज्जइ,
उवरिल्ले सघाए अविसघाइए
हेट्टिल्ले सघाए न विसंघाइज्जइ,
अण्णम्मि काले उवरिल्ले सघाए विसघाइज्जइ
अण्णम्मि काले हिट्टिल्ले सघाए विसघाइज्जइ,
तम्हा से समए न भवइ ।

एत्तो वि अ ण सुहुमतराए समए पणत्ते समणाउसो !
असखिज्जाण समयाण समुदय-समिति-समागमेण
सा एगा 'आवलिअ' त्ति वुच्चइ,
सखिज्जाओ आवलिआओ=ऊसासो
सखिज्जाओ आवलिआओ=नीसासो ।

गाहाओ-हट्ठस्स अणवगल्लस्स, निरुवक्किट्ठस्स जत्तुणो ।
एगे ऊसास-नीसासे, एस पाणुत्ति वुच्चइ ॥१॥
सत्तपाणूणि से थोवे, सत्त थोवाणि से लवे ।
लवाण सत्तहत्तरीए, एस मुहुत्ते वि आहिए ॥२॥
तिणिण सहस्सा सत्त य, सयाइं तेहुत्तरिं ज ऊसासा ।
एस मुहुत्तो भणिओ, सच्चोहिं अणंतनाणीहि ॥३॥

एएण मुहुत्तपमाणेण तीस मुहुत्ता=अहोरत्त,
 पण्णरस अहोरत्ता=पक्खो,
 दो पक्खा=मासो,
 दो मासा=उऊ,
 तिण्णि उऊ,=अयणं,
 दो अयणाइ=सवच्छरे,
 पच सवच्छरीएइ=जुगे,
 बीस जुगाइ=वाससयं,
 दस वाससयाइं=वास-सहस्स,
 सय वास-सहस्साण=वास-सयसहस्स,
 चोरासीइ वाससय-सहस्साइ=से एगे पुव्वंगे,
 चउरासीइं पुव्वग-सयसहस्साइ=से एगे पुव्वे
 चउरासीइं पुव्वसयसहस्साइ=से एगे तुडिअगे,
 चउरासीइ तुडिअंग-सयसहस्साइ=से एगे तुडिए,
 चउरासीइ तुडिअ-सयसहस्साइ=से एगे अडडगे,
 चउरासीइ अडडग-सयसहस्साइ=से एगे अडडे,

एव अववगे, अववे

हुहुअगे, हुहुए

उप्पलगे, उप्पले

पउमगे, पउमे

नल्लिणगे, नल्लिणे

अच्छनिउरगे अच्छनिउरे
 अउअगे अउए
 पउअगे पउए
 णउअगे णउए
 चूलिअगे चूलिया
 सीसपहेलियगे
 चउरासीइ सीसपहेलियग-सयसहस्साई =
 सा एगा सीसपहेलिआ ।
 एयावया चेव गणिए
 एयावया चेव गणिअस्स विसए
 एत्तोऽवर ओवमिए पवत्तइ ।

उत्त १३८ प्र० से किं त ओवमिए ?

उ० ओवमिए दुविहे पणत्ते,
 त जहा—

१ पलिओवमे य, २ सागरोवमे य ।

प्र० से किं त पलिओवमे ?

उ० पलिओवमे तिविहे पणत्ते,
 त जहा—

१ उद्धारपलिओवमे २ अद्धापलिओवमे ३ अनेन-
 पलिओवमे अ ।

प्र० से किं त उद्धारपलिओवमे ?

उ० उद्धारपलिओवमे दुविहे पणत्ते,

त जहा—

१ सुहुमे अ, २ वावहारिए य ।

तत्थ ण जे से सुहुमे से ठप्पे ।

तत्थ ण जे से वावहारिए—

से जहानामए पल्ले सिधा,

जोयण आयामविक्खंभेणं

जोअणं उड्ढ उच्चत्तेणं

तं तिगुणं सविसेसं परिक्खेवेणं

से णं पल्ले एगाहिअ-बेज्हिअ-तेज्हिअ जाव

उक्कोसेणं सत्तरत्तपरूढाणं संमट्ठे संनिचिते

भरिए वालगकोडीणं,

ते णं वालग्गा नो अग्गी डहेज्जा

नो वाऊ हरेज्जा

नो कुहेज्जा

नो पलिविद्धंसिज्जा

नो पूइत्ताए हव्वमागच्छेज्जा ।

तओ णं समए समए एगमेग वालग्गं अवहाम

जावइएणं कालेणं से पल्ले

खीणे नीरए निल्लेवे णिट्ठिए भवइ ।
से तं वावहारिए उद्धार-पलिओवमे ।

गाहा—एएसि पल्लाणं कोडाकोडी हवेज्ज दसगुणिया ।

(२) तं वावहारियस्स उद्धार सागरोवमस्स एगस्स भवे
परिमाणं ॥

प्र० एएहिं वावहारिअ-उद्धारपलिओवम-सागरोवमेहिं
किं पओअणं ?

उ० एएहिं वावहारिअ-उद्धार-पलिओवम-सागरोवमेहिं—
णत्थि किंचिप्पओअणं, कैवलं पण्णवणा पण्णविज्जइ ।
से तं वावहारिए उद्धार-पलिओवमे ।

प्र० से किं त सुहुमे उद्धार पलिओवमे ?

उ० सुहुमे उद्धार पलिओवमे—

से जहानामए पल्ले सिआ,

जोअणं आयाम-विक्खभेणं

जोअण उव्वेहेणं

तं तिगुणं सविसेसं परिक्खेवेणं,

से णं पल्ले एगाहिअ-बेहिअ-तेहिअ उक्कोसेणं

सत्त रत्त परूढाण स्मट्ठे संनिचित्ते भरिए वालग्ग
कोडीणं

तत्थ ण एगमेगे वालगो असंखिज्जाइं खडाइक्कज्जइ,
 ते ण वालगा विट्ठि-ओगाहणाओ असखेज्जइभागमेत्ता
 सुहुमस्स पणगजीवस्स सरीरोगाहणाउ असखेज्जगुणा,
 ते णं वालगा णो अग्गी डहेज्जा

णो वाउ हरेज्जा,
 णो कुहेज्जा,
 णो पलिविद्धसिज्जा,
 णो पूइत्ताए हव्वमागच्छेज्जा,

तओ ण समए समए एगमेग वालगं अवहाय
 जावइएण कालेण से पल्ले
 खीणे नीरए निल्लेवे निट्ठिए भवइ ।
 से तं सुहुमे उद्धार-पलिओवमे ।

एसिं पल्लाण, कोडाकोडीं हवेज्ज दसगुणिआ ।

त सुहुमस्स उद्धारसागरोवमस्स एगस्स भवे परिमाण ॥३॥

प्र० एएहिं सुहुम-उद्धार-पलिओवम-सागरोवमेहिं किं
 पओअण ?

उ० एएहिं सुहुम-उद्धार-पलिओवम-सागरोवमेहिं
 दीवसमुद्दाण उद्धारो घेप्पइ ।

प्र० केवइआ ण भते ! दीवसमुद्दा उद्दारेणं पण्णत्ता ?

उ० गोयसा । जावइआण अड्ढाइज्जाणं

उद्धारसागरोवमाण उद्धारसमया,
एवइयाण दीवसमुदा उद्दारेण पणत्ता ।
से त्त सुहुमे उद्धारपलिओवमे ।
से त्त उद्धारपलिओवमे ।

प्र० से किं त अद्धारपलिओवमे ?

उ० अद्धारपलिओवमे दुविहे पणत्ते,

तं जहा—

१ सुहुमे अ, २ वावहारिए अ ।

तत्थ णं जे से सुहुमे से ठप्पे ।

तत्थ णं जे से वावहारिए—

से जहानामए पल्ले सिया

जोअण आयामविद्वभेण

जोअणं उब्बेहेणं

तं तिगुण सविसेस परिवेवेण,

से ण यल्ले एगाहिअ-वेऽहिअ-तेऽहिअ · जाव · ·

भरिए वालगकोडीण,

ते णं वालगा णो अग्गी डहेज्जा

जाव · · नो पल्लिविद्वसिज्जा

नो पूइत्ताए हव्वभागच्छेज्जा

तओ ण वासत्तए वासत्तए

एगमेग वालग अवहाय

जावइएण कालेण से पल्ले
 खीणे नीरए निल्लेवे णिट्ठिए भवइ ।
 से त वावहारिए अट्ठापलिओवमे ।

(४) गाहा-एएसि पल्लाणं, कोडाकोडी भविज्ज दसगुणिया ।
 तं वावहारिअस्स अट्ठासागरोवमस्स एगस्स भवे
 परिमाण ॥

प्र० एएहि वावहारिअ-अट्ठापलिओवम-सागरोवमेहि
 कि पओअण ?

उ० एएहि वावहारिएहि-अट्ठापलिओवम-सागरोवमेहि-
 णत्थि किच्चिप्पओअण,
 केवलं पणवणा पणविज्जइ ।
 से त वावहारिए अट्ठापलिओवमे ?

प्र० से कि त सुहुमे अट्ठापलिओवमे ?

उ० सुहुमे अट्ठापलिओवमे-
 से जहाणामए पल्ले सिया,
 जोअण आयामेण, विक्खभेणं,
 जोअण उट्ठेहेण
 त तिगुण सविसेस परिवेहेण,
 से ण पल्ले एगाहिअ-वेआहिअ-तेआहिए 'जाव'
 भरिए वालग्गकोडीण,

तत्थ णं एगमेगे बालगे असखिज्जाइं खडाइ कज्जइ,
 ते ण बालगा विट्ठि-ओगाहणाओ असखेज्जइ भागमेत्ता
 सुहुमस्स पणगजीवस्स सरीरोगाहणाओ असखेज्जगुणा,
 ते ण बालगा णो अग्गी डहेज्जा
 .. जाव .. नो पलिविट्ठिसिज्जा,
 नो पूइत्ताए हव्वमागच्छेज्जा,
 तओ ण वाससए वाससए गए एगमेग बालग अवहाय
 जावइएण कालेण से पल्ले
 खीणे नीरए निल्लेवे तिट्ठिए भवइ ।
 से त सुहुमे अट्ठापलिओवमे ।

गाहा—एएस पल्लाण, कोडाकोडी भवेज्ज दसगुणिआ ।

त सुहुमस्स अट्ठासागरोवमस्स एगस्स भवे परिमाणं ॥५॥

प्र० एएहिं सुहुमेहिं अट्ठापलिओवम-सागरोवमेहिं किं
 पओअणं ?

उ० एएसि सुहुमेहिं अट्ठापलिओवम-सागरोवमेहिं
 णेरइअ-तिरिखजोणिअ-मणुस्स-देवाणं आउयाइं-
 मविज्जइ ।

सुत्तं १३९ प्र० णेरइयाणं भंते । केवइयं कालं ठिई पणत्ता ?

उ० गोयमा । जहण्णेण दसवास-सहत्ताइं
 उक्कोसेणं तेत्तीस सागरोवमं ।

प्र० रयणप्पहा-पुढवि-णेरइयाणं भंते ।

केवइयं कालं ठिई पणत्ता ?

उ० गोयमा जहण्णेणं दसवास-सहस्साइं

उक्कोसेणं एगं सागरोवमं ।

प्र० अपज्जत्तग-रयणप्पहापुढवि-णेरइयाणं भंते ।

केवइयं कालं ठिई पणत्ता ?

उ० गोयसा । जहण्णेण वि अंतोमुहुत्तं

उक्कोसेण वि अंतोमुहुत्तं ।

प्र० पज्जत्तग-रयणप्पहापुढवि-णेरइयाणं भंते !

केवइयं कालं ठिई पणत्ता ?

उ० गोयसा । जहण्णेणं दसवास-सहस्साइं अंतोमुहुत्तूणाइं

उक्कोसेणं एगं सागरोवमं अंतोमुहुत्तूणं ।

प्र० सक्करप्पहापुढवि-णेरइयाणं भंते !

केवइयं कालं ठिई पणत्ता ?

उ० गोयसा । जहण्णेणं एगं सागरोवमं

उक्कोसेणं तिण्णि सागरोवमाइं ।

प्र० एवं सेसपुढवीसु पुच्छा भाणिअव्वा ।

उ० वालुअप्पहापुढवि-णेरइयाणं—

जहण्णेणं तिण्णि सागरोवमाइं ।

उक्कोसेणं सत्तसागरोवमाइं ।

उ० पंकप्पहापुढवि-णेरइयाणं—

जहण्णेणं सत्तमागरोवमाइं
उक्कोसेण दससागरोवमाइं ।

उ० धूसप्पभापुढवि-णेरइयाणं—

जहण्णेण दससागरोवमाइं
उक्कोसेणं सत्तरससागरोवमाइं ।

उ० तमप्पहापुढवि-णेरइयाणं—

जहण्णेण सत्तरससागरोवमाइं
उक्कोसेण द्वावीससागरोवमाइं ।

प्र० तमतमापुढवि-णेरइयाण भते ! केवइय कालं ठिईं पणत्ता ?

उ० गोयमा ! जहण्णेण द्वावीसं सागरोवमाइं
उक्कोसेण तेत्तीस सागरोवमाइं ।

प्र० असुरकुमारणं भते ! केवइयं कालं ठिईं पणत्ता ?

उ० गोयमा ! जहण्णेणं दसवाससहस्साइं,
उक्कोसेणं सातिरेणं सागरोवमं ।

प्र० असुरकुमार-देवीणं भते ! केवइयं कालं ठिईं पणत्ता ?

उ० गोयमा ! जहण्णेणं दसवाससहस्साइं,
उक्कोसेणं अद्धपंचमाइं पलिओवमाइं ।

प्र० नागकुमाराणं भंते । केवइअं कालं ठिई पणत्ता ?

उ० गोयमा ! जहण्णेणं दसवाससहस्साइं,
उक्कोसेणं देसूणाइं दुण्णि पलिओवमाइं ।

प्र० नागकुमारीणं भंते । केवइयं कालं ठिई पणत्ता ?

उ० गोयमा ! जहण्णेणं दसवाससहस्साइं,
उक्कोसेणं देसूणं पलिओवमं ।

एवं जहा णागकुमारदेवाणं देवीण य,
तहा 'जाव' थणियकुमाराणं देवाणं देवीण य
भाणियत्वं ।

प्र० पुढवीकाइयाणं भंते । केवइय कालं ठिई पणत्ता ?

उ० गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं,
उक्कोसेणं बावीसं वाससहस्साइं ।

प्र० सुहुस-पुढवीकाइयाणं ओहियाणं अपज्जत्तयाणं
पज्जत्तयाणं य ।

तिण्ह वि पुच्छा-

उ० गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं,
उक्कोसेण वि अंतोमुहुत्तं ।

प्र० बादर पुढवि-काइयाणं पुच्छा-

उ० गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं,
उक्कोसेणं बावीसं वाससहस्साइं ।

प्र० अपज्जत्तग-वायर-पुढवि-काइयाणं पुच्छा-

उ० गोयमा ! जहण्णेण वि अंतोमुहुत्तं
उक्कोसेण वि अंतोमुहुत्तं ।

प्र० पज्जत्तग-वायर-पुढवि-काइयाणं पुच्छा-

उ० गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं
उक्कोसेणं वावीसं वास सहस्साइं
अंतोमुहुत्तूणाइं ।

प्र० एवं सेसकाइयाणं वि पुच्छावयणं भाणियच्चं

उ० आउकाइयाणं-

जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं
उक्कोसेणं सत्तवाससहस्साइं ।

उ० सुहुमआउकाइयाणं ओहिआण अपज्जत्तगाणं

पज्जत्तगाणं तिण्हवि-

जहण्णेण वि अंतोमुहुत्तं
उक्कोसेण वि अंतोमुहुत्तं ।

उ० वादर-आउकाइयाणं जहा ओहिआणं,

उ० अपज्जत्तग-वादर-आउकाइयाणं-

जहण्णेण वि अंतोमुहुत्तं
उक्कोसेण वि अंतोमुहुत्तं ।

पज्जत्तग-वादर आउकाइयाणं-

जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं

उक्कोसेणं सत्त-वास-सहस्साइं अतोमुहुत्तूणाइं ।

उ० तेउकाइयाणं जहण्णेण अंतोमुहुत्तं

उक्कोसेण तिण्णि राइंदिआइं ।

उ० सुहुम-तेउकाइयाणं ओहिआणं अपज्जत्तगाणं

पज्जत्तगाणं तिण्णि वि

जहण्णेण वि अंतोमुहुत्तं

उक्कोसेणं वि अंतोमुहुत्तं ।

उ० वादरतेउकाइयाणं—

जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं

उक्कोसेणं तिण्णि राइंदिआइं

उ० अपज्जत्त-वायर-तेउकाइयाणं—

जहण्णेण वि अंतोमुहुत्तं

उक्कोसेणं वि अंतोमुहुत्तं

प्र० पज्जत्तग-वायर-तेउकाइयाणं—

जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं

उक्कोसेणं तिण्णि राइंदिआइं

अंतोमुहुत्तूणाइं ।

उ० 'वाउकाइयाणं—

जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं

उक्कोसेणं तिण्णि वासत्तहस्साइं ।

सुहुम-वाउकाइयाणं-ओहिआणं अपज्जत्तगाणं

पज्जत्तगाणं य निहं वि-

जहण्णेण वि अंतोमुहुत्तं

उक्कोसेणं वि अंतोमुहुत्तं ।

उ० वायर-वाउकाइयाण-

जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं

उक्कोसेणं तिण्णि वासत्तहस्साइं ।

उ० अपज्जत्तग वायर-वाउकाइयाण-

जहण्णेणं वि अंतोमुहुत्त

उक्कोसेण वि अंतोमुहुत्त ।

उ० पज्जत्तग-वादरवाउकाइआण-

जहण्णेण अंतोमुहुत्त

उक्कोसेण तिण्णि-वास-त्तहस्साइं

अंतोमुहुत्तूणाइ

उ० वणस्सइकाइयाण-

जहण्णेण अंतोमुहुत्त

उक्कोसेण दत्तवास-त्तहस्साइं ।

उ० सुहुमवणस्सइ-काइआण ओहिआणं अपज्जत्तगाण,
पज्जत्तगाण य तिणिह वि ।

जहण्णेण वि अतोमुहुत्त
उक्कोसेण वि अतोमुहुत्त ।

उ० वादरवणस्सइकाइआण-

जहण्णेण अतोमुहुत्तं
उक्कोसेण दसवाससहस्साइ ।

उ० अपज्जत्तग-बायर-वणस्सइकाइआण-

जहण्णेण अतोमुहुत्तं
उक्कोसेण वि अतोमुहुत्तं ।

उ० पज्जत्तग-बायरवणस्सइकाइआण-

जहण्णेण अतोमुहुत्तं
उक्कोसेणं दसवाससहस्साइं अतोमुहुत्तूणाइं

प्र० बेइदिआण भते ! केवइयं काल ठिई पण्णत्ता ?

उ० गोयमा ! जहण्णेण अतोमुहुत्त,
उक्कोसेण बारस सवच्छराणि ।

प्र० अपज्जत्तग बेइदिआण पुच्छा-

उ० गोयमा ! जहण्णेण वि अतोमुहुत्त
उक्कोसेणं वि अतोमुहुत्तं ।

प्र० पज्जत्तग-वेइदिआण पुच्छा-

उ० गोयमा ? जहण्णेण अतोमुहुत्तं

उक्कोसेण दारससवच्छराणि अतोमुहुत्तूणाइ ।

प्र० तेइदिआण पुच्छा-

उ० गोयमा ! जहण्णेण अतोमुहुत्तं

उक्कोसेण एगूणपण्णास राइदिआइ ।

प्र० अपज्जत्तग-तेइदिआण पुच्छा-

उ० गोयमा ! जहण्णेण वि अतोमुहुत्तं

उक्कोसेण वि अतोमुहुत्तं ।

प्र० पज्जत्तग-तेइदिआण पुच्छा-

उ० गोयमा ! जहण्णेण अतोमुहुत्तं

उक्कोसेण एगूणपण्णास राइदिआइ अतोमुहुत्तूणाइ ।

प्र० चउरिदिआण भते ! केवइअ काल ठिई पण्णत्ता ?

उ० गोयमा ! जहण्णेण अतोमुहुत्तं

उक्कोसेण छम्मात्ता ।

प्र० अपज्जत्तग-चउरिदिआण पुच्छा-

उ० गोयमा ! जहण्णेण वि अतोमुहुत्तं

उक्कोसेण वि अतोमुहुत्तं ।

प्र० पज्जत्तग-चउरिदिआण पुच्छा-

उ० गोयमा ! जहण्णेणं अतोमुहुत्तं

उक्कोसेण छम्मासा अतोमुहुत्तूणाइ ।

प्र० पांचदियतिरिक्खजोणियाण भते !

केवइअ काल ठिई पणत्ता ?

उ० गोयमा ! जहण्णेण अतोमुहुत्तं

उक्कोसेण तिण्णि पलिओवमाइ ।

प्र० जलयर-पांचदिय-तिरिक्खजोणियाणं भते !

केवइयं काल ठिई पणत्ता ?

उ० गोयमा ! जहण्णेण अतोमुहुत्तं

उक्कोसेणं पुच्चकोडी ।

प्र० सम्मुच्छिम-जलयरपांचदियपुच्छा-

उ० गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं

उक्कोसेणं पुच्चकोडी ।

प्र० अपज्जत्तय-सम्मुच्छिम-जलयरपांचदियपुच्छा-

उ० गोयमा ! जहण्णेण वि अंतोमुहुत्तं,

उक्कोसेण वि अंतोमुहुत्त ।

प्र० पज्जत्तय-सम्मुच्छिम-जलयरपांचदियपुच्छा-

उ० गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं,

उक्कोसेणं पुच्चकोडी अंतोमुहुत्तूणा ।

प्र० गढभवक्कतिय-जलयर-पच्चिदियपुच्छा—

उ० गोयमा ! जहण्णेण अतोमुहुत्तं,
उक्कोसेण पुव्वकोडी ।

प्र० अपज्जत्तग-गढभवक्कतिय-जलयर-पच्चिदियपुच्छा—

उ० गोयमा ! जहण्णेण वि अतोमुहुत्तं,
उक्कोसेण वि अतोमुहुत्तं ।

प्र० पज्जत्तग-गढभवक्कतिय-जलयर-पच्चिदियपुच्छा—

उ० गोयमा ! जहण्णेण अतोमुहुत्तं,
उक्कोसेण पुव्वकोडी अतोमुहुत्तूणा ।

प्र० चउप्पय-थलयर-पच्चिदियपुच्छा—

उ० गोयमा ! जहण्णेण अनोमुहुत्तं
उक्कोमेण तिण्णि पत्तिओवनाइ ।

प्र० सम्मुच्छिम-चउप्पय-थलयर-पच्चिदियपुच्छा—

उ० गोयमा ! जहण्णेण अनोमुहुत्तं
उक्कोसेण चउरान्नाइ गामनहस्साइ ।

प्र० अपज्जत्तय-सम्मुच्छिम-चउप्पय-थलयर-पच्चिदियपुच्छा—

उ० गोयमा ! जहण्णेण वि अनोमुहुत्तं
उक्कोमेण वि अनोमुहुत्तं ।

प्र० पञ्जत्तय-सम्मच्छिम-चउप्पय-थलयर-पंचिदियपुच्छ-

उ० गोयमा ! जहण्णेणं अतोमुहुत्तं

उक्कोसेणं चउरासीइं वाससहस्सा

अंतोमुहुत्तूणाइं

प्र० गब्भवक्कंतिअ-चउप्पय-थलयर-पंचिदियपुच्छा-

उ० गोयमा ! जहण्णेणं अतोमुहुत्तं

उक्कोसेणं तिण्णि पलिओवमाइ ।

प्र० अपञ्जत्तग-गब्भवक्कंतिअ-चउप्पयथलयरपंचिदियपुच्छ-

उ० गोयमा ! जहण्णेणं वि अंतोमुहुत्तं

उक्कोसेणं वि अतोमुहुत्त ।

उ० पञ्जत्तग-गब्भवक्कंतिअ-चउप्पयथलयरपचिदियपुच्छा

उ० गोयमा ! जहण्णेण अतोमुहुत्त

उक्कोसेण तिण्णिपलिओवमाइ अंतोमुहु-

त्तूणाइं ।

प्र० उरपरिसप्प-थलयर-यचिदियपुच्छा-

उ० गोयमा ! जहण्णेणं अतोमुहुत्त

उक्कोसेण पुव्वकोडी ।

प्र० सम्मुच्छिम-उरपरिसप्प-थलयर-पचिदिय-पुच्छा-

उ० गोयमा ! जहण्णेण अतोमुहुत्त

उक्कोसेण तेवन्नं वाससहस्साइ ।

प्र० अपञ्जत्तय-सम्मुच्छिम-उरपरिसप्प-थलयर-पच्चिदिय-
पुच्छा-

उ० गोयमा ! जहण्णेण वि अतोमुहुत्त
उक्कोसेण वि अतोमुहुत्तं ।

प्र० पञ्जत्तटा-सम्मुच्छिम-उरपरिसप्प-थलयर-पच्चिदियपुच्छा

उ० गोयमा ! जहण्णेण अतोमुहुत्त,
उक्कोसेण तेवण्ण वाससहस्साइ अतोमुहुत्तूणाइं ।

प्र० गव्वभवक्कतिअ-उरपरिसप्प-थलयर-पच्चिदियपुच्छा-

उ० गोयमा ! जहण्णेण अतोमुहुत्त
उक्कोसेण पुच्चकोडी ।

प्र० अपञ्जत्तग-गव्वभवक्कतिअ-उरपरिसप्प-थलयर-पच्चिदिय
पुच्छा-

उ० गोयमा ! जहण्णेण वि अतोमुहुत्त
उक्कोसेण वि अतोमुहुत्तं ।

प्र० पञ्जत्तग-गव्वभवक्कतिअ-उरपरिसप्प-थलयर
पच्चिदिय-पुच्छा-

उ० गोयमा ! जहण्णेण अतोमुहुत्त
उक्कोसेण पुच्चकोडी अतोमुहुत्तूणा ।

प्र० भुअपरिसप्प-थलयर-पंचिदियपुच्छा-

उ० गोयमा । जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं
उक्कोसेणं पुच्चकोडी ।

प्र० सम्मुच्छिम-भुअपरिसप्प-थलयर-पंचिदियपुच्छा-

उ० गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं
उक्कोसेणं बायालीसं वाससहस्साइं ।

प्र० अपज्जत्तय-सम्मुच्छिम-भुअपरिसप्प-थलयर-
पंचिदियपुच्छा-

उ० गोयमा । जहण्णेणं वि अंतोमुहुत्तं
उक्कोसेणं वि अंतोमुहुत्तं ।

प्र० पज्जत्तग-सम्मुच्छिम-भुअपरिसप्प-थलयर-
पंचिदियपुच्छा-

उ० गोयमा । जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं
उक्कोसेणं बायालीसं वाससहस्साइं अंतोमुहुत्तूणाइं

प्र० गव्वभवक्कंतिअ-भुअपरिसप्प-थलयर-पंचिदियपुच्छा-

उ० गोयमा । जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं
उक्कोसेणं पुच्चकोडी ।

प्र० अपञ्जत्तय-गद्वमववकतिय-भुअपरिन्पयलयर-
पचिदियपुच्छा-

उ० गोयमा । जहण्णेण वि अंतोमहुत्त
उवकोमेण वि अंतोमहुत्त ।

प्र० पञ्जत्तय-गद्वमववरुतिअ-भुअपरिन्पय-थलयर-
पचिदियपुच्छा-

उ० गोयमा । जहण्णेण अंतोमहुत्त
उवकोमेण पुव्वकोटी अंतोमहुत्तूणा ।

प्र० उह्यरपचिदियपुच्छा-

उ० गोयमा । जहण्णेण अंतोमहुत्त
उवकोमेण पलिओवमस्स जमंतेज्जइमागो ।

प्र० तम्मच्छिम-उह्यर-पचिदियपुच्छा-

उ० गोयमा । जहण्णेण अंतोमहुत्त
उवकोमेण दावत्तारि माग्गम्हन्ताइ ।

प्र० अपञ्जत्तग-तम्मच्छिम-उह्यर-पचिदियपुच्छा-

उ० गोयमा । जहण्णेण वि अंतोमहुत्ताणं
उवकोमेण वि अंतोमहुत्तं ।

प्र० पञ्जत्तग तम्मच्छिम-उह्यर-पचिदियपुच्छा-

उ० गोयमा । जहण्णेण अंतोमहुत्तं
उवकोमेण दावत्तारि माग्गम्हन्ताइ अंतोमहुत्तूणाइ

प्र० गन्धवक्कंतिअ-खह्यर-पाँचदियपुच्छा-

उ० गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमूहत्तं

उक्कोमेणं पलिओवमस्त अत्तखेज्जइमाणो ।

प्र० अपज्जत्तग-गन्धवक्कंतिअ-खह्यर-पाँचदियपुच्छा-

उ० गोयमा ! जहण्णेण वि अंतोमूहत्तं,

उक्कोमेण वि अंतोमूहत्तं ।

प्र० पज्जत्तग-गन्धवक्कंतिअ-खह्यर-पाँचदिय-तिरिक्ख-
जोणियाणं भंते ! केवइयं कालं ठिई पणत्ता ?

उ० गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमूहत्तं,

उक्कोमेणं पलिओवमस्त अत्तखिज्जइमाणो-

अंतोमूहत्तूणो ।

एत्य एएत्ति णं मंगहणिगाहाओ भवन्ति,

तं जहा-

गाहा—सम्मच्छिम पुच्चकोडी, चउरासोइं भवे सहस्ताइं ।

तेवण्णा वायत्ता, वावत्तरिमेव पक्खीणं ॥१॥

गन्धमंनि पुच्चकोडी, तिण्णि य पलिओवमाइं परमाज्ज ।

उरग-भुअग-पुच्चकोडी, पलिओवमा संखमाणो अ ॥२॥

प्र० मणुस्साणं भंते ! केवइयं कालं ठिई पणत्ता ?

उ० गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमूहत्तं

उक्कोमेणं तिण्णि पलिओवमाइं ।

प्र० नमस्तेनम मनुस्मानं पृच्छा-

उ० गोयमा ! जहृष्णेण वि अंतोमुहूर्तं
उपसोमेण वि अंतोमुहूर्त ।

प्र० मन्मथानम मनुस्मानं पृच्छा-

उ० गोयमा ! जहृष्णेण अंतोमुहूर्तं
उपसोमेण तिष्ठि पतिओयमाइ ।

प्र० अमरतनम-मन्मथानम मनुस्मानं भते ।

केयदय कालं ठिई पण्णत्ता ?

उ० गोयमा ! जहृष्णेण अंतोमुहूर्तं
उपसोमेण वि अंतोमुहूर्त ।

प्र० पञ्जनम-मन्मथानम मनुस्मानं भते ।

केयदय कालं ठिई पण्णत्ता ?

उ० गोयमा ! जहृष्णेण अंतोमुहूर्तं
उपसोमेण तिष्ठि पतिओयमाइ अंतोमुहूर्तणाइ ।

प्र० चाणमंतराणं देयणं भते ! केयदय कालं ठिई पण्णत्ता ?

उ० गोयमा ! जहृष्णेण दमवाननहस्माइ
उपसोमेण पतिओयमं ।

प्र० चाणमंतराणं देयणं भते ! केयदय कालं ठिई पण्णत्ता ?

उ० गोयमा ! जहृष्णेण दमवाननहस्माइ
उपसोमेण अद्रपतिओयमं ।

प्र० जोइसियाणं भंते ! देवाणं केवइयं कालं ठिई पणत्ता ?

उ० गोयमा ! जहण्णेणं साङ्खरेण अट्ठभाग पलिओवमं
उक्कोसेणं पलिओवमं वाससयसह-
स्समब्भहिअं ।

प्र० जोइसिय देवीणं भंते ! केवइयं कालं ठिई पणत्ता ?

उ० गोयमा ! जहण्णेणं अट्ठभाग पलिओवमं
उक्कोसेणं अट्ठपलिओवमं पण्णासाए-
वससहस्सेहिअं अब्भहिअं ।

प्र० चंदविर्माणणं भंते ! देवाणं केवइअ कालं ठिई
पणत्ता ?

उ० गोयमा ! जहण्णेणं चउभागप पलिओवमं
उक्कोसेण पलिओवमं वाससय-सहस्समब्भहिअं ।

प्र० चंदविमाणणं भंते ! देवीणं पुच्छा-

उ० गोयमा ! जहण्णेणं चउभागपलिओवमं,
उक्कोसेण अट्ठपलिओवमं-
पण्णासाए वाससहस्सेहिअं अब्भहिअं ।

प्र० सूरविमाणणं भंते ! देवाणं पुच्छा-

उ० गोयमा ! जहण्णेणं चउभागपलिओवमं,
उक्कोसेण पलिओवमं वाससहस्समब्भहिअं ।

प्र० ताराविमाणानं देवीण भन्ते ! केवइअं कालं ठिई
पणत्ता ?

उ० गोयमा ! जहण्णेणं अट्टभागपलिओवमं,
उक्कोसेणं साइरेणं अट्टभागपलिओवम ।

प्र० वेमाणियाणं भन्ते ! देवाणं केवइअं कालं ठिई
पणत्ता ?

उ० गोयमा ! जहण्णेणं पलिओवमं,
उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं ।

प्र० वेमाणियाणं भन्ते ! देवीणं केवइअं कालं ठिई पणत्ता

उ० गोयमा ! जहण्णेणं पलिओवमं,
उक्कोसेणं पणपणं पलिओवमाइं ।

प्र० सोहम्मे णं भन्ते ! कप्पे देवाणं पुच्छा—

उ० गोयमा ! जहण्णेणं पलिओवमं,
उक्कोसेणं दो सागरोवमाइं ।

प्र० सोहम्मे णं भन्ते ! कप्पे परिग्गहिआदेवीणं पुच्छा ?

उ० गोयमा ! जहण्णेणं पलिओवमं,
उक्कोसेणं सत्तपलिओवमाइं ।

प्र० सोहम्मे णं भन्ते ! कप्पे अपरिग्गहिआदेवीणं—
केवइअं कालं ठिती पणत्ता ?

उ० गोयमा ! जहण्णेणं पलिओवमं
उक्कोसेणं पण्णासं पलिओवमं ।

प्र० एवं कप्पे कप्पे केवइय काल ठिई पणत्ता ?

उ० गोयमा । एवं भाणिअव्वं—

ततए— जहण्णेण दस सागरोवमाइं
उक्कोसेणं चउद्दससागरोवमाइ ।

महासुक्के—जहण्णेण चउद्दस सागरोवमाइ
उक्कोसेण सत्तरस सागरोवमाइ ।

सहस्सारे—जहण्णेण सत्तरस सागरोवमाइ
उक्कोसेण अट्ठारस सागरोवमाइं ।

आणए— जहण्णेण अट्ठारस सागरोवमाइ
उक्कोसेणं एगूणवीसं सागरोवमाइ ।

पाणए— जहण्णेणं एगूणवीस सागरोवमाइ ।
उक्कोसेण वीस सागरोवमाइं ।

आरणे— जहण्णेणं वीसं सागरोवमाइं
उक्कोसेणं एक्कवीसं सागरोवमाइं ।

अच्चुए— जहण्णेणं इक्कवीस सागरोवमाइ
उक्कोसेण वावीसं सागरोवमाइं ।

प्र० हेट्ठिम-हेट्ठिम-गेविज्जविमाणेसु णं भते ।
देवाणं केवइअं काल ठिई पणत्ता ?

उ० गोयमा । जहण्णेण वावीस सागरोवमाइ
उक्कोसेणं तेवीस सागरोवमाइं ।

प्र० उवरिम्-उवरिम्-गेविज्जमाणेसु णं भंते ! देवाणं० ?

उ० गोयमा । जहण्णेणं तीसं सागरोवमाइं
उक्कोसेणं इक्कतीसं सागरोवमाइं ।

प्र० विजय-वैजयंत-जयंत-अपराजितविमाणेसु णं भंते !
देवाणं केवइअं कालं ठिई पणत्ता ?

उ० गोयमा । जहण्णेणं इक्कतीसं सागरोवमाइं ।
उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं ।

प्र० सव्वट्ठसिद्धे णं भंते ! महाविमाणे देवाणं-
केवइअं कालं ठिई पणत्ता ?

उ० गोयमा । अजहण्णमणुक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं ।
से त्तं सुहुमे अट्ठापलिओवमे ।
से त्त अट्ठापलिओवमे ।

सुत्तं १४० प्र० से किं तं खेत्तपलिओवमे ?

उ० खेत्तपलिओवमे दुविहे पणत्ते,
तं जहा-

१ सुहुमे अ, २ वावहारिए अ ।

तत्थ णं जे से सुहुमे से ठप्पे ।

तत्थ णं जे से वावहारिए-

से जहानामए पल्ले सिया

केवलं पणवणा पणविज्जइ ।
से त्तं वावहारिए खेत्तपलिओवमे ।

प्र० से किं तं सुहुमे खेत्तपलिओवमे ?

उ० सुहुमे खेत्तपलिओवमे—

से जहाणामए पल्ले सिया,
जोअणं आयामविक्खभेणं *जाव* तं तिगुणं
सविसेसं परिकखेवेणं,
से णं पल्ले एगाहिअ-वेज्जहिअ-तेज्जहिए
उक्कोसेणं सत्तरत्तपरुद्धाणं सम्मट्ठे सन्निचित्ते
भरिए वालगकोडीणं,
तत्थ णं एगमेगे वालगे असंखिज्जाइं खंडाइं कज्जइ,
ते णं वालग्गा दिट्ठि-ओगाहणाओ असंखेज्जइ भागमेत्ता
सुहुमस्स पणगजीवस्स सरीरोगाहणाओ असंखेज्जगुणा
ते णं वालग्गा णो अग्गी डहेज्जा
जाव नो पूइत्ताए हव्वमागच्छेज्जा,
जे णं तस्स पल्लस्स आगासपएसो
तेहिं वालग्गेहिं अफुण्णा वा, अणफुण्णा वा

पृष्ठ ६१७ पंक्ति १५ का पाठ ।

पृष्ठ ६१८ पंक्ति ४ से ८ तक का पाठ ।

तओ णं समए समएगते एगमेगं आगासपएसं अवहाय
जावइएणं फालेणं से पल्ले खीणे * जाव निट्ठिए
भवइ ।

से तं सुहृमे छेत्तपल्लिओवमे ।

तत्थ ण चोअए पण्णवगं एवं वधासी-

“अत्थि णं तस्स पल्लस्स आगासपएसा

जे णं तेहि वालग्गेहि अणफुण्णा ?”

हंता अत्थि ।

“जहा को दिट्ठं तो ?”

से जहा णामए कोट्टए सिआ कोहडाणं भरिए

तत्थ णं माउलुंगा पक्खित्ता ते वि माया

तत्थ णं विल्ला पक्खित्ता ते वि माया

तत्थ णं आमलगा पक्खित्ता ते वि माया

तत्थ णं थयरा पक्खित्ता ते वि माया

तत्थ णं चणगा पक्खित्ता ते वि माया

तत्थ णं मुग्गा पक्खित्ता ते वि माया

तत्थ ण सरिसवा पक्खित्ता ते वि माया

तत्थ णं गंगावालुआ पक्खित्ता सा वि माया

एवमेव एएणं दिट्ठं तेण अत्थि ण तस्स पल्लस्स

आगासपएसा जे णं तेहि वालग्गेहि अणाफुण्णा ।

ठ ६१८ पक्ति १० और ११ के समान जानना ।

गहा-एएसि पल्लाणं, कोडाकोडी भवेज्ज दसगुणिआ ।

तं सुहुमस्स खेत्तसागरोवमस्स एगस्स भवे परिमाणं ॥४॥

प्र० एएहिं सुहुमोहिं खेत्तपलिओवम-सागरोवमोहिं किं पओअणं ?

उ० एएहिं सुहुमोहिं खेत्तपलिओवम-सागरोवमोहिं दिट्ठिवाए दब्बाइं मविज्जंति ।

सुत्तं १४१ प्र० कइविहा णं भंते ! दब्बा पणत्ता ?

उ० गोयमा ! दुविहा पणत्ता,

तं जहा-

१ जीव-दब्बा य, २ अजीव-दब्बा य ।

प्र० अजीवदब्बा णं भंते ! कइविहा पणत्ता ?

उ० गोयमा ! दुविहा पणत्ता,

तं जहा-

१ रूवी-अजीवदब्बा य, २ अरूवी-अजीवदब्बा य ।

प्र० अरूवी-अजीवदब्बा णं भंते ! कइविहा पणत्ता ?

उ० गोयमा ! दसविहा पणत्ता,

तं जहा-

१ धम्मत्थिकाए

२ धम्मत्थिकायस्स देसा

से एएण अट्टेण गोयमा ! एवं वुच्चइ-
तेणं “नो सखेज्जा, नो असखेज्जा, अणता” ।

प्र० जीवदब्बाण भंते ! किं सखिज्जा असखिज्जा अणता ?

उ० गोयमा ! नो सखिज्जा, नो असखिज्जा, अणता ।

प्र० से केणट्टेण भंते ! एव वुच्चइ-
जीवदब्बाण “नो सखिज्जा, नो असखिज्जा, अणता” ?

उ० गोयमा ! असखेज्जा णेरइया

असखेज्जा असुरकुमारा

‘जाव’ असखेज्जा थणियकुमारा

असखेज्जा पुढविकाइया

‘जाव’ असखिज्जा वाउकाइया

अणता वणस्सइकाइया

असखिज्जा बेइदिआ

‘जाव’ असखिज्जा चउरिदिआ

असखिज्जा पच्चिदिअतिरिखजोणिया

असखिज्जा मणुस्सा

असखिज्जा वाणमतरा

असखिज्जा जोइसिया

असखेज्जा वेमाणिया

अणता सिद्धा

१ ओरालिए, २ तेअए, ३ कम्मए ।

एवं आउ-तेउ-वणस्सइकाइयाणं वि एए चैव
तिणिणं सरीरा भाणियन्वा ।

प्र० वाउकाइयाणं भंते ! कइ सरीरा पण्णत्ता ?

उ० गोयमा ! चत्तारि सरीरा पण्णत्ता,
तं जहा-

१ ओरालिए, २ वेउच्चिए, ३ तेयए, ४ कम्मए ।

वेइंदिअ-तेइंदिअ-चउरिंदियाणं जहा पुढवीकाइयाणं
पंचिंदिअ-तिरिक्खजोणिआणं जहा वाउकाइयाणं ।

प्र० मणुस्साणं भंते ! कइ सरीरा पण्णत्ता ?

उ० गोयमा ! पंच सरीरा पण्णत्ता,
तं जहा-

१ ओरालिए, २ वेउच्चिए, ३ आहारए, ४ तेअए,
५ कम्मए ।

वाणमंतराणं जोइसिआणं वेमाणिआणं जहा णेरइयाणं
वेउच्चिय-तेयग-कम्मगा । तिन्नि तिन्नि सरीरा
भाणियन्वा ।

प्र० केवइआ णं भंते ! ओरालियसरीरा पण्णत्ता ?

उ० गोयमा दुविहा पण्णत्ता,
तं जहा-

अणंताहि उस्सप्पिणि-ओसप्पिणीहिं अवहीरंति कालओ
सेसं जहा ओरालियस्स मुक्केल्लया तहा एएवि
भाणिअब्बा ।

प्र० केवइआ णं भते ! आहारगसरीर-पण्णत्ता ?

उ० गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता,

तं जहा—

१ बद्धेल्लया य, २ मुक्केल्लया य ।

तत्थ णं जे ते बद्धेल्लया ते णं सि अ अत्थि, सिअ णत्थि
जइ अत्थि जहण्णेणं एगो वा, दो वा, तिण्णि वा
उक्कोसेणं सहस्सपुहुत्तं ।

मुक्केल्लया जहा ओरालिया तहा भाणिअब्बा ।

प्र० केवइआ णं भते ! तेअगसरीरा पण्णत्ता ?

उ० गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता,

तं जहा—

१ बद्धेल्लया य, २ मुक्केल्लया य ।

तत्थ णं जे ते बद्धेल्लया ते णं अणंता—

अणंताहिं उस्सप्पिणी-ओसप्पिणीहिं अवहीरंति कालओ
खेत्तओ अणत्ता लोका ।

दच्चओ सिद्धेहिं अणंतगुणा

सच्चजं भाणं अणंतभागूणा ।

१ वद्धेल्लया य, २ मुक्केल्लया य ।

तत्थ णं जे ते वद्धेल्लगा ते णं असंखिज्जा,
असंखिज्जाहि उस्सप्पिणी-ओसप्पिणीहि अवहीरंति
कालओ ।

खेत्तओ असंखेज्जाओ सेढीओ पथरस्स असंखिज्जइभाओ
तासिं णं सेढीण विक्खंभसूइ-अंगुलपढमवगमूलं-
विइअवगमूलपडुप्पणं ।

अह्वा णं अंगुलविइअवगमूलघणपमाणमेत्ताओ सेढीओ,
तत्थ णं जे ते मुक्केल्लया ते णं जहा ओहिआ-
ओरालिअसरीरा तहा भाणिअब्बा ।

प्र० णेरइथाणं भंते ! केवइआ आहारगसरीरा पणत्ता ?

उ० गोयमा ! दुविहा पणत्ता,

तं जहा-

१ वद्धेल्लया य २ मुक्केल्लया य ।

तत्थ णं जे ते वद्धेल्लगा ते णं णत्थि ।

तत्थ णं जे ते मुक्केल्लया-

ते जहा ओहिआ ओरालिया तहा भाणिअब्बा ।
तेयग-कम्मगसरीरा

जहा एएसिं चेव वेउव्विअसरीरा तहा भाणिअब्बा ।

१ बद्धेल्लया य, २ मुक्केल्लया य ।

जहा एएसिं चैव ओरालियासरीरा तहा भाणिअव्वा ।
तेअगकम्मगसरीरा जहा एएसिं चैव वेउव्वियसरीरा-
तहा भाणिअव्वा ।

जहा असुरकुमाराणं तहा ' ' जाव ' ' थणियकुमाराणं
' ' ताव ' ' भाणिअव्वा

प्र० पुढविकाइआणं भंते ! केवइया ओरालिअसरीरा
पणत्ता ?

उ० गोयमा ! दुविहा पणत्ता,
तं जहा—

१ बद्धेल्लया य, २ मुक्केल्लया य ।

एवं जहा ओहिआ ओरालियसरीरा तहा भाणिअव्वा

प्र० पुढविकाइयाणं भंते ! केवइआ वेउव्वियसरीरा
पणत्ता ?

उ० गोयमा ! दुविहा पणत्ता,
तं जहा—

१ बद्धेल्लया य, २ मुक्केल्लया य ।

तत्थ णं जे ते बद्धेल्लया ते णं णत्थि,

जहा ओहिआ ओरालिअसरीरा—
भाणिअव्वा ।

मुक्केल्लया जहा ओहिआ ओरालिय-मुक्केल्लया ।
आहारगसरीरा य-

जहा पुढविकाइयाणं वेज्जवियसरीरा तहा भाणिअच्चा ।
तेअग-कम्मयसरीरा जहा पुढविकाइयाणं तहा
भाणिअच्चा ।

वणस्सइकाइयाणं "ओरालिय वेज्जविय-आहारगसरीरा
जहा पुढविकाइयाणं तहा भाणिअच्चा ।

प्र० वणस्सइकाइयाणं भत्ते ! केवइआ तेअगकम्मगसरीरा
पण्णत्ता ?

उ० गोयमा ! जहा ओहिआ तेअग-कम्मगसरीरा तहा
वणस्सइकाइयाणं वि तेअग-कम्मगसरीरा भाणिअच्चा ।

प्र० वेइदियाणं भत्ते ! केवइआ ओरालियसरीरा पण्णत्ता ?

उ० गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता,

तं जहा-

१ वद्धेल्लया य २ मुक्केल्लया य ।

तत्थ णं जे ते वद्धेल्लया ते णं असंखिज्जा,

असंखिज्जाहि उस्सप्पिणी-ओसप्पिणीहि अवहीरति
कालओ,

खेत्तओ असखेज्जाओ सेढीओ, पयरस्स असखिज्जइभाओ

तासि णं सेढीणं विक्खंभसूई, असखेज्जाओ-

जोअण-कोडाकोडीओ असंखिज्जाइ, सेढिवग्गमूलाइ

८ पक्ति ७ से पृष्ठ ६५९ पक्ति ३ पर्यन्त के समान है ।

१ बद्धेल्लया य, २ मुक्केल्लया य ।

तत्थ ण जे ते बद्धेल्लया ते णं असंखिज्जा,
असंखिज्जाहिं उस्सप्पिणी ओसप्पिणीहिं अवहीरंति
कालओ,

खेत्तओ असंखेज्जाओ सेढीओ, पयस्स असंखिज्जइभागो,
तासिं णं सेढीणं विक्खंभसूई-अगुलपढमवगमूलस्स-
असंखिज्जइभागो ।

मुक्केल्लया *जहा ओहिआ ओरालिया तहा भाणिअव्वा ।
आहारयसरीरा *जहा बेइंदिआणं-तेअग-कम्मसरीरा
जहा ओरालिया ।

प्र० मणुस्साणं भंते ! केवइया ओरालियसरीरा पणत्ता ?

उ० गोयमा ! डुविहा पणत्ता,
तं जहा-

१ बद्धेल्लया य २ मुक्केल्लया य ।

तत्थ णं जे ते बद्धेल्लया ते णं-

सिअ संखिज्जा सिअ असंखिज्जा

जहण्णपए संखेज्जा

संखिज्जाओ कोडाकोडीओ, एगूणतीसं ठाणाई-

*पृष्ठ ६५३ पक्ति १९ से पृष्ठ ६५४ पक्ति एक के समान है ।

*पृष्ठ ६६१ पक्ति १०, ११ के समान है ।

प्र० मणुस्साण भंते ! केवइआ आहारगसरीरा पणत्ता ?

उ० गोयमा । दुविहा पणत्ता,

तं जहा—

१ बद्धेल्लया य, २ मुक्केल्लया य ।

तत्थ णं जे ते बद्धेल्लया ते ण सिअ अत्थि, सिअ णत्थि ।

जइ अत्थि जहण्णेणं एक्को वा, दो वा, तिण्णि वा

उक्कोसेणं सहस्सपुहुत्तं ।

मुक्केल्लया *जहा ओहिआ ओरालिया तथा भाणि-

यव्वा । तेअग-कम्मगसरीरा जहा एएँसि चेव ओहिया

ओरालिया—तथा भाणिअव्वा ।

वाणमंतराणं ओरालियसरीरा *जहा णेरइयाणं ।

प्र० वाणमंतराणं भंते ! केवइआ वेउव्वियसरीरा पणत्ता ?

उ० गोयमा । दुविहा पणत्ता,

तं जहा—

१ बद्धेल्लया य, २ मुक्केल्लया य ।

तत्थ णं जे ते बद्धेल्लया ते णं असंखेज्जा,

असंखेज्जाहि उस्सप्पिणी-ओसप्पिणीहि अवहीरंति

कालओ

*देखे पृष्ठ ६५३ पक्ति ६, ७ का पाठ ।

*देखें पृष्ठ ६५३ पक्ति ११ से १३ तक का पाठ ।

सेढीणं विक्खंभसूई, वेष्ठप्पणंगुलसयवगपत्तिभागे
पयरस्स

मुक्केल्लया जहा ओहिया ओरालिया तह
भाणिअच्चा ।

आहारयसरीरा *जहा णेरइयाणं तहा भाणिअच्चा
तेअग-कम्मगसरीरा जहा एएंसि चेव वेउच्चिया-
तहा भाणिअच्चा ।

प्र० वेमाणियाणं भन्ते ! केवइआ ओरालियसरीर-
पणत्ता ?

उ० गोयमा ! *जहा णेरइयाणं तहा भाणिअच्चा ।

प्र० वेमाणियाणं भन्ते ! केवइआ वेउच्चियसरीरा पणत्ता

उ० गोयमा ! दुविहा पणत्ता,
तं जहा-

१ वट्ठेल्लया य, २ मुक्केल्लया य ।

तत्थ णं जे ते वट्ठेल्लया ते णं असंखिज्जा
असंखिज्जाहि उस्सप्पिणी-ओसप्पिणीहि अवही
कालओ,

*देखें पृष्ठ ६५३ पक्ति ६, ७ का पाठ ।

*देखें पृष्ठ ६५३ पक्ति ११ से १७ तक का पाठ ।

*देखें पृष्ठ ६५५ पक्ति ११ से १७ तक का पाठ ।

मुत्तं १४४ प्र० से किं तं गुणप्पमाणे ?

उ० गुणप्पमाणे द्विविहे पणत्ते,
तं जहा-

१ जीवगुणप्पमाणे २ अजीवगुणप्पमाणे अ

प्र० से किं तं अजीवगुणप्पमाणे ?

उ० अजीवगुणप्पमाणे पंचविहे पणत्ते,
तं जहा-

१ वण्णगुणप्पमाणे २ गंधगुणप्पमाणे

३ रसगुणप्पमाणे ४ फासगुणप्पमाणे

५ संठाणगुणप्पमाणे ।

प्र० से किं तं वण्णगुणप्पमाणे ?

उ० वण्णगुणप्पमाणे पंचविहे पणत्ते,
तं जहा-

१ कालवण्ण-गुणप्पमाणे 'जाव' .

२ सुविकलवण्णगुणप्पमाणे ।

से तं वण्णगुणप्पमाणे ।

प्र० से किं तं गंधगुणप्पमाणे ?

उ० गंधगुणप्पमाणे द्विविहे पणत्ते,
तं जहा-

१ सुरभिगंधगुणप्पमाणे २ दुरभिगंधगुण

से तं गंधगुणप्पमाणे ।

प्र० से किं त जीवगुणप्पमाणे ?

उ० जीवगुणप्पमाणे तिविहे पणत्ते,

त जहा—

१ णाणगुणप्पमाणे

२ दसणगुणप्पमाणे

३ चरित्तगुणप्पमाणे ।

प्र० से किं तं णाणगुणप्पमाणे ?

उ० णाणगुणप्पमाणे चउच्चिहे पणत्ते,

तं जहा—

१ पच्चक्खे, २ अणुमाणे, ३ ओवम्मे ४ आगमे ।

से किं तं पच्चक्खे ?

पच्चक्खे दुविहे पणत्ते,

तं जहा—

१ इंदिअपच्चक्खे अ, २ णोइंदिअ-पच्चक्खे अ ।

प्र० से किं तं इंदिअपच्चक्खे ?

उ० इंदिअपच्चक्खे पंचविहे पणत्ते,

तं जहा—

१ सोइदियपच्चक्खे

२ चक्खुरिंदियपच्चक्खे

३ घाणिदिअपच्चक्खे

खतेण वा, वण्णेण वा
लंछणेणं वा, मसेण वा, तिलएण वा,
से तं पुच्चवं ।

प्र० से किं तं सेसवं ?

उ० सेसवं पंचविहं पणत्तं,
तं जहा—

१ कज्जेणं २ कारणेणं ३ गुणेणं
४ अवयवेणं ५ आसएणं ।

प्र० से किं तं कज्जेणं ?

उ० कज्जेणं—

संखं सद्देणं, भेरिं ताडिएणं,
वसभं ढक्किएणं, मोरं किंकाइएणं,
हयं हेसिएणं, गयं गुलगुलाइएणं,
रहं घणघणाइएणं ।
से तं कज्जेणं ।

प्र० से किं तं कारणेणं ?

उ० कारणेणं—

तंतवो पडस्स कारणं, ण पडो तंतु कारणं,
वीरणा कडस्स कारणं, ण कडो वीरणकारणं,
मिप्पिडो घडस्स कारणं, ण घडो मिप्पिडकारणं ।
से तं कारणेणं ।

प्र० से किं तं गुणेण ?

उ० गुणेण—

सुवर्णं निकसेणं, पुष्पं गंधेणं
लवणं रसेण, मइरं आसायिएणं
वत्यं फासेण
से त्तं गुणेणं ।

प्र० से किं तं अवयवेण ?

उ० अवयवेण—

महिंस सिंगेणं, कुक्कुडं सिहाए
हत्थि विसाणेणं, वराहं दाढए
मोरं पिच्छेण, आसं छुरेणं
वग्घं नहेण, चमरिं दालगणेणं
दाणरं लंगुलेणं
दुपय मणुस्सादि चउप्पयं गवयादि
बहुपयं गोमिआदि
सीहं केसरेणं, वसहं ककुहेणं●
महिलं वलयवाहाए,

गाहा—परिअरवंधेण भडं, जाणिज्जा महिलियं निवसणेणं ।

सित्थेण दोणपागं, कविं च एक्काए गाहाए ॥२॥

से त्तं अवयवेणं !

प्र० से किं तं आसएणं ?

उ० आसएणं—

अङ्गि धूमेणं, सलिलं बलागार्हि
बुद्धिं अब्भविगारेणं, कुलपुत्तं सीलसमायारेणं
से त्त आसएणं ।
से त्तं सेसवं ।

प्र० से किं तं दिट्ठसाहम्मवं ?

उ० दिट्ठसाहम्मवं दुविहं पण्णत्तं,
तं जहा—

१ सामन्नदिट्ठं च, २ विसेसदिट्ठं च ।

प्र० से किं तं सामण्णदिट्ठं ?

उ० सामण्णदिट्ठं—

जहा एगो पुरिसो तथा बहवे पुरिसा,
जहा बहवे पुरिसा तथा एगो पुरिसो,
जहा एगो करिसावणो तथा बहवे करिसावणा,
जहा बहवे करिसावणा तथा एगो करिसावणो,
से त्तं सामण्णदिट्ठं ।

प्र० से किं तं विसेसदिट्ठं ?

उ० विसेसदिट्ठं—

से जहाणामए केइ पुरिसे कंचि पुरिसं—

प्र० से किं तं अणागयकालगहणं ?

उ० अणागयकालगहणं ?

गाहा—अवभस्स निम्मलत्तं, कसिणा य गिरी सविज्जुआ मेहा ।

थणियं वाउवभामो, संद्धा रत्ता य णिद्धा य ॥३॥

वारुणं वा मंहिदं वा अण्णयरं वा पसत्थं उप्पाय पासित्ता

तेणं साहिज्जइ जहा सुवट्ठी भविसइ ।

से त्तं अणागयकालगहणं ।

एएसिं चैव विवज्जासे तिविह गहणं भवइ,

तं जहा—

१ अतीयकालगहणं २ पडुप्पणकालगहणं

३ अणागयकालगहणं ।

प्र० से किं त अतीयकालगहणं ?

उ० नित्तिणाइ वणाइं अनिप्फणसस्सं वा मेह्णिं,

सुक्काणि अ कुण्ड-सर-णई-दीहिआ-तडागाइ पासित्ता—

तेणं साहिज्जइ जहा कुवट्ठी आसी,

मे त्त अतीयकालगहणं ।

प्र० से किं तं पडुप्पणकालगहणं ?

उ० पडुप्पणकालगहणं—साहु गोअरगगयं

भिव्ख अलभमाणं पासित्ता तेणं साहिज्जइ जहा—

दुव्विक्खे वट्ठइ

से त्तं पडुप्पणकालगहणं ।

प्र० मे किं तं अणागयकालगहर्णं ?

उ० अणागयकालगहर्णं—

‘गाहा—धूमायति दिनाश्रो, गरिअ मेद्वणी अपडिअद्या ।

याया णेरुअ गल्ल, पुयुद्धिमेय निवेयति ॥४॥

अणोयं वा यायव्व वा अण्णार वा अप्पमतथं उप्पायं

पासित्ता तेषं साहिज्जद जहा—कुचट्टी भविस्सह ।

ते तं अणागयकालगहर्णं ।

मे तं विमेलदिट्ठं ।

मे तं दिट्ठमाहम्मव ।

ते तं अणुमाणे ।

प्र० मे किं तं ओवस्से ?

उ० ओवस्से कुविहे पण्णत्ते,

तं जहा—

१ साहम्मोवणीए, २ वेहम्मोवणीए अ ।

प्र० मे किं तं माहम्मोवणीए ?

उ० माहम्मोवणीए तिअिहे पण्णत्ते,

तं जहा—

१ किअि साहम्मोवणीए, २ पायसाहम्मोवणीए,

३ मच्चसाहम्मोवणीए ।

प्र० से किं त किंचि साहम्मोवणीए ?

उ० किंचि साहम्मोवणीए—

जहा मंदरो तहा सरिसवो, जहा सरिसवो तहा मदरो ।
जहा समुद्रो तहा गोप्पयं, जहा गोप्पयं तहा समुद्रो ।
जहा आइच्चो तहा खज्जोतो, जहा खज्जोतो तहा आइच्चो ।
जहा चंदो तहा कुमुदो, जहा कुमुदो तहा चंदो ।
से त्तं किंचि साहम्मोवणीए ।

प्र० से किं त पायसाहम्मोवणीए ?

उ० पायसाहम्मोवणीए—

जहा गो तहा गवओ, जहा गवओ तहा गो,
से त्तं पायसाहम्मोवणीए ।

प्र० से किं तं सब्बसाहम्मोवणीए ?

उ० सब्बसाहम्मो ओवम्मो णत्थि,

तहार्हि तेणेव तस्स ओवम्मं कीरइ, जहा—
अरिहत्तोहि अरिहंतसरिसं कयं
चक्कवट्टिणा चक्कवट्टिसरिसं कयं
बलदेवेण बलदेवसरिसं कयं
बामुदेवेण बामुदेवसरिसं कयं
साहुणा साहुसरिसं कयं,
से त्तं सब्बसाहम्मो ।
से त्तं साहम्मोवणीए ।

साणेण साणसरिस कय,
 पाणेणं पाणसरिस कय,
 से त्तं सच्चवेहम्ममे ।
 से त्त वेहम्मोवणीए ।
 से त्तं ओगम्ममे ।

प्र० से किं तं आगमे ?

उ० आगमे दुविहे पणत्ते,
 तं जहा—

१ लोइए अ, २ लोउत्तरिए अ ।

प्र० से किं तं लोइए आगमे ?

उ० लोइए—जं ण इमं अण्णाणिएहिं मिच्छादिद्विएहिं
 सच्छंदबुद्धिसइविगप्पिय,
 तं जहा—

भारहं शमायणंजाव....चत्तारि वेआ संगोवगा ।
 से त्तं लोइए आगमे ।

प्र० से किं तं लोउत्तरिए आगमे ?

उ० लोउत्तरिए—जं णं इमं अरिंहंतेहिं भगवंतेहिं उप्पण-
 णाणदंसणधरेहिं तीय-पच्चुप्पणमणागयजाणएहिं
 तिलुक्कवहिअ महिअ-पूइएहिं, सच्चणूहिं

- १ चक्खुदंसणगुणप्पमाणे,
- २ अचक्खुदंसणगुणप्पमाणे,
- ३ ओहिदंसणगुणप्पमाणे.
- ४ केवलदंसणगुणप्पयाणे ।

चक्खुदंसणं चक्खुदंसणिस्स घड-पड-कड-रहाइसु
 दब्बेसु, अचक्खुदंसण अचक्खुदंसणिस्स आयभावे,
 ओहिदंसणं ओहिदंसणिस्स सव्वरूविदब्बेसु
 न पुण सच्चपज्जवेसु,
 केवलदंसणं केवलदंसणिस्स—
 सव्वदब्बेसु अ सच्चपज्जवेसु अ ।
 से तं दंसणगुणप्पमाणे ।

प्र० से किं त चरित्त-गुणप्पमाणे ?

प्र० चरित्त-गुणप्पमाणे पंचविहे पणत्ते,
 तं जहा—

- १ सामाइअ-चरित्त-गुणप्पमाणे
- २ छेओचट्ठावण-चरित्त-गुणप्पमाणे
- ३ परिहारविमुद्धिअ-चरित्त-गुणप्पमाणे
- ४ सुहुमसंपराय-चरित्त-गुणप्पमाणे
- ५ अहुक्खाय-चरित्त-गुणप्पमाणे ।

अहवा-अहक्खाय चरित्त-गुणप्पमाणे डुविहे पण्णत्ते,
तं जहा-

१ छउमत्थिए अ, २ केवलिए य ।

से त्तं चरित्त-गुणप्पमाणे ।

से त्तं जीवगुणप्पमाणे

से त्तं गुणप्पमाणे ।

सुत्तं १४५ प्र० से किं तं नयप्पमाणे ?

उ० नयप्पमाणे तिविहे पण्णत्ते,

त जहा-

१ पत्थगदिट्ठं तेणं २ वसहिदिट्ठं तेणं ३ पएसदिट्ठं तेणं ।

प्र० से किं तं पत्थगदिट्ठं तेणं ?

उ० पत्थगदिट्ठं तेणं-

से जहाणामए केई पुरिसे परसुं गहाय अडविसमहुत्तो-
गच्छेज्जा, तं पासित्ता केई वएज्जा-‘कहि भवं
गच्छसि ?’

अविसुद्धो नेगमो भणइ-‘पत्थगस्स गच्छामि ।’

तं च केई छिदमाणं पासित्ता वएज्जा-‘किं भवं
छिदसि ?’

विसुद्धो नेगमो भणइ-‘पत्थय छिदामि’ ।

जं भणसि—छण्हं पएसो तं न भवइ
कम्हा ?

जम्हा जो सो देसपएसो सो तस्सेव दव्वस्स ।

जहा को दिट्ठन्तो ?

दासेण मे खरो कीओ, दासो वि मे खरो वि मे,
तं मा भणाहि—छण्हं पएसो, भणाहि पंचण्हं पएसो,
तं जहा—

धम्मपएसो अधम्मपएसो आगासपएसो,

‘जीवपएसो खंधपएसो’

एवं वयंतं संग्हं ववहारो भणइ—

‘जं भणसि पंचण्हं पएसो, तं न भवइ ।’

कम्हा ?

जइ जहा पंचण्हं गोट्ठिआणं पुरिसाणं केइ दव्वजाए
सामण्णे भवइ,

तं जहा—

हिरण्णे वा, सुवण्णे वा, धणे वा, धण्णे वा ।

तं न ते जुत्तं वत्तु जहा पंचण्हं पएसो

तं मा भणाहि—पंचण्हं पएसो, भणाहि पंचविहो पएसो

तं जहा—

धम्मपएसो, अधम्मपएसो, आगासपएसो, जीवपएसो खंधपएसो ।

एवं वयंतं ववहारं उज्जुसुओ भणइ—

आगासे पएसे से पएसे आगासे,
जीवे पएसे से पएसे नोजीवे,
खंधे पएसे से पएसे नोखंधे ।

एवं वयंतं सहनयं समभिरुद्धो भणइ—
'जं भणसि—धम्मपएसे से पएसे धम्मे . . . जाव . . .
जीवे पएसे से पएसे नो जीवे
खंधे पएसे से पएसे नोखंधे तं न भवइ ।'
कम्हा ?

इत्थं खलु दो समाप्ता भवन्ति,
तं जहा—

१ तप्पुरिसे अ २ कम्मधारए अ ।
तं ण णज्जइ कयरेणं सयासेणं भणसि ?
किं तप्पुरिसेणं , किं कम्मधारएणं ?
जइ तप्पुरिसेणं भणसि तो मा एवं भणाहि,
- कम्मधारएणं भणसि तो विसैसओ भणाहि—
धम्मे अ से पएसे अ से पएसे धम्मे,
अधम्मे अ से पएसे अ से पएसे अहम्मै,
आगासे अ से पएसे अ से पएसे आगासे,
जीवे अ से पएसे अ से पएसे नो जीवे,
खंधे अ से पएसे अ से पएसे नो खंधे ।'
एवं वयंतं समभिरुद्धं संपइ एवंभूओ भणइ—

प्र० नामठवणाणं को पइविसेसो ?

उ० नामं आवकहिअं, ठवणा इत्तरिया वा होज्जा,
आवकहिआ वा होज्जा ।

प्र० से किं तं दव्वसंखा ?

उ० दव्वसंखा दुविहा पणत्ता,
तं जहा—

१ आगमओ य, २ नो आगमओ य । . . . *जाव . . .

प्र० से किं तं जाणयसरीर-भविअसरीरवइरित्ता दव्वसंखा ?

उ० जाणयसरीरभविअसरीरवइरित्ता दव्वसंखा ति विहा पणत्ता,
तं जहा—

१ एगभविए २ वद्धाउए ३ अभिमुह्णामगोत्ते अ ।

प्र० एगभविए णं भंते ! 'एगभविए' त्ति कालओ केवचिरं होइ ?

उ० जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं पुव्वकोडी ।

० वद्धाउएणं भंते ! 'वद्धाउए' त्ति कालओ केवचिरं होइ ?

० जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं पुव्वकोडीति भागं ।

प्र० अभिमुह्णामगोत्ते णं भंते ! 'अभिमुह्णामगोए' त्ति कालओ
केवचिरं होइ ?

० जहण्णेणं एकं समयं, उक्कोसेणं अंतोमुहुत्तं ।

देखो सूत्र न १३ से १५ तक ।

संतएहिं कवाडोहिं संतएहिं वच्छोहिं उवमिज्जइ,
तं जहा—

गाहा— पुरवर-कवाड-वच्छा, फलिहभुआ दुंदुहि-त्थणिअघोसा ।
सिरिवच्छंकिअ वच्छा, सव्वे वि जिणा चउव्वीसं ॥१॥
संतयं असंतएणं उवमिज्जइ जहा—
संताइं नेरइअ-तिरिक्खजोणिअ-मणुस्स-देवाणं आउआइं
असंतएहिं पलिओवम सागरोवभोहिं उवमिज्जंति ।
असंतयं संतएणं उवमिज्जइ,
तं जहा—

गाहाओ— परिजूरिअपेरंतं, चलंतवेटं पडंतनिच्छीरं ।
पत्तं वसणप्पत्तं, कालप्पत्तं भणइ गाहं ॥१॥
जह तुब्भे तह अम्हे, तुम्हे वि य होहिहा जहा अम्हे ।
अप्पाहेइ पडंतं, पंडुअपत्तं किसलयाणं ॥२॥
णवि अत्थि णवि अ होही, उल्लावो किसलय-पंडुपत्ताणं ।
उवमा खलु एस कया, भविअ-जण-विबोहणट्ठाए ॥३॥
असंतयं असंतएहिं उवमिज्जइ—
जहा खरविसाणं तहा ससविसाणं ।
से त्तं ओवम्मसंखा ।

से किं तं परिमाणसंखा ?

० परिमाणसंखा दुविहा पण्णत्ता,
तं जहा—

प्र० से किं तं जाणणासंखा ?

उ० जाणणासंखा—जो जं जाणइ सो तं जाणइ,
तं जहा—

सद्दं सद्दिओ, गणियं गणिओ,
निमित्तं नेमित्तिओ, कालं कालणाणी
वेज्जयं वेज्जो ।
से त्तं जाणणासंखा ।

प्र० से किं तं गणणासंखा ?

उ० गणणासंखा—एक्को गणणं न उवेइ,
दुप्पभिइ संखा
तं जहा—

संखेज्जए, असंखेज्जए, अणंतए ।

प्र० से किं तं संखेज्जए ?

उ० संखेज्जए तिविहे पण्णत्ते,
तं जहा—

१ जहण्णए, २ उक्कोसए, ३ अजहण्णमणुक्कोसए ।

प्र० से किं तं असंखेज्जए ?

उ० असंखेज्जए तिविहे पण्णत्ते,
तं जहा—

१ परित्तासंखेज्जए, २ जुत्तासंखेज्जए, ३ असंखेज्जासंखेज्जए ।

प्र० से किं तं जुत्ताणंतए ?

उ० जुत्ताणंतए तिविहे पण्णत्ते,
तं जहा-

१ जहण्णए, २ उक्कोसए, ३ अजहण्णमणुक्कोसए ।

प्र० से किं तं अणंताणंतए ?

उ० अणंताणंतए दुविहे पण्णत्ते,
तं जहा-

१ जहण्णए, २ अजहण्णमणुक्कोसए य ।

प्र० जहण्णयं संखेज्जयं केवइअं होइ ?

उ० दोरूवाइं, तेणं परं अजहण्णमणुक्कोसयाइं ठाणाइं
... जाव ... उक्कोसयं संखेज्जयं न पावइ ।

उक्कोसयं संखेज्जयं केवइअं होइ ?

० उक्कोसयस्स संखेज्जयस्स परूवणं करिस्सामि-

से जहानामए पल्ले सिआ,

एगं जोयणसयसहस्सं आयामविक्खंभेणं

तिण्णि जोयणसयसहस्साइं सोलस य सहस्साइं दोण्णि अ-
सत्तावीसे जोअणसए तिण्णि अ कोसे, अट्ठावीसं च धणुसयं,
तेरस य अंगुलाइं, अट्ठं अंगुलं च किंचि विसेसाहिअं-
परिक्खेवेणं पण्णत्ते ।

से णं पल्ले सिद्धत्थयाणं भरिए ।

प्र० उक्कोसयं परित्तासंखेज्जयं केवइअं होइ ?

उ० जहण्णयं परित्तासंखेज्जयं जहण्णयं परित्तासंखेज्जयमेत्ताणं
रासीणं अण्णमण्णव्भासो रूवूणो
उक्कोसयं परित्तासंखेज्जयं होइ ।

अहवा जहण्णयं जुत्तासंखेज्जयं रूवूणं
उक्कोसयं परित्तासंखेज्जयं होइ ।

प्र० जहण्णयं जुत्तासंखेज्जयं केवइअं होइ ?

उ० जहण्णयं परित्ता संखेज्जयं
जहण्णयपरित्तासंखेज्जयमेत्ताणं रासीणं अण्णमण्णव्भासो
पडिपुण्णो जहण्णयं जुत्तासंखेज्जयं होइ ।

अहवा उक्कोसए परित्तासंखेज्जए रूवं पक्खित्तं
जहण्णयं जुत्तासंखेज्जयं होइ ।
आवलिआ वि तत्तिआ चेव ।
तेण परं अजहण्णमणुक्कोसयाइं ठाणाइं . . . जाव . . .
उक्कोसयं जुत्तासंखिज्जयं न पावइ ।

० उक्कोसयं जुत्तासंखेज्जयं केवइअं होइ ?

उ० जहण्णएणं जुत्तासंखेज्जएणं आवलिआ गुणिआ
अण्णमण्णव्भासो रूवूणो उक्कोसयं जुत्तासंखेज्जयं होइ ।
जहण्णयं असंखेज्जासंखेज्जयं रूवूणं
उक्कोसयं जुत्तासंखेज्जयं होइ ।

० जहण्णयं असंखेज्जासंखेज्जयं केवइअं होइ ?

उ० जहण्णएणं जुत्तासंखेज्जएणं आवलिआ गुणिआ

रूवूणो उक्कोसयं परित्ताणंतयं होइ ।

अहवा जहण्णयं जुत्ताणंतयं रूवूणं उक्कोसयं परित्ताणंतयं होइ ।

प्र० जहण्णयं जुत्ताणंतयं केवइअं होइ ?

उ० जहण्णयपरित्ताणंतयं जहण्णयपरित्ताणंतयमेत्ताणं रासीणं
अण्णमण्णन्भासो

पडिपुण्णो जहण्णयं जुत्ताणंतयं होइ ।

अहवा उक्कोसए परित्ताणंतए रूवं पक्खित्तं

जहण्णयं जुत्ताणंतयं होइ ।

अभवसिद्धिआ वि तत्तिआ होति ।

तेण परं अजहण्णमणुक्कोसयाइं ठाणाइं . . . जाव . . .

उक्कोसयं जुत्ताणंतयं ण पावइ ।

प्र० उक्कोसयं जुत्ताणंतयं केवइअं होइ ?

उ० जहण्णएणं जुत्ताणंतएणं अभवसिद्धिआ गुणिया—

अण्णमण्णन्भासो रूवूणो उक्कोसयं जुत्ताणंतयं होइ ।

अहवा जहण्णयं अणंतानंतयं रूवूणं उक्कोसयं जुत्ताणंतयं होइ ।

प्र० जहण्णयं अणंतानंतयं केवइअं होइ ?

उ० जहण्णएणं जुत्ताणंतएणं अभवसिद्धिआ गुणिआ

अण्णमण्णन्भासो पडिपुण्णो जहण्णयं अणंतानंतयं होइ ।

अहवा उक्कोसए जुत्ताणंतए रूवं पक्खित्तं

जहण्णयं अणंतानंतयं होइ ।

प्र० से किं तं परसमयवत्तव्वया ?

उ० परसमयवत्तव्वया—जत्थ णं परसमए
आघविज्जइ . . . जाव . . . उवदंसिज्जइ ।
से तं परसमयवत्तव्वया ।

प्र० से किं तं ससमय-परसमयवत्तव्वया ?

उ० ससमय-परसमयवत्तव्वया—जत्थ णं
ससमये परसमए आघविज्जइ . . . जाव . . . उवदंसिज्जइ ।
से तं ससमय-परसमयवत्तव्वया ।

प्र० इआणीं को णओ कं वत्तव्वयं इच्छइ ?

उ० तत्थ णेगम-संगह-ववहारा तिविहं वत्तव्वयं इच्छंति,
तं जहा—
१ ससमयवत्तव्वयं, २ परसमयवत्तव्वयं, ३ ससमय-परसमय-
वत्तव्वयं ।
उज्जुसुओ दुविहं वत्तव्वयं इच्छइ,
तं जहा—
१ ससमयवत्तव्वयं, १ परसमयवत्तव्वयं ।

तत्थ णं जा सा ससमयवत्तव्वया सा ससमयं पविट्ठा,
जा सा परसमयवत्तव्वया सा परसमयं पविट्ठा ।
तम्हा दुविहा वत्तव्वया, नत्थि तिविहा वत्तव्वया ।

तिणिण सद्दणया एगं ससमयवत्तच्चयं इच्छंति,
नत्थि परसमयवत्तच्चया ।

कम्हा ?-

जम्हा परसमए अणुद्वे अहेज असव्मावे अकिरिए
उम्मगे अणुवएसे मिच्छादंसणमितिकट्टु ।
तम्हा सव्वा ससमयवत्तच्चया,
णत्थि परसमयवत्तच्चया, णत्थि ससमय-परसमयवत्तच्चया ।
से तं वत्तच्चया ।

सुत्त०-१४८ प्र० से किं त अत्याहिगारे ?

उ० अत्याहिगारे-जो जस्स अज्झयणस्स अत्याहिगारे
तं जहा-

गाहा-सावज्जजोगविरई, उक्कित्तण गुणवओ य पडिवत्तो ।
खलियस्स निदणा, वणत्तिगिच्छ गुणधारणा चेव ॥१॥
से तं अत्याहिगारे ।

सु०-१४९ प्र० से किं तं समोआरे ?

उ० समोआरे छव्विहे पण्णत्ते
तं जहा-

१ णामसमोआरे २ ठवणसमोआरे
३ दव्वसमोआरे ४ छेत्तसमोआरे
५ पारे ६ भावसमोआरे

ળામ-ઠવળાઓ પુલ્લં વળિળાઓ . . . જાવ . . .
સે ત્તં ભવિઅસરીરદલ્લસમોઆરે ।

પ્ર૦ સે કિં તં જાળય-સરીર ભવિઅસરીરવહરિત્તે દલ્લસમોઆરે ?

હ૦ જાળયસરીર-ભવિઅસરીરવહરિત્તે દલ્લસમોઆરે તિવિહે પળ્લત્તે
તં જહા—

૧ આયસમોઆરે, ૨ પરસમોઆરે, ૩ તદુભયસમોઆરે ।

સલ્લદલ્લા વિ ય ણં આયસમોઆરેણં આયભાવે સમોઅરંતિ
પરસમોઆરેણં જહા કુંડે બદરાણિ ।

તદુભયસમોઆરેણં જહા ઘરે લંભો આયભાવે અ,
જહા ઘડે ગીવા આયભાવે અ ।

અહવા જાળયસરીર-ભવિઅસરીરવહરિત્તે દલ્લસમોઆરે—

હુવિહે પળ્લત્તે,

તં જહા—

૧ આયસમોઆરે અ, ૨ તદુભયસમોઆરે અ ।

લ્લસલ્લિઆ આયસમોઆરેણં આયભાવે સમોઅરહ,
તદુભયસમોઆરેણં લ્લસિઆ સમોઅરહ આયભાવે ય ।

લ્લસિઆ આયસમોઆરેણં આયભાવે સમોઅરહ,
તદુભયસમોઆરેણં સોલસિઆ સમોઅરહ આયભાવે ય ।

સોલસિઆ આયસમોઆરેણં આયભાવે સમોઅરહ,
તદુભયસમોઆરેણં અલ્લભાહિઆ સમોઅરહ આયભાવે અ ।

तिरियलोए आयसमोआरेणं आयभावे समोअरइ,
तदुभयसमोआरेणं लोए समोअरइ आयभावे *अ ।
से तं खेत्तसमोआरे ।

प्र० से किं तं कालसमोआरे ?

उ० कालसमोआरे दुविहे पण्णत्ते,
तं जहा—

आयसमोआरे अ, तदुभयसमोआरे अ ।

समए आयसमोआरेणं आयभावे समोअरइ,

तदुभयसमोआरेणं आवलियाए समोअरइ आयभावे य ।

एवमाणापाणू थोवे लवे मुहुत्ते अहोरत्ते पक्खे मासे

उऊ अयणे संवच्छरे जुगे वाससए वाससहस्से

वाससयसहस्से पुव्वंगे पुव्वे तुडियंगे तुडिए

अडडंगे अडडे अववंगे अववे हूहअंगे हूहए

उप्पलंगे उप्पले पउमंगे पउमे णल्लिणंगे णल्लिए

अत्थनिउरंगे अत्थनिउरे अउअंगे अउए

नउअंगे नउए पउअंगे पउए चूलिअंगे चूलिआ

सीसपहेलिअंगे सीसपहेलिआ

पलिओवमे सांगरोवमे—

* लोए आयसमोआरेणं आयभावे समोअरइ ।

तदुभयसमोआरेणं अलोए समोअरइ आयभावे अ ।

इत्यधिकम् प्रत्यन्तरे ।

एवं जीवे जीवत्थिकाए आयसमोआरेणं आयभावे समोअरइ,
तदुभयसमोआरेणं सव्वदव्वेसु समोअरइ आयभावे य ।

एत्थ संगहणी गाहा—

कोहे माणे साया, लोभे रागे य मोहणिज्जे अ ।

पगडी भावे जीवे, जीवत्थि य सव्व दव्वा य ॥१॥

से तं भावसमोआरे ।

से तं समोआरे ।

से तं उवक्कमे ।

उवक्कम इति पढमं दारं ।

सुत्तं०—१५० प्र० से किं तं निक्खेवे ?

उ० निक्खेवे तिविहे पणत्ते,

तं जहा—

१ ओहणिप्फण्णे २ णामनिप्फण्णे, ३ सुत्तालावगनिप्फण्णे ।

प्र० से किं तं ओहनिप्फण्णे ?

उ० ओहनिप्फण्णे चउव्विहे पणत्ते,

तं जहा—

१ अज्झयणे, २ अज्झीणे, ३ आए, ४ झवणा ।

प्र० से किं तं अज्झयणे ?

उ० अज्झयणे चउव्विहे पणत्ते,

१ जाणयसरीरदव्वज्झयणे,

२ भविअसरीरदव्वज्झयणे,

३ जाणयसरीर-भविअसरीरवइरित्ते दव्वज्झयणे ।

प्र० से किं तं जाणयसरीरदव्वज्झयणे ?

उ० अज्झयणपयत्थाहिगारजाणयस्स जं सरीरं

ववगय-चुअ-चाविअ-चत्तदेहं जीवविप्पजहं... जाव...

अहो ! णं इमेणं सरीर-समुस्सएणं जिणदिट्ठेणं भावेणं

‘अज्झयणे’ त्ति पयं आघवियं... जाव... उवदंसियं,

जहा को दिट्ठं तो ?

अयं घयकुंभे आसी, अयं महुकुंभे आसी,

से तं जाणयसरीरदव्वज्झयणे ।

० से किं तं भविअसरीरदव्वज्झयणे ?

उ० भविअसरीरदव्वज्झयणे-जे जीवे जोणि-जम्मण-

निक्खंते इमेणं चेव आयत्तएणं सरीरसमुस्सएणं

जिणदिट्ठं तेणं भावेणं ‘अज्झयणे’ त्ति पयं

सेअकाले सिक्खिस्सइ न ताव सिक्खइ,

जहा को दिट्ठं तो ?

अयं महुकुंभे भविस्सइ, अयं घयकुंभे भविस्सइ ।

से तं भविअसरीरदव्वज्झयणे ।

प्र० से किं तं अज्झीणे ?

उ० अज्झीणे चउव्विहे पणत्ते,
तं जहा-

णामज्झीणे ठवणज्झीणे ।

दव्वज्झीणे भावज्झीणे ।

नाम-ठवणाओ पुव्वं वण्णिआओ ।

प्र० से किं तं दव्वज्झीणे ?

उ० दव्वज्झीणे दुविहे पणत्ते,
तं जहा-

१ आगमओ य, २ नो आगमओ य ।

० से किं तं आगमओ दव्वज्झीणे ?

० आगमओ दव्वज्झीणो-जस्स णं 'अज्झीणे' त्ति पयं
सिक्खियं कित्तं जियं मियं परिजियं . . . जाव . . .
से त्तं आगमओ दव्वज्झीणे ।

प्र० से किं तं नो आगमओ दव्वज्झीणे ?

० नो आगमओ दव्वज्झीणे ति विहे पणत्ते,
तं जहा-

१ जाणयसरीरदव्वज्झीणे,

२ भविअसरीरदव्वज्झीणे,

३ जाणयसरीर भविअसरीर वड्डरित्ते दव्वज्झीणे ।

प्र० से किं तं आगमओ भावज्झीणे ?

उ० आगमओ भावज्झीणे जाणए उवउत्ते ।

से तं आगमओ भावज्झीणे ।

प्र० से किं तं नो आगमओ भावज्झीणे ?

उ० नो आगमओ भावज्झीणे—

गाहा—जह दीवा दीवसयं पइप्पइ, दिप्पए अ सो दीवो ।

दीवसमा आयरिया, दिप्पति परं च दीवन्ति ॥१॥

से तं नो आगमओ भावज्झीणे ।

से तं भावज्झीणे ।

से तं अज्झीणे ।

प्र० से किं तं आए ?

उ० आए चउव्विहे पणत्ते,

तं जहा—

१ नामाए, २ ठवणाए, ३ दव्वाए, ४ भावाए ।

नाम-ठवणाओ पुव्वं भणिआओ ।

प्र० से किं तं दव्वाए ?

उ० दव्वाए दुविहे पणत्ते

तं जहा—

१ आगमओ अ, २ नो आगमओ अ ।

प्र० से किं तं भविअसरीरदब्बाए ?

उ० भविअसरीरदब्बाए—जे जीवे जोणि-जम्मण-णिक्खंते

जहा दब्बज्झयणे... जाव...

से त्तं भविअसरीरदब्बाए ।

प्र० से किं तं जाणयसरीर-भविअसरीरवइरित्ते दब्बाए ?

उ० जाणयसरीर-भविअसरीरवइरित्ते दब्बाए तिविहे पण्णत्ते,

तं जहा—

१ लोइए, २ कुप्पावयणिए, ३ लोगुत्तरिए ।

प्र० से किं तं लोइए ?

उ० लोइए तिविहे पण्णत्ते,

तं जहा—

१ सच्चित्ते, २ अच्चित्ते, २ मीसए अ ।

प्र० से किं तं सच्चित्ते ?

उ० सच्चित्ते तिविहे पण्णत्ते,

तं जहा—

१ दुपयाणं, २ चउप्पयाणं, ३ अपयाणं ।

दुपयाणं-दासाणं, दासीणं ।

चउप्पयाणं-आसाणं, हत्थीणं ।

अपयाणं-अंवाणं, अंबाडगाणं आए ।

से त्तं सच्चित्ते ।

प्र० से किं तं अचित्ते ?

उ० अचित्ते-सुव्वण्ण-रयण-मणि-मोत्तिअ-संख-सिलप्पवाल-
रत्तरयणाणं संतसावएज्जस्स आए ।
से चं अचित्ते ।

प्र० से किं तं मीसए ?

उ० मीसए-दासाणं दासीणं आसाणं हत्थीणं
समाभरिआउज्जालंकिघाणं आए ।
से तं मीसए ।
से तं लोइए ।

प्र० से किं तं कुप्पावयणिए ?

उ० कुप्पावयणिए तिविहे पण्णत्ते,
तं जहा-
१ सचित्ते, २ अचित्ते, ३ मीसए अ ।
त्तिण्णि वि जहा लोइए . . . *जाव . . .
से तं मीसए ।
से तं कुप्पावयणिए ।

प्र० से किं तं लोगुत्तरिए ?

उ० लोगुत्तरिए तिविहे पण्णत्ते,
तं जहा-

* पृष्ठ ७१८ पक्ति १३ से पृष्ठ ७१९ पक्ति ८ तक के ममान है ।

१ सच्चित्ते, २ अच्चित्ते, ३ मीसए अ ।

से किं तं सच्चित्ते ?

सच्चित्ते-सीसाणं सिस्सणिआणं आए ।

से त्तं सच्चित्ते ।

प्र० से किं तं अच्चित्ते ?

उ० अच्चित्ते-पडिग्गहाणं वत्थाण कंबलाणं पायपुंछणाणं आए,

से त्तं अच्चित्ते ।

प्र० से किं तं मीसए ?

उ० मीसए-सिस्साणं सिस्सणिआणं सभण्डोवगरणाणं आए,

से तं मीसए ।

से तं लोगुत्तरिए ।

से तं जाणयसरीर-भविअसरीरवइरित्ते दब्बाए ।

से तं नो आगमओ दब्बाए ।

से तं दब्बाए ।

प्र० से किं तं भावाए ?

उ० भावाए दुविहे पणत्ते,

तं जहा-

१ आगमओ अ, २ नो आगमओ अ ।

प्र० से किं तं आगमओ भावाए ?

उ० आगमओ भावाए जाणए उवउत्ते ।

से तं आगमओ भावाए ।

प्र० से किं तं नो आगमओ भावाए ?

उ० नो आगमओ भावाए दुविहे पणत्ते,
तं जहा-

१ पसत्ये अ, २ अपसत्ये अ ।

प्र० से किं तं पसत्ये ?

उ० पसत्ये तिविहे पणत्ते,
तं जहा-

१ णाणाए, २ दंसणाए, ३ चरित्ताए ।

से तं पसत्ये ।

प्र० से किं तं अपसत्ये ?

उ० अपसत्ये चउद्विहे पणत्ते,
तं जहा-

१ कोहाए, २ माणाए, ३ मायाए, ४ लोहाए ।

से तं अपसत्ये ।

से तं णो आगमओ भावाए ।

से तं भावाए ।

से तं आए ।

प्र० से किं तं श्रवणा ?

उ० श्रवणा चउद्विहा पणत्ता,

तं जहा—

१ णामज्झवणा, २ ठवणज्झवणा, ३ दव्वज्झवणा,

४ भावज्झवणा ।

नाम-ठवणाओ पुव्वं भणिआओ ।

प्र० से किं तं दव्वज्झवणा ?

उ० दव्वज्झवणा दुविहा पणत्ता,

तं जहा—

१ आगमओ अ, २ नो आगमओ अ ।

प्र० से किं तं आगमओ दव्वज्झवणा ?

उ० आगमओ दव्वज्झवणा—जस्स णं 'झवणे' त्ति पयं
सिक्खियं ठियं जियं मियं परिजिअं . . . जाव . . .

से त्तं आगमओ दव्वज्झवणा ।

प्र० से किं तं नो आगमओ दव्वज्झवणा ?

उ० नो आगमओ दव्वज्झवणा ति विहा पणत्ता,

तं जहा—

१ जाणयसरीरदव्वज्झवणा,

२ भविअसरीरदव्वज्झवणा,

३ जाणयसरीर-भविअसरीरवइरित्ता दव्वज्झवणा ।

प्र० से किं तं जाणयसरीरदव्वज्झवणा ?

उ० 'झवणा' पयत्थाहिगारजाणयस्स जं सरीरयं

ववगय-वुअ-चाविय-चत्तदेहं
सेसं जहा दव्वज्झयणे . . . जाव . . .
से तं जाणयसरीरदव्वज्झवणा ।

प्र० से किं तं भविअसरीरदव्वज्झवणा ?

उ० जे जीवे जोणि-जम्मण-णिक्खंते
सेसं जहा दव्वज्झयणे . . . जाव . . .
से तं भविअसरीरदव्वज्झवणा ।

प्र० से किं तं जाणयसरीर-भविअसरीरवइरित्ता दव्वज्झवणा ?

उ० जहा जाणयसरीर-भविअसरीरवइरित्ते दव्वाए
तहा भाणिअव्वा . . . जाव . . .
से तं मीसिआ ।
से तं लोगुत्तरिआ ।
से तं जाणयसरीर-भविअसरीरवइरित्ता दव्वज्झवणा ।
से तं नो आगमओ दव्वज्झवणा ।
से तं दव्वज्झवणा ।

प्र० से किं तं भावज्झवणा ?

उ० भावज्झणा दुविहा पणत्ता,
तं जहा—

१ आगमओ अ, २ णोआगमओ अ

प्र० से किं तं आगमओ भावज्झवणा ?

उ० आगमओ भावज्झवणा—पयत्थाहिंकार जाणए उवज्जते ।

से तं आगमओ भावज्झवणा ।

प्र० से किं तं णोआगमओ भावज्झवणा ?

उ० णोआगमओ भावज्झवणा दुविहा पण्णत्ता,

तं जहा—

१ पसत्था य, २ अपसत्था य ।

प्र० से किं तं पसत्था ?

उ० पसत्था चउज्विहा पण्णत्ता,

तं जहा—

१ कोहज्झवणा, २ माणज्झवणा,

३ मायज्झवणा, ४ लोहज्झवणा ।

से तं पसत्था ।

० से किं तं अपसत्था ?

अपसत्था तिविहा पण्णत्ता,

तं जहा—

१ णाणज्झवणा,

२ दंसणज्झवणा,

चरित्तज्झवणा ।

तं अपसत्था ।

तं जहा—

१ आगमओ अ, २ नो आगमओ अ ।

प्र० से किं तं आगमओ भावसामाइए ?

उ० आगमओ भावसामाइए पयत्थाहिकार जाणए
से तं आगमओ भावसामाइए ।

प्र० से किं तं नो आगमओ भावसामाइए ?

उ० नो आगमओ भावसामाइए—

गाहाओ— जस्स सामाणिओ अप्पा, संजमे पि
तस्स सामाइअं होइ, इइ केद
जो समो सव्वभूएसु, तसेसु
तस्स सामाइयं होइ, इइ केद
जह मम ण पिअं दुक्खं, जाणिअ एमेव स
न हणइ न हणावेइ अ, सममणइ तेण
णत्थि य सि कोइ वेसो, पिओ अ सव्वेसु
एएण होइ समणो, एसो अन्नोऽवि
उरग-गिरि-जलण, सागर नहतल-त्तरुण
भमर-मिय-धरणि-जलरूह-रवि-पवणस
तो समणो जइ सुमणो, भावेण य जइ ण ह
सयणे अ जणे अ समो, समो अ न

से तं नो आगमओ भावसामाइए
 से तं भावसामाइए
 से तं सामाइए
 से तं नामनिष्फण्णे ।

प्र० से किं तं सुत्तालावगनिष्फण्णे ?

उ० इमाणि सुत्तालावयनिष्फण्णे निक्खेवे इच्छावेइ,
 से अ पत्तलक्खणे वि ण णिक्खिप्पइ ।

कम्हा ?

लाघवत्थं । अत्थि इओ तइए अणुभोगद्वारे
 अणुगमे त्ति । तत्थ णिक्खत्ते इहं णिक्खत्ते भवइ ।
 इहं वा णिक्खत्ते तत्थ णिक्खत्ते भवइ ।
 तम्हा इहं ण णिक्खिप्पइ, तर्हि चेव णिक्खिप्पिस्सइ ।
 से तं निक्खेवे ।

सुत्तं० १५१ प्र० से किं तं अणुगमे ?

उ० अणुगमे दुविहे पणत्ते,
 तं जहा—

१ सुत्ताणुगमे अ, २ निज्जुत्तिअणुगमे अ ।

प्र० से किं तं निज्जुत्तिअणुगमे ?

उ० निज्जुत्तिअणुगमे तिविहे पणत्ते,

तं जहा-

१ णिकखेव-निज्जुत्तिअणुगमे,

२ उवग्घाय-निज्जुत्तिअणुगमे,

३ सुत्तप्फासिअ-निज्जुत्तिअणुगमे ।

प्र० से किं तं निक्खेव-निज्जुत्तिअणुगमे ?

उ० णिकखेव-निज्जुत्तिअणुगमे अणुगाए,

से तं णिकखेव-निज्जुत्तिअणुगमे ।

प्र० से किं तं उवग्घायनिज्जुत्तिअणुगमे ?

उ० इसाहिं दोहिं मूलगाहाहिं अणुगंतव्वो,

तं जहा-

गाहाओ-उद्देसे^१ निद्देसे^२ अ, निग्गमे^३ खेत^४ काल^५ पुरिसे^६ य ।

कारण^७ पच्चय^८ लक्खण^९ नए^{१०} समोपारणा^{११} ऽणुमए^{१२} ॥१॥

किं^{१३} कइविहं^{१४} कस्स^{१५} कीहं^{१६} केसु^{१७} कहं^{१८} किक्किरं हवइ

कालं^{१९} । कइ^{२०} संतरं^{२१} मविरहियं^{२२} भवा^{२३} ऽज्जरित्तं^{२४}

फासणं^{२५} निरुत्तिं^{२६} ॥२॥

से तं उवग्घायनिज्जुत्तिअणुगमे ।

० से किं तं सुत्तप्फासिअनिज्जुत्तिअणुगमे ?

० सुत्तप्फासिअनिज्जुत्तिअणुगमे- सुत्तं उच्चारेअब्बं-

अक्खलियं, अमिलियं, अवच्चासेलियं

पडिपुण्णं, पडिपुण्णघोसं, कंठोद्विप्पमुक्कं,
गुरुवायणोवगयं ।

तओ तत्थ णज्जिहिति ससमयपयं वा परसमयपयं वा,
बंधपयं वा मोक्खपयं वा,

सामाइअपय वा नो सामाइअपय वा ।

तओ तम्मि वुच्चारिए समाणे केमि च णं
भगवंताणं केइ अत्थाहिगारा अहिगया भवंति,
केइ अत्थाहिगारा अणहिगया भवंति ।

तओ तेसिं अणहिगयाणं अत्थाणं अहिगमणट्ठाए
पएणं पयं वण्णइस्तामि—

गाहा—संहिया य पदं चेव, पयत्थो पयविग्गहो ।

चालणा य पसिद्धी अ, छव्विहं विद्धि लक्खणं ॥१॥

से तं सुत्तप्फासिअ-निज्जुत्ति अणुगमे ।

से तं निज्जुत्ति अणुगमे ।

से तं अणुगमे ।

सुत्तं० १५२ प्र० से किं तं नए ?

उ० सत्त मूलणया पण्णत्ता,

तं जहा—

१ णेगमे, २ संगहे, ३ ववहारे, ४ उज्जुसुए,

५ सहे, ६ सममिळ्ळे, ७ एवंबूए ।

तत्थ गाहाओ-णेगेहिं माणेहिं, मिणइत्ति णेगमस्स य निरुत्तो ।
 सेसाणं पि नयाणं, लक्खणमिणमो सुणह वोच्छं ॥१॥
 संगहिअपिडिअत्थं, संगहवयणं समासओ बिंत्ति ।
 वच्चइ विणिच्छिअत्थं, ववहारो सव्वदव्वेसु ॥२॥
 पच्चुप्पन्नगाही, उज्जुसुओ णयविही मुणेअव्वो ।
 इच्छइ विसेसियतरं, पच्चुप्पणं णओ सहो ॥३॥
 वत्थूओ संकमणं होइ, अवत्थू नए समभिरुद्धे ।
 वंजण अत्थ तदुभयं, एवभूओ विसेसेइ ॥४॥
 णायम्मि गिण्हिअव्वे, अगिण्हिअव्वम्मि चेव अत्थम्मि ।
 जइअव्वमेव इइ, जो उवएसो सो नओ नाम ॥५॥
 सव्वेसं पि नयाणं, बहुविहवत्तव्वयं निसामित्ता ।
 तं सव्वनयविसुद्धं, जं चरणगुणद्धिओ साहू ॥६॥
 से त्तं नए ।

॥ अणुओगहाराइं समत्ताइं ॥

सोलससयाणि चउत्तराणि, होंति उ इमंमि गाहाणं ।
 दुसहस्समणुद्धुभ, छंदवित्तपमाणओ भणिओ ॥१॥
 णयरमहादारा इव, उवक्कमदाराणुओगवरदारा ।
 अक्खरब्बिदुगमत्ता, लिहिया दुक्खक्खयट्ठाए ॥२॥

॥ अणुओगहारं सुत्तं समत्तं ॥

॥ सूलसुत्ताणि-समत्ताणि ॥

